CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैला आँचल

फणीश्वर नाथ 'रेणु'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैला आँचल

सौजन्य से –
डॉ० शशिप्रभा कुमार
'अभ्युदय', 295/सैक्टर–15 A
नीएडा (उ० प्र०)-201301

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

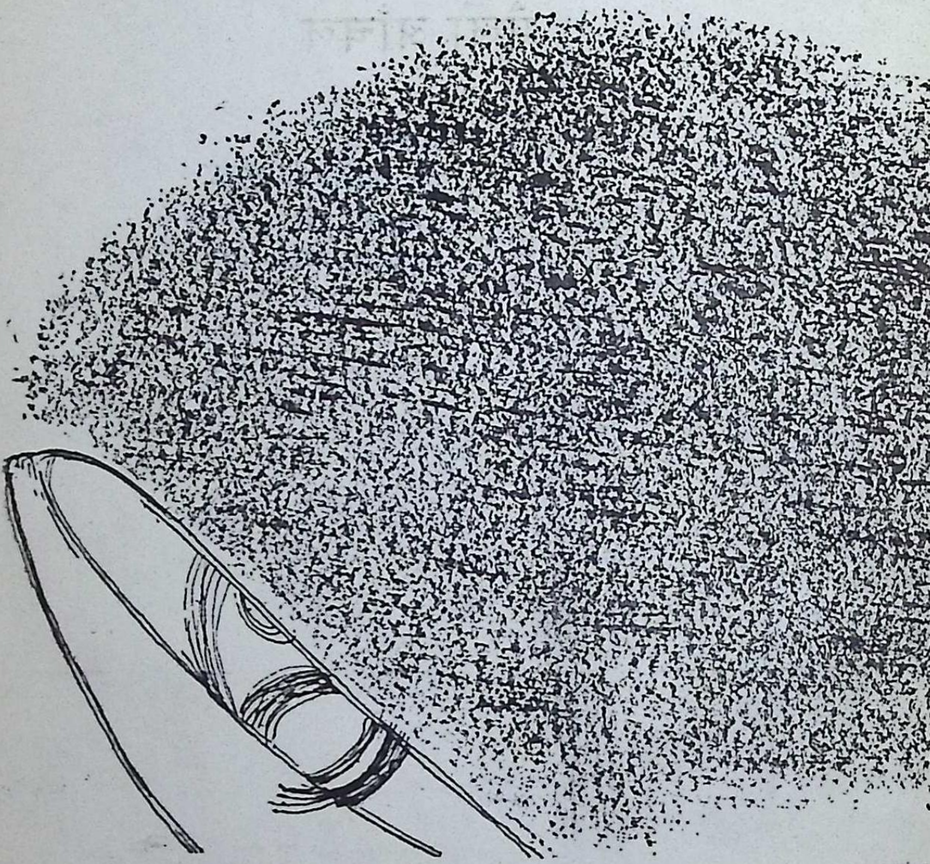

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

मैला आँचल

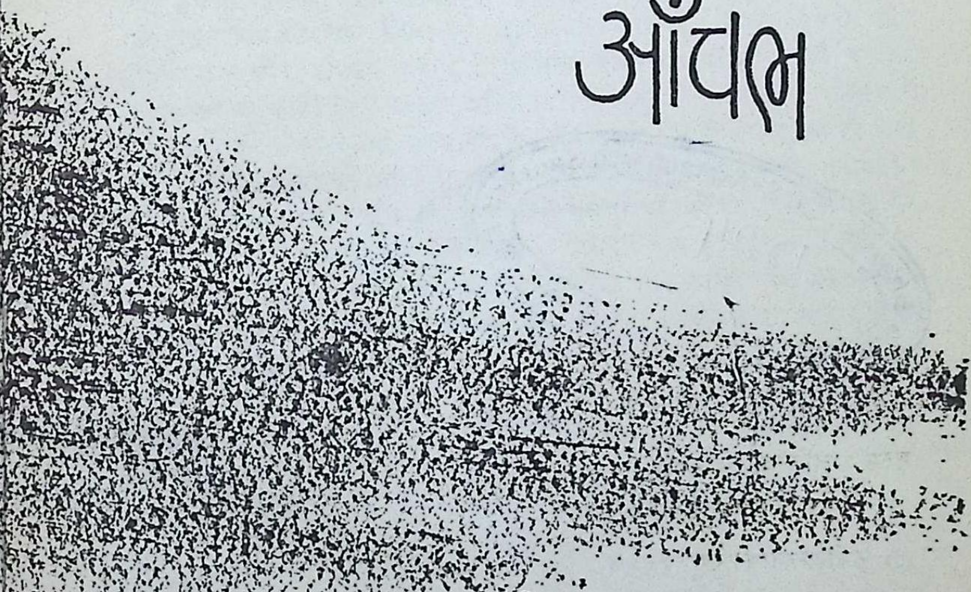

Bhawan's Sri Sankaracharya
Bharatiya Vidya
१२९५

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit ... Vidya
1294

मूल्य : सजिल्द रु० २८.००
पेपरबैक रु० १६.००

© फणीश्वरनाथ 'रेणु' १९५४

प्रथम संस्करण : १९५४
दसवीं आवृत्ति : १९७९

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२

मुद्रक : शान प्रिन्टर्स,
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

आवरण : सुखदेव दुग्गल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम संस्करण की भूमिका

यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है; इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा-रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में सन्थाल परगना और पच्छिम में मिथिला की सीमा-रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को—पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर—इस उपन्यास कथा का-क्षेत्र बनाया है।

इसमें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है गुलाल भी, कीचड़ भी है चन्दन भी, सुन्दरता भी है कुरूपता भी—मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।

कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हुआ हूँ; पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो, अपनी निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।

—फणीश्वरनाथ 'रेणु'

पटना,
९ अगस्त, १९५४

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya Bharatiya Vidya
1294

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहला खण्ड

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक

गाँव में यह खबर तुरत बिजली की तरह फैल गयी—मलेटरी ने बहरा चेथरू को गिरफ्फ कर लिया है और लोबिनलाल के कुएँ से बाल्टी खोलकर ले गये हैं।

यद्यपि १९४२ के जन-आन्दोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आन्दोलन की लहर ही इस गाँव तक पहुँच पायी थी, किन्तु जिले-भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी।···मोगलाही टीशन पर गोरा सिपाही एक मोदी की बेटी को उठाकर ले गये। इसी को लेकर सिख और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गयी, गोली चल गयी। ढोलबाजा में पूरे गाँव को घेरकर आग लगा दी गयी, एक बच्चा भी बचकर नहीं निकल सका। मुसहरू के ससुर ने अपनी आँखों से देखा था—ठीक आग में भूनी गयी मछलियों की तरह लोगों की लाशें महीनों पड़ी रहीं, कौआ भी नहीं खा सकता था; मलेटरी का पहरा था। मुसहरू के ससुर का भतीजा फारबिस साहब का खानसामा है; वह झूठ बोलेगा ? पूरे चार साल के बाद अब इस गाँव की बारी आयी है। दुहाई माँ काली ! दुहाई बाबा लरसिंह !

यह सब गुअरटोली के बलिया की बदौलत हो रहा है।

विरंचीदास ने हिम्मत से काम लिया; आँगन से निकलकर चारों ओर देखा और मालिकटोला की ओर दौड़ा। मालिक तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद भी सुनकर घबड़ा गये, "लोबिन बाल्टी कहाँ से लाया था ? जरूर चोरी की बाल्टी होगी ! साले सब चोरी करेंगे और गाँव को बदनाम करेंगे।"

मालिकटोले से यह खबर राजपूतटोली पहुँची—कायस्थटोली के विश्वनाथप्रसाद और ततमाटोली के बिरंची को मलेटरी के सिपाही पकड़कर ले गये हैं। ठाकुर रामकिरपालसिंघ बोले, "इस बार तहसीलदारी का मजा निकलेगा। जरूर जमींदार का लगान वसूल कर खा गया है। अब बड़े-घर की हवा खायेंगे बच्चू !"

यादवटोली के लोगों ने खबर सुनते ही बलिया उर्फ बालदेव को गिरफ्तार कर लिया। भागने न पाये ! रस्सी से बाँधो ! पहले ही कहा था कि यह एक दिन सारे गाँव को बँधवायेगा।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद एक सेर घी, पाँच सेर बासमती चावल और एक खस्सी लेकर डरते हुए मलेटरीवालों को डाली पहुँचाने चले, बिरंची को साथ ले लिया। बोले, "हिसाब लगाकर देख लो, पूरे पचास रुपये का सामान है। यह रुपया एक हफ्ता के अन्दर ही अपने टोले और लोबिन के टोले से वसूल कर जमा कर देना। तुम लोगों के चलते···।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मलेटरीवाले कोठी के बगीचे में हैं। बगीचे के पास पहुँचकर विश्वनाथप्रसाद ने जेब से पलिया टोपी निकालकर पहन ली और कालीथान की ओर मुँह करके माँ काली को प्रणाम किया, "दुहाई माँ काली !"

बगीचे में पहुँचकर तहसीलदारसाहब ने देखा, दो बैलगाड़ियाँ हैं; बैल घास खा रहे हैं; मलेटरीवाले जमीन पर कम्बल बिछाकर बैठे हैं। ऐं···। मूढ़ी फाँक रहे हैं! और बहरा चेथरू भी कम्बल पर ही बैठकर मूढ़ी फाँक रहा है!

"सलाम हुजूर !"

बिरंची ने सामान सिर से नीचे उतारकर झुककर सलाम किया, "सलाम सरकार !"···बकरा भी मेमिया उठा।

"आ रे, यह क्या है ? आप कौन हैं ?" एक मोटेसाहब ने पूछा।

"हुजूर, ताबेदार राजा पारबंगा का तहसीलदार है, मीनापुर सर्किल का।"

"ओ, आप तहसीलदार हैं! ठीक बात! हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का आदमी है। यहाँ पर एक मैंलेरिया सेण्टर बनेगा। ऊपर से हुकुम आया है, यहीं बागान का जमीन में। मार्टिनसाहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया।"

तहसीलदारसाहब फिर एक बार सलाम करके बैठ गये। बिरंची हाथ जोड़े खड़ा रहा।

राजपूतटोली के रामकिरपालसिंघ जब कोठी के बगीचे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि बगीचे के पच्छिमवाली जमीन की पैमाइश हो रही है; कुछ लोग जरीब की कड़ी खींच रहे हैं, टोपावाले एक साहब तहसीलदारसाहब से हँस-हँसकर बातचीत कर रहे हैं।

और अन्त में यादवटोली के लोग बालदेव के हाथ और कमर में रस्सी बाँध-कर हो-हल्ला मचाते हुए आये। उसकी कमर में बँधी हुई रस्सी को सभी पकड़े हुए हैं। फिरारी सुराजी को पकड़नेवालों को सरकार बहादुर की ओर से इनाम मिलता है—एक हजार, दो हजार, पाँच हजार! लेकिन साहब तो देखते ही गुस्सा हो गये, "क्या बात है ? इसको क्यों बाँधकर लाया है ? इसने क्या किया है ?"

"हुजूर, यह सुराजी बालदेव गोप है। दो साल जेहल खटकर आया है; इस गाँव का नहीं, चन्ननपट्टी का है। यहाँ मौसी के यहाँ आया है। खध्धड़ पहनता है, जैहिन्न बोलता है।"

"तो इसको बाँधा है काहे ?"

"अरे बालदेव !" साहब के किरानी ने बालदेव को पहचान लिया, "अरे, यह तो बालदेव है। सर, यह रामकृष्ण कांग्रेस आश्रम का कार्यकर्त्ता है; बड़ा बहादुर है।"

यादवों के बन्धन से मुक्ति पाकर बालदेव ने साहब और किरानी को बारी-बारी से 'जाय हिन्द' किया। साहब ने हँसते हुए कहा, "आपका गाँव में मलेरिया सेण्टर खुल रहा है। खूब बड़ा डॉक्टर आ रहा है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का तरफ से मकान बनेगा। लेकिन बाकी काम तो आप लोगों की मदद से ही होगा।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तहसीलदारसाहब ने जमींदारी खाते और नक्शे को तजवीज करके कहा, "हुजूर, जमीन एक एकड़ दस डिसमिल है।"

ठाकुर रामकिरपालसिंघ को अब तक साहब को सलाम करने का भी मौका नहीं मिला था। विश्वनाथप्रसाद ने बाजी मार ली। जिन्दगी में पहली बार सिंघजी को अपनी निरक्षरता पर ग्लानि हुई। सचमुच विद्या की महिमा बड़ी है। लेकिन भगवान ने शरीर दिया है, उच्चजाति में जन्म दिया है। इसी के बल पर बहुत बाबू-बबुआन, हाकिम-हुक्काम और अमला-फैला से हेलमेल हुआ, जान-पहचान हुई। मौका पाते ही सलाम करके जोर से बोले, "जै हो सरकार की! हुजूर, पवली को भलाय के वास्ते इतना दूर से कष्ट उठाकर आया है, और हम लोग हुजूर का कोई सेवा नहीं कर सके। गुसाईंजी रमैन में कहिन हैं—'धन्य भाग प्रभु दरशन दीन्हा···।' हुजूर, सेवक का नाम रामकिरपालसिंघ वल्द गरीबनेवाजसिंघ, मोत्तफा, जात राजपूत, मोकाम गढ़बुन्देल राजपुताना, हाल मोकाम मेरीगंज।"

"सिंहजी, हमारा कोई सेवा नहीं चाहिए। सेवा के वास्ते मैलेरिया सेण्टर खुल रहा है। इसी में मदद कीजिए सब मिलकर। यही सबसे बड़ा सेवा है।" साहब हँसते हुए बोले।

यादवटोली के लोग एक-एक कर, नजर बचाकर, नौ-दो-ग्यारह हो चुके थे। उन्हें डर था कि बालदेव को बाँधकर लानेवालों का साहब चालान करेंगे।

साहब ने चलते समय कहा, "सात दिन के अन्दर ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मिस्तिरी लोग आवेगा। आप लोग बाँस, खड़, सुतली और दूसरा दरकारी चीज का इन्तजाम कर देगा। तहसीलदारसाहब, आप हैं, बालदेवप्रसाद तो देश का सेवक ही है, और सिंहजी हैं। आप सब लोग मिलकर मदद कीजिए।"

सबने हाथ जोड़कर, गर्दन झुकाकर स्वीकार किया। साहब दलबल के साथ चले। खस्सी मेमिया रहा था। बालदेव गाड़ी के पीछे-पीछे गाँव के बाहर तक गया।

बालदेव ने लौटकर लोगों से कहा, "डिस्टीबोट के बंगाली आफसियरबाबू थे परफुल्लो बनरजी, और उनका किरानी जीत्तनबाबू, पहले कांग्रेस आफिस के किरानी थे।"

दो

पूर्णिया जिले में ऐसे बहुत-से गाँव और कस्बे हैं, जो आज भी अपने नामों पर नीलहे साहबों का बोझ ढो रहे हैं। वीरान जंगलों और मैदानों में नील कोठी के खण्डहर राही बटोहियों को आज भी नीलयुग की भूली हुई कहानियाँ याद

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिला देते हैं।···गौना करके नयी दुलहिन के साथ घर लौटता हुआ नौजवान अपने गाड़ीवान से कहता है—"ज़रा यहाँ गाड़ी धीरे-धीरे हाँकना, कनिया[1] साहेब की कोठी देखेगी।···यही है मर्कं साहब की कोठी।···वहाँ है नील महने का हौज !"

नयी दुलहिन ओहार के पर्दे को हटाकर, घूँघट को ज़रा पीछे खिसकाकर झाँकती है—झरबेर के घने जंगलों के बीच ईंट-पत्थरों का ढेर ! कोठी कहाँ है ?

दूल्हे का चेहरा गर्व से भर जाता है—अर्थात् हमारे गाँव के पास साहेब की कोठी थी; यहाँ साहेब-मेम रहते थे !

गंगा-स्नान करके लौटते हुए, तीर्थयात्रियों की बैलगाड़ियाँ यहाँ कुछ देर रुक जाती हैं। गाड़ियों से युवतियाँ और बच्चे निकलकर, डरते-डरते, खण्डहरों के पास जाते हैं। बूढ़ियाँ जंगलों में जंगली जड़ी-बूटी खोजती हैं।···

ऐसा ही एक गाँव है मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढ़ी कोशी को पार करके जाना होता है। बूढ़ी कोशी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इस अंचल के लोग इसे 'नवाबी तड़बन्ना' कहते हैं। किस नवाब ने इस ताड़ के बन को लगाया था, कहना कठिन है, लेकिन वैशाख से लेकर आषाढ़ तक आस-पास के हलवाहे-चरवाहे भी इस बन में नवाबी करते हैं। तीन आने लबनी ताड़ी, रोक साला मोटर-गाड़ी ! अर्थात् ताड़ी के नशे में आदमी मोटर-गाड़ी को भी सस्ता समझता है। तड़बन्ना के बाद ही एक बड़ा मैदान है, जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगाजी के किनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड़ जमीन ! वन्ध्या धरती का विशाल अंचल। इसमें दूब भी नहीं पनपती है। बीच-बीच में बालूचर और कहीं-कहीं बेर की झाड़ियाँ। कोस-भर मैदान पार करने के बाद, पूरब की ओर काला जंगल दिखायी पड़ता है; वही है मेरीगंज कोठी।

आज से करीब पैंतीस साल पहले, जिस दिन डब्लू० जी० मार्टिन ने इस गाँव में कोठी की नींव डाली, आस-पास के गाँवों में ढोल बजवाकर ऐलान कर दिया—आज से इस गाँव का नाम हुआ मेरीगंज। मेरी मार्टिन की नयी दुलहिन थी जो कलकत्ता में रहती थी। कहा जाता है कि एक बार एक किसान के मुँह से गलती से इस गाँव का पुराना नाम निकल गया था। बस, और जाता कहाँ है ? साहब ने पचास कोड़े लगाये थे, गिनकर। इस गाँव का पुराना नाम अब किसी को याद नहीं अथवा आज भी नाम लेने में एक अज्ञात आशंका होती है। कौन जाने ! गाँव का नाम बदलकर, रौतहट स्टेशन से मेरीगंज तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से सड़क बनवाकर और गाँव में पोस्ट ऑफिस खुलवाने के बाद मार्टिनसाहब अपनी नवविवाहिता मेम मेरी को लाने के लिए कलकत्ता गये। गाँव की सबसे बूढ़ी, भैरो की माँ यदि आज रहती तो सुना देती—'अहा हा ! परी की तरह थी साहेब की मेम, इन्द्रासन की परी की तरह !'

---

१. दुलहिन।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेकिन मार्टिन साहब का आयोजन अधूरा साबित हुआ। मेरीगंज पहुँचने के ठीक एक सप्ताह बाद ही जब मेरी को 'जड़ैया' ने धर दबाया तो मार्टिन ने महसूस किया कि पोस्ट ऑफिस से पहले यहाँ एक डिस्पेन्सरी खुलवाना जरूरी था। कुनैन की टिकिया से जब तीसरे दिन भी मेरी का बुखार नहीं उतरा तो मार्टिन ने अपने घोड़े को रौतहट की ओर दौड़ाया। रौतहट स्टेशन पहुँचने पर मालूम हुआ कि पूर्णिया जानेवाली गाड़ी दस मिनट पहले चली गयी थी। मार्टिन ने बगैर कुछ सोचे घोड़े को पूर्णिया की ओर मोड़ दिया। रौतहट से पूर्णिया बारह कोस है। मेरीगंज में किसी से पूछिए, वह आपको मार्टिन के पंखराज घोड़े की यह कहानी विस्तारपूर्वक सुना देगा।...जिस समय मार्टिन पुरैनिया के सिविलसर्जन के बँगले पर पहुँचा, पुरैनिया टीशन पर गाड़ी पहुँची भी नहीं थी।

किन्तु मार्टिन का पंखराज घोड़ा और सिविलसर्जन साहब की हवागाड़ी जब तक मेरीगंज पहुँचे, मेरी को मलेरिया निगल चुका था।...ट्यूबवेल के पास गढ़े में घुसकर, घुँघराले रेशमी बालोंवाले सिर पर कीचड़ थोपते-थोपते मेरी मर गयी थी।

मेरी की लाश को दफनाने के बाद ही मार्टिन पूर्णिया गया, सिविलसर्जन, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन और हेल्थ ऑफिसर से मिला; एक छोटी-सी डिस्पेन्सरी की मंजूरी के लिए जमीन-आसमान एक करता रहा। डिस्पेन्सरी के लिए अपनी जमीन रजिस्ट्री कर दी। अधिकारियों ने आश्वासन दिलाया—अगले साल जरूर डिस्पेन्सरी खुल जायेगी। ठीक इसी समय जर्मनी के वैज्ञानिकों ने एक चुटकी में नीलयुग का अन्त कर दिया। कोयले से नील बनाने की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग सफल हुआ और नीलहे साहबों की कोठियों की दीवारें अरराकर गिर पड़ीं। साहबों ने कोठियाँ बेचकर जमींदारियाँ खरीदनी शुरू कीं। बहुतों ने व्यापार आरम्भ किया। मार्टिन की दुनिया तो पहले ही उजड़ चुकी थी, दिमाग भी बिगड़ गया। बगल में रद्दी कागजों का पुलिन्दा दबाये हुए पगला मार्टिन दिन-भर पूर्णिया कचहरी में चक्कर काटता फिरता था, हर मिलनेवाले से कहता था, "गवर्नमेन्ट ने एक डिस्पेन्सरी का हुक्म दे दिया है; अगले साल खुल जायेगा।" कहते हैं कि पटना और दिल्ली की दौड़-धूप के बाद एक बार वह बहुत उदास होकर मेरीगंज लौटा; मेरी की कब्र पर लेटकर सारा दिन रोता रहा—'डॉलिंग ! डाक्टर नहीं आयेगा।' इसके बाद उसका पागलपन इतना बढ़ गया कि अधिकारियों ने उसे काँके भेज दिया और काँके के पागलखाने में ही उसकी मृत्यु हो गयी।

कोठी के बगीचे में, अंग्रेजी फूलों के जंगल में आज भी मेरी की कब्र मौजूद है। कोठी की इमारत ढह गयी है, नील के हौज टूट-फूट गये हैं; पीपल, बबूल तथा अन्य जंगली पेड़ों का एक घना जंगल तैयार हो गया है। लोग उधर दिन में भी नहीं जाते। कलमी आम का बाग तहसीलदारसाहब ने बन्दोबस्त में ले लिया है, इसलिए आम का बाग साफ-सुथरा है। किन्तु, कोठी के जंगल में तो दिन में भी सियार बोलता है। लोग उसे भुतहा जंगल कहते हैं। ततमाटोले का नन्दलाल एक बार ईंट लाने गया था; ईंट में हाथ लगाते ही खत्म हो गया था। जंगल से एक प्रेतनी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकली और नन्दलाल को कोड़े से पीटने लगी—साँप के कोड़े से। नन्दलाल वहीं ढेर हो गया। बगुले की तरह उजली प्रेतनी !

मेरीगंज एक बड़ा गाँव है; बारहो बरन के लोग रहते हैं। गाँव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गढ़ों में पानी जमा रहता है—मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गढ़े ! पौष पूर्णिमा के दिन इन्हीं गढ़ों में कोशी-स्नान के लिए सुबह से शाम तक भीड़ लगी रहती है। रौतहट स्टेशन से हलवाई और परचून की दूकानें आती हैं। कमला मैया के महातम के बारे में गाँव के लोग तरह-तरह की कहानियाँ कहते हैं।···गाँव में किसी के यहाँ शादी-ब्याह या श्राद्ध का भोज हो, गृहपति स्नान करके, गले में कपड़े का खूंट डालकर, कमला मैया को पान-सुपारी से निमन्त्रित करता था। इसके बाद पानी में हिलोरें उठने लगती थीं, ठीक जैसे नील के हौज में नील मथा जा रहा हो। फिर किनारे पर चाँदी के थालों, कटोरों और गिलासों का ढेर लग जाता था। गृहपति सभी बर्तनों को गिनकर ले जाता था और भोज समाप्त होते ही कमला मैया को लौटा आता था। लेकिन सभी की नीयत एक जैसी नहीं होती। एक बार एक गृहपति ने कुछ थालियाँ और कटोरे चुरा रखे। बस, उसी दिन से मैया ने बर्तनदान बन्द कर दिया और उस गृहपति का तो वंश ही खत्म हो गया—एकदम निर्मूल ! उस बिगड़ी नीयतवाले गृहपति के बारे में गाँव में दो रायें हैं—राजपूतटोली के लोगों का कहना है, वह कायस्थ-टोली का गृहपति था; कायस्थटोलीवाले कहते हैं, वह राजपूत था।

राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी मन-मुटाव और झगड़े होते आये हैं। ब्राह्मणों की संख्या कम है, इसलिए वे हमेशा तीसरी शक्ति का कर्तव्य पूरा करते रहे हैं। अभी कुछ दिनों से यादवों के दल ने भी जोर पकड़ा है। जनेऊ लेने के बाद भी राजपूतों ने यदुवंशी क्षत्रिय को मान्यता नहीं दी। इसके विपरीत समय-समय पर यदुवंशियों के क्षत्रित्व को वे व्यंगविद्रूप के बाणों से उभारते रहे। एक बार यदुवंशियों ने खुली चुनौती दे दी। बात तूल पकड़ने लगी थी। दोनों ओर से लोग लगे हुए थे। यदुवंशियों को कायस्थटोली के मुखिया तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद मल्लिक ने विश्वास दिलाया, मामले-मुकदमे की पूरी पैरवी करेंगे। जमींदारी कचहरी के वकील बसन्तोबाबू कह रहे थे, "यादवों को सरकार ने राजपूत मान लिया है। इसका मुकदमा तो धूमधाम से चलेगा। खुद वकीलसाहब कह रहे थे।"

राजपूतों को ब्राह्मणटोली के पण्डितों ने समझाया—"जब-जब धर्म की हानि हुई है, राजपूतों ने ही उनकी रक्षा की है। घोर कलिकाल उपस्थित है; राजपूत अपनी वीरता से धर्म को बचा लें।"···लेकिन बात बढ़ी नहीं। न जाने कैसे यह धर्मयुद्ध रुक गया। ब्राह्मणटोली के बूढ़े ज्योतिषीजी आज भी कहते हैं—"यह राजपूतों के चुप रहने का फल है कि आज चारों ओर, हर जाति के लोग गले में जनेऊ लटकाये फिर रहे हैं।···भूमफोड़ क्षत्री तो कभी नहीं सुना था।···शिव हो ! शिव हो !"

अब गाँव में तीन प्रमुख दल हैं, कायस्थ, राजपूत और यादव। ब्राह्मण लोग

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
अभी भी तृतीय शक्ति है। गाँव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन्हीं तीनों दलों में बँटे हुए हैं।

कायस्थटोली के मुखिया विश्वनाथप्रसाद मल्लिक, राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। तहसीलदारी उनके खानदान में तीन पुस्त से चली आ रही है। इसी के बल पर तहसीलदारसाहब आज एक हजार बीघे जमीन के एक बड़े काश्तकार हैं। कायस्थटोली को गाँव की अन्य जाति के लोग मालिकटोला कहते हैं। राजपूतटोली के लोग कहते हैं कैथटोली।

ठाकुर रामकिरपालसिंघ राजपूतटोली के मुखिया हैं। इनके दादा महारानी चम्पावती की स्टेट के सिपाही थे और विश्वनाथप्रसाद के दादा तहसीलदार। कहते हैं कि जब महारानी चम्पावती और राज पारबंगा में दीवानी मुकदमा चल रहा था तो विश्वनाथप्रसाद के दादा राज पारबंगा स्टेट की ओर मिल गये थे। स्टेटवालों को महारानी के सारे गुप्त कागजात हाथ लग गये और महारानी मुकदमे में हार गयी। काशी जाने से पहले महारानी ने रामकिरपालसिंघ के नाम अपनी बची हुई तीन सौ बीघे जमीन की लिखा-पढ़ी कर दी थी। रामकिरपालसिंघ कहते हैं कि उनके दादा ने महारानी को एक बार डकैतों के हाथ से अकेले ही बचाया था, इसी के इनाम में महारानी ने दानपत्तर लिख दिया था।...कायस्थटोली के लोग राजपूतटोली को 'सिपैहियाटोली' कहते हैं।

यादवों का दल नया है। इनके मुखिया खेलावन यादव को दस बरस पहले तक लोगों ने भैंस चराते देखा है। दूध-घी की बिक्री से जमाये हुए पैसे की बात जब चारों ओर बुरी तरह फैल गयी तो खेलावन को बड़ी चिन्ता हुई। महीनों तहसीलदार के यहाँ दौड़ते रहे, सर्किल मैनेजर को डाली चढ़ायी, सिपाहियों को दूध-घी पिलाया और अन्त में कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बन्दोबस्ती हो सकी। अब तो डेढ़ सौ बीघे की जोत है। बड़ा बेटा सकलदीप अररिया बैरगाछी में, नाना के घर पर रहकर, हाई-स्कूल में पढ़ता है। खेलावनसिंह यादव को लोग नया मातबर कहते हैं। लेकिन यादव क्षत्रियटोली को अब 'गुअरटोली' कहने की हिम्मत कोई नहीं करता। यादवटोली में बारहों मास शाम को अखाड़ा जमता है। चार बजे दिन से ही शोभन मोची ढोल पीटता रहता है—ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना! ढोल के हर ताल पर यादवटोली के बूढ़े-बच्चे-जवान डण्ड-बैठक और पहलवानी के पैंतरे सीखते हैं।

सारे मेरीगंज में दस आदमी पढ़े-लिखे हैं—पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई। नये पढ़नेवालों की संख्या है पन्द्रह।

गाँव की मुख्य पैदावार है धान, पाट और खेसारी। रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीन

डिस्टीबोट के मिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव के उत्साह का ठिकाना नहीं है। आफसियरबाबू ने तहसीलदारसाहब और रामकिरपालसिंह के सामने ही कहा था—"आप तो देश के सेवक हैं।" सबों ने सुना था। दुनिया में धन क्या है? तहसीलदारसाहब और सिंघजी के पास पैसा है, मगर जो इज्जत बालदेव की है, वे कहाँ पायेंगे? यादवटोली के लोगों ने बालदेव से उसी दिन माफी माँग ली थी, "बालदेव भाई! ···हम लोग मूरख ठहरे और तुम गियानी। हम कूप के बेंग हैं। तुम तो बहुत देस-विदेश घूमे हो, बड़े-बड़े लोगों के साथ रहे हो। हमारा कसूर माफ कर दो।"

उसी दिन से खेलावनसिंघ यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं, "जात का नाम, जात की इज्जत तो तुम्हीं लोगों के हाथ में है। तुम कोई पराये हो? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होगी। हम-तुम भाई-भाई ठहरे।"

खेलावन की डेरावाली खुद आकर बालदेव की बुढ़िया मौसी से कह गयी, "घर-आँगन सब आपका ही है। जिस घर में एक बूढ़ी नहीं, उस घर का भी कोई ठिकाना रहता है! मैं अकेली क्या करूँ, दूध-घी देखूँ कि गोबर-गुहाल?"

बालदेव की बुढ़िया मौसी की दुनिया ही बदल गयी। कल तक घर-घर घूम-कर कुटाई-पिसाई करती फिरती थी और आज गाँव की मालकिन आकर उसे सारे घर की मालकिन बना गयी!

मिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव गाँव के टोले में घूमता रहा। "डिस्टी-बोट से मिस्तिरीजी लोग आये हैं। कल से काम शुरू हो जाना चाहिए।···मलेरिया बोखार मच्छड़ काटने से होता है। मगर कुनैन खाने से, जितना भी मच्छड़ काटे, कुछ नहीं होगा।" ततमाटोली (तन्त्रिमा-क्षत्रियटोली) में मँहगूदास के घूर के पास, बालदेव की बातों को लोग बड़े अचरज से सुन रहे हैं। आँगन की औरतें भी घूँघट काढ़े, टट्टी के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, "अब रात-भर गोइँठा जलाकर धुआँ करने का झंझट नहीं, काटे जितना मच्छड़!"

पोलियाटोली, तन्त्रिमा-छत्रीटोली, यदुवंशी छत्रीटोली, गहलोत छत्रीटोली, कुर्म छत्रीटोली, अमात्य ब्राह्मणटोली, धनुकधारी छत्रीटोली, कुशवाहा छत्रीटोली, और रैदासटोली के लोगों ने बचन दिया, "सात दिन तक कोई काम नहीं करेंगे। मालिक लोगों से कहिए— हल-फाल, कोड़-कमान बन्द रखें। करना ही क्या है? एक इसपिताल का घर, एक डागडरबाबू का घर, एक भनसाघर[1] और एक घर फालतू। सात दिनों में ही सब काम रैट हो जायेगा।"

धनुकधारीटोली के तनुकलाल ने एक सवाल पैदा कर दिया, "लेकिन हल-फाल काम-काज बन्द करने से मालिक लोग मजूरी तो नहीं देंगे! एक-दो दिन की बात रहे तो किसी तरह खेपा भी जा सकता है। सात दिन तक बिना मजूरी के? यह जरा मुश्किल मालूम होता है।···ततमा और दुसाधटोली के लोगों की बात

---

१. रसोईघर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाने दीजिए। उनकी औरतें हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में कादो-पानी हिड़कर एक-दो सेर गैंची मछली निकाल लायेंगी। चार सेर धान का हिस्सा लग जायेगा। बाबू लोगों के पुआल के टालों[1] के पास धरती खरोंचकर, चूहे के माँदों को कोड़कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी। नहीं तो कोठी के जंगल से खमरआलू उखाड़ लायेंगी। रौतहट हाट में कटिहार मिल के कुल्ली लोग चार आने सेर खमरआलू हाथोंहाथ उठा लेते हैं। लेकिन, और लोगों के लिए तो बड़ा मुश्किल है।"

बालदेव ने निराश होकर पूछा, "अब क्या किया जाय ?"

तनुकलाल के पास समस्या का समाधान पहले से ही मौजूद था। बोला, "एक उपाय है, यदि मालिक लोग आधे दिन की मजूरी दे दें तो काम चल जाये।"

तनुकलाल के इस प्रस्ताव पर विचार करता हुआ बालदेव मालिकटोला की ओर चला। विश्वनाथबाबू तो मान लेंगे, सिंघजी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है। सिपैहियाटोला का बिरजूसिंघ कल कह रहा था, "सिंघजी इसपिताल में कोई मदद नहीं करेंगे। कहते थे, इसपिताल का मालिक-मक्तियार है विश्वनाथ और बलदेवा।"

ब्राह्मणटोली से तो कुछ उम्मीद करनी ही बेकार है। जिस दिन से अस्पताल होने की बात उन लोगों ने सुनी है, दिन-रात डाक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते फिर रहे हैं। जोतखीजी का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं, सुई भोंककर देह में ज़हर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है; हैजा के समय कूपों में दवा डाल देते हैं, गाँव-का-गाँव हैजा से समाप्त हो जाता है। कालाबुखार का नाम पहले लोगों ने कभी सुना था ? पूरब मुलुक कामरू कमिच्छा हासाम से कालाबुखारवालों का लहू शीशी में बन्द करके यही लोग ले आये थे। आजकल घर-घर कालाबुखार फैल गया है।···इसके अलावा, बिलैती दवा में गाय का खून मिला रहता है।···

भगमान भगत की दुकान के पास ही विश्वनाथबाबू से भेंट हो गयी। तनुकलाल के प्रस्ताव को सुनते ही विश्वनाथबाबू चिढ़ गये। "···धानुकटोली का तनुकलाल ? अपने को बड़ा काबिल समझता है। हर बात में वह एक-न-एक 'लेकिन' जरूर लगायेगा। तुम भी तो बालदेव पूरे 'बमभोलानाथ' हो। उससे पूछा नहीं कि अस्पताल से सिर्फ मालिक लोगों की भलाई होगी क्या ?"

भगमान भगत हमेशा सुपारी चबाता रहता है। बोलने के समय ऐसा लगता है कि वह बात को भी चबा रहा है, "अरे ! ई तो दस आदमी के काम बा, जे-बा-से एकरा में सब के मिल के मतत करे के चाहीं। का हो सीप्रसाद ?"

भगत की दुकान पर यों भी हमेशा चार-पाँच आदमी बैठे रहते हैं। विश्वनाथबाबू की आवाज सुनकर दो-चार व्यक्ति और जमा हो गये। बूढ़े सुमरितदास को लोग लबड़ा समझते हैं। मगर वह समय पर पते की बात बता जाता है। आते ही बोला, "अरे तहसीलदार, आप समझे नहीं। तनुकलाल अपने मन से नहीं बोला

---

१. घास की ढेरी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
है, इसमें कनकशन है। जरा इधर एकान्त में आइए तो बतावें।" तहसीलदार और सुमरितदास भगत की दुकान से जरा दूर जाकर बतियाने लगे। दुकान में बैठ हुए किसी ने कुढ़कर कहा, "बूढ़ा लुच्चा इसी को कहते हैं—हर बात में एकान्ती !"

भगत ने आँख टीपकर मना कर दिया—जोर से मत बोलो, बालदेव है।

सुमरितदास से प्रायबिट करने के बाद तहसीलदार का मिजाज बदल गया। आकर बोले, "अच्छा तो बालदेव, तुम जाकर ततमाटोली और पोलियाटोलेवालों से कहो, मैंने पचास रुपया माफ कर दिया। उस दिन आफसियरबाबू को जो डाली दी गयी थी सो तो तुम्हारे ही सामने की बात है। बिरंची भी था।···अब जरा सिपैहियाटोला जाओ, देखो वे लोग क्या कहते हैं। कोई कुछ करे, हमारा जो धरम है हम करेंगे ?"

बालदेव जब सिंघजी के दरवाजे पर पहुँचा तो सिंघजी घोड़े पर सवार हो चुके थे। शायद कटिहार जा रहे हैं। जात्रा पर टोकना अच्छा नहीं, इसलिए बालदेव चुप ही रहा। सिंघजी के दरवाजे पर पाँच-सात आदमी बैठे हुए थे। किसी ने बालदेव को बैठने के लिए भी नहीं कहा। बालदेव ने सबों को एक ही साथ 'जाय हिन्द' कहा। शिवशक्करसिंघ के बेटे हरगौरी ने बालदेव से पूछा, "कहिए बालदेव लीडर, क्या समाचार है ?"

"आप लोगों की किरपा से सब अच्छा है। बाबू साहेब, आप स्कूल से कब आये ?" बालदेव ने पास पड़े हुए खाली मोढ़े पर बैठते हुए पूछा।

"सुना कि आपकी लीडरी खूब चल रही है।"

"बाबू साहेब, गरीब आदमी भी भला लीडर होता है ! हम तो आप लोगों का सेवक हैं।"

"आप तो लीडर ही हो गये तो आजकल कांग्रेस आफिस का चौकाबर्तन कौन करता है।" हरगौरी अचानक उबल पड़ा। "अरे भाई, सभी काशी चले जाओगे ? पत्तल चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ। जेल क्या गये, पण्डित जमाहिरलाल हो गये। कांग्रेस आफिस में भोलटियरी करते थे, अब अन्धों में काना बनकर यहाँ लीडरी छाँटने आया है। स्वयंसेवक न घोड़ा का दुम !"

"बाबू साहेब, मुँह खराब क्यों करते हैं ? आप विदमान हैं और हम जाहिल। हमसे जो कसूर हुआ है कहिए।"

"उठ जाओ दरवाजे पर से। बेइमान कहीं के ! डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से अस्पताल की मंजूरी हुई है, रुपया मिला है। सब चुपचाप मारकर अब बेगार खोज रहे हैं। चोर सब !···उठ जाओ दरवाजे पर से !"

हरगौरी तमतमाकर बालदेव को धक्का देने के लिए उठा। बैठे हुए लोगों ने 'हाँ-हाँ' करके हरगौरी को पकड़ लिया। बालदेव चुपचाप बैठा रहा, "मारिए, यदि मारने से ही आपका गुस्सा ठण्डा हो तो मारिए !"

हल्ला-गुल्ला सुनकर भीड़ जम गयी। हरगौरी का लड़कपन किसी को पसन्द नहीं। शिवशक्करसिंघ भी सुनकर दुखित हुए, "लीडरी करे या भोलटियरी, तुमको किस बात की चिढ़ लगी ? तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ?···अच्छा बालदेव,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बुरा मत मानना। हँसी-दिल्लगी में उड़ा दो।···छोटा भाई है।"

"शिवशक्कर मौसा, बाबूसाहब गाली-गलौज करके मारने चले। मगर हम कोई लाजमान[1] बात मुँह से निकालते हैं? पूछिए सबों से। महतमाजी कहिन हैं···"

नीम के पेड़ पर कागा कायँ-कायँ कर उठा।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है।···ये लोग भी अजीब हैं। एक घण्टा पहले बालदेव की टोकरी-भर शिकायत कर रहे थे, लीडरी सटकाने की बात कह रहे थे, और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशामद कर रहा है! ग्वाला होकर लीडरी···?

"गुअरटोलीवाले हँसेरी[2] लेकर आ रहे हैं," एक लड़का दौड़ता-हाँफता आकर खबर दे गया। ऐं!···गाँव के उत्तर में शोरगुल हो रहा है। खूँटे में बँधे हुए बैलों ने चौकन्ने होकर कान खड़े किये। गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती-मिमियाती हुई गाँव में भागी आ रही हैं। कुत्ते भूँकने लगे।···बात क्या हुई?

"अरे बेटा रे! गौरी बेटा रे!···आँगन में आ जा बेटा रे! गुअरटोली का कलिया पगला गया है!" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आयी, और हरगौरी को घसीटकर आँगन में ले गयी। बच्चे रोने लगे।

"अरे, बात क्या हुई?"

"भाला निकालो छत्तर!"

"हमारी गंगाजीवाली लाठी कहाँ है?"

"तीर निकाल रे!"

"अरे बात क्या है? हँसेरी क्यों···?"

कौन किसका जवाब देता है! किसे फुरसत है! सारे गाँव में कुहराम मचा हुआ है। हरगौरी की माँ अब शिवशक्करसिंघ को आँगन में बुला रही है। चिल्ला रही है, "गुअरटोली का रौदी बूढ़ा आया है।···गुअरटोली में बूढ़े-बच्चे खौल रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से मारा है। कुकुरू का बेटा कलचरना काली किरिया[3] खाया है—हरगौरी का खून पीयेंगे।···आँगन में आ जाओ गौरी के बाबू!"

"ओ!" बालदेव दौड़ा, "आप लोग अकुताइए मत। हम देखते हैं। नासमझ लोग हैं, समझा देते हैं।"

"एक बार बोलिए प्रेम से···महाबीरजी की···जै!"

"जै! जाय···जाय!"

बालदेव को देखते ही यादव सेना खुशी से जयजयकार कर उठी। "बोलिए एक बार प्रेम से···गन्ही महतमा की···जै! जाय···जाय। ऐ! शान्ती! शान्ती! चुप रहो, बालदेवजी क्या कहते हैं, सुनो!···"

"पियारे भाइयो, आप लोग जो अन्डोलन किये हैं, वह अच्छा नहीं। अपना

---

१. अपशब्द। २. बलवा करनेवाला दल। ३. कसम।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कान देखे बिना कौआ के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं। आप ही सोचिए, क्या यह समझदार आदमी का काम है! ···आप लोग हिंसावाद करने जा रहे थे। इसके लिए हमको अनसन करना होगा। भारथमाता का, गांधीजी का यह रास्ता नहीं···।"

सचमुच गियानी आदमी हैं बालदेवजी। अन्डोलन, अनसन, और···और क्या? ···हिंसाबात! किसी ने समझा! गियान की बोली समझना सभी के बूते की बात नहीं।···

"अनसन क्या करेंगे?"

"अन्ट-सन्ट?"

कलिया कहता था—उपास करेंगे बालदेवजी। कलिया को बुलाकर बालदेवजी कहते थे—कालीचरन, तुम बहुत बहादुर लौजमान हो। लेकिन जोस में होस भी रखना चाहिए। हम खुस हैं, लेकिन उपास करेंगे।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेवजी ठीक समय पर नहीं आ जाते तो कालीचरन इस पार चाहे उस पार कर देता।···अरे, हरगौरिया! कल का छौंड़ा। इस्कूल में चार अच्छर पढ़ क्या लिया है लाट साहेब हो गया है।"

"अरे, पढ़ता क्या है, दाढ़ी-मोंच हो गया है और अपना सकलदीप से दो गिलास नीचे ही पढ़ता है। एकदम फेलियर है। इस साल भी फैल हो गया है। उसका बाप मास्टर को घूस देने गया था। मास्टर गुस्साकर बोला—भागो, नहीं तो तुमको भी फैल कर देंगे।"

"अरे पढ़ेगा क्या! सुनते हैं कि लालबाग मेला में लाल पढ़ना में पास हो गया है।"

"लाल पढ़ना?"

बात बनाने में दुलरिया से कोई जीत नहीं सकता। "लाल पढ़ना नहीं समझे? ···हा-हा···हा-हा···खी-खी···खी! लाल पढ़ना!"

—ढाक-ढिन्ना, ढाक-ढिन्ना!

"चलो रे, अखाड़ा का ढोल बोल रहा है।"

चार

सतगुरु हो! सतगुरु हो!

महन्थसाहेब सदा ब्रह्म वेला में उठते हैं। "हो रामदास! आसन त्यागो जी! लक्ष्मी को जगाओ!···सतगुरु हो! ये कभी जो बिना जगाये जागें। रामदास! हो जी रामदास!"

रामदास आँखें मलते हुए उठता है, बाहर निकलकर आसमान में भुरुकुआ[1]

१. भोर का तारा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को देखता है, फिर रामडण्डी[1] को खोजता है।…"अभी तो बहुत रात बाकी है। महन्थसाहब आज बहुत पहले ही जग गये हैं।…माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठण्डा कर देता है।…सरकार, रात तो अभी बहुत बाकी है।"

"रात बहुत बाकी है तो क्या हुआ ? एक दिन जरा सवेरे ही सही। सोओ मत। धूनी में लकड़ी डाल दो। कोठारिन को जगा दो।…सतगुरुसाहेब ने सपना दिया है।"

लछमी उठी। उठकर महन्थसाहब के आसन के पास आयी। हाथ जोड़कर 'साहेब बन्दगी' किया और आँखें मलते हुए कुएँ की ओर चली गयी।

…लछमी के रग-रग में अब साधु-सुभाव, आचार-विचार और नियम धरम रम गया है। साहेब की दया है। और यह रामदास ? गुरु जाने, इसकी मति-गति कब बदलेगी ! बचपन से ही साधु की संगति में रहकर भी जो नहीं सुधरा, वह अब कब सुधरेगा ?…भक्ति-भाव ना जाने भोंदू पेट भरे से काम ! बस, दो ही गुण हैं—सेवा अच्छी तरह करता है और खंजड़ी बजाने में बेजोड़ है। "अरे हो रामदास !…फिर सो गये क्या ?…गंगाजली में जल भर दो।"

जागहु सतगुरुसाहेब, सेवक तुम्हरे दरस को आया जी
जागहु सतगुरुसाहेब…।
…डिम-डिमिक-डिमिक, डिम डिमिक-डिमिक !
भोर भयो भव भरम भयानक भानु देखकर भागा जी,
ज्ञान नैन साहेब के खुलि गयो, थर-थर काँपत माया जी।
जागहु सतगुरुसाहेब…

माघ के ठिठुरते हुए भोर को मठ से प्रातकी[2] की निर्गुणवाणी निकलकर शून्य में मँडरा रही है। बूढ़े महन्थसाहब पहला पद कहते हैं। दन्तहीन मुँह से प्रातकी के शब्द स्पष्ट नहीं निकलते। गले की थरथराहट सुर में बाधा डालती है, बेसुरा राग निकलता है। दमे से जर्जर शरीर में दम कहाँ !…लेकिन लछमी सब सँभाल लेती है। पाँच साल पहले प्रातकी गाने के समय उसकी आँखों की पलकें नींद से लदी रहती थीं। महन्थसाहब जब गीत की दूसरी पंक्ति 'भोर भयो भव भरम' गाते थे तो वह बहुत मुश्किल से अपनी हँसी रोक पाती थी—भोर भयो भव भरम…! लेकिन अब नहीं। उसकी बोली मीठी है। उसका सुर मीठा है। वह तन्मय होकर गाती है। उसकी सुरीली तान के साथ महन्थसाहब के बेसुरे और मोटे राग का मेल नहीं खाता, फिर भी संगीत की निर्मल धारा में कहीं विरोध नहीं उत्पन्न होता। महन्थसाहब का मोटा राग लछमी के कोमल लय को सहारा देता है। शहनाई के साथ सुर देनेवाली शहनाई की तरह—भों ओं ओं ओं ओं…!

रामदास की खंजड़ी की गमक निःशब्द वातावरण में तरंगें पैदा करती है। खंजड़ी में लगी हुई छोटी-छोटी झुनुकियों की हल्की झुनुक ! मानो किसी का पालतू हिरन नाच रहा हो, दौड़ रहा हो ! डिम डिमिक ! रुन झुनुक झुनुक !

---

१. तीन-तरवा। २. प्रभाती।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रातकी के बाद बीजक 'शब्द'। 'रामुरा भीं भीं जन्तर बाजे। करचर्ण विहुना नाचे। रामुरा भीं-भीं...।'

और तब सत्संग! रोज इसी वेला में सत्संग होता है। प्रातकी सुनते ही मठ के अन्य साधु-संन्यासी, अतिथि-अभ्यागत तथा अधिकारी-भण्डारी वगैरह जग जाते हैं। प्रातकी और बीजक में कोई सम्मिलित हो या नहीं, सत्संग में भाग लेना अनिवार्य है। मठ का भण्डारी इसी समय रोज की हाज़िरी लेता है। इस समय जो अनुपस्थित रहे उसकी चिप्पी[1] बन्द हो जाती है। सत्संग में महन्थसाहब साधुओं और शिष्यों को उपदेश देते हैं, प्रश्नों के उत्तर देते हैं, अज्ञान अन्धकार को अपनी वाणी से दूर करते हैं।

...सतगुरु सेवा सत्य करि माने सत्य विचार।
सेवक चेला सत्य सो जो गुरु वचन निहार॥...

फिर सातचक्र परिचय!

प्रथम चक्र आधार कहावे गुद स्थल के माँही
द्वितिय चक्र अधिष्ठान कहिये लिंगस्थल के माँही।
तृतय चक्र मणिपूरण जानो नाभी स्थल...

सत्संग समाप्त होते ही भण्डारी उपस्थित 'मूर्तियों' की गिनती लेता है—"रानीगंज के तीन गो मुरती तो आज सात दिन से धरना देले हथुन। जाये ला कहै हियेन्ह त कहै हथिन बलु सरकार से आज्ञाँ लेली है। बेला मठ के एक मुरती के बुखार लगलैन्ह है, दोकान में सबुरदाना न भेटाई है...।"

कोठारिन लछमी दासिन का रोज इसी समय बक-बक झक-झक बहुत बुरा लगता है, सत्संग से प्राप्त की हुई मन की पवित्रता नष्ट हो जाती है। लेकिन क्या करे? मठ के इस नियम को यदि जरा भी ढीला कर दिया जाय तो साधु-बैरागी एक महीने में ही मठ को उजाड़ देंगे। बाहर के साधुओं के लिए चार ही दिन रहने का नियम है, मगर...। "रानीगंज के मूर्तियों को खुद सोचना चाहिए। यहाँ कोई कुबेर का भण्डार तो नहीं...।"

"लछमी," महन्थसाहब कहते हैं, "आज-भर रहने दो। भण्डारी, जितने मुरती आज हैं, सबों का बालभोग[2] और प्रसाद[3] आज लगेगा। सभी मुरती बैठ जाइए। आज सतगुरुसाहेब सपना दीहिन हैं।"

धूनी में फिर सूखी लकड़ियों के छोटे-छोटे टुकड़े डाल दिये गये। सभी मुरती फिर धूनी के चारों ओर अर्धवृत्ताकार पंक्ति में बैठ गये। लछमी की आसनी महन्थ-साहब के आसन के पास ही लगती है...। सभी महन्थसाहब की ओर उत्सुकता से देख रहे हैं।

"आज मध्य रात्रि में, सतगुरुसाहेब सपने में मेरे आसन के पास आये। हम जल्दी से उठके साहेब बन्दगी किया। हमको 'दयाभाव' देके साहेब कहिन—सेवादास, तुम नेत्रहीन हो, लेकिन तुम्हारे अन्तर के नैनों का जोत बड़ा विलच्छन्न है। हम भेख बदल करके आये और तूँ पहचान लिया? तुम्हारे ज्ञान-नेत्र में दिब्ब-

---

१. राशन। २. जलपान। ३. भात।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जोत है। सो तुम्हारे गाँव में परमारथ का कारज हो रहा है और तुमको मालूम नहीं ? गांधी तो मेरा ही भगत है। गांधी इस गाँव में इसपिताल खोलकर परमारथ का कारज कर रहा है। तुम सारे गाँव को एक भण्डारा दे दो। कहके साहब अन्तरधियान हो गये। हमारी निद्रा भंग हो गयी। सतगुरु के विरह में चित्त चंचल हो गया। विरह अगिन तन कैसे बूझे, गृहवन अन्धकार नहीं सूझे। आखिर, सतगुरु आज्ञा शब्द विचार कर चित्त को शान्त किया।"

महन्थसाहब के सपने की बात तुरन्त गाँव-भर में फैल गयी। बालदेव-हरगौरी संवाद और यादव सेना के अचानक हमले ने गाँव की दलबन्दी को नया जीवन प्रदान कर दिया था। जोतखीजी की राय है, "यादव लोग बार-बार लाठी-भाला दिखाते हैं; राजपूतों के लिए यह डूब मरने की बात है। फौजदारी में यतलाय[1] देकर इन लोगों का मोचिलका करवा लिया जाये। लेकिन सिंघजी थाना-फौजदारी से घबराते हैं। बात-बात में गाली और डेग-डेग पर डाली ! कानूनी-कचहरी की शरण जाना तो अपनी कमजोरी को जाहिर करना है। समय आने पर बदला ले लिया जायेगा। अकेले यादवों की बात रहती तो कोई बात नहीं थी, इसमें कायस्त समाया हुआ है। मरा हुआ कायस्त भी बिसाता है। फिर, वह बदमाशी हरगौरी की ही है। मेरे दरवाजे पर किसी को उठ जाने के लिए कहना, मेरे दरवाजे पर किसी को मारने के लिए उठना, यह तो अच्छी बात नहीं।"

यादवटोली में अब दोपहर से ही ढोल बजने लगता है—ढाक-ढिन्ना ढाक-ढिन्ना ! शोभन मोची को एक नया गमछा और नयी गंजी मिली है। कालीथान के बड़ के पास गाय-भैंस बथान करके दोपहर से ही कुश्ती खेलने लगते हैं यादव सन्तान। बालदेवजी ने जिस दिन अनसन किया था, शाम को खेलावन यादव के दरवाजे पर कीर्तन हुआ था। बालदेवजी का सिखाया हुआ सुराजी कीर्तन 'धन-धन गांधीजी महराज, ऐसा चरखा चलानेवाले' कीर्तन के बाद बालदेवजी ने भैंस का कच्चा दूध पीकर व्रत तोड़ा था। कहते थे, अब हिन्साबात करने से फिर अन-सन करेंगे, अब के दो दिनों का ! सुराजी कीर्तन, लहसन का बेटा सुनरा खूब गाता है। बालदेवजी जब कि फिर उपवास करेंगे तो सुनना। अभी और सीख रहा है।···सिपैहियाटोला में तो अब दिन में ही उल्लू बोलता है। तहसीलदार कह रहे थे—राजपूतों की सिट्टी गुम हो गयी है। हल्दी बोला[2] दिया है। कालीचरन बहादुर है !

इसपिताल के सभी घर बनकर तैयार हो गये हैं। सिर्फ मिट्टी साटना बाकी है। बिरसा माँझी ने कहा है—सन्थालटोली की सभी औरतें आकर मिट्टी लगा देंगी आज। अलबत्त मिट्टी लगाती हैं सन्थालिनें ! पोखता मकान भी मात ! अगले सनिचर को डागडरबाबू आयेंगे। बालदेवजी डिसटीबोट से सभी समान ले आये हैं। भैंसचरमनबाबू ने बालदेवजी से दसखत करा लिया है। भैंसचरमनबाबू जरूर यादव ही होंगे। किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यों होगा—भैंसचरमन-बाबू ! तहसीलदार के यहाँ जाकर देखो—खुरसी, ब्रीन्च, बड़े-बड़े बक्से में दवा,

---

१. इत्तला। २. चित कर देना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाल्टी, कठौत, लोटा। पानी का कल गाड़ा जायेगा, जैसे रौतहट के मेला में गड़ता है।

सनिच्चर को ही महन्थसाहेब का भण्डारा है—पूड़ी-जिलेबी का भोज। सारे गाँव के औरत-मरद बूढ़े-बच्चे और अमीर-गरीब को महन्थसाहेब खिलावेंगे। सपनौती हुआ है।

यादवटोली का किसनू कहता है, "अन्धा महन्त अपने पापों का प्राच्छित कर रहा है। बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता है, वह बाबाजी नहीं। ऊपर बाबाजी भीतर दगाबाजी ! क्या कहते हो ? रखेलिन नहीं, दासिन है ? किसी और को सिखाना। पाँच बरस तक मठ में नौकरी किया है; हमसे बढ़कर और कौन जानेगा मठ की बात ? और कोई देखे या नहीं देखे, ऊपर परमेसर तो है। महन्थ जब लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी, एकदम नादान। एक ही कपड़ा पहनती थी। कहाँ वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध ! रोज रात में लछमी रोती थी—ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाये। हम तो सो नहीं सकते थे। उठकर भैंसों को खोलकर चराने चले जाते थे। रोज सुबह लछमी दूध लेने बथान पर आती थी, उसकी आँखें कदम के फूल की तरह फूली रहती थीं। रात में रोने का कारन पूछने पर चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगती थी···ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी माँ मर गयी हो···! वैसा ही चण्डाल है यह रमदसवा। वह साला भी अन्धा होगा, देख लेना।···महन्थ एक बार चार दिन के लिए पुरैनिया गया था। हमने सोचा कि चार रात तो लछमी चैन से सो सकेगी। ले बलैया। बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुँह में गयी। उसके बाद लछमी ऐसी बीमार पड़ी कि मरते-मरते बची। पाप भला छिपे ? रामदास को मिरगी आने लगी और महन्थ सेवादास सूरदास हो गये। एकदम चौपट !···हमारा तीन साल का दरमाहा बाकी रखा है। भण्डारा करता है ! हम उन लोगों को साधू नहीं समझते हैं।"

महन्थ सेवादास इस इलाके के ज्ञानी साधु समझे जाते थे—सभी सास्तर-पुरान के पण्डित ! मठ पर आकर लोग भूख-प्यास भूल जाते थे। बड़ी पवित्र जगह समझी जाती थी। लेकिन जब महन्थ दासिन को लाया, लोगों की राय बदल गयी। बसुमतिया मठ के महन्थ से इसी दासिन को लेकर कितने लड़ाई-झगड़े और मुकदमे हुए। बसुमतिया का महन्थ कहता था, लछमी दासिन का बाप हमारा गुरु-भाई था, इसलिए बाप के मरने के बाद उस पर मेरा हक है। सेवादास की दलील थी, लछमी का बाप जिस मठ का सेवक था, वह मेरीगंज मठ के अधीन है, इसलिए लछमी पर हमारा अधिकार है। अन्त में लछमी कानूनन सेवादास की ही हुई। सेवादास के वकीलसाहब ने समझाकर कहा था—महन्थसाहब ! इस लड़की को पढ़ा-लिखाकर इसकी शादी करवा दीजिएगा। महन्थ साहब ने वकीलसाहब को विश्वास दिलाया था—वकीलसाहब, लछमी हमारी बेटी की तरह रहेगी।···लेकिन आदमी की मति को क्या कहा जाये ! मठ पर लाते ही किशोरी लछमी को उन्होंने अपनी दासी बना लिया। लछमी अब जवान हुई है, लेकिन लछमी के जवान होने के पहले ही महन्थ सेवादास की आँखें अपनी ज्योति

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खो चुकी थी। पता नहीं, लछमी की जवानी को देखकर उनकी क्या हालत होती ! अब तो महन्थ सेवादास को बहुत लोग प्रणाम-बन्दगी भी नहीं करते।···धर्म-भ्रष्ट हो गया है। बगुलाभगत है। ब्रह्मचारी नहीं, व्यभिचारी है।

पूड़ी-जिलेबी और दही-चीनी के भण्डारे की घोषणा के बाद जनमत बदल रहा है।···कैसा भी हो, आखिर साधु है ! किसने आज तक इतना बड़ा भोज किया ! तहसीलदार ने अपने बाप के श्राद्ध में जाति-बिरादरीवालों को भात और गैर जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था। सिंघजी ने अपनी सास के श्राद्ध में अपनी जाति के लोगों को पूरी-मिठाई और अन्य जाति के लोगों को दही-चूड़ा खिलाया था। खेलावन के यहाँ, पिछले साल, माँ के श्राद्ध में जैसा भोज हुआ सो तो सबों ने देखा ही है। फिर, सारे गाँव के लोगों को, औरत-मरद बच्चों को, आज तक किसने खिलाया है ? चीनी मिलती नहीं। भगमान भगत ने कहा है कि बिलेक में एक बोरा चीनी का दाम है एक नमरी[1]। चार मन चीनी—दो नमरी !

तन्त्रिमा, गहलोत और पोलियाटोली के अधिकांश लोगों ने पूड़ी-जिलेबी कभी चखी भी नहीं। बिरंची एक बार राज की गवाही देने के लिए कचहरी गया था तो तहसीलदार ने पूड़ी-जिलेबी खिलायी थी। गाँव में, न जाने कैसे, यह हल्ला हो गया कि बिरंची ने तहसीलदार का जूठा खाया है।···जनेऊ देने के लिए जाति के पण्डितजी आये थे। बिरंची के सिर पर सात घण्टे तक घैला-सुपाड़ी रखने की सजा दी गयी थी—पाँच सुपारी पर घैला-भर पानी ! जरा भी घैला हिला, एक बूंद भी पानी गिरा कि ऊपर से झाड़ू की मार ! तहसीलदारसाहब क्या कर सकते हैं ! जाति-बिरादरी का मामला है, इसमें वे कुछ नहीं बोल सकते। आखिर पाँच रुपैया जुरमाना और जाति के पण्डितजी को एक जोड़ा धोती देकर बिरंची ने अपना हुक्का-पानी खुलवाया था।···पूड़ी-जिलेबी का स्वाद याद नहीं !

"जीवनदास !"

"बालदेवजी आये हैं। बनगी बालदेवबाबू !"

"बनगी नहीं, जाय हिन्द बोलो, जाय हिन्द !···हाँ जी, इस टोले में कितने लोग हैं, हिसाब करके बताओ तो। औरत-मरद, बच्चों का भी जोड़ना। क्या गिनना नहीं जानते ? बिरंची कहाँ है ?"

बालदेवजी घर-घर घूमकर मर्दुमशुमारी कर रहे हैं। बड़ा झंझट का काम है। सिर्फ पोलियाटोले में सात कोड़ी चार, नहीं···चार कोड़ी सात; ततमाटोली में पूरे पाँच कोड़ी; दुसाधटोली में दो कोड़ी, कोयरीटोले में छः कोड़ी तीन।··· यादवटोली का हिसाब कालीचरन कर रहा है। भगवान जाने, सिपैहियाटोली के लोग इसमें भी मीनमेख निकालकर बखेड़ा न खड़ा कर दें। क्या ठिकाना है ! बाभनों ने तो साफ इनकार कर दिया है। यदि बाभनों के लिए अलग प्रबन्ध न हुआ तो सरब संघटन में नहीं खायेंगे। बाभन-भोजन ही नहीं हुआ तो फिर भोज क्या ! महन्थजी से कहना होगा। बाभन हैं ही कितने, सब मिलाकर दस घर।

---

१. सौ रुपये का नोट।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महन्थसाहब ने सब सुनकर कहा, "सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बाभन लोगों का अलग इन्तजाम कर दो बालदेवबाबू ! इसमें हर्ज ही क्या है ! नहीं हो, तो उन लोगों का प्रबन्ध मठ पर ही कर दो।"

इसी समय लछमी दासिन ने आकर खबर दी, सिपैहियाटोला के लोग भी नहीं खायेंगे। हिबरनसिंघ का वेटा आकर कह गया है, ग्वाला लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खायेंगे। हम लोगों के गाँव का आटा-घी-चीनी अलग दे दिया जाये, हम लोग अलग बनवा लेंगे।"

"सतगुरु हो ! यह तो अच्छा बखेड़ा खड़ा हुआ। अब यादव लोग कहेंगे कि धानुक लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खायेंगे।"

"हिबरनसिंघ के बेटे ने तो यह भी कहा कि बालदेव यदि इन्तजामकार रहेगा तो महन्थसाहेब का भण्डारा भण्डुल होगा।"

"गुरु हो ! गुरु हो !"

"तो महन्थसाहेब, हमारे रहने से लोग विरोध करते हैं तो हम खुसी-खुसी···"

"वाह रे ! यह भी कोई बात है ! महन्थसाहेब, मैं कह देती हूँ, यदि बालदेवजी को छोड़कर और किसी को प्रबन्ध करने का भार दिया तो समझ लीजिए कि भण्डारा चौपट हुआ। मैं इस गाँव के एक-एक आदमी को पहचानती हूँ।"

बालदेव ने पहली बार लछमी की ओर गरदन उठाकर देखने की हिम्मत की। निगाहें ऊपर उठीं और लछमी की बड़ी-बड़ी आँखों में वह खो गया।···आँखों में समा गया बालदेव शायद।

पाँच

मठ पर गाँव-भर के मुखिया लोगों की पंचायत बैठी है। बालदेवजी को आज फिर 'भाखन' देने का मौका मिला है। लेकिन गाँव की पंचायत क्या है, पुरैनिया कचहरी के रामू मोदी की दूकान है। सभी अपनी बात पहले कहना चाहते हैं। सब एक ही साथ बोलना चाहते हैं। बातें बढ़ती जाती हैं और असल सवाल बातों के बवण्डर में दबा जा रहा है। सिंघजी चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, "उस दिन यदि हम घर में रहते तो खून की नदी बह जाती।" कालीचरन चुप रहनेवाला नहीं है, "वाह रे ! दरवाजे पर एक भले आदमी को बेइज्जत करना 'इन्सान' आदमी का काम है?" तहसीलदारसाहब कहते हैं, "अस्पताल तो सबों की भलाई के लिए बन रहा है। इससे सिर्फ हमारा ही फायदा नहीं होगा। ओवरसियरबाबू कह गये थे कि तहसीलदारसाहब जरा मदद दीजिएगा। हम अपने मन से तो अगुआ नहीं बने हैं। तुम्हीं बताओ खिलावन भाई !"

बूढ़े जोतखीजी भविष्यवाणी करते हैं, "कोई माने या नहीं माने, हम कहते

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हैं कि एक दिन इस गाँव में गिद्ध-कौआ उड़ेगा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। गाँव का ग्रह बिगड़ा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा, खून! पुलिस-दारोगा गाँव की गली-गली में घूमेगा। और यह इसपिताल? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब कुएँ में दवा डालकर गाँव में हैजा फैलायेगा तो समझना। शिव हो! शिव हो!"

बालदेव भाखन के लिए उठना चाहता था कि लछमी हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी, "पंच परमेश्वर!"

मानो बिजली की बत्ती जल उठी। सन्नाटा छा गया। सफेद मलमल की साड़ी के खूँट को गले में डालकर लछमी हाथ जोड़े खड़ी है, "पंच परमेश्वर!"

"लछमी," महन्थसाहब शून्य में हाथ फैलाकर टटोलते हुए कहते हैं, "लछमी तुम चुप रहो।"

लछमी रुकी नहीं, कहती गयी, "जोतखीजी ठीक कहते हैं। गाँव के ग्रह अच्छे नहीं। जहाँ छोटी-छोटी बातों को लेकर इस तरह झगड़े होते हैं, जहाँ आपस में मेल-मिलाप नहीं, वहाँ जो कुछ न हो वह थोड़ा है। गाँव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बड़े दोखी हैं। सतगुरुसाहेब कहिन हैं—'जहाँ मेल तहाँ सरग है।' मानुस जन्म बार-बार नहीं मिलता है। मानुस जन्म पाकर हम परमारथ के बदले सोआरथ देखें तो इससे बढ़कर क्या पाप हो सकता है? परमारथ में जो 'बिघिन' डालते हैं वे मानुस नहीं। आप लोग तो सास्तर-पुरान पढ़े हैं, जग्ग भंग करनेवालों को पुरान में क्या कहा है, सो तो जानते ही हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि सब कोई भेद-भाव तेयाग के, एक होकर के परमारथ कारज में सहयोग दीजिए। आप लोग तो जानते हैं—'परमारथ कारज देह धरो यह मानुस जन्म अकारथ जाय।' बस हाथ जोड़कर पंच परमेश्वर से बिनै है, झगड़ा तेयागकर मेल बढ़ाइए। सतगुरुसाहेब गाँव का मंगल करेंगे। आगे आप लोगों की मरजी।"

लछमी बैठ गयी। उसका चेहरा तमतमा गया है, गाल लाल हो गये हैं और कपाल पर पसीने की बूंदें चमक रही हैं। पंचायत में सन्नाटा छाया हुआ है, मानो जादू फिर गया हो। बालदेवजी का भाखन देने का उत्साह कम हो गया है। वह दोहा-कवित नहीं जानता, सास्तर-पुरान भी नहीं पढ़ा है। जेहल में चौधरीजी उसे पढ़ाया करते थे। तीसरा भाग में—'भारी बोझ नमक का लेकर एक गधा दुख पाता था' के पास ही वह पढ़ रहा था कि चौधरीजी की बदली हो गयी। उसी दिन से उसकी पढ़ाई भी बन्द हो गयी। लेकिन···वह जरूर भाखन देगा। उसने लछमी की ओर देखा तो और मानो नशे में उठकर खड़ा हो गया, "पियारे भाइयो!"

"बोलिए एक बार प्रेम से···गन्धी महतमा की जै!" यादवटोली के नौजवानों ने जयजयकार किया।

"पियारे भाइयो! कोठारिनसाहेब जितना बात बोली, सब ठीक है। लेकिन सबसे बड़ा दोखी हम हैं। हमारे कारन ही गाँव में लड़ाई-झगड़ा हो रहा है। हम तो सबों का सेवक हैं। हम कोई बिदमान नहीं हैं, सास्तर-पुरान नहीं पढ़े हैं। गरीब आदमी हैं, मूरख हैं। मगर महतमाजी के परताप से, भारथमाता के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
परताप से, मन में सेवा-भाव जन्म हुआ और हम सेवक का बाना ले लिया। आप लोगों को तो मालूम है, जयमंगलबाबू, जो मेनिस्टर हुए हैं, अपना दस्तखत भी नहीं जानते हैं। बहुत छोटी जात का हैं। वह भी गरीब आदमी थे, मूरख थे। मगर मन में सेवा-भाव था और महतमाजी उसको मेनिस्टर चुन लिये। महतमाजी कहिन है—'बैस्नब जन तो उसे कहते हैं जो पीर पराई जानता है रे !' मोमेन्ट में जब गोरा मलेटरी हमको पकड़ा तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। पानी माँगते थे तो मुँह में पेशाब कर देता था···"

बालदेवजी का 'भाखन' शुरू होते ही पंचायत में फिर कानाफूसी शुरू हो गयी थी। राजपूतटोली के लोग और भी जोर-जोर से बातचीत करने लगे। बालदेव के भाखन के इस रोमांचक अंश ने ज़रा असर किया। मुँह में पेशाब करने की बात सुनते ही पंचायत में फिर सन्नाटा छा गया। बालदेव ने झट अपनी कमीज़ खोल ली, चारों ओर घूमकर पीठ दिखलाते हुए उसने अपना भाखन जारी रखा, "आप लोगों को विसवास नहीं हो तो देख सकते हैं !"

"अरे बाप ! चीता-बाघ की तरह देह हो गया है।···धन्न हैं !"

"देखिए आप लोग," यादवटोली का एक नौजवान कहता है, "हम लोग गांधीजी का जै करते हैं तो आप लोगों के कान में लाल मिर्च की बुकनी पड़ जाती है। देखिए !"

"अरे भाई ! यह सब महतमाजी का परताप है। कौन सह सकता है ? जब गुड़ गंजन सहे तो मिसरी नाम धराये।"

"···लेकिन पियारे भाइयो, हमने भारथमाता का नाम, महतमाजी का नाम लेना बन्द नहीं किया। तब मलेटरी ने हमको नाखन में सूई गड़ाया, तिस पर भी हम इसबिस[1] नहीं किये। आखिर हारकर जेलखाना में डाल दिया। आप लोग तो जानते ही हैं कि सुराजी लोग जेहल को क्या समझते हैं—'जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करन को जायेंगे।' मगर जेहल में अँगरेज सरकार हम लोगों को तरह-तरह की तकलीफ देने लगा। भात में कीड़ा मिला देता था, घास-पात का तरकारी देता था। बस, हम लोगों ने भी अनसन शुरू कर दिया। पियारे भाइयो ! पाँच दिन तक एकदम निरजला अनसन। उसके बाद कलकटर, इसपी, जज, सब आया। माँग पूरा कर दिया, खाने को दूध-हलुआ दिया। हम लोग बोले—दूध-हलुआ अपने बाल-बच्चों को खिलाओ, हम लोगों को बढ़िया चावल दो। सो पियारे भाइयो ! सेवा-वर्त जब हम लिया है तो इसको छोड़ नहीं सकते···। 'अन्धी होकर पुलिस चलावे पर डण्डों का परिवाह नहीं !' आप लोग अपने गाँव में सेवा नहीं करने दीजिएगा, हम चन्नपटी चले जायेंगे। वहाँ आसरम है, घर-घर चरखा-करघा चलता है। घर-घर में औरत-मरद पढ़ते हैं। महतमाजी, जमाहिरलाल, रजीन्नरबाबू और दूसरे बड़े-बड़े लीडर लोग साल में एक बार जरूर आते हैं। चौधरीजी हमको बार-बार खबर भेज देते हैं।···बालदेव अपने गाँव में चले आओ। हम कहे कि चौधरीजी, आप हमारा गुरु हैं, आपका वचन

---

१. चीं-चपड़।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हम नहीं काट सकते। लेकिन अपना गाँव तो उन्नति कर गया है। जो गाँव उन्नति नहीं किया है, हम वहीं सेवा करेंगे।···हम मेरीगंज को चन्नपटी की तरह बनाना चाहते हैं। हम अपने से गाँव में झाड़ू देंगे, मैला साफ करेंगे। हम लोगों का सब किया हुआ है। महतमाजी खुद मैला साफ करते थे। जहाँ सफाई रहती है, वहाँ का आदमी भी साफ रहता है। मन साफ रहता है। साहेब लोगों को देखिए, उनके देस का गाछ-बिरिछ भी साफ रहता है। कोठी के बगीचे में कलस्टर के गाछ को देखिए, एकदम बगला की तरह उजला है। लेकिन, आप लोग हमको नहीं चाहते हैं तो हम चले जायेंगे। आप लोगों को बिसवास नहीं हो, जो पढ़ना जानते हैं, इस चिट्ठी को पढ़ लीजिए कि इसमें क्या लिखा हुआ है। टैप में छापी किया हुआ है। दो साल पहले की चिट्ठी है।"

कौन पढ़ेगा! बड़े मौके से सभी इसकुलिया अंगरेजिया लोग भी घर में ही हैं। पढ़ो जी कोई। खेलावन ने अपने लड़के सकलदीप से कहा, "जाओ पढ़ दो।" लेकिन वह बड़ा शरमीला है। "हरगौरी, पढ़ो जी!"

पासवानटोले के रामचन्दर का भतीजा नेवालाल उठकर खड़ा हुआ, बालदेव के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ने लगा।

"ज़रा ज़ोर से पढ़ो। गला साफ कर लो। थर-थर क्यों काँपते हो?"

"सेवा में, बालदेवसिंहजी। महाशय! आपको विदित हो कि कस्तुरबा स्मारक निधि की एक अस्थायी कमेटी गठन करने के लिए कांग्रेसजनों की एक विशेष बैठक ता० ८-१२-४५ को पूर्णिया धर्मशाला में होगी। इस बैठक में बिहार के भूतपूर्व प्रीमियर भी उपस्थित रहेंगे। इस महत्त्वपूर्ण बैठक में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। आपका, विश्वनाथ चौधरी।"

अरथ भी समझा दो मेवालाल।···अरे नहीं, अरथ क्या समझायेगा! टैप में छापी किये हुए खत का अब अरथ समझायेगा?

चौधरीजी भी बालदेवजी से राय लिये बिना कुछ नहीं करते हैं। यह अपने गाँव का भाग है कि बालदेवजी जैसा हीरा आदमी यहाँ आकर रहते हैं। अपना गाँव भी अब सुधर जायेगा ज़रूर···। सुनो, सिंघजी क्या कहते हैं।

"बालदेव! तुम यहाँ से चले जाओगे तो यह मेरीगंज गाँव का दुरभाग होगा, सरम की बात होगी। गाँव में तो लड़ाई-झगड़े लगे ही रहते हैं। दो हण्डी एक जगह रहे तो ढनमन होना ज़रूरी है। तुम लोगों का काम है, गाँव में मेल-मिलाप बढ़ाना, गाँव की उन्नति करना। इसमें जो बाधा डालता है, वह अधर्मी है। तुम लोग देश के सेवक हो। खल और कुटिल लोगों को सुमारग पर चलाना तुम्हीं लोगों का काम है। गोसाईंजी ने रमैन में पहले खल और कुटिल की ही वन्दना की है। तुम गाँव से मत जाओ। तहसीलदार और हम तो छोटे-बड़े भाई हैं। बचपन से साथ खेले-कूदे, लड़े-झगड़े और फिर मिल गये। आओ जी तहसीलदार भाई, लोग तो हम लोगों के खानदान को बदनाम करते ही हैं कि कायस्थ और राजपूत ने मिलकर महारानी चम्पावती के इस्टेट को ही पार कर दिया। अब हम लोग एक बार फिर मिल जायें।" सिंघजी ने अपना लम्बा-चौड़ा वक्तव्य समाप्त करते हुए पंचायत में बैठे लोगों की ओर देखा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पंचायत में ज़ोर का ठहाका पड़ा। लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। …एकदम 'बभ भोलानाथ' हैं सिंघजी ! मन में कोई सात-पाँच नहीं रखते। सादा दिल के आदमी हैं।

सिंघजी ने तहसीलदार को हाथ पकड़कर उठा लिया। दोनों गले मिलने लगे।

"बोलिए एक बार प्रेम से…गन्ही महतमा की जै !"

"जै ! जै !"

अब भण्डारा जमेगा। दो दिन से तो ऐसा मालूम होता था कि लोगों के पत्तल में परोसी हुई पूड़ी-जिलेबी अब गयी तब गयी।…उस दिन कीर्तन और नाच करेंगे।…अगमू चौकीदार क्या कहता था, महतमाजी का झण्डा पत्तखा नहीं उड़ाना होगा, वह मार खायेगा अब। उसको कहो, अपने नाना दारोगा साहेब से पूछे कि राज किसका है। अनसन करने से लाट, हाकिम, कलट्टर सब डर जाता है।

सारी पंचायत में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके ऊपर मेल-मिलाप की खुशी का उलटा असर हुआ है। खेलावनसिंह यादव को सिंघ ने जिस चालाकी से एक किनारे किया है, इसे कोई नहीं समझ पाये, लेकिन खेलावन ने सब समझ लिया। खेलावन की चर्चा भी नहीं की सिंघ ने। और इस तहसीलदार को तो देखो, तुरत गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। लड़ाई-झगड़ा यादवटोली से था और गले मिले तहसीलदारजी। खेलावन को सठवरसा[1] नहीं समझना। सब चालाकी समझते हैं। दुनिया की ज्ञान-गुदड़ी बघारता है बालदेव, मगर इतना भी समझ में नहीं आया कि सिंघ तहसीलदार से क्यों मिल रहा है। मेल-मिलाप तो यादवटोली के मुखिया से होना चाहिए। सुराजी होने से क्या हुआ, जात सुभाव नहीं छूटते। इतना मान-आदर से अपने यहाँ रखते हैं, खिलाते-पिलाते हैं और समय पड़ने पर सब धान बाईस पसेरी !

जोतखीजी खेलावन के चेहरे को देखकर ही सब-कुछ समझ लेते हैं। मोटी चमड़ी पर असर हुआ है ! "खेलावनबाबू, सकलदीप बबुआ की जन्मपत्री काशीजी से बनकर आ गयी क्या ? जरा एक बार हम भी देखते। आज तक हम जो गणना किये हैं उसको काशी के पण्डितों ने भी कभी नहीं काटा।"

"कल सुबह में आइएगा जोतखी काका ! आप तो बहुत दिन से आये भी नहीं हैं। सकलदीप तो हायस्कूल में संसकिरत भी पढ़ता है। ज़रा आकर देखिएगा तो संसकिरत में उसका जेहन कैसा है ?"

ठीक दोपहर से पंचायत की बैठक शुरू हुई, शाम को खतम हुई। बहुत दिन बाद गाँव-भर के लोग पंचायत में बैठे थे। बहुत दिन बाद फिर मेल-मिलाप हुआ।

कल ही भण्डारा है। सुबह से ही इसपिताल के सामने की जमीन को साफ़ करके जाफरा से घेरना होगा, शामियाना टाँगना होगा, सजाना होगा। हलवाई लोग सुबह से ही आ जायेंगे। आजकल दिन छोटा होता है। बिजै होते-होते शाम

---

१. साठ वर्ष तक नाबालिग रहनेवाला।

Funding by IKS-MoE

BVBSSMV
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हो जायेगी। डाक्टरसाहब को लाने के लिए चार बैलगाड़ियाँ जायेंगी टीशन—मैंसचरमनबाबू ने बालदेवजी से कहा है। कल भोर को ही इसपिताल में सब-कोई जमा होंगे; काम का बँटवारा होगा। इतने बड़े भोज को सँभालना खेल नहीं।

सभी बारी बारी से महन्थ साहब को साहेब-वन्दगी करके विदा हुए। बालदेवजी को महन्थसाहब ने रोक लिया है। "बालदेवबाबू, तुम जरा ठहर जाना। कल फिर समय नहीं मिलेगा। अभी एक बार हिसाब-किताब कर लेना अच्छा होगा। थोड़ी देर बैठ के बीजक बाँचो, हम डोलडाल[1] से हो आयें। कहाँ हो रामदास? गंगासागर में जल भर दो!"

बालदेव धुनी के पास बैठकर बीजक के पन्ने उलटता है—

···बीजक बतावे बित्त को
जो बित्त गुप्ते होय,
शब्द बतावे जीव को
बूझे बिरला कोय ।।

लछमी लालटेन जलाकर सामने रख गयी। अक्षर स्पष्ट हो गये—'सन्तो, सारे जग बौराने।'···लछमी के शरीर से एक खास तरह की सुगन्ध निकलती है। पंचायत में लछमी बालदेव के पास ही बैठी थी। बालदेव को रामनगर मेला के दुर्गा मन्दिर की तरह गन्ध लगती है—मनोहर सुगन्ध! पवित्र गन्ध! ···औरतों के देह से तो हल्दी, लहसुन, प्याज और घाम की गन्ध निकलती है!

छः

बालदेवजी को रात में नींद नहीं आती है।

मठ से लौटने में देर हो गयी थी। लौटकर सुना, खेलावन भैया की तबियत खराब है; आँगन में सोये हैं। यदि कोई आँगन में सोया रहे तो समझ लेना चाहिए कि तबियत खराब हुई है, बुखार हुआ है या सरदी लगी है अथवा सिर दर्द कर रहा है। जिसको आँगनवाली[2] ही नहीं वह आँगन में क्यों सोयेगा? आँगन में सोने का अर्थ है आँगनवाली के हाथों की सेवा प्राप्त करना। खाने के समय भौजी से मालूम हुआ, पेट में बाय हो गया है। कड़वा तेल लगाकर पेट ससारते समय गों-गों बोलता था।

भौजी भी बहुत अनमनी थी। और दिनों की तरह बैठकर बातें नहीं कीं भौजी ने। भौजी बोरसी[3] के पास बैठकर हुक्का पीती रहती थी, बालदेव जेल की गप सुनाता रहता। बालदेवजी आज पंचायत की गप भौजी को सुनाते, लेकिन आज गप जमाने का लच्छन नहीं देखकर बालदेवजी सोने चले आये।

---

१. नित्य-क्रिया। २. पत्नी। ३. अंगीठी।

Funding by IKS-MoE
1294

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
···नींद नहीं आती है। जेल का बी० टी० कम्बल आज बड़ा गड़ रहा है। खद्दर की धोती मैली हो जाने पर बहुत ठण्डी हो जाती है।···बार-बार लछमी दासिन की याद आती है। आते समय कह रही थी—आज यहीं परसाद पा लीजिए बालदेवजी !···परसाद ! लछमी के शरीर की सुगन्ध !···आज माँ की भी याद आती है। गाँव के लोग बालदेव को 'टुरवा' कहते थे। सुनकर माँ बहुत गुस्सा होती थी। बाप के मरने से कोई टूअर[1] नहीं होता। बाप मरे तो कुमर, माँ मरे तब टूअर ! मेरा बालदेव तो कुमर है; मेरा बालदेव टूअर नहीं। ऐसा लगता है, माँ ने अभी तुरत ही पीठ सहलायी है।

माँ के मरने के बाद, बालदेव बहुत दिन तक अजोधी भगत की भैंस चराता था। अजोधी भगत की याद आते ही बालदेव का देह सिहर उठता है। कैसा पिशाच था बुड्ढा ! बूढ़ी तो और भी खटाँस थी; खेकसियारी[2] की तरह हरदम खेंक-खेंक करती रहती थी। दिन-भर भैंस चराकर आने के बाद बालदेव की उँगलियाँ भगत का देह टीपते-टीपते दर्द करने लगती थीं। आँखें नींद से वन्द हो जाती थीं। लेकिन ज़रा भी ऊँघे कि चटाक्। उस बूढ़े की उँगलियों की चोट बड़ी कड़ी होती थी। बालदेव ने वचपन से ही मार खायी है—थप्पड़, छड़ी और लाठी की मार। शायद सूखी चमड़ी की चोट ज्यादा लगती है।···लेकिन रूपमती का कलेजा मोम का था। वैसे वेदर्द माँ-बाप की बेटी वैसी दयालु कैसे हुई, समझ में नहीं आता है। बूढ़े-बूढ़ी को रात में नींद नहीं आती थी। आध पहर रात को ही भैंस चराने के लिए जगा देता था। आध पहर रात होते ही पीपल के पेड़ पर उल्लू अपनी मनहूस वोली में कचकचा उठता था और इधर बूढ़ा ठीक उसी तरह की आवाज में चिल्ला उठता, "रे टुरवा, भोर हो गयी, भैंस खोल !"···रूपमती कभी 'टुरवा' नहीं कहती थी। छोटा-सा नाम 'वल्ली' उसी का दिया हुआ है। चार सेर सुबह और तीन सेर शाम को दूध होता था, लेकिन बुढ़िया कभी सितुआ-भर घोल भी नहीं खाने देती थी। रूपमती रोज चुराकर भात के नीचे दूध की छाली रख देती थी। बूढ़ा-बूढ़ी का जमाया हुआ पैसा आखिर डकैत ही ले गये। ···इस बार रूपमती को देखा था। वहुत दिन वाद ससुराल से आयी थी। तीन बच्चे हैं, बड़ी बेटी ठीक रूपमती जैसी है। ठीक वैसी ही हँसी !

···याद आती है मायेजी की ! मायेजी—रामकिसूनबाबू की इसतिरी ! पहले-पहल सभा हुई थी चन्ननपटी में। सभा में रामकिसूनबाबू, उनकी इसतिरी, चौधरीजी और तैवारीजी आये थे।···अलबत्त रूप था रामकिसूनबाबू का ! बड़ी-बड़ी आँखें ! भाखन देते थे, जैसे बाघ गरजे ! सुनते हैं, जब वोकालत करते थे तो बहस करने के समय पुरानी कचहरी की छत से पलस्तर झड़ने लगता था। क्या मजाल की हाकिम उनके खिलाफ राय दे दें ! लेकिन महतमाजी का उपदेश सुनकर एक ही दिन में सब-कुछ छोड़-छाड़ दिया। इसतिरी के साथ गाँव-गाँव घूमने लगे। मायेजी के पाँव की चमड़ी फट गयी थी। लहू से पैर लथपथ हो गये थे। लाल उड़हूल ? मायेजी का दुख देखकर, रामकिसूनबाबू का भाखन सुनकर

---

१. अनाथ। २. लोमड़ी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और तँवारीजी का गीत सुनकर वह अपने को रोक नहीं सका था। कौन सँभाल सकता था उस टान को ! लगता था, कोई खींच रहा हो। "···गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर वही। फूटल भारथिया के भाग भारथमाता रोई रही।" ···मायेजी के पाँव की चमड़ी फट गयी थी, भारथमाता रो रही थी। वह उसी समय रामकिसूनबाबू के पास जाकर बोला था—"मेरा नाम सुराजी में लिख लीजिए।" उस दिन की सभा में तीन आदमियों ने नाम लिखाया था—बालदेव, बावनदास और चुन्नी गुसाईं। चौधरीजी उसे ज़िला आॅफ़िस में ले आये थे। मायेजी बराबर आॅफ़िस आती थीं। कभी गुस्सा होते नहीं देखा मायेजी को; जब बोलती थीं तो हँसकर। एक बार देहात से लौटते समय उसको बुखार हो गया था, देह जल रहा था, सिर फटा जा रहा था, कोई होश नहीं। रात में, आँख खुली तो जी बड़ा हल्का मालूम हुआ। "कैसे हो बालदेव भाई ?" कौन बावन ? गरदन उलटाकर देखा, मायेजी पास ही कुरसी पर बैठी हुई हैं। "कैसे हो बोलो ? बुखार था तो देहात क्यों गया था ?···सोओ···।" माथे पर हाथ रखते हुए मायेजी बोली थीं, "बुखार उतर गया है।" मायेजी के हाथ रखते ही नींद आ गयी थी। दूसरे दिन बावनदास ने कहा, "मायेजी को जैसे ही मालूम हुआ कि तुमको बुखार है, वैसे ही मुझे लेकर आॅफ़िस आयीं। जन्तर[1] लगाकर बुखार देखते ही चिल्लाने लगीं—'पानी लाओ। पंखा दो।' उसी समय से माथे पर पानी की पट्टी देती रहीं, बारह बजे रात तक।"···भगवान भी कैसे हैं, अच्छे आदमी को ही अपने पास बुला लेते हैं। दो-तीन साल के बाद ही रामकिसून-बाबू, एक ही दिन के बुखार में सरगवास हो गये। हे भगवान ! उस दिन मायेजी की ओर कौन देख सकता था ! देखने की हिम्मत नहीं होती थी। मायेजी का उस दिन का रूप···'गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर वही। फूटल भारथिया के भाग भारथमाता रोई रही !···' सचमुच सबों के भाग फूट गये। सराध के दिन से जिला आॅफ़िस का नाम हो गया 'रामकिसून आसरम'। सराध के दूसरे दिन ही मायेजी कासीजी चली गयीं। गाड़ी पर चढ़ने के समय, पैर छूकर जब परनाम करने लगा था तो मायेजी एकदम फूट-फूटकर रो पड़ी थीं—ठीक देहाती औरतों की तरह। बावनदास को मायेजी 'ठाकुर' कहती थीं, 'हामार ठाकुर रे !' धरती पर लोटते हुए बावनदास को उठाते हुए मायेजी बोली थीं, "महतमाजी पर भरोसा रखो। वह सब भला करेंगे। महतमाजी का रास्ता कभी मत छोड़ना।"···पता नहीं मायेजी कहाँ हैं !

आँसू की गरम बूँदें बालदेव की बाँह पर ढुलककर गिरीं। माँ, रूपमती, मायेजी और लछमी दासिन ! मायेजी जैसा ही लछमी भी भाखन देना जानती है। लछमी भाखन दे रही है।···

···विशाल सभा ! जहाँ तक नजर जाती है आदमी-ही-आदमी दिखायी पड़ते हैं। बाँस के घेरे को तोड़कर लोग मंच की ओर बढ़े आ रहे हैं। मंच पर बालदेव के बगल में लछमी बैठी हुई है। लछमी के भी पैर की चमड़ी फट गयी

---

१. थर्मामीटर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। मंच की सुफेद चद्दर पर लहू की बूँदें टप-टप गिर रही है।···लछमी भाखन दे रही है। कौन, हरगौरी ? हरगौरी लछमी के गले में माला डालने के लिए आगे बढ़ रहा है। लछमी माला नहीं पहनती है। माला लेकर बालदेव को पहना देती है—गेंदे के फूलों की माला ! फूल से लछमी के शरीर की सुगन्धी निकलती है !···भीड़ मंच की ओर बढ़ी जाती है। हरगौरी आगे बढ़ आया है, लछमी को पकड़ रहा है।···बालदेव चिल्ला रहा है, लेकिन आवाज़ नहीं निकल रही है। लोग हल्ला कर रहे हैं। बहुत ज़ोर लगाकर बालदेव चिल्लाता है—"हरगौरीबाबू !"

'गन्ही महातमा की जै !'

'जै !'

बालदेव हड़बड़ाकर उठता है; आँखें मलते हुए बाहर निकल आता है। सबेरा हो गया है। गाँव-भर के नौजवानों को बटोरकर, जुलूस बनाकर, कालीचरन जयजयकार करता हुआ जा रहा है। वाह रे कालीचरन ! बुद्धिमान है, बहादुर भी है और बुद्धिमान भी। यह पुलोगराम कब बनाया था ? रात में ही शायद !···ज़रूर मेरीगंज भी चन्ननपटी की तरह नाम करेगा। और भोर का सपना ?

"खेलावन भैया, कैसी तबियत है ?"

"तुम रात में कब लौटे ? कहाँ देर हुई, सिपैहियाटोली में ? कायस्थ-राजपूत की जोड़ी मिल गयी, अब क्या है, सुराज हो गया ! लेकिन भाई बालदेव, हम ठहरे सीधे-सादे आदमी। कलिया पर नज़र रखना। उसमें और भी बहुत गुन हैं, सो तो तुमको मालूम ही हो जायेगा। किसी किस्म का उपद्रो करेगा तो हम जिम्मेवार नहीं हैं। पीछे यादवटोली के मुखिया के ऊपर बात नहीं आवे। हाँ भाई, कायस्थ और राजपूत का क्या बिसवास ?"

खेलावन किसके ऊपर अपने दिल का बुखार उतारे, समझ नहीं पा रहा था। भैंस-चरवाहा भैंस दूहने के लिए बरतन ले आया था। खेलावन आज भी अपने ही हाथों भैंस दूहता है। उसका कहना है, 'भैंस के थन में चार आदमी के हाथ लगे कि भैंस सूखी।' चरवाहा पर बिगड़ पड़ा, "साला ! अभी भैंस थिरायी भी नहीं है, दूहने के लिए हल्ला मचा रहा है ! पूड़ी-जिलेबी क्या अभी ही बँट रही है ? जीभ से पानी गिर रहा है !···परनाम जोतखी काका !"

जोतखीजी कान पर जनेऊ टाँगे, हाथ में लोटा लटकाये इनारे की ओर जा रहे थे। खेलावन ने टोका, "आइए, यहीं पानी मँगवा देते हैं।"

"खेलावनबाबू, गाँव में तो सुराज हो गया, देखते हैं। अच्छा-अच्छा ! देखिएगा गाँव के लौण्डे सब आज फुच्च-फुच्च कर रहे हैं। 'छुद्र नदी चलि भरी उतराई, जस थोरे धन खल बौराई।' ऐसा ही सिमरबनी में भी हुआ था। हमारे मामा का घर सिमरबनी में ही है। आज से दस-बारह साल पहले की बात कहते हैं। हम मामा के यहाँ गये थे। मामा के बड़े पुत्र का जग्योपवित था। प्रातःकाल उठके देखते हैं कि गाँव-भर के लौण्डे इसी झण्डा-पत्तखा लेकर 'इनकिलास जिन्दबाध' करते हुए गाँव में घूम रहे हैं। मामा से पूछा कि 'मामा बात क्या है ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
तो मामा बोले कि गाँव के सभी लड़कों ने भोलटियरी में नाम लिखा लिया है। 'इनकिलास जिन्दाबाघ' का अर्थ है कि हम जिन्दा बाघ हैं।···जिन्दा बाघ भी उसी शाम को देखा। इस्कूल से पच्छिमी कंगरेसी तँवारी नीमक कानून बनानेवाला था। बड़े-बड़े चूल्हे पर, कड़ाहियों में चिकनी मिट्टी और पानी डालकर खौला रहे हैं। खूब गीत-नाद, झण्डा-पत्तखा! पूछा कि यह क्या है भाई, तो कहा कि नीमक कानून बन रहा है। हम भी खड़ा होकर तमाशा देखने लगे। इसी समय हल्ला हुआ, दारोगा आ रहा है। इस्कूल के हाता से एक टोपावाला और चार-पाँच लाल पगड़ीवाला निकला! बस, फिर क्या था, जिन्दा बाघ आ गया; जो जिस मुँह से खड़ा था, उधर ही भागा। एक दूसरे के ऊपर गिर रहा है। कहाँ झण्डा, कहाँ पत्तखा और कहाँ इनकिलास ज़िन्दाबाघ! दारोगा साहब तँवारी को पकड़कर ले गये। इसके बाद गाँव के घर-घर में घुसकर खन्नातलासी! गाँव के सभी जिन्दाबाघ माँद में घुस गये। सुनने में आया कि जब कंगरेसी राज हुआ तो फिर घर-घर में भोलटियर घरघराने लगा। फिर इनकिलास जिन्दाबाघ! पुलिस-दारोगा को देखकर और जोर से चिल्लाते थे सब। लो भाई, चिल्लाओ, तुम्हारा राज है अभी! पुलिस-दारोगा मन-ही-मन गुस्सा पीकर रह गये। पिछले मोमेंट में जिन्दाबाघों ने जोस में आकर अड़गड़ा जला दिया, कलाली लूट लिया। दूसरे ही दिन चार लौरी में भरके गोरा मलेटरी आया और सारे गाँव को जला-पका, लूट-पीटकर एक ही घण्टा में ठण्डा कर दिया। पचास आदमी को गिरिफ्फ किया। दो को तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। एक को कीरीच भोंक दिया। अंग्रेज बहादुर से यही दुग्गी-तिग्गी लोग पार पायेंगे। बड़ा-बड़ा घोड़ा बहा जाये तो नटघोड़ी पूछे कितना पानी! अंग्रेज बहादुर ने अभी फिर ढील दे दिया है। सब उछल-कूद रहे हैं। इस बार बिगड़ेगा तो खोपसहित कबूतराय···।"

"नहीं जोतखी काका, अब वैसा नहीं हो सकता," बालदेव इससे आगे नहीं सुन सका, "पिछले मोमेंट में सरकार का छक्का छूट गया है। सिमरबनी के बारे में आप जो कह रहे हैं सो आप इधर सिमरबनी गये हैं? नहीं। तब क्या देखिएगा! एक बार वहाँ जाकर देखिए—इसपिताल, इस्कूल, लड़की-इस्कूल, चरखा सण्टर, रायबरेली, क्या नहीं है वहाँ? घर-घर में ए-बी-सी-डी पास! सिवानन्दबाबू को जानते हैं? उनका बेटा रमानन्द हम लोगों के साथ जेहल में था; अब हाकिम हो जायेगा। पक्की बात!"

खेलावन भी कुछ कहना चाहता था कि चरवाहे ने पुकारा, "पाँड़ा भैंस पी रहा है।"

खेलावन भैंस दूहने चला गया। बालदेव के पास बेकार बहस करने के लिए समय नहीं है। गाँव में जयजयकार हो रहा है—'गन्ही महतमा की जै!'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सात

प्यारू को सबों ने चारों ग्रोर से घेर लिया। डागडरसाहेब का नौकर है। डागडरसाहेब कब तक आयेंगे ? तुम्हारा क्या नाम है ? कौन जात ? दुसाध मत कहो, गहलोत बोलो गहलोत ! जनेऊ नहीं है ?

बालदेवजी प्यारू को भीड़ से बाहर ले आते हैं। "भाई, तुम लोगों ने आदमी नहीं देखा है कभी ? जाओ, अपना काम देखो ! हलवाईजी लोगों के पास कौन है ?"

बालदेवजी सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं। रामकिसून आसरम में लीडर लोग इसी तरह सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं—'ड्राइवरजी', 'ठेकेदारजी', 'हरिजनजी' !

पूछताछ के बाद मालूम हुआ, प्यारू डागडरसाहेब के पास नौकरी करने आया है। रौतहट टीसन में जो हेमापोथी डागडरसाहेब थे, प्यारू उनके यहाँ पाँच साल नौकरी कर चुका है। डागडरसाहेब देश चले गये। सुना कि मेरीगंज में एक डागडरबाबू आ रहे हैं। सो प्यारू डागडरबाबू के पास नौकरी करने आया है।

चूड़ा-गूड़ का जलखै[1] करके प्यारू बालदेवजी से कहता है, "डागडरबाबू का सामान कहाँ है ? टेबल-कुरसी लगाना होगा। अलमारी को झाड़ना-पोछना होगा। पानी के ढोल के पास एक बोल[2] रखना होगा, एक साबुन और एक गमछा। डागडरबाबू आते ही पहले साबुन से हाथ धोयेंगे।···"

सचमुच प्यारू डाक्टर का पुराना नौकर है। टेबल-कुरसी ठीक से लगा दिया है। तीन पैरवाली लोहे की सीढ़ी पर पानी का ढोल रख दिया; सीढ़ी में ही लगी हुई गोल कड़ी में ललमुनियाँ[3] का कठौत बिठा दिया है। ढोल में कल लगा हुआ है। कल टीपने से पानी गिरने लगता है। बक्से से गमछा निकालकर वहीं लटका दिया है। खस्सी-बकरी की अँतड़ी का भीतरी हिस्सा जैसा रोयाँदार होता है, वैसा ही गमछा है। साबुन ? साबुन नहीं है ? अरे, कपड़ा धोनेवाला साबुन नहीं, गमकौआ साबुन चाहिए। भगत की दूकान में गमकौआ साबुन कहाँ से आवेगा ? कटिहार में मिलता है। तहसीलदारसाहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है। तहसीलदार-साहब कहते हैं, कमली दीदी से साबुन माँगकर ला दो।···सचमुच प्यारू पुराना डागडरी नौकर है। बड़े मौके से वह आ गया, नहीं तो इतना इन्तज़ाम कौन करता ? बेला झुक गया है, अब डागडरबाबू भी आ जायेंगे। तहसीलदारसाहब कहते हैं, "भुरकुवा उगने के पहले ही बैलगाड़ियों को रवाना कर दिया है। साथ में गया है अगमू चौकीदार।"

सारा गाँव महक रहा है। मेले में ठीक ऐसी ही महक रहती है। तहसीलदार-साहब के गुहाल में हलवाई लोग सुबह से ही पूड़ी-जिलेबी बना रहे हैं। पूड़ी बना-कर ढेर लगा दिया है। गाँव के बच्चे सुबह से ही जमा हैं। राजपूत और कायस्थों

---

१. जलपान। २. कठौत। ३. अलमुनियम।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं जाने देते हैं—"भागो, छू जायेगा !"

सिंघजी खुद जाकर खेलावनसिंह यादव को पकड़ लाते हैं। "तहसीलदार, देखो, इसके पेट में बाय उखड़ गया है। भोज खाने के पहले ही अन्नसर्जी हो गयी है। अरे भाई, औरतों की तरह रूठने से क्या फ़ायदा ! तुम्हीं कहो तहसीलदार, हम ठीक कहते हैं या नहीं ! लड़ो, झगड़ो और फिर गले-गले मिलो। यह रूठने का क्या माने ? हमको तो बालदेव से मालूम हुआ। जाकर देखा तो कागभुसुण्डी इसके कान में मन्तर पढ़ रहा है।···ऐ बालदेव, सुनो, डागडरसाहेब आयें तो पहले इसी का इलाज कराओ। कहना कि आठवाँ महीना है···।"

हा हा हा हा हा···हा···हा !

"रामकिरपाल भाई, लड़कों के सामने भी आप दिल्लगी करते हैं ? अच्छा हाथ छोड़िए। सब कोई तो हैं ही, सिर्फ हमारे नहीं रहने से कौन काम हरज हो रहा था ?"

सिंघजी मज़ेदार आदमी हैं। सुबह से ही सबों को हँसा रहे हैं। खेलावन यादव रूठे थे, उसको भी पकड़ लाये। जोतखीजी नहीं आये। बोले, दाँत में दर्द है। सिंघजी कहते हैं, "पता नहीं उनके पेट के दाँत में दरद है शायद। सुनते हैं आजकल डागडर लोग पत्थर का नकली दाँत लगा देते हैं। डागडरसाहेब से कह-कर जोतखीजी का दाँत बनवा दो भाई ! अजी, सभागाछी[1] में लड़कीवाले दाँत को हिला-डुलाकर देखते हैं थोड़ो !"

"डागडरसाहेब आ रहे हैं।"

"आ रहे हैं ? कहाँ ?"

"पछियारीटोला के पास पाँचों बैलगाड़ियाँ आ रही हैं। अगमू चौकीदार आगे-आगे दौड़ता हुआ आ रहा है। डागडरसाहेब टोपा पहने हुए हैं।"

अगमू आ गया। "कन्धे पर क्या है, बक्सा ?"

कामकाज छोड़कर सभी जमा हो गये—डाक्टरसाहब आ रहे हैं।

"हँट जाइए !" अगमू कहता है, "डागडरसाहब बोले हैं, इन्तजाम से रखना। ठेस नहीं लगे। बेतार का खबर है।"

बालदेवजी कहते हैं, "रेडी[2] है या रेडा ! अब सुनिएगा रोज बम्बै-कलकत्ता का गाना। महतमाजी का खबर, पटुआ का भाव सब आयेगा इसमें। तार में ठेस लगते ही गुस्साकर बोलेगा—बेकूफ। बिना मुँह धोये पास में बैठते ही तुरत कहेगा—क्या आपने आज मुंह नहीं धोया है ?"

"जुलुम बात !"

डाकडरसाहेब !

सभी हाथ जोड़कर खड़े हैं। डाक्टरसाहब भी हँसते हुए हाथ जोड़ते हैं। बालदेवजी 'जाय हिन्द' कहते हैं। देखादेखी कलिया भी आजकल 'जाय हिन्द' कहता है। प्यारू शामियाने में कुर्सी लाकर रखता है; डाक्टरसाहब के हाथ से टोप ले लेता है। डाक्टरसाहब के चेहरे का रंग एकदम लाल है। 'लालटेस' !

---

१. विवाहार्थी मैथिलों का मेला। २. रेडियो।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोंछ नहीं है क्या ? नहीं, मोंछ सफाचट कटाये हैं ।

बालदेवजी हाथ जोड़कर पूछते हैं, रास्ते में कहीं तकलीफ तो नहीं हुई ? …सब तैयार है, भोजन कर लिया जाये। इनका नाम विश्वनाथपरसाद है, राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। इनका नाम रामकिरपालसिंघ है, सिपै…राज-पूतटोली के मालिक हैं। इनका नाम खेलावनसिंह यादव है, यादव छत्रीटोले के 'मड़र' हैं। इसका नाम कालीचरन है, बड़ा बहादुर लौजमान है। और ये लोग 'इसकुलिया' हैं।…आइए बाबू साहब, आप लोग डागडरसाहेब से बतियाइए। इस गाँव के महन्थसाहेब ने इसपिताल होने की खुशी में गाँववालों को आज भण्डारा दिया है।"

डाक्टरसाहब हाथ जोड़कर सबों को फिर नमस्कार करते हैं। कहते हैं, "हम अभी नहीं खायेंगे। सबको खिलाइए !"

सचमुच प्यारू पुराना नौकर है। देखो, डागडरबाबू ने सबसे पहले साबुन से हाथ धोया।

मठ से महन्थसाहेब, कोठारिन लछमी दासिन, रामदास और दो मुरती आये हैं। महन्थसाहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधु तुरही फूंकता हुआ आ रहा है। धु तु तु तु ऽऽ…धु तु तु ! और तुरही की आवाज़ सुनते ही गाँव के कुत्ते दल बाँधकर भोंकना शुरू कर देते हैं। छोटे-छोटे नवजात पिल्ले तो भोंकते-भोंकते परेशान हैं। नया-नया भोंकना सीखा है न !

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ायी जाती है। इसके बाद कोठी के जंगल की ओर दो पूड़ियाँ फेंक दी जाती हैं, जंगल के देव-देवी और भूत-पिशाच के लिए। इसके बाद साधु और बाभन भोजन ! बालदेवजी ने बहुत कहा, लेकिन डाक्टरसाहब नहीं माने। प्यारू ठीक कहता था, डागडर लोग हलवाई की बनाई हुई पूड़ी-जिलेबी नहीं खाते हैं। 'कल के चूल्हे' पर प्यारू डागडरबाबू के लिए भात बना रहा है। जल्दी से बिजे[1] खत्म हो तो बेतार के खबर का गाना सुनें। क्या ? आज गाना नहीं होगा ? हाँ भाई, कल-कब्जा की बात है। इतना जल्दी कैसे होगा ! फिर कटिहार जंकशन में रेलगाड़ियों और मिलों का अभी इतना शोरगुल होता होगा कि यहाँ तक खबर आ भी नहीं सकेगी।

"बिझै ! बिझै !"

"हर टोले के लोग अलग-अलग पंगत में बैठो। अपने-अपने बगल में एक फाजिल पत्ता लगा देना भाई ! अपने-अपने घर की जनाना लोगों के लिए। कम बेस नहीं।…"

गुअरटोली के रौदी बूढ़ा को सभी मिलकर चिढ़ा रहे हैं। रौदी गोप गाँव-गाँव में घूमकर दही बेचता है। उसका चाल-चलन, उसकी बोली-बानी सब-कुछ औरतों जैसी है। सिर और छाती पर से कपड़ा जरा-सा भी सरक जाने पर, औरतों की तरह लजाकर ठीक कर लेता है। मर्दों से बातें करने के समय लजाता है, औरतें उसके सामने किसी भी किस्म का पर्दा नहीं करतीं। हाट जाते और

---

१. खाना-पीना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
लौटते समय वह औरतों के झुण्ड में ही रहता है।...अभी सब मिलकर रौदी बूढ़ा को चिढ़ा रहे हैं—"तुम्हारा हिस्सा आँगन में भेज दिया जायेगा। देखो, लालचन ने तुम्हारा पत्ता लगा दिया है।"

"दुर ! मुँहझौंसे ! बूढ़े-पुराने से हँसी-दिल्लगी करते लाज नहीं आती ? हम पूछते हैं तुम लोगों से, कि तुम लोग अपनी बूढ़ी दादी और नानी से भी इसी तरह हँसी-मसखरी करते हो ? इस गाँव के लौण्डे-छौंड़े बिगड़ गये हैं। और सारा दोख इसी सिंघवा का है। जहाँ बूढ़े ही बदचाल हों तो लौण्डों का क्या हाल ! हम कह देते हैं, हाँ, सुन रखो ! हाँ।..."

महन्थसाहब रात में भोजन नहीं करते हैं।

"सतगुरु हो ! डाःगडरसाहेब, आपको कितना मुसहरा मिलता है ? दो सौ ?...हाँ, यहाँ ऊपरी आमदनी भी होगी ! असल आमदनी तो ऊपरी आमदनी है।...बहुत अच्छा हुआ।...गांधीजी तो अवतारी पुरुख हैं।...डागडरसाहेब ! आज से करीब पाँच साल पहले एक बार हमारी आँखें आयीं, उसके बाद दो महीने तक आँखों में लाली छायी रही। पुरनियाँ के सिविलसार्जन साहेब को पचास रुपैया फीस देकर दिखलाया। बहुत दिनों तक इलाज भी करवाया। मगर बेकार। अब तो आप आ गये हैं। अपने घर के डागडर हुए !..."

लछमी दासिन टकटकी लगाकर डाक्टरसाहब को देख रही है।...कितना सुन्दर पुरुष है ! बेचारे का इस देहात में मन नहीं लग रहा है। नौकरी कोई भी हो, आखिर नौकरी ही है। मन घर पर टँगा हुआ होगा। बीवी-बच्चों की याद आती होगी।...कुछ दिनों में मन लग जायेगा। फिर बाल-बच्चों को भी ले आवेंगे। अचानक वह पूछ बैठती है, "आपके घर पर और कौन-कौन हैं डाक्टरबाबू ?"

"जी," डाक्टर ने ज़रा हकलाते हुए कहा, "जी, मेरा कोई नहीं। माँ-बाप बचपन में ही गुज़र गये।"

लछमी समझ लेती है कि यह सवाल पूछना उचित नहीं हुआ। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा प्रश्न किया ही क्यों !...मेरा कोई नहीं !

"लछमी ! रामदास को बुलाओ। अच्छा तो डागडरबाबू, अब आज्ञा दीजिए। आप भी भोजन करके आराम कीजिए। कभी मठ की ओर भी आइएगा। सतगुरुसाहेब कहीन हैं—'दरस परस सतसंग ते छूटे मन का मैल' !"

लछमी हाथ जोड़कर नमस्कार करती है।

ब्राह्मणटोली के लोग बालदेवजी से पूछते हैं, "डागडरबाबू का नौकर तो दुसाध है। और डागडरबाबू कौन जात हैं ? दुसाध का बनाया हुआ खाते हैं ?"

बोलिए प्रेम से...महतमा गन्ही की जै !

भण्डारा समाप्त हो गया। कोई 'तरुटी नहीं हुई। सबको 'पूर्ण' हो गया। जो भूल-चूक से छूट गये हैं, उनका हिस्सा कल ले जाइएगा।

बालदेवजी अगमू चौकीदार और बिरंची के साथ इसपिताल में ही सोयेंगे। आज पहली रात है !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आठ

लछमी का भी तो इस संसार में कोई नहीं !

…जी, मेरा कोई नहीं ! …लछमी सोचती है, उसका दिल इतना नरम क्यों है ? क्यों वह डाक्टर को देखकर पिघल गयी ? यह अच्छी बात नहीं ।… सतगुरु, मुझे बल दो ।

सतगुरु के सिवा कोई भी उसका नहीं । माँ की याद नहीं आती । पसराहा मठ के पास अपनी झोंपड़ी की याद आती है । सुबह होते ही बाबूजी कन्धे पर चढ़ाकर मठ पर ले जाते थे । महन्थ रामगुसाईं कितना प्यार करते थे—"आ गयी लच्छो ! ले, मिसरी खायेगी ? चाह पीयेगी ?" भण्डारी एक कटोरे में चाह-चूड़ा दे जाता था । बाबूजी बैठकर महन्थसाहेब के लिए गाँजा तैयार करते थे । एक चिलम, दो चिलम, तीन चिलम ! पीते-पीते महन्थसाहेब की आँखें लाल हो जाती थीं । कभी-कभी बाबूजी भी थर-थर काँपने लगते थे । भण्डारी दही लाकर देता था—"खा लो रामचरन भाई ! नशा टूट जायेगा ।" बाबूजी को महन्थ-साहेब बहुत मानते थे । कोई काम नहीं । दिन-भर महन्थसाहेब की धूनी के पास बैठे रहो, गाँजा तयार करो, चिलम चढ़ाओ । मठ पर ही हमारा खाना-पीना होता था ।

गाँव में जब हैजा फैला तो बाबूजी को महन्थसाहेब ने कहा, "रामचरन ! तुम मठ पर ही रहो ।" उन दिनों, दिन-भर में कभी चिलम ठण्डी नहीं होने पाती थी । एक दिन महन्थसाहेब का बीजक जल गया । न जाने कैसे चिलम की आग बीजक पर गिर पड़ी । महन्थसाहेब ने रोते हुए कहा था—"रामचरन, साहेब करोध कीहिन है, दण्ड भोगना पड़ेगा । अमंगल होगा ।"…दूसरे ही दिन मठ के एक साधु का पेट-मुँह चलने[1] लगा । तीसरे दिन उस साधु ने देह 'तेयाग' दिया तो महन्थसाहेब बीमार पड़े । बाबूजी ने महन्थसाहेब की बड़ी सेवा की । शरीर त्यागने के पहले महन्थसाहेब ने कहा था, "रामचरन, एक बार आखरी चिलम पिलाओ बेटा !" बाबूजी चिलम तैयार करने के लिए धूनी से आग ले ही रहे थे कि धूनी में ही उलटी होने लगी । महन्थसाहेब ने शाम को और बाबूजी ने सुबह को काया बदल दिया । भण्डारी ने दूर से ही बाबूजी का दरसन करा दिया था । भण्डारी ने कहा था, "मरे हुए आदमी के पास नहीं जाना चाहिए !"

"लछमी ! ओ लछमी !"

"आयी !" लछमी कुनमुनाती उठती है ।…उस दिन बीजक छूकर कसम खाये थे और आज फिर पुकारने लगे । सतगुरु हो, तुम्हारी बुलाहट कब होगी ? बुला लो सतगुरु अपने पास दासी को !

"लछमी !"

"महन्थसाहेब, चित्त को शान्त कीजिए । सतगुरु का ध्यान कीजिए । माया…"

---

१. कै-दस्त होना ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"सब माया है लछमी ! लेकिन एक बार पास आओ !"

अन्धा आदमी जब पकड़ता है तो मानो उसके हाथों में मगरमच्छ का बल आ जाता है । अन्धे की पकड़ । लाख जतन करो, मुट्ठी टस-से-मस नहीं होगी ! ···हाथ है या लोहार की 'सँड़सी' ! दन्तहीन मुँह का दुर्गन्ध !···लार !··· ···"महन्थसाहेब ! महन्थसाहेब, सुनिए !" रामदास धूनी के पास ही है। "महन्थसाहेब ! अरे रामदास ! रामदास ! जल्दी उठो जी ! महन्थसाहेब को क्या हो गया !"

महन्थसाहेब को सतगुरु ने अपने पास बुला लिया ।

सुबह को सारे गाँव के लोग जमा होते हैं ।···महन्थसाहेब सिद्ध पुरुख थे ! इच्छा-मृत्यु हुई है ! रात को बैठकर, गाँव के बूढ़े-बच्चों को खिलाकर आये और रात में ही चोला बदल लिये । दुनिया में ऐसी मरनी सबों को नसीब नहीं होती । गियानी महातमा थे !

रामदास कहता है, "भण्डारा से लौटकर जब सरकार आये और आसन पर 'धेयान' लगाके बैठे तो देह से 'जोत' निकलने लगा । हम महसरी लगाने गये तो इसारे से मना कर दिया । हम धूनी के पास बैठकर देखते रहे। सरकार के देह का जोत और तेज हो गया और सरकार एकदम बच्चा हो गये। जोत की चमक से हमारी आँखें बन्द हो गयीं । हम वहीं धूनी के पास लेट गये । कोठारिनजी जब हल्ला करने लगीं तो आँखें खुलीं···।"

लछमी कुछ नहीं बोलती ।···साधुओं को माटी देने की रीत भी नहीं मालूम ? जटा बढ़ा लिया और हाथ में कमण्डल ले लिया, हो गये साधू !··· "चरनदास ! पहले बीजक पाठ होगा, तब माटी ! इसके बाद सभी सन्तन के गोर[1] पर माटी दी जायेगी । इतना भी नहीं जानते ?"

"माया जाल बिखण्डने सुर गुरु दुख परहरता
सरबे लोक जनाच जेन सततं,
हिया लोकिता···।"

···नमोस्तु सतगुरुसाहेब को
चरणकमल धरी शीश !

सबसे पहले रामदास माटी देता है ! उसके बाद लछमी दासिन मुट्ठी-भर माटी महन्थसाहेब की सफेद चादर पर डाल देती है। फिर फूलों की माला। साधु लोग कुदाली से गोर में मिट्टी भरने लगते हैं । चरनदास कहता है, "महन्थसाहेब को लगाकर दस महन्थों को माटी दिया है ! माटी देना भी नहीं जानेंगे ?"

गाँव के 'कीरतनियाँ लोग' समदाउन शुरू करते हैं—

"हाँ रे, बड़ा रे जतन से सुगा एक हे पोसल,
माखन दुधवा पिलाये ।
हाँ रे, सेहो रे सुगना विरिछी चढ़ि बैठल
पिंजड़ा रे धरती लोटाये···।"

---

१. समाधि ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गौर के बाद रामदास खँजड़ी बजा-बजाकर 'निरगुन' गाता है—

"कहँवा से हंसा आस्रोल, कहँवा समाओल हो राम,
कि आहो रामा हो, कोन गढ़ कयल मोकाम, कवन लपटाओल हो राम !"

डिम डिमिक डिमिक…

"सुरपुर से हंसा आओल, नरपुर समाओल हो राम,
कि आहो रामा हो, कायागढ़ कयला मोकाम, मायहि लपटाओल हो राम !"

"जै हो, सतगुरु की जै हो ! महन्थसाहेब की जै हो ! सब सन्तन की जै हो !"

मठ सूना लगता है। जीवन में आज पहली बार लछमी समझ रही है महन्थ-साहेब की कीमत को।…नेत्रहीन हो गये थे, कुछ देख नहीं सकते थे, बिना रामदास के सहारा के एक पग चल भी नहीं सकते थे, किन्तु ऐसा लगता था कि मठ भरा हुआ है। बिना महन्थ के मठ और बिना प्राण के काया !

काँचहि बाँस के पिंजड़ा,
जामें दियरो न बाती हो,
अरे हंसा उड़ल आकाश,
कोई संगो न साथी हो !

…जो भी हो, संसार में सबसे बढ़कर लछमी को ही प्यार करते थे महन्थ-साहेब। चढ़ती जवानी में, सतगुरुसाहेब की दया से, माया को जीतकर ब्रह्मचारी रहे। बुढ़ौती में तो आदमी की इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, माया के प्रबल घात को नहीं सँभाल सकती हैं। इसीलिए तो साधु-ब्रह्मचारी लोग बुढ़ापे में ही माया के बस में हो जाते हैं। यह तो महन्थसाहेब का दोख नहीं। उसका भाग ही खराब है। यदि वह नहीं होती तो महन्थसाहेब सतगुरु के रास्ते से नहीं डिगते। यह ध्रुव सत्त है। दोख तो लछमी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है। अब उसका अपना कौन है ? कोई नहीं !…

"महन्थसाहेब ! महन्थसाहेब ! हमको छोड़कर आप कहाँ चले गये ? दासी के अपराध को छिमा करना गुरु ! जीवन में तुम्हारी कोई सेवा सुखी मन से नहीं कर सकी। मरने के समय भी तुमको सुख नहीं दे सकी प्रभू ! …छिमा करो !"

जिन्दगी-भर के जमे हुए आँसू आज निकल जाना चाहते हैं, रोके रुकते नहीं।

"जायहिन्द कोठारिनजी !"

"दया सतगुरु के ! बालदेवजी, बैठिए !"

बालदेवजी सब भूल गये। लछमी को सान्त्वना देने के लिए रास्ते में जितनी बातें सोची थीं, दोहा, कवित्त, सब भूल गये। उसे मायेजी की याद आ जाती है। मायेजी का वह रूप…'गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर बही।'

बालदेवजी की गढ़ी हुई ढाढ़स की बाँध इस तेज धारा में नहीं टिक सकेगी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालदेवजी की भी आँखें छलछला जाती हैं। कमला में भी बाढ़ आती है। वह दिल को मजबूत करके कहते हैं, "कोठारिनजी, सब परमेसर की माया है। हानि-लाभ जीवन-मरन जस-अपजस बिधि हाथ।...हम तो सूरज उगने के पहले ही डागडरसाहेब के साथ बाहर निकल गये थे। डागडरसाहेब को गाँव की चौहद्दी दिखलानी थी। दखिन सन्थालटोली से सुरु करके, दुसाधटोली तक गली-कूची, अगवारा-पिछवारा देखते-देखते दस बज गये। वहीं मालूम हुआ कि महन्थ-साहेब इन्तकाल कर गये हैं। डागडरसाहेब का भी मन उदास हो गया। वे इसपिताल लौट गये। बाकी टोलों को कल देखेंगे।...आज रौतहट हाट में ढोल भी दिला देना है—इसपिताल खुल गया है। शोभन मोची को भेजकर हम यहाँ आये हैं।"

लछमी के आँसू थम चुके थे। बालदेवजी ठीक समय पर आ गये। महन्थ-साहेब बालदेवजी को बहुत प्यार करने लगे थे। पाँच-सात दिनों की जान-पहचान में ही महन्थसाहेब ने बालदेवजी को अच्छी तरह पहचान लिया था। रुपैया को बजाकर देखा जाता है और आदमी को एक ही बोली से पहचाना जाता है। महन्थसाहेब कहते थे, "सुद्ध बिचार का आदमी है। संसकार बहुत अच्छा है।" इसके पहले महन्थसाहेब ने किसी पर इतना विश्वास नहीं किया था। मठ में रोज तरह-तरह के साधु-संन्यासी आते थे। महन्थसाहेब रोज यह कहना नहीं भूलते थे—"लछमी! इन लोगों का कोई विश्वास नहीं। रमता लोग हैं। इन लोगों से ज्यादे मिलना-जुलना अच्छा नहीं!" नयी उमर के साधुओं को पैर की आहट से ही वे पहचान लेते थे। उनके अन्तर की दृष्टि बड़ी तेज़ थी। पिछले साल एक दिन सत्संग में एक नौजवान साधु आकर बैठ गया। रात में आया था, बराहछत्तर[1] जा रहा था।...उसके नैन बड़े चंचल! सत्संग में बैठकर लछमी की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। महन्थसाहेब, 'साहेब वचन' सुना रहे थे। आखर[2] कहते-कहते अचानक रुक गये। बोले—"हो नौगछिया के नौजवान उदासीजी! अरे साहेब, बचन पर धेयान दीजै जी! लछमी के सरीर पर क्या नैन गड़ाये हैं? माटी का सरीर तो मिथ्या है, साहेब बचन सत्त!"...बेचारा बिना 'बालभोग' किये ही आसन छोड़कर चला गया था। लेकिन, बालदेवजी पर उनका बड़ा विश्वास था।..."असल तेयागी यही लोग हैं लछमी!"

बालदेवजी को देखते ही लछमी का दुख आधा हो गया। बालदेवजी कहते हैं, "बड़े भाग से ऐसे लोगों का दरसन मिलता है। हमको तो दरसन मिला, लेकिन सेवा का औसर नहीं मिला। हमारा अभाग है...।"

"बालदेवजी, आप तो दास हैं?"

"जी! मेरी माँ भी दास थी। मांस-मछली छूती भी नहीं थी।"

"तब तो आप 'गरभदास' हैं। फिर कण्ठी क्यों नहीं ले लेते?"

बालदेवजी जरा होंठों पर हँसी लाकर कहते हैं, "कोठारिनजी, असल चीज़ है मन। कण्ठी तो बाहरी चीज है।"

---

१. बराहक्षेत्र, एक तीर्थस्थान। २. पंक्ति।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरा साधु होता तो कण्ठी को बाहरी चीज कहते सुनकर गुस्सा हो जाता। रामदेव गुसाईं होते तो तुरन्त चिमटा लेकर खड़े हो जाते, गाली-गलौज करने लगते। लेकिन लछमी शान्त होकर कहती है, "कण्ठी बाहरी चीज नहीं है बालदेवजी ! भेख है यह। आप विचारकर देखिए। जैसे आपका यह खध्धड़ कपड़ा है। मलमल और मारकीन कपड़ा पहननेवाले मन से भले ही महातमाजी के पन्थ को मानें, लेकिन आप उन्हें सुराजी तो नहीं कहिएगा ?"

लछमी की बातों का जवाब देना सहज नहीं। जब-जब लछमी से बातें होती हैं, बालदेवजी को नयी बातों की जानकारी होती है।

"आप कहती हैं तो ले लेंगे कण्ठी।"

"किससे लीजिएगा ?"

"आप ही दे दीजिए।"

लछमी हँस पड़ती है। शोकाकुल वातावरण में लछमी की मुस्कराहट जान डाल देती है।...कितने सूधे हैं बालदेवजी ! मुझे गुरु बनाना चाहते हैं !

"नहीं बालदेवजी, मैं आपको आचारजजी से कण्ठी दिलाऊँगी। आचारजजी काशीजी में रहते हैं। मैं आपको अपना बीजक देती हूँ। इसका रोज पाठ कीजिए। बीजक पाठ से मन निरमल होता है, अन्तर की ज्योति खुलती है।"

...बीजक ! एक छोटी-सी पोथी ! 'गयान' का भण्डार ! बालदेवजी का दिल धक-धक कर रहा है। लछमी कहती है, "सब हाथ का लिखा हुआ है। उस बार काशीजी से एक विद्यार्थीजी आये थे। बड़े जतन से लिख दिया था। मोती जैसे अच्छर हैं।"

बीजक से भी लछमी के देह की सुगन्धी निकलती है। इस सुगन्ध में एक नशा है। इस पोथी के हरेक पन्ने को लछमी की उँगलियों ने परस किया है... 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़ा सो पण्डित होय।'

लछमी को देखने से ही मन पवित्र हो जाता है।

नौ

डाक्टर प्रशान्तकुमार !

जात ?...

नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते हैं—जात ? जीवन में बहुत कम लोगों ने प्रशान्त से उनकी जाति के बारे में पूछा है। लेकिन यहाँ तो हर आदमी जात पूछता है। प्रशान्त हँसकर कभी कहता है—"जाति ? डाक्टर !"

"डाक्टर ! जाति डाक्टर ! बंगाली है या बिहारी ?"

"हिन्दुस्तानी," डाक्टर जवाब दे देता है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाति बहुत बड़ी चीज़ है। जात-पात नहीं माननेवालों की भी ज़ाति होती है। सिर्फ़ हिन्दू कहने से ही पिण्ड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण हैं ?…कौन ब्राह्मण ! गोत्र क्या है ? मूल कौन है ?…शहर में कोई क़िसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना ! लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।

प्रशान्त अपनी जाति छिपाता है। सच्ची बात यह है कि वह अपनी जाति के बारे में खुद नहीं जानता। यदि उसे अपनी जाति का पता होता तो शायद उसे बताने में झिझक नहीं होती। तब शायद जाति-पाति के भेद-भाव पर से उसका भी पूर्ण विश्वास नहीं हटता। तब शायद ब्राह्मण कहने में वह गर्व अनुभव करता।

हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखाने के दिन भी प्रशान्त को कुछ ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा था। रात-भर वह जगा रह गया था।…प्रशान्त-कुमार, पिता का नाम अनिलकुमार बनर्जी, हिन्दू, ब्राह्मण। सब झूठ ! बेचारा डा० अनिलकुमार बनर्जी, नेपाल की तराई के किसी गाँव में अपने परिवार के साथ सुख की नींद सो रहा होगा। प्रशान्तकुमार नामक उसका कोई पुत्र हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखा रहा है, ऐसा वह सपना भी नहीं देख सकता।… लेकिन प्रशान्त अपने तथाकथित पिता डा० अनिलकुमार को जानता है। मैट्रिक परीक्षा के लिए फार्म भरने के दिन डा० अनिल उसके पिता के रिक्तकोष्ठ में आकर बैठ गये थे।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी सुन रहा है। घर की नौकरानी, बाग का माली और पड़ोस का हलवाई भी उसके जन्म की कहानी जानता था। लोग बरबस उसकी ओर उँगली उठाकर कहने लगते थे—'उस लड़के को देखते हो न ? उसे उपाध्यायजी ने कोशी नदी में पाया था। बंगालिन डाक्टरनी ने पाल-पोसकर बड़ा किया है।' फिर लोगों के चेहरों पर जो आश्चर्य की रेखा खिंच जाती थी और आँखों में जो करुणा की हल्की छाया उतर आती थी, उसे प्रशान्त ने सैकड़ों बार देखा है।…एक लावारिस लाश को भी लोग वैसी ही दृष्टि से देखते हैं।

प्रशान्त अज्ञात कुलशील है। उसकी माँ ने एक मिट्टी की हाँड़ी में डालकर बाढ़ से उमड़ती हुई कोशी मैया की गोद में उसे सौंप दिया था। नेपाल के प्रसिद्ध उपाध्याय-परिवार ने, नेपाल सरकार द्वारा निष्कासित होकर, उन दिनों सहरसा अंचल में 'आदर्श आश्रम' की स्थापना की थी। एक दिन उपाध्यायजी बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए रिलीफ़ की नाव लेकर निकले, झाऊ की झाड़ी के पास एक मिट्टी की हाँड़ी देखी—नयी हाँड़ी। उनकी स्त्री को कौतूहल हुआ, 'ज़रा देखो न, उस हाँड़ी में क्या है ?' नाव झाड़ी के पास पहुँची, पानी के हिलोर से हाँड़ी हिली और उससे एक ढोढ़ा साँप गर्दन निकालकर 'फों-फों' करने लगा। साँप धीरे-धीरे पानी में उतर गया और हाँड़ी से नवजात शिशु के रोने की आवाज आयी, मानो माँ ने थपकी देना बन्द कर दिया।…बस, यही उसके जन्म की कथा है, जिसे हर आदमी अपने-अपने ढंग से सुनाता है।

'आदर्श आश्रम' में एक दुखिया युवती थी—स्नेहमयी। स्नेहमयी को उसके पति

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डा० अनिलकुमार बनर्जी ने त्यागकर एक नेपालिन से शादी कर ली थी। उपाध्याय-जी के आदर्श आश्रम में रहकर वह हिरण, खरगोश, मयूर और बन्दर के बच्चों पर अपना स्नेह बरसाती रहती थी। तरह-तरह के पिंजड़ों को लेकर वह दिन काट लेती थी। जब उस दिन उपाध्याय-दम्पति ने उसकी गोद में सोया हुआ शिशु दिया, तो वह आनन्द-विभोर होकर चीख उठी थी—'प्रशान्त ! …आमार प्रशान्त !' उस दिन से प्रशान्त स्नेहमयी का एकलौता बेटा हो गया। कुछ दिनों के बाद नेपाल सरकार ने निष्कासन की आज्ञा रद्द करके उपाध्याय-परिवार को नेपाल बुला लिया—आदर्श आश्रम के पशु-पक्षियों के साथ। स्नेहमयी और प्रशान्त भी उपाध्याय-परिवार के ही सदस्य थे। उपाध्यायजी ने नेपाल की तराई के विराट-नगर में आदर्श-विद्यालय की स्थापना की। स्नेहमयी उसी स्कूल में सिलाई-कटाई की मास्टरनी नियुक्त हुई।

स्नेहमयी के स्नेहांचल में पलते हुए किशोर प्रशान्त पर कर्मठ उपाध्याय-परिवार की रोशनी नहीं पड़ती तो वह सितार के झलार और रवीन्द्र-संगीत के बसन्त-बहार के दायरे से बाहर नहीं जा सकता था। उपाध्यायजी का ज्येष्ठ पुत्र बिहार विद्यापीठ का स्नातक था और मँझला देहरादून के एक प्रसिद्ध अंग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी। पुत्री शान्तिनिकेतन में शिक्षा पा रही थी। छुट्टियों में जब वे एक जगह इकट्ठे होते तो शान्तिनिकेतन में शिक्षा पानेवाली बहन चर्खा चलाना सीखती, विद्यापीठ के स्नातक आश्रम-भजनावली की पंक्तियों पर राविन्द्रिक सुर चढ़ाते और अंग्रेजी स्कूल का स्टूडेण्ट सेवादल के कवायदों के हिन्दी कमाण्ड के वैज्ञानिक पहलू पर बहस करता—'एटन्शन' में जो फ़ोर्स है वह 'सावधान' में नहीं ! एटेन्शन सुनते ही लगता है कि दर्जनों जोड़े बूट चटख उठे।

ऐसे ही वातावरण में प्रशान्त के व्यक्तित्व का विकास हुआ।

हिन्दू विश्वविद्यालय से आइ० एस-सी० पास करने के बाद वह पटना मेडि-कल कालेज में दाखिल हुआ। माँ की इच्छा थी कि वह डाक्टर बने। लेकिन अपने प्रशान्त को वह डाक्टर के रूप में नहीं देख पायी। काशीवास करते-करते, काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गयी ! …एक बार लाहौर से प्रशान्त के नाम पर एक मनिआर्डर आया था—विजया का आशीर्वाद लेकर ! भेजनेवाली थी—श्रीमती स्नेहमयी चोपड़ा।…एक माँ ने जन्म लेते ही कोशी मैया की गोद में सौंप दिया और दूसरी ने जनसमुद्र की लहरों को समर्पित कर दिया।

डाक्टरी पास करने के बाद जब वह हाउस सर्जन का काम कर रहा था, १९४२ का देशव्यापी आन्दोलन छिड़ा। नेपाल में उपाध्याय-परिवार का बच्चा-बच्चा गिरफ्तार किया जा चुका था। अंग्रेजी सरकार को पूरा पता था कि उपाध्याय-परिवार हिन्दुस्तान के फ़रार नेताओं की सिर्फ़ मदद ही नहीं करता है, गुप्त आन्दोलन को सक्रिय रूप से चला भी रहा है। मँझला पुत्र बिहार की सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता था, वह पहले ही नजरबन्द हो गया था। प्रशान्त भी तो उपाध्याय-परिवार का था, वह कैसे बच सकता था, उसे भी नज़रबन्द कर लिया गया। जेल में विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निकट-सम्पर्क में रहने का मौका मिला···सभी दल के लोग उसे प्यार करते थे।

१९४६ में जब कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल का गठन हुआ तो एक दिन वह हेल्थ मिनिस्टर के बँगले पर हाज़िर हुआ। वह पूर्णिया के किसी गाँव में रहकर मलेरिया और काला-आज़ार के सम्बन्ध में रिसर्च करना चाहता है। उसे सरकारी सहायता दी जाये। मिनिस्टर साहब ने कहा था—"लेकिन सरकार तुमको विदेश भेज रही है। स्कालरशिप···"

"जी, मैं विदेश नहीं जाऊँगा," पूर्णिया और सहरसा के नक्शे को फैलाते हुए उसने कहा था, "मैं इसी नक्शे के किसी हिस्से में रहना चाहता हूँ। यह देखिए, यह है सहरसा का वह हिस्सा, जहाँ हर साल कोशी का ताण्डव नृत्य होता है। और यह पूर्णिया का पूर्वी अंचल, जहाँ मलेरिया और काला-आज़ार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते हैं।"

मिनिस्टर साहब प्रशान्त को अच्छी तरह जानते थे। इस विषय पर प्रशान्त से तर्क में जीतना मुश्किल है। "लेकिन सवाल यह है कि···"

"सवाल-जवाब कुछ नहीं। मुझे किसी मलेरिया सेण्टर में ही भेज दीजिए!"

"मलेरिया सेण्टर में? लेकिन तुम एम० बी० बी० एस० हो और मलेरिया-काला-आज़ार सेण्टरों में एल० एम० पी० डाक्टर लिये जाते हैं।"

"जब तक मैं यह रिसर्च पूरा नहीं कर लेता, मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरी डिग्री किस काम की?"

बहुत मेहनत से नयी और पुरानी फाइलों को उलटकर और पूर्णिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन से लिखा-पढ़ी करके मिनिस्टर साहब ने मि० मार्टिन की दी हुई ज़मीन के बारे में पता लगाया। बीस-बाईस वर्ष पहले मिनिस्टर साहब पूर्णिया में ही वकालत करते थे। पगले मार्टिन को उन्होंने देखा था।

अन्त में केन्द्रीय सरकार से सलाह-परामर्श के बाद एक दिन प्रेस-नोट में यह खबर प्रकाशित हुई कि पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक गाँव में मलेरिया स्टेशन खोला गया है (···दि स्टेशन विल अण्डरटेक मलेरिया ऐण्ड काला-आज़ार इन्वेस्टिगेशन इन ऑल ऐस्पेक्ट्स—प्रिवेन्टिव, क्यूरेटिव ऐण्ड इकोनामिक)।

प्रशान्त के इस फैसले को सुनकर मेडिकल कालेज के अधिकारियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों पर तरह-तरह की प्रतिक्रिया हुई। मशहूर सर्जन डा० पटवर्धन ने कहा, "बेवकूफ है!"

ई० एन० टी० के प्रधान डाक्टर नायक बोले, "पीछे आँखें खुलेंगी।"

मेडिसिन के डाक्टर तरफदार की राय थी, "भावुकता का दौरा भी एक खतरनाक रोग है। मालूम?"

लेकिन प्रिंसिपल साहब खुश थे, "तुमसे यही उम्मीद थी। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ! जब कभी तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो, हमें लिखना।"

प्रशान्त का गला भर आया था।

मद्रास के मेडिकल गजट ने सम्पादकीय लिखकर डा० प्रशान्त का अभिनन्दन किया।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

…और जिस दिन वह पूर्णिया आ रहा था, स्टीमर खुलने में सिर्फ पाँच मिनट की देरी थी, उसने देखा, एक युवती सीढ़ी से जल्दी-जल्दी उतर रही है। कौन है ? ममता ! हाँ, ममता ही थी।

आते ही बोली, "आखिर तुम्हारा भी माथा खराब हो गया ! तुमने तो कभी बताया नहीं। बलिहारी है तुम्हारी ! …ओह, प्रशान्त, तुम कितने बड़े हो, कितने महान् ! …मैं तो अभी आ रही हूँ बनारस से। आते ही चुन्नी ने तुम्हारी चिट्ठी दी।"

रूमाल से फूल और बेलपत्र निकालकर प्रशान्त के सिर से छुलाते हुए ममता ने कहा था, "बाबा विश्वनाथजी का प्रसाद है। बाबा विश्वनाथ तुम्हारा मंगल करें। पहुँचते ही पत्र देना।"

दस

डाक्टर पत्र लिख रहा है—

"ममता,

"तुमने कहा था, पहुँचते ही पत्र देना। पहुँचने के एक सप्ताह बाद पत्र दे रहा हूँ। तुम्हारे बाबा विश्वनाथ ने मेरे आने से पहले ही अपने एक दूत को भेज दिया है। प्यारू सचमुच देवदूत है। इसलिए तुमको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। सात ही दिनों में वह दो बार रुठ चुका है—'कहने को तो डाक्टर हैं, मगर समय पर नहीं खाने-पीने से देह पर कितना खराब असर होता है नहीं जानते ?' इसी से प्यारू का पूरा परिचय तुम्हें मिल गया होगा।

"यह एक नयी दुनिया है। इसे वज्र देहात कह सकती हो। गाँव का चौकीदार सप्ताह में एक बार हाज़िरी देने थाने पर जाता है; वही मेरी डाक लायेगा और ले जायेगा।

"काम शुरू कर दिया है। सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है। अभी जनरल सर्वे कर रहा हूँ; खून लेकर परीक्षा कर रहा हूँ। प्यारू कहता है, यहाँ कौओं को भी मलरिया होता है।

"…यहाँ गड्ढों और तालाबों में कमल के पत्ते भरे रहते हैं। कहते हैं, फूलों के मौसम में छोटी-छोटी गड़हियाँ भी किस्म-किस्म के कमल और कमलिनी से भर जाती हैं।…लेकिन यहाँ के लोगों को तुम लोटस ईटर्स नहीं कह सकती हो ! गड्ढों की परीक्षा कर रहा हूँ।…यहाँ की धरती बारहों महीने भीगी रहती है शायद !

"गाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं; सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अन्धविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। और तारीफ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी। यह मेरा सिर्फ सात दिन का अनुभव है। सम्भव है, पीछे चलकर मेरी धारणा गलत साबित हो। मिथिला और बंगाल के बीच का यह हिस्सा वास्तव में मनोहर है। औरतें साधारणतः सुन्दर होती हैं, उनके स्वास्थ्य भी बुरे नहीं···!"

"डाक्टरसाहब !"

"कौन ?"

"विश्वनाथप्रसाद।"

"आइए। कहिए क्या है ?"

"डाक्टरसाहब, जरा एक बार मेरे यहाँ चलिए। मेरी लड़की बेहोश हो गयी है।"

"बेहोश ! क्या उम्र है ? इससे पहले भी कभी बेहोश हुई थी ?"

"जी ! दो-तीन बार और ऐसा ही हुआ था। उम्र ? यही सोलह-सत्रह साल धर लीजिए। जरा जल्दी···।"

"चलिए।"

बन्द कमरे में एक चारपाई पर, नीली रजाई में लिपटी हुई युवती का गोरा मुखड़ा बाहर है। बाल खुले और बिखरे हुए हैं। आँखें बन्द हैं। कोठरी में लालटेन की मद्धिम रोशनी हो रही है—रोशनी कम और धुआँ ज़्यादा।

डाक्टर खिड़कियाँ खोलने के लिए कहता है और जेब से टार्च निकालकर युवती के चेहरे पर रोशनी देता है।···चेहरा ठीक है। साँस ?···ठीक है। नाड़ी भी दुरुस्त है।

डाक्टर आँखों की पलकों को उलटता है, मानो कमल की पंखड़ियाँ हों—ब्राइट !···पेट ? कब्ज तो नहीं ?

कोई जवाब नहीं देता है। घूँघट काढ़े खड़ी औरतों के घूँघट आपस में मिलते हैं। एक अधेड़ स्त्री आगे बढ़ आती है। युवती की माँ है। "जी, कब्जियत नहीं है।"

घर की नौकरानी पर्दा नहीं करती है। कहती है, "डागडरबाबू, लर लगाकर देखिए न !"

लर, अर्थात् स्टेथस्कोप। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि इससे डाक्टर रोगी के अन्दर की सारी बातों को जान लेता है—क्या खाया है, पेट में पचा है या नहीं, सब।

"सूई दीजिएगा ?"

"हूँ !"

डाक्टर सिरिंज ठीक करता है। युवती आँखें खोल देती है—

"सूई ?···नहीं, सूई नहीं। माँ ! अरे बाप···!"

···अच्छा सूई नहीं देंगे। कैसी तबियत है ?···अच्छी बात। हूँ ! क्यों बेहोश हो गयीं ? हाँ, बेहोशी कैसे हुई ? डर लगा था। हूँ ! काहे का डर लगा था ?···तब ? इसके बाद ? देह घूमने लगा। ठीक है। अब कैसी हैं ? डर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो नहीं लगता ? दवा भेज दूँगा, अब डर नहीं लगे।···

"दवा ?···दवा नहीं। माँ, मैं दवा नहीं पियूँगी।"

"वाह, सूई भी नहीं और दवा भी नहीं ?···मीठी दवा ?"

सभी हँस पड़ते हैं। युवती के मुरझाये हुए लाल होंठों पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। आँखों की पलकें ज़रा उठकर मानो डाक्टर को डाँट देती हैं—"हट ! दवा भी कहीं मीठी होती है !"

बाहर आकर डाक्टर तहसीलदार से कहता है, "घबराने की बात नहीं, दवा भेज देता हूँ। इसके पहले कितनी देर तक बेहोश रहती थीं ?"

"करीब एक घण्टा। जोतखीजी से एक बार जन्तर बनवाके दिया। झाड़-फूंक भी करवाकर देखा। डाक्टरसाहब, बस यही मेरा बेटा, यही मेरी बेटी··· सबकुछ यही है।"

"ठीक हो जायेंगी।"

सेण्टर में आकर डाक्टर सोचता है, क्या दिया जाये ! मीठी दवा ! कार्मिनेटिव मिक्श्चर या ब्रोमाइड !···"अजी, तुम्हारा क्या नाम है ?"

"मेरा नाम ? जी, नाम रनजीत।"

"तहसीलदारसाहब के यहाँ कितने दिनों से नौकरी करते हो ?"

"बहुत दिन से। लड़कैयाँ से।···एक ठो बीड़ी है तो दीजिए दागदरबाबू।"

"प्यारू, रनजीत को बीड़ी पिलाओ।"

प्यारू बीड़ी-दियासलाई दे जाता है। बीड़ी सुलगाकर रनजीत अपने-आप कहता है, "दागदरबाबू ! तहसीलदार को दिन-दुनियाँ में बस यही एक बेटी है। कितना मानत-मनौती के बाद कमला मैया ने निहारा भी तो बेटी ही हुई। मगर···!"

रनजीत बीड़ी की राख झाड़कर चुप हो जाता है। डाक्टर ने लक्ष्य किया है, रनजीत ने 'मगर' पर आकर पूर्ण विराम दे दिया है।

"मगर क्या ?"

"यही देखिए न ! तीन जगह बातचीत चली, मगर···पहली जगह से तो पान देने की बात भी पक्की हो गयी थी। ठीक तिलक-पान के दिन लड़के की माँ मर गयी। दूसरी जगह बातचीत ठीक हुई तो उसके घर में आग लग गयी। तीसरे लड़के को 'मैया' हो गया, इन्तकाल हो गया। अब कोई लड़कावाला तैयार ही नहीं होता है। हजार, दो हजार, पाँच हजार रुपैया भी कबूलते हैं, मगर···। आखिर में एक 'पछवरिया कैथ' को घरजमैया रखने के लिए लाये, बस उसी दिन से कमली को मिरगी आने लगी। लोग तो कहते हैं कि कमला मैया नहीं चाहती हैं कि कमली की सादी हो। कमला मैया भी कुमारी ही थीं न ! अब आप लगे हैं। किसी तरह कमली दैया को आराम कर दीजिए दागदरबाबू ! जो बक्सीस माँगियेगा, तहसीलदार दे देंगे।"

"देखो रनजीत, तीन खुराक दवा है। मीठी दवा है। तुम्हारी कमली दैया आराम हो जायेंगी। कल सुबह फिर एक बार खबर देना। समझे !"

"तीन खोराक ! खायेगी क्या ?"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"अभी ? अभी रोटी-दूध।"

"रनजीत !" एक आदमी दौड़ा हुआ आता है।

"कौन रामदेल, क्या है ?"

"कमली दैया फिर बेहोश हो गयीं। तहसीलदारसाहेब कहिन हैं कि दागदर-बाबू फिर एक बार ज़रा तकलीफ करें।"

डाक्टर घड़ी देखता है।...नौ बजकर दस मिनट। कुछ ही देर में समाचार होंगे। डाक्टर कुछ सोचकर कहता है, "रनजीत ! वह बक्सा उठाओ !...ले चलो।"

"बेतार का खबर ?"

"हाँ, तुम्हारी कमली दैया का इलाज बेतार से ही होगा।"

कमला फिर पहले की तरह बेहोश पड़ी हुई है। उसकी आँखें बन्द हैं ! बाल बिखरे हुए हैं। डाक्टर को रोग का निदान मिल गया है। वह अपने बैग से शीशी, सिरिंज वगैरह निकालता है।

"सूई ? सूई नहीं।" कमला फिर होश में आती है।

"बगैर सूई के आपका रोग आराम नहीं होगा।" डाक्टर सिरिंज ठीक करता है।

"दवा दीजिए डाक्टरसाहब ! मैं सूई नहीं लूंगी।"

"फिर डर लगा था ?"

"हाँ।"

"रनजीत, दवा की शीशी कहाँ है ? लाओ, बक्सा यहाँ लाकर रखो।...हाँ, पी लीजिए।...ठीक है। कैसी है दवा ? मीठी है न ?"

डाक्टर पोर्टबल रेडियो को खोलकर मीटर ठीक करता है—"यह ऑल इण्डिया रेडियो है। रात के सवा नौ बजे हैं। अब आप हिन्दी में समाचार सुनिए...।"

"डर लगता है। माँ...!"

"देखिए, डर की कोई बात नहीं। सुनिए...।"

"मुझे उठा दो माँ !"

"उठिए मत। लेटी रहिए।"

"...अब आप सविता देवी से एक मैथिली लोकगीत सुनिए !"

माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के
जौं बुढ़वा होइत जमाय गे माई !

"ओ माँ !" कमला खिलखिलाकर हँस पड़ती है, "शादी का गीत हो रहा है।"

हम ना बियाहेव अपना गौरा के...

कोठरी और आँगन में घूंघट काढ़े औरतों की भीड़ लग जाती है। कमला पर ब्रोमाइड का असर हो रहा है, उसकी आँखों में नींद झाँक रही है।

डाक्टर लौटकर खत को पूरा करने बैठ जाता है। सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है। अगमू चौकीदार कल हाज़िरी देने जायेगा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाँच बजे भोर को ही आकर वह पुकारेगा। डाक्टर लिखता है—

"पत्र अधूरा छोड़कर एक केस देखने गया था। केस अजीब है। केस-हिस्ट्री और भी दिलचस्प है। तुम्हारी शीला रहती तो आज खुशी से नाचने लगती; हिस्टीरिया, फ़ोबिया, काम-विकृति और हठ-प्रवृत्ति जैसे शब्दों की झड़ी लगा देती। शीला से भेंट हो तो कहना—मैंने अपने पोर्टेबल रेडियो से उसके दिमाग को झकझोरकर दूसरी ओर करने की चेष्टा की है।···"

ग्यारह

नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरबरिया से
नहीं तोरा पास में तीर जी!···

एक सखी ने पूछा कि हे सखी, तुम्हारे पास में न तीर है न तलवार।

···नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरबरिया से
कौनहि चीजवा से मारलू बटोहिया के
धरती लोटावेला बेपीर जी ई ई ई।···

यह सुनकर जो औरत सदाब्रिज पर मोहित थी, बोली—

···सासू मोरा मरे हो, मरे मोरा बहिनी से,
मरे ननद जेठ मोर जी!
मरे हमार सब कुछ पलिबरवा से,
फसी गइली परेम के डोर जी!···

इतना कहकर वह सदाब्रिज के पास आयी और पानी पिलाकर प्रेम की बातें करने लगी।···

···आजु की रतिया हो प्यारे, यहीं बिताओ जी!

तन्त्रिमाटोली में सुरंगा-सदाब्रिज की कथा हो रही है। मंहगूदास के घूर के पास लोग जमा हैं। पुरैनिया टीसन से एक मेहमान आया है, रेलवै में काज करता है। तन्त्रिमाटोली के लोग कहते हैं—खलासीजी! खलासीजी सरकारी आदमी हैं। खलासीजी यदि लाल पत्तखा दिखला दें तो डाकगाड़ी भी रुक जाये। रुकेगी नहीं? लाल पत्तखा देखते ही रेलगाड़ी रुक जाती है। लाल ओढ़ना ओढ़कर गाड़ी पर चढ़ने जाओ तो!···गाड़ी रुक जायेगी और ओढ़ना जप्पत हो जायेगा। खलासीजी बहुत गुनी आदमी हैं। पक्का ओझा हैं। चक्कर पूजते हैं। भूत-प्रेत को पेड़ में काँटी ठोंककर बस में करते हैं। बाँझ-निपुत्तर को तुकताक[1] कर देते हैं। कुमर विज्जैभान, लोरिका और सुरंगा-सदाब्रिज का गीत जानते हैं। गला कितना तेज है!···उस बार सुराजी हूलमाल[2] में खलासीजी ने लिख दिया था—

---

१. टोटका। २. आन्दोलन।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'बँगनबाड़ी [illegible] है' तब फाँसी हो गयी ! हैकोठ और नन्दन तक फाँसी बहाल रही। लेकिन मँहगूदास को कौन समझाये ? बेचारे खलासीजी एक साल से दौड़ रहे हैं मँहगूदास की वेवा बेटी फुलिया से चुमौना[1] की बातचीत पक्की करने के लिए। हर बार खलासीजी झोरी में मोरंगिया (नेपाली) गाँजा लाते हैं, तन्त्रिमाटोली के पंचों को पिलाते हैं, सुरंगा-सदाब्रिज गाते हैं, गाँव के बीमार लोगों को झाड़-फूँक देते हैं। उस बार उचितदास की डेरावाली को तुकताक कर दिया, मरने के चार दिन पहले बूढ़ा उचितदास सन्तान का मुँह देख गया।···लेकिन मँहगूदास को कौन समझावे ? फिर खलासीजी लेन-देन की बात भी करते हैं। एक कौड़ी नगद न देंगे, जाति-बिरादरी को एक साम भोज कबूलते हैं। और क्या चाहिए ? सरकारी आदमी जमाई होगा। कभी तीरथ करने के लिए जायेंगे तो रेल में टिकस भी नहीं लगेगा।

रमजूदास की स्त्री तन्त्रिमाटोली की औरतों की सरदारिन है। हाट-बाजार जाने के समय, मालिकों के खेतों में धान रोपने और काटने के समय और गाँव में शादी-व्याह के समय टोले-भर की औरतें उसकी सरदारी में रहती हैं। राजपूत, बाभन और मालिकटोले के सभी बाबू-बबुआन से मुँहामुँही बात करती है, दिल्लगी का जवाव हँसकर देती है और समय पड़ने पर हाथ चमका-चमकाकर झगड़ा भी करती है। एक बार तो सिंघजी की भी सीसी सटका दिया था—'ऊँह बूढ़ा हो गया है, चाट लगी हुई है। सिर के बाल सादा हो गये हैं, मन का रंग नहीं उतरा है।···हमारा मुँह मत खुलवाइए सिंघजी !'···उससे सभी डरते हैं। न जाने कब किसका भेद खोल दे ! सभी उसकी खुशामद करते हैं; टोले-भर की जवान लड़कियाँ उसकी मुट्ठी में रहती हैं। उससे कोई बाहर नहीं। खलासीजी इस बार लालबाग मेला से उसके लिए असली गिलट का कंगना ले आये हैं। चाँदी की तरह चमक है। "···मौसी, किसी तरह फुलिया से चुमौना ठीक कर दो।"

अरे सूते ले देबौ हो प्यारे लाली पलंगिया से···
खाये ले गुआ खिल्ली पान जी !···

खलासीजी आज दिल खोलकर गा रहे हैं। उन्हें आज ऐसा लग रहा है कि वे खुद सदाब्रिज हैं। लेकिन न तो उसकी फुलिया उसे रहने के लिए बिनती करती है और न मँहगूदास चुमौना की बात मंजूर करता है ! ···"अरे सूते ले देबौ हो प्यारे लाली पलंगिया से···!"

फुलिया क्या करे ? माँ-बाप के रहते वह क्या बोल सकती है ! अन्दर-ही-अन्दर मन जलकर खाक हो रहा है, लेकिन मुँह नहीं खोल सकती। लोग क्या कहेंगे ! ···रमजूदास की स्त्री फुलिया के जलते हुए दिल की बात जानती है। उस दिन फुलिया कह रही थी—"मामी, काली किरिया, किसी से कहना मत। खलासीजी इतने दिनों से दौड़ रहे हैं। बाबा कोई बात साफ-साफ नहीं कहते हैं। आखिर वह बेचारा कब तक दौड़ेगा ? यहाँ नहीं तो कहीं और ढूँढ़ेगा।

---

१. सगाई।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुनिया में कहीं [illegible] की बेटी नहीं है क्या ? [illegible] एक दिन कुछ हो जायेगा तो सहदेव मिसर देह पर माछी भी नहीं बैठने देगा। तब करो खुशामद नककट्टी चमाइन की और चिचाय की माँ का ! मुसब्बर चबाओ और ऐंड़ी से पेट को आँटा की तरह गूँथवाओ। उस बार जोतखीजी का बेटा नामलरैन ने क्या दिया ? अन्त में नककट्टी को गाभिन बकरी देकर पीछा छुड़ाया···"

याद जो आवे हे प्यारी तोहरी सुरतिया से
शाले करेजवा में तीर जी···!

खलासीजी का तीर खाया हुआ दिल तड़प रहा है। फुलिया क्या करे ? लेकिन रमजूदास की स्त्री का मुँह कौन बन्द कर सकता है ?···"अरे फुलिया की माये ! तुम लोगों को न तो लाज है और न धरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारीवाली साड़ी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की ! मानती हूँ कि जवान बेवा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून भी सूख जाय।"

"अरे हाँ-हाँ, बेटा-बेटी केकरो, घीढारी करे मंगरो ! चालनी कहे सूई से कि तेरी पेंदी में छेद ! हाथ में कंगना तो चमका रही हो, खलासी को एक पुड़िया सिन्दूर नहीं जुटता है ?" फुलिया की माँ ने जब से रमजूदास की स्त्री के हाथ कंगना देखा है, उसका कलेजा जल रहा है। मँहगूदास पर गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं। खलासी की बुद्धि ही मारी गयी है। रमजू की स्त्री को कुटनी बहाल किया है, कंगना दिया है। रमजू की स्त्री काली माई है जो लोग उसकी बात को मान लेंगे !

"मुँह सँभालकर बात कर, नेंगड़ी ! बात बिगड़ जायेगी। खलासी हमारा बहन-बेटा है। बहन-बेटा लगाकर गाली देती है ? गाली हमारे देह में नहीं लगेगी। तेरे देह में तो लगी हुई है। अपने खास भतीजा तेतरा के साथ भागी तू और गाली देती है हमको ? सरम नहीं आती है तुझको ! बेसरमी, बेलज्जी ! भरी पंचायत में जो पीठ पर झाड़ू की मार लगी थी सो भूल गयी ? गुअरटोली के कलरु के साथ रात-भर भैंस पर रसलील्ला करती थी सो कौन नहीं जानता है ? तूँ बात करेगी हमसे ?"

"रे, सिंघवा की रखेली ! सिंघवा के बगान का बम्बै आम का स्वाद भूल गयी। तरबन्ना में रात-रात-भर लुकाचोरी मैं ही खेलती थी रे ? कुरअँखा बच्चा जब हुआ था तो कुरअँखा सिंघवा से मुँह-देखौनी में बाछी मिली थी, सो कौन नहीं जानता ?"

"···एतना बात सुनते ही सदाब्रिज फिर मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ा।··"

मँहगूदास के घूर के पास होनेवाली सुरंगा-सदाब्रिज की कथा में औरतों के झगड़े से कोई बाधा नहीं पहुँचती है। औरतों के झगड़े पर यदि मर्द लोग आँख-कान देने लगें तो हुआ ! औरतों के झगड़े का क्या ? अभी झगड़ा किया, एक-दूसरे को गालियाँ सुनायीं, हाथ चमका-चमकाकर, गला फाड़-फाड़कर एक-दूसरे के गड़े हुए मुर्दे उखाड़े गये, जीभ की धार से बेटा-बेटी की गर्दन काटी गयी,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
काली माई को काला पाठा कबूला गया, हाथ और मुँह को कोढ़-कुष्ठ से गलाने की प्रार्थना की गयी और एक-दो घण्टे के बाद ही सफाई। मेल-मिलाप हो गया। एक-दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगीं। साग माँगकर ले गयीं और बदले में शकरकन्द भेज दिया—"कल साम को मालिक के खेत से अँधेरे में उखाड़ लाया है लड़के ने। मालिक देखते तो पीठ की चमड़ी खींच लेते।"

पहले झगड़ा का सिरगनेस दो ही औरतों से होता है। झगड़े के सिलसिले में एक-एक कर पास-पड़ोस की औरतों के प्रसंग आते-जाते हैं और झगड़नेवालियों की संख्या बढ़ती जाती है। झगड़े से उनके कामकाज में भी कोई बाधा नहीं पहुँचती है। काम के साथ-साथ झगड़ा भी चल रहा है। जब सारे गाँव की औरतें झगड़ने लगती हैं, तब कोई किसी की बात नहीं सुनतीं; सब अपना-अपना चरखा ओंटने लगती हैं।···लेकिन फुलिया आज झगड़े में हिस्सा नहीं ले रही है। वह टट्टी की आड़ में खड़ी होकर सुरंगा-सदाब्रिज की कथा सुन रही है।···खलासीजी के गले में जादू है! ओझा गुनी आदमी है! कथा और गीत में फुलिया यह भी भूल जाती है कि सहदेब मिसर शाम से ही कोठी के बगीचे में उसके इन्तजार में मच्छड़ कटवा रहा है।···खलासी के गले में जादू है!

"मामी!"

"क्या है रे? बोल ना! सहदेब मिसरवा के पास जायेगी क्या?"

"नहीं मामी, एक बात कहने आयी हूँ। काली किरिया, किसी से कहना मत।···खलासीजी तो तुम्हारे गुहाल में सोते हैं न? काली किरिया!"

सुरंगा-सदाब्रिज की कथा समाप्त हो गयी है। झगड़ा लंकाकाण्ड तक पहुँचकर शेष हो गया है। सहदेब मिसर मच्छड़ों से कब तक देह का खून चुसबाते।··· साला खलसिया! साली हरामजादी!···अच्छा, कल देखूँगा।

गाँव में सन्नाटा छाया हुआ है और रमजू की स्त्री के गुहाल में सुरंगा कह रही है सदाब्रिज से, "अभी नहीं, जब बाबा चुमौना के लिए राजी नहीं होंगे तब मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।"

"उनको राजी कैसे किया जाये? कौन एक मिसर है, सुना है···।" सदाब्रिज बेचारा कहता है।

"सब झूठी बात है। तुम बालदेवजी से कहो।"

"कौन बालदेव! पुरैनियाँ आसरमवाला?"

"हाँ। सभी उनकी बात मानते हैं? बाबू-बबुआन भी उनसे बाहर नहीं। तुम बन्दगी मत करना, जै हिन्न कहना।"

"लेकिन वह तो हम पर बड़ा नाराज है। देश दुरोहित[1] के फिरिस में नाम दे दिया है।"

"···माँ के लिए नाक की बुलाकी ले आना, असली पीतल की बुलाकी।"

---

१. देशद्रोही।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बारह

मठ पर आचारजगुरु आनेवाले हैं, नये महन्थ को चादर-टीका देने के लिए ! मुज़फ्फरपुर जिला का एक मुरती आया है—लरसिंघदास । आचारजगुरु मुज़फ्फरपुर जिले के पुपड़ी मठ पर भण्डारा में आये हैं । लरसिंघदास खबर लेकर आया है—आचारजगुरु आ रहे हैं । मठ के सभी सेवक-सती, आस-पास के बाबू-बबुआन लोगों को पहले ही खबर दे दी जाये !

रामदास को महन्थी की टीका मिलेगी ! महन्थ सेवादास का एकमात्र चेला वही है।…रामदास सोचता है, यदि खँजड़ी बजाना नहीं जानते तो आज तक बेलाही के ज़मींदार के भैंस की पूँछ हाथ से नहीं छूटती। महन्थसाहब उसकी खंजड़ी सुनकर मोहित हो गये और वह रात को ही महन्थसाहब के साथ भागकर मेरीगंज मठ पर आ गया।…पन्द्रह साल पहले की बात ! पन्द्रह साल बाद रामदास का भाग फिरा है। 'जै हो सतगुरुसाहेब की !'

नियमानुसार सभी पंचों की उपस्थिति में नया महन्थ एक एकरारनामा लिख देगा—हमेशा 'लंगोटाबन्द' रहकर सतगुरु के स्थल की रक्षा करेंगे। किसी तरह का मादक द्रव्य नहीं सेवन करेंगे। दासी-रखेलिन नहीं रखेंगे, आदि-आदि। इसके बाद आचारजगुरु एक सुरतहाल[1] पर दस्तखत करके नये महन्थ को देंगे। फिर चादर-टीका की विधि !…दही की टीका और सिर पर दूब-धान ! बस, नये महन्थसाहेब उस दिन से नौ सौ बीघे की पतनी[2] के एकमात्र मालिक हो जायेंगे।

लरसिंघदास तो आचारजजी का सन्देशा लेकर आया था, किन्तु मेरीगंज मठ पर एक ही रात रहने के बाद उस पर महन्थी का मोह सवार हो गया। नौ सौ बीघे की काश्तकारी। कलमी आम का बाग ! दस बीघे में सिर्फ केला ही लगा हुआ है। एक-एक घौर में हज़ार केले फले हैं। हज़रिया केला ! दो कोड़ी गाय, चार गुजराती भैंस और सबसे कीमती सम्पत्ति—अमूल्य धन—लछमी दासिन। लछमी दासिन कहती है, "महन्थसाहेब को बस यही एक चेला है—रामदास ! तो कानूनन रामदास ही होनेवाला अधिकारी महन्थ है।" रामदास ! काठ का उल्लू रामदास ! सतगुरु हो ! यह अन्धेर है। रामदास महन्थ नहीं हो सकता। छुछुंदर की तरह तो सूरत है, वह महन्थ होगा ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। और यह लछमी…? श्रापभ्रष्टा अप्सरा !

लछमी ने लरसिंघदास की आँखों में न जाने क्या देखा है कि उसकी छाया से भी वह बचकर चलती है; रात में किवाड़ मजबूती से बन्द करके सोती है। किवाड़ की छिटकिली लगाने के बाद एक ओखल किवाड़ से सटा देती है।… लरसिंघदास को शायद बहुमूत्र की बीमारी है; रात-भर में दस-ग्यारह बार पेशाब करने के लिए उठता है। हर बार धूनी के पास सोया हुआ रामदास उसे टोकता है—"कौन ?" लरसिंघदास किसी बार जवाब नहीं देता। कल रात एक बार

---

१. महन्ती का दस्तावेज । २. छोटी जमींदारी ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
गुस्से में जवाब दिया—"महन्थ होने के पहले ही अन्धे हो गये क्या ? देखते नहीं हो ?···जैसा गुरु वैसा चेला !" रामदास कुनमुनाकर रह गया था। सुबह को सत्संग के समय ही लछमी बरस पड़ी थी—"क्यों आप वैसी भाखा बोले थे ? महन्थ होने के पहले ही अन्धे हो गये ! जैसा गुरु···। गुरु-निन्दा सुनहिं जो काना···। मैं गुरु-निन्दा नहीं सुन सकती, नहीं सह सकती। रामदास को आप क्या समझते हैं ? वह इस मठ का अधिकारी महन्थ है। आपके जैसे एक कोड़ी बिलटा[1] साधुओं को वह रोज़ परसाद देगा।···बात करना भी नहीं जानते ? आने दीजिए आचारजजी को।"

रामदास भी सुना देता है—"रात में हम छोड़ दिया, लेकिन अब बोलोगे तो सीधे पच्छिम का रास्ता दिखा देंगे। हाँ, समझ रखो !"

भण्डारी तो नम्बरी शैतान है। कल से ही उसने बदमाशी शुरू की है। दाल की कटोरी में सिर्फ पानी रहता है। आलू की भुजिया दुबारा नहीं देता। घी माँगने पर कहता है—"दाल घी से बघारल है।" केला बिक्री होने के लिए हाट भेज दिया जाता है। दूध में पानी मिलाकर देता है। बालभोग में पहले दही-चूड़ा देता था, कल से सिर्फ चूड़ा लाकर रख देता है।

बिलटा साधू ?···रण्डी का यह हिम्मत ! उसे बिलटा साधू कहती है ? अच्छा ! अच्छा !

···लछमी पहले से ही तो उसे नहीं जानती। कैसे जान सकती है ? वह कभी पहले यहाँ आया नहीं। पुपड़ी मठ से भी तो कभी कोई मुरती यहाँ नहीं आया।···सोनमतिया कहारिन भी तो नहीं आयी है यहाँ। सम्भव है उस बार अपनी बेटी रधिया को खोजने के लिए यहाँ भी पहुँची हो। ठीक है···। रधिया। रधिया को पहली बार जब देखा था तो उसके मन की ऐसी ही हालत हुई थी। कनपट्टी के पास हमेशा गर्म रहता था। लेकिन रधिया अल्हड़ थी। एक ही चक्कर में जाल में आ गयी थी। लछमी तो पुरानी है, खेली-खिलायी है। सत्तर चूहे खायी हुई है।···यदि वह रधिया को लेकर नौटंकी कम्पनी में नहीं शामिल होता तो रधिया हाथ से नहीं निकलती। नौटंकी कम्पनी के मालिक की ही बात रहती तो वह सह ले सकता था, हारमोनियम और नगाड़ावाले भी रधिया को कभी फ़ुर्सत नहीं देते थे। कभी ताल का रिहलसल करना है तो कभी नाच सिखाना है। ···रधिया साली भी कुत्ती ही थी। वह भी तो बदल गयी थी।

लरसिंघदास अपने सिर के दाग पर हाथ फेरकर मफलर से ढक लेता है— साले नगाड़ची ने ठीक सामने कपाल पर ही डण्डा चलाया था।

···मठ लौटने पर महन्थसाहेब ने खड़ाऊँ से मरम्मत की थी। लेकिन सात दिन से उपवास किये हुए शरीर में इतना दम कहाँ था जो भागते ! सिर का घाव ताज़ा ही था। महन्थसाहेब की खड़ाऊँ गुरु की खड़ाऊँ थी। महन्थसाहेब के पैर पर वह लेटा रहा था। वे बहुत दयालु पुरुष थे। लरसिंघदास उनका एकलौता चेला था। गुरु ने छिमा कर दिया। महन्थसाहेब के शरीर त्यागने के बाद पुपड़ी मठ की

---

१. आवारा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
महन्थी उसे ही मिलती, लेकिन रामबरन कोयरी ने उसकी मती फेर दी थी।
···लरसिंघदास, नेपाली गाँजा में बड़ा नफा होता है। दस रुपये का लाओ और चार सौ बनाओ। नेपाल में चार आने सेर गाँजा मिलता है। बराहछत्तर मेला के समय चलो!"

महन्थसाहेब ने जब शरीर त्याग किया तो वह जेल में था। महन्थसाहेब ने मरने के समय जीऊतदास को चेला कबूलकर 'वील' लिख दिया।···नहीं तो वह भी एक मठ का महन्थ होता। तब लछमी उसे बिलटा साधू नहीं कह सकती। तब तो पैर पखारकर, पैर के दसों नाखूनों को धोकर, वह परेम से चरनोदक पीती।···लेकिन वह लछमी को चरनोदक पिलाकर छोड़ेगा।

"रामदास!"

"क्या है? रामदास मत बोलिए, अधिकारीजी कहिए।"

"कोठारिन से कहो कि लरसिंघदास आज जा रहे हैं।"

"जा रहे हैं तो जाइए।"

"तुम कोठारिन से कहो···।"

"तुम-ताम मत करो। कोठारिनजी से क्या कहेंगे, राह-खर्च कल ही कोठारिनजी ने दे दिया है!"

रामदास झोली से एक पाँच रुपये का नोट निकालकर लरसिंघदास के आगे फेंक देता है।

"हम पूछना चाहते हैं कि कोठारिन ने हमारा अपमान काहे किया? हमको बिलटा काहे बोली? हमारे अचारजगुरु को काहे गाली दिया?"

"अचारजगुरु को कब गाली दिया है?"

"दिया है। बोली नहीं थी,···पूजा-बिदाई लेने के समय अचारजगुरु हैं, बेर-बखत पड़ने पर सीधा जवाब मिलता है। आज अचारजगुरु हुए हैं, कल तक तो गुरुभाई थे। यह गाली नहीं तो और क्या है?"

"संसार में सत्त का भी लेस ज़रा रहने दीजिए साधू महाराज," लछमी अन्दर से निकलकर कहती है, "साधू का काम झूठ बोलना नहीं है। छिः-छिः!"

"छिः-छिः क्या? हमको बिलटा नहीं कहा है···आ···आ···आप··· तुमने?"

"रामदास!" लछमी गरज उठती है, "गरदनियाँ देकर निकाल दो इसको। यह साधू नहीं, राक्षस है। इसके सिर पर माया सवार है। इससे पूछो, आज सबेरे जब मैं स्नान कर रही थी तो बाँस की टट्टी में छेद करके यह क्या देखता था? सैतान!"

लछमी फुफकारती हुई अन्दर चली जाती है।

रामदास उठकर लरसिंघदास के गले में हाथ लगाकर धक्का देता है। लरसिंघदास सीढ़ी पर गिर पड़ता है। नाक से खून निकल रहा है।

"जायहिन्द रामदासजी! क्या है? क्या हुआ?" बालदेवजी लहू देखकर घबरा जाते हैं।

 Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"कुछ नहीं, पछवरिया साधू है। काया में कहीं साधू-सुभाव नहीं। कोठारिन-जी से बतकुट्टी[1] करता था।"

"तो मारपीट क्यों हुई ? सान्ती से सब काम करना चाहिए। हिन्साबात नहीं करना चाहिए।"

"रामदास ! बालदेवजी को अन्दर भेज दो !"

लरसिंघदास नाक का खून पोंछते हुए देखता है—बालदेव नाम का यह खध्धड़धारी आदमी अन्दर जा रहा है—सीधे लछमी की कोठरी में !···जाय-हिन्द बालदेवजी !

···शायद यह खध्धड़धारी और लछमी एक ही आसनी पर बैठे हैं। एकदम आसपास—देह से देह सटाकर !···अच्छा !

तेरह

गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

सिर्फ जोतखीजी नहीं, गाँव के सभी मातबर लोग मन-ही-मन सोच-विचार कर देख रहे हैं—गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

तहसीलदारसाहब को स्टेट के सर्किल मैनेजर ने बुलाकर एकान्त में कहा है, "एक साल का भी खजाना जिन लोगों के पास बकाया है, उन पर चुपचाप नालिश कर दो। बलाय-बलाय[2] से नोटिस ५८ बी० तामील करवा लो। कुर्की और इश्तहार निकास करवाकर सरज़मीन पर चपरासी को ले जाने की ज़रूरत नहीं। कचहरी में ही बैठकर गाँव के चमार से अंगूठा का टीप लेकर ढोल बजाने की रसीद बनवा लो।···गाँव के एक-दो गवाहों को भी ठीक करके रखो। स्टेट से उनको भत्ता मिलेगा। इन कांगरेसियों का कोई ठीक नहीं।"

सिंघजी यादवटोला के नढ़ेलों[3] का सीना तानकर चलना बरदाश्त नहीं कर सकते। जोतखीजी ठीक कहते थे—बार-बार लाठी-भाला दिखलाते हैं। हौसला बढ़ गया है। अब तो राह चलते परनाम-पाती भी नहीं करते हैं यादव लोग ! कलिया कभी-कभी चिढ़ाने के लिए नमस्कार करता है। देह में आग लग जाती है सुनकर। लेकिन सिंघजी क्या करें ? राजपूतटोली के नौजवान लोग भी ग्वालों के दल में ही धीरे-धीरे मिल रहे हैं। अखाड़े में ग्वालों के साथ कुश्ती लड़ते हैं। रोज़ शाम को कीर्तन में भी जाने लगे हैं। हरगौरी ठीक कहता था—यदि यही हालत रही तो पाँच साल के बाद ग्वाले बेटी माँगेंगे। तब काली कुर्तीवालों के बारे में जो हरगौरी कहता था, उन लोगों को बुला लिया जाये ? कहता था, लाठी-भाला सिखानेवाला मास्टर आवेगा। संजोगकजी या सनचालसजी, क्या

---

१. वाद-विवाद। २. घूस देकर। ३. बदमाशों।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कहता था, सो आवेंगे। हिन्दू राज—महराना प्रताप और शिवाजी का राज होगा। हरगौरी आजकल बड़ी-बड़ी बातें करता है!

भण्डारा के दिन सिंघजी रूठे हुए खेलावनसिंह यादव को घर से जबर्दस्ती खींचकर ले गये थे, लेकिन खेलावनसिंह का मन रूठा ही हुआ था। जोतखी काका रोज़ आते हैं। उन्होंने कहा है, सकलदीप का अठारह साल की उम्र में माता या पिता का बिजोग लिखा हुआ है। सकलदीप का यह सत्रहवाँ जा रहा है। सकलदीप की माँ बेटे का गौना करवाने के लिए रोज़ तकादा करती है। बेटे को वोकील बनाने की इच्छा शायद काली माई पूरी नहीं होने देगी। गौना के बाद फिर क्या पढ़ेगा! माता-पिता का बिजोग? बालदेव को सारी दुनिया की भलाई तो सूझती है, मगर जिसका नमक खाता है उसके लिए एक तिनका भी तो सोचे। दिन-भर तहसीलदार के यहाँ बैठा रहता है और शाम को कीर्तन! कमला किनारेवाले एक जमा में कलरु पासवान के दादा का नाम कायमी बटैया-दार की हैसियत से दर्ज़ है। बालदेव ने कहा कि कलरु से कह-सुनकर सुपुर्दी लिखवा दो या रजिस्ट्री करवा दो, तो कान ही नहीं दिया। हलवाहा गोनाय ततमा कल से हल जोतने नहीं आता है। कहता है, पिछले साल का बकाया साफ कर दीजिए तो हल उठावेंगे। बालदेव टुकुर-टुकुर देखता रहा, कुछ बोला भी नहीं, उलटे हमसे बहस करने लगा,…गरीब लोगों का दरमाहा नहीं रोकना चाहिए भाई साहब!

जोतखीजी की अठारह साल की नववधू कनचीरावाली के पेट में रोज खाने के बाद दर्द हो जाता है। पिछले एक साल से वह खाने के बाद पेट पकड़कर सो जाती है। इस साल तो और भी दर्द बढ़ गया है।…डागडरी दवा? नहीं, नहीं। डागडर तो पेट टीपेगा, जीभ देखेगा, आँख की पपनियाँ उलटाकर देखेगा, पेसाब और पाखाना के बारे में पूछेगा, सायद लहू भी जाँच करे। इधर वह रोज़ कहती है, डागडरबाबू ने कोथरीटोला की छोटी चम्पा को एक ही जकशैन में आराम कर दिया है। इसी तरह उसके पेट में भी दर्द रहता था।…औरत को समझाना बड़ा कठिन काम है। सभी औरतें एक समान। जो ज़िद पकड़ेगी, पकड़े रहेगी। जोतखीजी को अपनी चार स्त्रियों का अनुभव है। पहली बेचारी को तो सिर्फ मेला-बाज़ार देखने का रोग था। कोई भी मेला नहीं छोड़ती थी वह। जहाँ मेला आया कि जोतखीजी के तीसों दिन परमानन झा की खुशामद करने में ही बीतते थे। परमानन की भैंसागाड़ी पर ही मेला जायेगी। परमानन बेचारा खुद गाड़ी हाँककर मेला ले जाता था, कभी भाड़ा नहीं लिया। आखिर बेचारी की मृत्यु भी मेले में ही हुई। उस साल अर्धोदय के मेले में वह ज़ोरों का हैजा फैला था।…दूसरी को हुक्का पीने की आदत थी। ब्राह्मण का हुक्का पीना? लेकिन जोतखीजी क्या करते—औरत की ज़िद्द! अब वह बीमार पड़ती थीं तो बहुत बार जोतखीजी को ही हुक्का तैयार कर देना पड़ता था।…पुरानी खाँसी से खाँसते-खाँसते वह भी मर गयी।…तीसरी को इस बात की ज़िद्द लग गयी थी कि वह गाँव के लड़कों से हँसना-बोलना बन्द नहीं करेगी।…और कनचीरा-वाली को डागडरी दवा की ज़िद लग गयी है। एकमात्र पुत्र रामनारायण तो

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुपुत्र निकला। बिदापत नाच करता है। ततमा पासवानों के साथ रहता है सारी ब्राह्मण मण्डली में उसकी शिकायत फैल गयी है। कोई बेटी देता ही नहीं। जोतखीजी क्या करें ? हाथ की उर्ध्व-रेखा तो सीधे तर्जनी में चली गयी है, लेकिन कुण्डली के दसम घर में शनि है। समझाते-समझाते थक गया कि अपना नाम रामनारायण मिश्र कहा करो, लेकिन वह भी गँवार की तरह नामलरैन ही कहता है।···रामनारायण के साथ कनचीरावाली को एक दिन इसपिताल भेज दें ? घर पर बुलाने से तो डागडर फीस लेगा।

लरसिंघदास गाँव के घर-घर में जाकर पंचों से कह रहा है—"आचारज गुरु आ रहे हैं। मठ का अधिकारी महन्थ वही है; उसी को चादर-टीका मिलनी चाहिए, महन्थ की रखेलिन या दासिन को मठ के मामले में कुछ बोलने का अधिकार नहीं। रामदास तो भैंसवार है। इतने बड़े मठ को चलाना मूरख आदमी के बूते की बात नहीं। वह 'बीए' पास है। अंग्रेजी में ही बीजक बाँचता है। इसीलिए तो बावड़ी-केश रखता है, धोती-कुर्ता पहनता है और आधी मूँछ कटाता है।···मठ पर एक स्कूल खोलेंगे। गाँववालों की भलाई करेंगे। आप लोग बुद्धिमान आदमी हैं, खुद विचारकर देख सकते हैं। दासिन रखेलिन मठ को बिगाड़ देती है; साधू-धरम को भ्रष्ट कर देती है। आप लोग खुद विचारकर देख सकते हैं।"

तन्त्रिमाटोले में पंचायत हुई। बन्दिश हुई है—तन्त्रिमाटोले की कोई औरत अब बाबूटोला के किसी आँगन में काम करने नहीं जायेगी। बाबू-बबुआन लोग शाम को गाँव में आवें, कोई हर्ज नहीं; किसी की अन्दरहवेली में नहीं जा सकते। मज़दूरी में जो एक-आध सेर मिले, उसी में सबों को सन्तोख करना होगा। बलाई आमदनी में कोई बरकत नहीं। अनोखे और उचितदास छड़ीदार हुआ है। जिसे चाल से बेचाल देखेगा, बाँस की छड़ी से पीठ की चमड़ी उधेड़ लेगा।

तन्त्रिमा लोगों की इस बन्दिश के बाद गहलोत छत्री, कुर्म छत्री, पोलियाटोले, धनुखधारी और कुशवाहा छत्रीटोले के पंचों ने भी ऐसी ही व्यवस्था की है।···सिर्फ जनेऊ लेने से ही नहीं होता है, करम भी करना होगा। जाये तो कोई बाबू कभी सन्थालटोली में, शाम या रात को! उनकी औरतों से कोई दिल्लगी भी कर सकता है!···सन्थालों के तीर पर ज़हर का पानी चढ़ाया रहता है।

कुर्म छत्रीटोले के लौजमानों ने कल रात को शिवशक्करसिंह को बेपानी कर दिया। झुबरी मुसम्मात का घर तो टोले के एक छोर पर है न, सिपैहियाटोली की बाँसवाड़ी के ठीक बगल में! लेकिन शिवशक्करसिंह को क्या मालूम कि बाँस की झाड़ियों में छोकरे पहले से ही छिपे हुए हैं!···झुबरी मुसम्मात को दस रुपये जरिमाना हुआ है। जहाँ से दे, देना तो होगा ही, नहीं तो हुक्का-पानी बन्द। शिवशक्करसिंह से रुपया लेकर दे। इसी बार लालबाग मेला में पंचलैट[1] खरीद होगा। बिना पंचलैटवाली पंचायत की क्या कीमत? लैट के दाम में बीस रुपैया

---

१. पेट्रोमेक्स।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
और कम है। एक दिन फिर बाँसवाड़ी में एक घण्टा मच्छड़ कटवाना होगा, और क्या ?

'कालीचरन का अखाड़ा आजकल खूब जमता है। शाम को कीरतन भी खूब मचता है। नया हरमुनियाँ खरीद हुआ है। गंगाजी के मेले से गंगतीरिया ढोलक लाया गया है। खूब गम्हड़ता है।

बालदेवजी को कीरतन तो पसन्द है, लेकिन अखाड़ा और कुश्ती को वे खराब समझते हैं।...शरीर में ज्यादा बल होने से हिंसाबात करने का खौफ रहता है। असल चीज़ है बुद्धि। बुद्धि के बल से ही गन्ही महतमाजी ने अंग्रेज़ों को हराया है। गांधीजी के देह में तो एक चिड़िया के बराबर भी मांस नहीं। कांगरेस के और लीडर लोग भी दुबले-पतले ही हैं।

लेकिन कालीचरन का अखाड़ा बन्द नहीं हो सकता। ढोल की आवाज़ में कुछ ऐसी बात है कि कुश्ती लड़नेवाले नौजवानों के खून को गर्म कर देती है।

ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना !

शोभन मोची ने ढोल पर लकड़ी की पहली चोट दी कि देह कसमसाने लगता है।

ढिन्ना ढिन्ना, ढिन्ना ढिन्ना... !

अर्थात्—आ जा, आ जा, आ जा, आ जा !

सभी अखाड़े में आये। काछी और जाँघिया चढ़ाया, एक मुट्ठी मिट्टी लेकर सिर में लगाया और 'अज्ज्ज्जा' कहकर मैदान में उतर पड़े। कालीचरन 'आ-आ-अली' कहकर मैदान में उतरता है। चम्पावती मेला में पंजाबी पहलवान मुश्ताक इसी तरह 'आली' (या अली) कहकर मैदान में उतरता था...

तब शोभन ताल बदल देता है—

चटंधा गिड़धा, चटधा गिड़धा !

...आ जा भिड़ जा, आ जा भिड़ जा !

अखाड़े में पहलवान पैंतरे भर रहे हैं। कोई किसी को अपना हाथ भी छूने नहीं देता है। पहली पकड़ की ताक में हैं। वह पकड़ा...

धागिड़ागि, धागिड़ागि, धागिड़ागि !

...कसकर पकड़ो, कसकर पकड़ो !

चटाक चटधा, चटाक चटधा !

...उठा पटक दे, उठा पटक दे !

गिड़ गिड़ गिड़ धा, गिड़ धा गिड़ धा !

...वह वा, वह वा, वाह बहादुर !

पटक तो दिया, अब चित्त करना खेल नहीं ! मिट्टी पकड़ लिया है। सभी दाव के पेंच और काट उसको मालूम हैं !

ढाक ढिन्ना, तिरकिट ढिन्ना !

...दाव काट, बाहर हो जा !

वाह बहादुर ! दाव काटकर बाहर निकल आया। फिर, धा-चट गिड़ धा ! आ जा भिड़ जा !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ढोल के हर ताल से पैंतरे, दाँव-पेच, काट और मार की बोली निकलती है।

कालीथान में पूजा के दिन इसी ढोल की ताल एकदम बदल जाती है। आवाज़ भी बदल जाती है—धागिड़ धिन्ना, धागिड़ धिन्ना!

...जै जगदम्बा! जै जगदम्बा!
गाँव की रक्षा करो माँ जगदम्बा!

चौदह

चढ़ली जवानी मोरा अंग अंग फड़के से
कब होइहैं गवना हमार रे भउजिया ऽऽऽ!

पक्की सड़क पर गाड़ीवानों का दल भउजिया का गीत गाते हुए गाड़ी हाँक रहा है। "आँ आँ! चल बढ़के। दाहिने...हाँ, हाँ, घोड़ा देखकर भी भड़कता है! साला...!"

हथवा रँगाये सैयाँ देहरी बैठाई गइले
फिरहू न लिहले उदेश रे भउजिया ऽऽऽ!

ननदिया के दिल की हूक गाड़ीवानों के गले से कूक बनकर निकल रही है। भउजिया?...कमली की कोई भौजी नहीं, किससे दिल की बात कहे? भउजिया की ननदिया की तो शादी हो चुकी है, कमली का तो हाथ भी पीला नहीं हुआ है।...'प्रेमसागर' में मन नहीं लगता है—'श्री सुकदेवजी बोले कि हे राजा, एक दिन कृष्ण कन्हैया वंशी बजैया कदम के बिरिक्ष पर बैठके बंशी बजाये रहे थे।' चीरहिरणलीला की तस्वीर को देखकर कमली का जी न जाने कैसा-कैसा करने लगता है! वह 'प्रेमसागर' वन्द कर देती है।

...सुबह प्यारू आया था। कितना गौ आदमी है प्यारू! ..आज क्या बना था प्यारू? डाक्टरसाहब आज ठीक समय पर खाये थे या शीशी-बोतल लेकर पड़े हुए थे? प्यारू हँसकर हमेशा की तरह जवाब देगा, "अरे, क्या पूछती हो दैया! इस आदमी का हमको कोई ताल-पता[1] नहीं लगता है। रोज़ कहेंगे कि प्यारू आज खाना ज़रा जल्दी बनाओ, और खाते फिर वही रात में ग्यारह बजे और दिन में दो बजे। आज बन्धा का झोल बना था। झोल क्या खायेंगे? मिर्च-मसाला छूते भी नहीं हैं। खाने का तो कोई सौख नहीं है, जो बना दो खा लेंगे। ...और शीशी-बोतल? क्या पूछती हो दैया! कल से मच्छड़, खटमल और तिलचट्टे के पीछे पड़े हुए हैं। आज सन्थालटोली के जोगिया माँझी को कह रहे थे—चार खरगोश और एक दर्जन चूहा पकड़कर दे जाओ। पूरा इनाम मिलेगा।"

---

१. ठौर-ठिकाना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डाक्टर को गाँव-भर की औरतें प्यार करती हैं। गाँव-भर में उसकी मामी, मौसी, नानी, दादी और काकी हैं। सभी जवान लड़कियों को वह 'दैया' कहता है।

…डाक्टर की मुस्कराहट बड़ी जानलेवा है। जब आवेगा तो मुस्कराते हुए आवेगा—डर लगता है?…हाँ-हाँ, डर लगता है तो तुमको क्या? तुमको तो मज़ा मिलता है न! मुस्कराये जाओ।…गले में आला लटकाये फिरते हैं बाबूसाहब! छाती और पीठ में लगाकर लोगों के दिल की बीमारी का पता लगाते हैं। झूठ! इतने दिन हो गये, मेरे दिल की बात, मेरी बीमारी को कहाँ जान सके! या जान-बूझकर अनजान बनते हो डाक्टर! तुम्हारी मुस्कराहट से तो यही मालूम होता है।…अच्छा डाक्टर! सच-सच बताना, तुम क्यों मुस्कराते हो? तुम मुझे जलाने के लिए इस गाँव में क्यों आये? नहीं, नहीं, तुम नहीं आते तो पागल हो जाती। रोज़ सपने में कमला नदी की बाढ़ में मैं बह जाती थी। बड़े-बड़े साँप! तरह-तरह के साँप काटने दौड़ते थे। तुम आये, मैं डूबते-डूबते बच गयी। …मेरी आँखों की पपनियाँ उलटकर देखो, मेरी पीठ पर आला लगाकर देखो, मेरे दिल की बात सुनो।…तुम डाँटते हो, बड़ा अच्छा लगता है! तुम मुझे सूई से डराते हो, चिढ़ाते हो। कितना अच्छा लगता है मुझे! फिर मीठी दवा भेज दूंगा?…हाँ जी, भेज देना, पूछते हो क्या? तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है! लेकिन तुम एक बार ज़रूर आया करो। नहीं आओगे तो मुझे डर लगेगा! …सिपैहियाटोली की कुसमी कहती थी, डाक्टर मुझसे भी पूछता था—मीठी दवा चाहिए क्या?…मैं नहीं विश्वास करती, डाक्टर ऐसा नहीं है। कुसमी झूठ बोलती है। मीठी दवा और किसी को मिल ही नहीं सकती है। डाक्टर, खबरदार! कुसमी बड़ी चालबाज लड़की है। बहुतों को बदनाम किया है उसने। हरगौरी उसका मौसेरा भाई है, लेकिन…जाने दो, क्या करोगे सुनकर? उसकी ससुराल फारबिसगंज में है। घरवाला एक मारवाड़ी का सिपाही है। रात-भर सिपाही पहरा करता है और कुसमी 'बैसकोप' देखने जाती है।…

'…श्री सुकदेवजी बोले कि हे राजा! एक दिन यशुमती सभी ग्वालिनों को बुलाये।'

"कमली!"

"माँ!"

"पढ़ना बन्द करो। डाकडरबाबू ने मना किया है न! दवा पी लो। मैं तुम्हारी किताब बक्से में बन्द कर ताला लगा दूंगी। हाँ, ऐसे तुम नहीं मानोगी।"

"पढ़ने से क्या होगा माँ!"

"लड़की की बात तो सुनो ज़रा! पढ़ने से क्या होगा सो तो डाकडर से पूछना!"

"डाक्टरबाबू से?…माँ, तुम्हारा डाक्टर क्या है जानती हो? माटी का महादेव!"

माँ ठठाकर हँस पड़ती है, "एक-एक बात गढ़कर निकालती है तू! अच्छा,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ठहर। आज आने दे डाकडरबाबू को।"

माँ-बाप के नैनों की पुतली है कमला ! तहसीलदारसाहब बेटी की इच्छा के खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकते। माँ कमला की हर आवश्यकता को बिना मुह खोले ही पूरा कर देती है। बाप ने खुद पढ़ाया-लिखाया है रामायण, महाभारत, नल-दमयन्ती, सावित्री-सत्यवान, पार्वती-मंगल और शिवपुराण। कमला रोज़ शिव पूजती है—'ओं शिवशंकर सुखकर, नाथ वरदायक महादेव !··· महादेव ! मिट्टी का महादेव !'

"माँ, चुप रहो।" कमली माँ से लिपटकर हाथों से मुह बन्द कर देती है। "पूछो न अपने डाक्टर से, खरगोश पालकर क्या करेंगे !"

डाक्टर कोई जवाब नहीं देता है, सिर्फ मुस्कराता है। फिर गम्भीर होते हुए कहता है, "अब तो सूई देनी ही पड़ेगी; दवा से बेहोशी तो दूर हो गयी, लेकिन पागलपन···!"

सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं···तहसीलदारसाहब, माँ और प्यारू। कमली का चेहरा लाल हो जाता है—"मैं आज खून का दबाव नहीं जाँच कराऊँगी। नहीं-नहीं, ठीक है। हाँ, मैं पगली हूँ !"

"दीदी !" तहसीलदारसाहब बेटी को दीदी कहकर पुकारते हैं, "आओ, डाक्टरसाहब को देर हो रही है।"

ब्लड प्रेशर जाँच करते समय डाक्टर गम्भीर होकर यन्त्र की ओर देखता है। कमली तिरछी निगाहों से चोरी-चोरी डाक्टर को देखती है—हाँ जी, मुझे पगली कहते हो ! लेकिन मुझे पगली बना कौन रहा है ?

गाँव में सिर्फ तहसीलदारसाहब चाय पीते हैं; बढ़िया चाय की पत्ती का व्यवहार करते हैं। डाक्टर यहाँ हर शाम को चाय पीने आता है। कमला की माँ का अनुरोध है—'रोज शाम को चाय पी जाइए।'

तहसीलदारसाहब कहते हैं, डाक्टर तो अपने समाँग की तरह हो गया है। डाक्टर को भी तहसीलदारसाहब से घनिष्ठता हो गयी है। तहसीलदारसाहब से गाँव-घर और ज़िले की बहुत-सी नयी-पुरानी बातें सुनने को मिलती हैं।··· राज पारबंगा स्टेट के जनरैल मैनेजर डफ साहब कैसा आदमी है ! आजकल एकदम हिन्दुस्तानी हो गया है। धोती-कुर्ता पहनता है। कभी-कभी रोरी का टीका भी लगता है। राज पारबंगा के कुमारजी उसकी मुट्ठी में हैं। डफ साहब की बेटी जब तक रहेगी, कुमारजी डफ साहब को नहीं हटा सकते हैं।···महारानी चम्पावती जाति की मुसहरनी थीं।···राजा भूपतसिंह को 'मेम रानी' से दो लड़के हैं। बड़ा ऐयाश है राजा भूपत ! पोलो का जब्बड़[1] खिलाड़ी ! दार्जिलिंग रेस में हर साल उसका घोड़ा जीतता है। आजकल भी बाईस घोड़े हैं। बड़ा ऐयाश ! पुन्याह में बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ से इतनी बाईजी आती हैं कि तीन दिन तीन रात महफिल जमी रहती है, एक मिनट भी बन्द नहीं होती।···पैरिस की शराब पीता है। असल राजा तो वही है। राज पारबंगा-

---

१. जबर्दस्त।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
वाला तो मक्खीचूस है।···जिला का सबसे बड़ा किसान है भोला बाबू ! तीस हजार बीघा ज़मीन है ! रहुआ इस्टेट के गुरुबंशीबाबू भी किसान ही हैं। उनकी बात निराली है। दाता कर्ण हैं। 'वारफ़न' में सबसे ज्यादे रुपैया दिया और कांग्रेस के 'सहायताफन' में भी सबसे ज्यादे रुपैया दिया और इसीको कहते हैं दुनिया का इन्साफ़ ! दिल खोलकर दान देने का सुफल क्या मिला है, जानते हैं ? लोगों ने झूठ-मूठ अफवाह फैला दिया है कि नोट बनाता है। अरे भाई, नोट तो बनाती है उसकी कोशी-गंगा किनारे की हजारों बीघा ज़मीन, जिसमें न हल लगता है न बैल, न मेहनत न मजदूरी ! बाढ़ का पानी हटा और कीचड़वाली धरती पर चना, खेसारी, मटर, सरसों, उरद वगैरह छींट दिया। बस, छींटने में जितनी मेहनत लगे। कोशी और गंगा के पानी से नहायी हुई धरती माता दिल खोलकर अपना धन लुटा देती है।···जिला काँग्रेस के सबसे बड़े लीडर हैं शिवनाथ चौधरीजी।···ओ, आप तो जानते ही हैं उनको ! वह भी बड़े किसान हैं।··· पूर्णिया कचहरी में जो वकालत सीसीबाबू कर गये, वह अब कोई वकील क्या करेगा ! हाईकोर्ट के बालिस्टर भी उनके बनाये हुए मिसिल को नहीं काट सकते थे। लेकिन फौजदारी कचहरी में कभी पैर नहीं रखते थे। एक बार राजा भूपत दस हजार फीस देने लगा, खूनी केस था। सीसीबाबू ने अपना प्रण नहीं तोड़ा, कचहरी नहीं गये। कागज पढ़कर सिर्फ एक जगह एक लाइन काट दिया और एक जगह एक अक्षर जोड़ दिया। राजा भूपत बेदाग छूट गया।···अब तो न वह अयोध्या है और न वह राम।···

"बाबा !"

"दीदी !"

"डाक्टरसाहब आज यहीं खायेंगे।"

"प्यारू से झगड़ा मोल लेना चाहती है ?"

"प्यारू से कह दिया है।"

"तब डाक्टरसाहब !···हमारी तो कभी हिम्मत नहीं हुई। दीदी कहती है, यदि शरधा हो तो···।"

"श्रद्धा-अश्रद्धा की बात नहीं। बात यह है कि मैं···"

"मिर्च-मसाला नहीं खाते," कमली बीच में ही बोल उठी, "उबली हुई चीज़ें खायेंगे। यही न ?"

डाक्टर समझ रहा है—रोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।···शीला रहती तो तुरन्त कुछ कह देती। शायद कहती, 'भावात्मक संक्रमण' अथवा 'प्रत्यावर्तन' के मोड़ पर रोग पहुँच गया है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पन्द्रह

सुमरितदास को लोग लबड़ा ग्रादमी समझते हैं, लेकिन समय पर वह पते की बातें बता जाता है। ग्राजकल उसका नाम पड़ा है—बेतार का खबर। संक्षेप में 'बेतार'। बात छोटी या बड़ी, कोई भी नयी बात बेतार तुरत घर-घर में पहुँचा देता है। तहसीलदार का वह रोटिया[1] गवाह है। गवाही देते-देते वह बूढ़ा हो गया है; वसूल-तगादा के समय तहसीलदार के साथ रहता है। किसी को दाखिल खारिज करवानी है, किसी रैयत की ज़मीन में झंझट लगा है या किसी को बन्दोबस्ती लेनी है, तहसीलदार से पहले सुमरितदास से बातें करे। वह रैयतों को एकान्त में लेजाकर कहेगा—तहसीलदार तो हमारी मुट्ठी में हैं। हमको पान-सुपारी खाने के लिए कुछ दो या नहीं दो, तुम्हारी मर्जी; लेकिन तहसीलदार-साहब को तो···वाजिब जो है सो···!

रैयतों से छोटी-छोटी चीज़ें तहसीलदारसाहब खुद कैसे माँग सकते हैं ? वह सुमरितदास ही माँगता है—कद्दू, खीरा, बैंगन, करैला, कबूतर, हल्दी, मिर्चा, साग, मूली ग्रौर सरसों का तेल ! वह सब तो सुमरितदास ग्रपने लिए लेता है। लेकिन चीज़ें लेते समय सुमरितदास रैयत से एकान्त में कहता है, "ग्ररे भाई, ये सब चीज़ें मैं लेकर क्या करूँगा ? न घर है न घरनी, न चुल्हा है न चौका। एक पेट के लिए मँगनी क्यों करूँ ? यह सब तो···।" कभी एक पैसे की तरकारी तहसीलदारसाहब के यहाँ खरीदी नहीं जाती। सुमरितदास भला मँगनी करेगा ! ग्राज उसकी हालत खराब हो गयी है तो क्या वह खान्दान की इज़्ज़त को भी लुटा देगा ! उसके परदादा के दरवाज़े पर हाथी झूमता था। सब करम का फेर है।···सुमरितदास के पेट में कोई बात नहीं पचती। कालीचरन कहता है—मुँह में दाँत हैं नहीं, बात ग्रटके भी तो कैसे ? बेतार !

बेतार को बहुत-सी बातें मिल गयी हैं। पहली बात तो यह कि पच्छिम से मठ पर ग्राचारजगुरु ग्रा रहे हैं, लरसिंघदास को कलक्टर साहब ने भी महन्थ मान लिया है। दूसरी बात यह कि कल से खम्हार[2] खुलनेवाला है, बीच में भदवा पड़ गया था। तहसीलदारसाहब ने कहा है—कल शुभ दिन है।

तहसीलदारसाहब के खम्हार के साथ ही गाँव के ग्रौर किसानों का खम्हार खुलता है। तहसीलदारसाहब का खम्हार बड़ा खम्हार कहलाता है। 'जरीदहाड़' से बचकर भी दो हज़ार मन धान होता है।

···हाँ, तीसरी बात तो कहना भूल ही गया बेतार ! वह लौटकर सुना जाता है, "कपड़ा, तेल ग्रौर चीनी की पुर्जी बाँटने का काम बालदेव को मिला है। नाम तो उसमें डागडरबाबू का भी है, लेकिन डागडरबाबू कहते हैं—हमको फ़ुर्सत नहीं। हमसे कहते थे कि हमारा काम ग्राप ही कीजिए दासजी ! हम बोले कि हमको भी फ़ुर्सत कहाँ है।"

ग्राचारजगुरु के ग्राने की खबर का कोई मोल नहीं भी हो, बाकी दो बातें,

---

१. गवाही की रोटी खानेवाला। २. खलिहान।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि सच हैं, तो वास्तव में कीमती हैं।

बात सच है। बालदेवजी भी कहते हैं, बात ठीक है।

खम्हार ! साल-भर की कमाई का लेखा-जोखा तो खम्हार में ही होता है। दो महीने की कटनी, एक महीना मड़नी, फिर साल-भर की खटनी। दबनी-मड़नी करके जमा करो, साल-भर के खाये हुए कर्ज़ का हिसाब करके चुकाओ। बाकी यदि रह जाये तो फिर सादा कागज पर अँगूठे की टीप लगाओ। सफाई करनी है तो बैल-गाय भरना रखो या हलवाहा-चरवाहा दो। फिर कर्ज़ खाओ। खम्हार का चक्र चलता रहता है। खम्हार में बैलों के झुण्ड से दबनी-मड़नी होती है। बैलों के मुँह में जाली का 'जाब' लगा दिया जाता है। गरीब और बेज़मीन लोगों की हालत भी खम्हार के बैलों जैसी है।...मुँह में जाली का 'जाब'।... लेकिन खम्हार का मोह ! यह नहीं टूट सकता। भुरुकवा उगते ही खम्हार जग जाता है। सूई की तरह गड़नेवाली, माघ के भोर की ठण्डी हवा का कोई असर देह पर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह शून्य हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छूई जाती है तब घूर में फिर से सूखे पुआल डालकर नयी आग पैदा की जाती है। घूर में शकरकन्द पकता रहता है। घूर के पास देह गर्माने की बारी जिसकी रहती है, वह प्रातकी गाता है—'हरि बिनू के पूरिहैं मोर सुआरथ, हरि बिनू के।...' अथवा 'निरबल के बल राम हो सन्तो, निरबल के बल राम !'

दिन-भर धान झाड़-फटककर जमा किया। फिर धान के बोझे छींट दिये गये और शाम से फिर दबनी मड़नी शुरू हो गयी। शाम को घूर के पास 'लोरिक' या कुमर 'बिज्जेभान' की गीत-कथा होती है—

अरे राम राम रे दैबा रे इसर रे महादेव,
वामे ठाढ़ी देवी दुरगा दाहिन बोले काग।
अपन मन में सोच करैये मानिक सरदार,
बात से नाहीं माने वीर कनोजिया गुआर...।

कपड़ा, तेल और चीनी की पुर्जी कमलदाहा के कमरुद्दीबाबू बाँटते थे। मेरीगंज से कमलदाहा दस कोस है। दस कोस जाना तो कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन पुर्जी पाना बड़े भाग की बात समझी जाती है। कमरुद्दीबाबू कुँजड़ा हैं; बैंगन की बिक्री से ही जमींदार हुए हैं; मुस्लींग के लीडर हैं। कटिहार-पूर्णिया मोटर रोड के किनारे पर ही घर है। हमेशा हाकिम-हुक्काम उनके यहाँ आते रहते हैं। महीने में साठ मुर्गियों का खर्च है। लोग कहते हैं कि नये इसडिओ जब आये तो सारे इलाके में यह बात मशहूर हो गयी कि बड़े-कड़े हाकिम हैं; किसी के यहाँ न तो जाते हैं और न किसी का पान ही खाते हैं। लेकिन कमरुद्दीबाबू भी पीछा छोड़नेवाले आदमी नहीं। इसडिओ का डलेवर मुसलमान है। उसको कुरान की कसम देकर पान-सुपारी खाने के लिए दिया। बस, एक बार कटिहार लौट रहे थे इसडिओ साहब ठीक कमरुद्दीबाबू के घर के सामने आकर मोटर-गाड़ी खराब हो गयी। दस बजे रात को इसडिओ साहब और कहाँ जाते ?... उसके बाद से ही कमरुद्दीबाबू आँख मूँदकर बिलेक करने लगे। एक बार पुरैनिया

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिटिन में कांगरेसी खुशायबाबू ने हाकिम से कहा—"पबलिक बहुत शिकायत करती है।" कमरुद्दीबाबू ने हँसते हुए पूछा—"हिन्दू पबलिक या मुसलमान ?" हाकिम भी समझ गये—कमरुद्दीबाबू लीगी हैं, इसीलिए लोग झूठ-मूठ दोख लगाते हैं।···अब तो बालदेवजी पुर्जी देंगे। बालदेवजी को बिलैती कपड़ा से क्या जरूरत ? खध्धड़ को छोड़कर दूसरे कपड़े को छूते भी नहीं।···छूते हैं ? छूने में हर्ज नहीं।···

'जै हो, गन्ही महतमा की जै हो !'···कल खम्हार खुलेगा, पिछले साल तो खम्हार खुलने के दिन जालिमसिंह का नाच हुआ था। जालिमसिंह सिपैहिया ने एक डोमिन से शादी कर ली थी।···लेकिन इस बार कीरतन होना चाहिए। सुराजी कीर्तन ! बेतार कहता है—इस बार बिदापत नाच होगा। डागडरबाबू बिदापत नाच देखेंगे।···तहसीलदारसाहब तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। कितना समझाया कि डागडरबाबू, वह तो बहुत पुराना नाच है। खाली बिकट[1] होता है। डागडरबाबू कहने लगे—'बिदापत ही करवाइए।' पासवानटोली के लिबड़ू पासवान को खबर दे दी गयी है। लिबड़ू नाच का मूलगैन है। मूलगैन, अर्थात् म्यूज़िक डायरेक्टर !

कालीचरन का कीरतन नहीं होगा ? अच्छा कोई बात नहीं, डाक्टरसाहब को एक दिन कीरतन सुना देंगे।

बालदेवजी को डागडरबाबू की बुद्धि पर अचरज होता है—बिदापत नाच क्या देखेंगे ? बड़ा खराब नाच है। कोई भला आदमी नहीं देखता। खराब-खराब गीत गाता है। नाच ही देखने का मन था तो तहसीलदारसाहब से कहकर सिमरबनी गाँव की ठेठर कम्पनी को बुला लेते। आने-जाने और पचीस आदमी के खाने का खर्चा क्या तहसीलदारसाहब नहीं दे सकते थे ?···गाँववाले देखते तो आँखें खुलतीं। सिमरबनी की ठेठर कम्पनी मशहूर है, महाबीर जब जुर्जोधन का पाठ लेकर हाथ में तरवार लेकर गरजते हुए निकलता है तो एक कोस तक उसकी बोली साफ़ सुनायी पड़ती है—"बस बन्द करा दो यह मृदंग बाजा, हमको अच्छा नहीं लगता।"

धिन्ना धिन्ना धिन्ना निन्ना निन्ना !
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना !

बिदापत नाच का मृदंग 'जमीनका' दे रहा है—चलो ! चलो ! चलो !

धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना !
धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना !

गाँव-भर के लोग तहसीलदारसाहब के खम्हार में जमा हुए हैं। शामियाना तान दिया गया है। शामियाना खचमखच है। डाक्टरबाबू, सिंघजी और खेलावनसिंह यादव कुर्सी पर बैठे हैं ! कालीचरन अपने दल के साथ है। जोतखीजी नहीं आये हैं। सिंघजी ने कहा—"आज भी उनके दाँत में दरद है भाई !" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं। सभी जोतखीजी के नहीं आने का कारण

---

१. कॉमिक।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जानते हैं—उनका बेटा नामलरैन भी बिदापत नाच का समाजी है।···बाभन नाचे तेली तमाशा देखे ! कुपुत्र निकला रामानारायण ! शिव हो !···बालदेव-जी नहीं आये हैं। कोई भला आदमी नहीं देखता बिदापत नाच ! अब मृदंग पर 'चलन्ती' बज रहा है—

तिरकिट धिन्ना, तिरकिट धिन्ना !
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना !
धिनक धिनक धा,
ध्रिक् ध्रिक् तिन्ना !

'ओ···! होय ! नायकजी !"

बिकटा[1] आया। भीड़ में हँसी की पहली लहर खेल जाती है—सैकड़ों मुक्त हृदयों की हँसी !···पायल की झनकार !

मुँह पर कालिख-चूना पोतकर, फटा-पुराना पाजामा पहनकर लौकायदास बिकटा बन गया है। वह जन्मजात बिकटा है। भगवान ने उसे बिकटा ही बनाके भेजा है। ऊपर का ओंठ त्रिभुजाकार कटा है। सामने के दाँत हमेशा निकले रहते हैं और शीतला माई ने एक आँख ले ली है। बात गढ़ने में उस्ताद है।

"ओ ! होय ! हो नायकजी !"

"क्या है ?"

"अरे, यह फतंग-फतंग क्या बज रहे हैं ?"

"अरे, मृदंग बज रहा है। यह करताल है, यह झाल है।"

"सो तो समझा। यह धड़िग धड़िगा, गनपतगंगा क्या बजाते हैं ?"

"नाच होगा नाच, विद्यापति नाच !"

"ओ, हम समझे कि 'लीलामी' का ढोल बोल रहा है।"

···धिन ताक धिन्ना, धिन ताक धिन्ना !

आहे ! उत्तरहि राज से आयेल हे नटुकवा कि आहे मैया
कि आहे मैया सरोसती हे परथमे बन्नोनि हे तोहार !
···हमहूँ मूरख गँवार कि आहे मैया,
सरोसती, भूलल आखर जोड़िके आहे मैया,
कण्ठे लीहै हे बास !

"ओ···ओ, होय नायकजी !" बिकटा जोर से चिल्ला उठता है। ताल भी कट चुका है। ठीक ताल काटने के समय बिकटा को चिल्लाना चाहिए, इसलिए मृदंग के ताल का ज्ञान बिकटा को होना ही चाहिए।

"तुम कैसा बेकूफ हो जी !"

"अरे हो नायकजी ! यह आप लोग किसका बन्दना कर रहे हैं ?"

···हा-हा ! हा ! हा-हा-हा !···हँसी की दूसरी, लेकिन हल्की लहर।

"बेकूफ ! सुनते नहीं हो, सरोसती माता का बन्दना है !"

"यह सुरस्सु सुरती···सुर···सुरसस्सती माता को तुम देखा है ?···हमको

---

१. विदूषक।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
तुम बेकूफ कहते हो ? बेकूफ तो तुम खुद हो । अरे, सरस्सती का बन्दना तो पढ़ल पन्नित लोग करता है ।"

···हा ! हा ! हा-हा ! ···भीड़ में खिलखिलाहट ।

"तो हम लोग किसको बन्देंगे ?"

"ऊँह, तुम खाँटी चलानी घी हो, जिस चलानी घी की पूड़ी-भण्डारा में हुई थी जिसको खाकर हमारा पेट दस दिन खराब रहा था ।···बिना किसी मिलावट के तुम भी खाँटी बेकूफ मालूम होते हो । इतना भी नहीं जानते ? सुनो ! जरा बजाने कहो—धिनक धिन्ना, तिरकिट धिन्ना !"

"अरे दाल बन्दो, भात बन्दो, साग बन्दो बथुआ !

"यह तो हुआ कच्ची, सरकार ! अब ज़रा पक्की सुनिए—

"अरे चूड़ा बन्दो, भूजा बन्दो, रोटी बन्दो मड़ुआ !"

···हा ! हा ! हा ! ···हा ! हा ! ···

"अब फल मेवा, सरकार !

"अरे गुलर बन्दो, डुमर बन्दो और बन्दो अल्हुआ !"

हा ! हा ! हा ! ···सैंकड़ों खिलखिलाहट !

"हल बन्दो, बैल बन्दो और बन्दो गइआ !

"···अब सबसे बड़ा भगवान !

बिकटा मुँह बनाता है ।

"चटाक पटपट दड़त सिर पर भागत बाप के भूतवा ।

सबसे बढ़ि के तोहरे बन्दो मालिक बाबूक जूतवा !"

बिकटा खेलावन के पैर के सलमसाही जूते को प्रणाम करता है ।

डाक्टरसाहेब तो अचरज से गुम हो गये हैं; एमदम खो गये हैं नाच में ।··· इस बार नाच जमेगा । आखिर यह सब पुरानी चीज़ है, क्यों भाई ! ···सब बात तो ठीक ही कहता है ।

··धिन्ना धिन्ना, धिन्ना तिन्ना । समाजी लोगों ने शुरू किया :

आहे लेल परवेश परम सुकुमारी हे,
हँस गमन बिरखामान दुलारी हे ।

मृदंग के ताल पर दबे पाँवों नटवा आता है । ताल पर ही चलकर सबसे पहले मृदंग को प्रणाम करता है, फिर झाल-करताल की ओर, अन्त में मूलगैन लिबड़ू पासवान का पैर छूकर प्रणाम करता है । पोलियाटोली के छीतनदास का बेटा चलित्तरा लड़कियों की तरह लम्बा बाल रखता है । नाक में बुलाक भी हमेशा पहने रहता है । वह नटवा है । अभी साज-पोशाक पहनकर एकदम बाभिन की तरह लग रहा है छौंड़ा ।···कान में कनफूल किसका है ? कमली दीदी का ? ···वाह रे छौंड़ा, आज यदि यह कान का कनफूल बक्सीस में जीत ले तो समझें कि असल बिदपतिया का चेला है ।···मृदंग बजाता है उचितदास ! क्या कहा—असल बिदपतिया ?···हम सहरसा के गैनू मिरदंगिया का चेला हैं ।···जानते नहीं, गैनू मिरदंगिया एक बार अपने समाजी के साथ कहीं से नाचकर आ रहा था । चोर लोग जानते थे कि गैनू मिरदंगिया का समाजी एक-एक सौ रुपैया नकद,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
धोती, कुर्ता, गमछा वगैरह लेकर घर लौटता है। बस, ठुठ्ठी पाखर के पेड़ के पास चोरों ने घेर लिया गैनू मिरदंगिया को। वह पीछे पड़ गया था—दिसामैदान के लिए सायद। गैनू मिरदंगिया ने क्या किया ? बोलो तो ! नहीं जानते ? हा-हा ! मिरदंग पर थाप दिया। दाहिने पूरे पर अंगुलियाँ फिरकी की तरह नाचने लगीं—धृकिट धिन्ना ना निन्ना ना निन्ना ना ना। तो मृदंग के पूरे की सूखी चमड़ी मानो जी उठी; साफ आदमी की तरह बोली निकली—'ठुट्ठी पाखैर तर चोर घेरलक हो, चोर घेरलक !'···लिबडूदास का समाजी है, खेल नहीं ! नाच बेटा !···

धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि धिनता !

आहे तन मन बदन मदन सहजोर हे,

आहे दामिनी ऊपर···

"है रे ! है रे ! है रे !" बिकटा कलेजा पकड़कर मुँह बनाता है।

···धिनक धिनक ता, धिनक धिनक ता···

आहे, दामिनी ऊपर उगलय चान हे।

बिकटा मूर्छित होकर गिर पड़ता है—"अरे बाप !"

"अरे क्या हुआ ?"

"अरे बाप !"

"अरे ! बोलो भी तो ? क्या हुआ ?"

"अच्छा नायकजी, एक बात बताइए। जल्दी बताइए। आस्मान का चान यदि धरती पर उतर आया है तो धरती के चान को ऊपर जाना पड़ेगा ?"

"अरे धरती पर भी कहीं चान होता है ?"

"सुनिए जरा इसकी बोली ! इसीलिए न कहा था कि खाँटी चलानी घी हो। अजी हमारी एक ही बिजली बत्ती खराब है, तुम्हारी क्या दोनों खराब हैं ?··· आजकल रेलगाड़ी में सुनते हैं कि बत्ती नहीं जलती। पहले बिलेकोट तब तो बिलेक मारकेट।"···हा ! हा ! हा ! हा !···साला कटिहार नानी के यहाँ बराबर जाता है। रेलगाड़ी की भी गलती निकालता है। अंग-भंग आदमी सारी दुनिया को अंग-भंग देखता है। सुनो क्या कहता है, धरती का चान किसको बनाता है ?

"अरे, भकुआ नायकजी, धरती का चान अपनी छतीसों कल्ला के साथ तुम्हारे सामने खड़ा है, चौंधिया गये हो क्या ? जरा छट्ठम लैंट जलाकर देखो।"

···हा ! हा ! हा ! हा !···साला अलबत्त बात बनाता है !

"छट्ठम लैंट नहीं जानते ? देखो पंचम लैंट तो यही है जो अभी पंच परमेसर के बीच में जल रहा है।···छट्ठम लैंट तुम्हारे घर में आजकल जलता है ! तेल मिलता ही नहीं—एक पटुआ के संठी में आग लगाकर हाथ में लेकर खड़ा रहो, भकभक गैशबत्ती की-सी रोसनी होने लगेगी। हम आजकल यही करते हैं।···अच्छा, आप ही लोग देखिए पंच परमेसर, हमसे ज्यादे सुन्नर यहाँ कोई हैं ?"

'नहीं नहीं, आप तो कामदेव के औतार हैं।" सिंघजी कहते हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

…हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! हा ! नाचो रे चलितरा ! आज मोहड़ा[1] पड़ा है ! जी खोल के नाच बेटा !…

धिनागि धिन्ना, तिरनागि तिन्ना
धिनक धिनता तिटकत ग-द-धा !…
आहे चलहु सखि सुखधाम, चलहु !
आहे कन्हैया जहाँ सखि हे,
रास रचाओल हे ! चलहु हे चलहु !
…धिन्ना तिन्ना ना धि धिन्ना !
आहे सिर बिरनाबन कुंज गलिन में
कान्हु चरावत धेनु,
आहे मुड़ली जे टेड़े बिरीछी के ओटे,
आहे अबे ग्रिहे…
…धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि…
आहे ! अबे ग्रिहे रहलो नि जाये, चलहु हे चलहु !

ततमाटोली की औरतों के गिरोह में बैठी फुलिया का जी ऐंठता है…अबे ग्रिहे रहलो नि जाये !

तहसीलदारसाहब की हवेली की सामनेवाली खिड़की खुली हुई है। कमली दीदी भी देख रही है। नहीं देखेगी तो बक्सीस कैसे देगी ?

"देख बेटा ! फिरकी की तरह नाच ! पुरइन के फूल की तरह घाँघरी खिल जाय !"

"अरे हो नायकजी ! एक बात तो बताइए। वह हमको छोड़कर कहाँ जा रही है ? चलहु-चलहु—कहीं मेला-तमासा है या भोज है ? या कपड़ा की पुर्जी बँटती है ?"

"अजी वह तुम्हारे ही पास जा रही है। तुम्ही किसुनकन्हैया हो न ! तुम्हारे रूप पर मोहित हो गयी है।"

"ओ ! …वही तो हम भी कहते थे कि हमको छोड़कर कहाँ जा रही है ! हम कन्हैया हैं, लेकिन कन्हैया के बाप का नाम तो नन्द था और हमारे बाप का नाम उजाड़ूदास।"

…हा-हा ! हा-हा ! हा-हा !

"अरे उल्लू ! तुम्हारे बाप का नाम उजागिरदास था। तुम इसको खराब करके काहे बोलते हो ?"

"उजागिरदास तो माय-बाप ने रख दिया था। लेकिन जिस मालिक के यहाँ भैंस-गाय चराने के लिए भरती होते थे, वही उनको कुछ दिन बाद मार-पीटकर निकाल देता था। मेरे बाबूजी गाय-भैंस लेकर जाते थे और मालिक के ही हरे-भरे खेत में छोड़कर सो जाते थे—मिहनत किया है लछमी ने, बैल ने ! मालिक लोग दूध-घी खा-खाकर जिस भैंस के दूध से मोटे हो गये हैं, इस उपजा में तो

---

१. मोर्चा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
इनका भी हिस्सा है। खाओ लछमी !···इसलिए लोगों ने उनका नाम उजाड़ूदास रख दिया ।"

नटवा अब गाँजा में दम मार आया है। अब देखना, नाच जमायेगा छौंड़ा आज।

धिरनागि धिन्ना···

आहे कुंज भवन से निकलल हो,
आहे सखि रोकल गिरधारी !

"हाँ, चोरी-चोरी घर से निकलकर कोठी के बागान में जाओगी, रसलील्ला करने, तो रोकेगा नहीं ? अच्छा किया है।" बिकटा अपने-आप बड़बड़ाता है।

नटुआ दोनों हाथ जोड़कर, फन काढ़े गेहुअन साँप की तरह हिलते-डुलते, कमर के सहारे बैठ रहा है। धरती पर घाँघरी पुरैन के पत्ते की तरह बिछी हुई है।···मिनती करती है। है रे···! है रे!···वाह रे छौंड़ा ! नाम रख लिया गाँव का !

आहे, एकहि न–ग–र बसू माधव हो,
आहे जनि करू बटवा–वा–री !
आहे छोड़ू छोड़ू जदूपति आँचर हो,
हो भाँगत न–ब सारी।

'हाँ भैया ! कोटा-कनटरोल का जमाना है। कपड़ा नहीं मिलता है। जरा होसियारी से···!"

अरे अपजस होइत जगत्र भरि हो !

"ओह बड़ी कुलमन्ती बनी है ! लछलछ किरिया खाये कुलमन्ती, मोर मन नहिं पतिआये।" बिकटा बीच-बीच में टोकता रहता है।

आजु परेम रख लय लीह हो,
आहे पन्थ छाड़ू झटकारी !

"सब दही जुठैलक रे किसना ! आहि रे बाप !" बिकटा चिल्लाता है।

आहे संग के सखि अगुआइल हो
आहो कान्हा, ह-म-हू एकसरि नारी !

"है रे ! है रे ! एकसरि नारि रे !"

भनहिं विद्यापति गाओल हो, सुनू कूलमन्ती नारी
हरि के संग किछु डर नाहि हे···।

"हाँ, हरि के संग काहे दोख होगा ! जितना दोख, हम सब लोगों के साथ। अपने खेले रसलील्ला, हमरे बेला में पंचायत का झाड़ू और जूत्ता।"

क्या है ? क्या हुआ···डागडरसाहब का नेंगड़ा नौकर आकर क्या बोलता है ?···कमली दीदी ने कनफूल दे दिया ?···रे ?···वाह रे छौंड़ा ! नाम किया ! ···जीओ रे चलित्तरा ! जीओ !

बिकटा भी क्यों पीछे रहे ? वह भी आज 'थै-थै' कर देगा। नाच जमा है आज ! "अरे होय नायकजी ! हमारे दुख को देखनेवाला, सुननेवाला कोई नहीं।"

"क्या हुआ ?"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"लिकिन कहें कैसे ?" बिकटी तहसीलदार की ओर उंगली उठाकर डरने की मुद्रा बनाता है।

"अरे ! हम समझ गये। तो कहो न भाई," तहसीलदार समझ जाते हैं, "दुनिया में सिर्फ हम ही एक तहसीलदार-पटवारी हैं ? बात तो तुम ठीक ही कहोगे। सुनते हैं डाक्टरसाहब, अब यह तहसीलदार का बिकटै करेगा !"

"नायकजी ! हमको धीरज बँधानेवाला कोई नहीं। सुनते हैं कि वराह-छत्तर में सरकारबहादुर कोसी मैया को बाँध रहा है, लेकिन हमारे दिल को बाँधनेवाला कोई नहीं !"

"अरे कहो भी तो !"

"अच्छा तो सुनो ! पचास साल पहले से सुरू करते हैं, सर्वे सितलमंटी[1] साल से।"

...सुनो ! सुनो ! ज़रूर कोई नयी बात जोड़ा है। यह भी बकसीस वसूल करेगा।

"बजाने कहो—ताकधिन-ताकधिन !"

अरे केना के बांधवै रे धीरजा, केना के बांधबै रे,
अरे मुद्दई भेल पटवारी रे धीरजा केना के बांधबै रे !

"सर्वे जब होने लगा !"

दस हाथ के लग्गा बनैलके
पाँचे हाथ नपाई !

...पांच हाथ पार ? हा...हा...हा !...

गल्ली-कुची सेहो नपलकै,
ढीप-ढाप सेहो नपलकै,
घाट-बाट सेहो नपलकै,
डगर-पोखर सेहो नपलकै।

"तब ?"

हाथी जस भलवेसन बैठलकै,
जम्मा भेलै भारी रे धीरजा के बांधबै रे !

"इधर जमींदारी सिपाही छप्पर पर का कद्दू, लत्तर का खीरा, बकरी का पाठा और चार जोड़ा कबूतर सिरिफ तलबाना में ही साफ़ कर गया।"

"तब ?"

थारी बेंच पटवारी के देलियै,
लोटा बेंच चौकीदारी।
बाकी थोड़ेक लिखाई जे रहलै,
कलम देलक धुराई रे धिरजा।

"आखिर..."

कहे कबीर सुनो भाई साधो

---

१. सर्वे सेटलमेंट।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब दिन करी बेगारी
खँजड़ी बजाके गीत गवैछी
फटकनाथ गिरधारी रे धिरजा।

ओ-हो-हा-हा, खी-खी-खी···हा-हा !···शामियाना फट जायगा। कमाल कर दिया साले ने। अलबत्त जोड़ा। वाह !···वाह रे लौकायदास !

डाक्टर तहसीलदार से पूछता है, "गीत तो विद्यापति का गाता है। बिकटै की रचना किसने की है ?"

"आप भी डाक्टरबाबू क्या पूछते हैं," तहसीलदारसाहब हँसते हैं, "इनकी रचना के लिए भी कोई तुलसीदास और बाल्मीकि की ज़रूरत है ? खेतों में काम करते हुए तुक पर तुक मिलाकर गढ़ लेता है।"

···डाक्टरसाहब ने बिकटा को क्या दिया ?···पँचटकिया लोट ?···बाजी मार लिया बिकटा ने भी।

आहे परथम समागम पहुसंग हे···

धिरनागि धिरनागि !

भुरुकवा उगने के बाद नाच खत्म हुआ। खूब जमा।···अब खुलेगा खम्हार।

बिछावन पर लेटकर डाक्टर सोचता है—कोमल गीतों की पंक्तियाँ ! अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं !···'पिया भइले डुमरी के फूल रे पियवा भइले।···चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल, तिरिया बयरि दुहु लोचन—हिरदये के भेद बताय।···भोंमरा-भोंमरी···रोई-रोई कजरा दहायल, धागे तिलक बहि गेल।···चान के उगयत देखल सजनि गे ··लट धोये गइली हम बाबा की पोखरिया···पोखरि मैं चान केलि करे।'

डाक्टर सोचता है—विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था—"विद्यापति कवि के गान कहाँ ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया—ज़िन्दगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों ने, कवि ! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िन्दगी के मधुरस बरसा रहे हैं।···ओ कवि ! तुम्हारी कविता ने मचलकर एक दिन कहा था—चलो कवि, बनफूलों की ओर !

···बनफूलों की कलियाँ तुम्हारी राह देखती हैं।

सोलह

मुसम्मात सुनरी !

टक्का कटपीस—एक गज।
छींट—डेढ़ गज।
मलेछिया साटिन—एक गज।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
साड़ी—एक नग ।

बालदेवजी कपड़े की पुर्जी बाँट रहे हैं । रौतहट टीशन के हंसराज बच्छराज-मरवाड़ी के यहाँ कपड़ा मिलेगा ।

खेलावन यादव के दरवाजे पर खड़े होने को भी जगह नहीं । सुबह से पुर्जी बाँट रहे हैं, दोपहर हो गयी ।···साड़ी नहीं है !···नहीं ?···बालदेवजी ! हमको एक साड़ी···रौफा की माये एकदम नगन हो गयी है बालदेवजी !

बालदेवजी कहते हैं, "देखिए ! मौजे-भर में सिरफ सात साड़ियाँ दी गयी थीं । चार फर्दी हैं, वह तो मालिक लोगों के घर में पहनने की चीज है···चौदह रुपये जोड़ी । बाकी तीन साड़ियों को हमने इस तरह बाँट किया है, ऐसे लोगों को दिया है जो एकदम बेपरदे···"

"बेपरदे तो सारा गाँव है बालदेवीजी !"

खेलावन यादव कहते हैं, "इतने दिनों से जब कमरुद्दीबाबू पूर्जी बाँटते थे, उस समय गाँव की औरतें बेपरदे और नगन नहीं थीं क्या ? भाई, जितना है उसी में इनसाफ़ से बाँट-बखरा कर लो ।"

कालीचरन जिद्द कर रहा है, पुर्जी पर दो गज छींट और लिख दीजिए; हरमुनियाँ का खोल बनवाएँगे । बालदेवजी नहीं मानते ।···आदमी के पहनने के लिए कपड़ा नहीं, हरमुनियाँ-ढोलक को चपकन सिलाकर पहनावेगा ?···देखो तो भला !

बालदेवजी का राह चलना मुश्किल हो गया है । कपड़ा की मेम्बरी मिली है कि बलाय है ! दिसा-मैदान जाते समय भी लोग पीछा नहीं छोड़ते हैं ।···जाय-हिन्द बालदेवजी ! आये थे तो आपके ही पास । दुलारी का गौना है ।···अच्छा-अच्छा चलिए, हम दिसा से आते हैं ।···कपड़ा अब कहाँ है ? रिचरब[1] में भी नहीं है । सिरिफ कफन और सराध का कपड़ा है ।···उसी में से ? कैसे देंगे ? कफन और सराध का कपड़ा गौना में ?

बालदेवजी को क्या मालूम कि दुलारी का गौना पाँच साल पहले हो गया है और उसके तीन बच्चे भी हैं ।

लछमी दासिन ने रामदास को भेजा था, "आचारजजी आ रहे हैं । आपको तो आजकल छुट्टी ही नहीं रहती है । उधर जाते भी नहीं । कण्ठी लेने की बात हुई थी ?···सो आपकी क्या राय है ? आचारजजी आ रहे हैं । चादर-टीका के लिए चादर के अलावे पूजा-विदाई के लिए भी एक जोड़ी धोती चाहिए—बिना कोर की, महीन मारकीन की या ननकिलाठ की धोती ।···और कोठारिनजी को भी कपड़ा नहीं है ।"

बड़ी मुश्किल है ! रिचरब में थोड़ा कपड़ा है सो सादी-विहा और सराध के लिए । कैसे दिया जाय ? ओ ! आचारजजी महन्थसाहेब के सराध में ही आये हैं । तब ठीक है ।···सिरिमती···नहीं, सिरिमती नहीं । दासिन लछमी कोठारिन—ननकिलाठ, दस गज ! फैन मारकीन, दस गज । चद्दर, एक !

---

१. रिजर्व ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामदास याद दिला देता है, "लँगोटा-कोपीन के लिए भी एक गज।"

बड़ी मुश्किल है ! बालदेवजी को अब रोज दस-पन्द्रह बार से ज्यादे झूठ बोलना पड़ता है। क्या किया जाय ? बड़ा संकट का काम है।···इधर जिला कांग्रेस की मिटिन भी है। मेनिस्टरसाहब आ रहे हैं। गाँव से झण्डा-पत्तखा और जत्था भी ले जाना होगा। जिला सिकरेटरी गंगुलीजी ने चिट्ठी दी है। परचा भी आया है···।

चलो ! चलो ! पुरैनियाँ चलो ! मेनिस्टरसाहब आ रहे हैं। औरत-मर्द, बाल-बच्चा, झण्डा-पत्तखा और इनकिलास-जिन्दाबाघ करते हुए पुरैनियाँ चलो ! ···रेलगाड़ी का टिकस ?···कैसा बेकूफ है ! मेनिस्टरसाहब आ रहे हैं और गाड़ी में टिकस लगेगा ? बालदेवजी बोले हैं, मेनिस्टरसाहब से कहना होगा, कोटा में बहुत कम कपड़ा मिलता है।···चलो-चलो, पुरैनियाँ चलो। भुरुकवा उगते ही कालीथान के पास जमा होकर जुलूस बनाकर चलो !

"बोलिए एक बार—काली माय की जाये !"

"जाये ! जाये !"

"बोलिए एक बार परेम से—गन्ही महतमा की जै !"

"जाये ! जाये !"

फरर···र···र···र, पेड़ पर घोंसलों में सोये हुए पंछी पंख फड़फड़ाकर उड़े। कालीचरन कहता है, यदि गुलेटा रहता तो अँधरे में भी अभी एक-दो हरियल को मारकर गिरा देते। बासुदेव कहता है—चुप रहो। बालदेवजी ने नहीं सुना, नहीं तो अभी फिर अनसन···।

गिनती करो। कितनी औरत, कितने मरद ? अभी बच्चों को मत लो, झंझट होगा। कालीचरन और गूदर सबों का देह छू-छूकर गिनते हैं। कालीचरन कहता है—पाँच कोरी चार औरत। गूदर हिसाब करता है—चार कोरी दस मरद। ···मातबर लोग काहे जायेगा ? मातबर लोग तो हमेशा गदारी करते हैं।··· बालदेवजी ने आज फिर एक नयी बात कही—गदारी ! गदार !···गदारी ?

जुलूस में गाने के लिए बालदेवजी को दो ही गीत याद हैं। एक नीमक कानून के समय का सीखा हुआ—'आओ वीरो मरद बनो अब जेहल तुम्हें भरना होगा।' दूसरा, बियालिस मोमेंट के समय जेहल में सुना था—'जिन्दगी है किरान्ती की किरान्ती में लुटाये जा।' लेकिन यह तो सोशलिस्ट पार्टीवाला गाता है।···पुराना ही ठीक है—आओ बीरो मरद बनो···! आज बालदेवजी खुद गाते हैं : सुनरा भी गीत का आखर धरता है :

तन्त्रिमाटोली के मंगलू ततमा को कँपकँपी लग जाती है। जेहल ! अरे बाप !···ये लोग जेहल ले जा रहे हैं। पन्द्रह साल पहले उसको चोरी के केस में सजा हुई थी। जेल के जमादार की पेटी की मार वह आज भी नहीं भूला है। चारहौदा[1] पानी रोज भरना पड़ता था। नहीं !···वह पेशाब करने के बहाने पीछे रह जाता है और नजर बचाकर घर की ओर भागता है। सब पगला गया है !

---

१. हौज।

 Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहर पुरैनियाँ !···यही है सहर पुरैनियाँ—पक्की सड़क, हवागाड़ी, घोड़ा-गाड़ी और पक्का मकान !··· 'एक रत्ती चिनगी चिनगल जाये, सहर पुरैनियाँ लूटल जाये ?··· क्या है, बोलो तो ?' 'आग !'···गाँव के बच्चे आज भी बुझौवल बुझाते समय शहर पुरैनियाँ का नाम लेते हैं। मेरीगंज के इस जुलूस में चार आदमी ऐसे भी हैं जो शहर पुरैनियाँ पहले भी आये हैं। बहुत तो आज ही पहली बार रेलगाड़ी पर चढ़े हैं। कलेजा धकधक करता है। जिसके हाथ में गन्ही महतमा का झण्डा रहता है, उससे गाटबाबू, चिकिहरबाबू, टिकस नहीं माँगता है।···सचमुच में रेलगाड़ी 'जै जै काली छै छै पैसा' कहते हुए दौड़ती है ! जै जै काली ?···यही है कालीपुल। बालदेवजी दिखलाते हैं—यही कालीपुल है। पुल बाँधने के समय पाँच आदमी की बलि दी गयी थी।···बाप रे ! पाँच ?···जै काली ! नीमक कानून के समय इसी पुल के नीचे पुलिस के सिपाहियों ने जाड़े की रात में भोलटियरों को लाकर, पानी में भिगा-भिगाकर पीटा था। पानी में डुबा देता था, सिर को हाथ से गोते रहता था। दम फूलने लगता था, नाक में पानी चला जाता था।···यह है इसपिताल। अपने गाँव का इसपिताल तो इसके सामने बुतरू[1] है।···जेहल ? यही जेहल ? जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करन को जायेंगे···आओ बीरो जेहल भरो।···फुलिया पुरैनियाँ टीसन से ही कुछ ढूँढ़ रही है···खलासीजी तो काला कुरता पहनते हैं।···यह है कचहरी। यहीं कर-कचहरी में लोग मर-मुकदमा करने के लिए आते हैं ! इसी तरह उपसर्ग लगाकर सब बोलते हैं—कर-कचहरी खर-खजाना गर-गरामित, घर-घरहट, चर-चुमौना, जर-जमीन, पर-पंचायत, फर-फौजदारी, बर-बरात, मर-मुकदमा या मर-महाजन !

शहर के लोग भी अचरज से इस जुलूस को देख रहे हैं। इनकिलास···जिन्दाबाघ !···कचहरी के मोड़ पर, फल की दूकान पर बैठे हुए मौलवी साहब हँसते हैं—"सब कपड़ा लेने आये हैं ! जाओ-जाओ, मिलेगा कपड़ा। इन्किलाब बोलता है। मतलब भी समझता है या···।"

झण्डा ? वड़ा झण्डा आसमान में लहरा रहा है, वही है रामकिसून आसरम। ऐ। यहाँ सब कोई खड़े हो जाओ। कपड़ा ठिकाने से पहन लो। उस कल के पास जाकर मुँह धो लो। डरते हो काहे ? बालदेवजी हैं। यहाँ से सत्तरबन्दी होकर चलना होगा। बालदेवजी सबसे आगे रहेंगे। सबसे पहले कालीचरन नारा लगायेगा—इनकिलाब; तब तुम लोग एक साथ कहना—जिन्दाबाघ। वैसे गड़बड़ा जाता है। कालीचरन कहेगा—अंग्रेजी राज; तुम लोग कहना—नास हो। लगाओ लारा कालीचरन ! कालीचरन छाती का जोर लगाकर चिल्लाता है—

"इनकिलाब !"

"नाश हो, जिन्दा···नाश !"

"ऐ ! ठहरो, नहीं हुआ।"

शिवनाथ चौधरीजी, गंगुलीजी, शंशाकजी, नाथबाबू, सभी आश्चर्य से देखते

---

१. बच्चा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हैं। चौधरीजी बालदेव पर बड़े खुश हैं। नाथबाबू कहते हैं, ऐसे ही सभी वरकर अपने फील्ड में वर्क करें तब तो ? दो महीने में इतने गाँव को अकेले ही आरगे-नाइज कर लिया है। चवन्निया मेम्बर कितना बनाया है ? पाँच सौ ? तब तो तुम···आप जिला कमिटी के मेम्बर हो गये।" गंगुलीजी तो बालदेव को पहले से ही आप कहते हैं, आज नाथबाबू भी आप कहते हैं।

चौधरीजी कहते हैं, "अरे बालदेव, चरखा सेण्टर खुलवाओ। रचनात्मक काम कुछ होता है या नहीं ?"

खादी भण्डारवाले छत्तीसबाबू कहते हैं, "खादी भण्डार में खाँटी गाय का घी भेजो देहात से बालदेव !"

सचमुच बालदेवजी गियानी आदमी हैं; बड़े आदमी हैं। जिस सीढ़ीवाली चौकी पर बाबू-बबुआन लोग टोपी पहनकर बैठे हैं, उसी पर बालदेवजी भी बैठे हैं।···अरे, वह कौन है ? बौना ? डेढ़ हाथ का आदमी ! देखने में चार साल के लड़के जैसा लगता है। दाढ़ी-मूँछ देखो ! बोली कितनी भारी है ! धुधुक्का[1] में तो सबों की बोली भारी मालूम होती है। किसी की बोली समझ में नहीं आती है। न जाने कौन देश की बोली बोलता है—हिन्दुस्तान, आजादी और गांधीजी को छोड़कर और कोई बात नहीं बूझी जाती है।···ताली काहे बजाया ? बस, सभा खतम ? मेनिस्टरसाहेब कहाँ हैं ? कौन ? वही दुबला-पतला, बड़ी-बड़ी मोंचवाला आदमी ? बोलता था एकदम परेम से···आस्ते-आस्ते। माथा की टोपी भी लब्बड़-झब्बड़। उस बार गाँव में दारोगासाहेब आये थे, देखा था ? सारे देह में चमोटी लपेटा हुआ था। मेनिस्टरसाहब ऐसे ही हैं ? यह कैसा हाकिम !

कालीचरन कहता है, "मेनिस्टरसाहब नहीं, यह रजिन्नरबाबू थे। सुराजी कीर्तन में रोज सुनते हो नहीं···देसवा के खातिर मजरूलहक भइले फकिरवा हो, दीन भेलै रजिन्नर परसाद देसवासियो !···देस के खातिर अपना सब हक-हिस्सा, जगह-ज़मीन, माल-मवेशी गँवाकर फकीर हो गये।···आहा-हा !······ हूँ ! आजकल मेनिस्टर से भी जादे पावरवाला आदमी हैं। ठीक है, होगा नहीं ? देश के खातिर अपना मजरूलहक माने बिलकुल हक खतम कर दिया।···"

चौधरीजी ने बालदेवजी को दस रुपैया का नोट दिया है—"सबों को जल-पान करा देना।"

जै, जै ! चलो ! चलो !

कालीचरन कहाँ है ? वासुदेव भी नहीं है। नहीं, नहीं, लौटते समय लारा लगाने की जरूरत नहीं। लेकिन कालीचरन और वासुदेव कहाँ रह गये ? भीड़ में से किसी ने कहा—वे दोनों एक पैंजामावाला सुराजीबाबू के साथ न जाने कहाँ जा रहे थे। बोला, कल जायेंगे।···पैंजामावाला सुराजीबाबू ? लेकिन बिना पूछे क्यों गया ? सहरवाली बात है। बालदेवजी कालीचरन पर आजकल खुश नहीं, कालीचरन भी आजकल बालदेवजी से अलग-थलग रहता है।

"कालीचरन नहीं, कामरेड कालीचरन। कामरेड माने साथी। हम सभी

---

१. लाउड-स्पीकर का भोंपा।

 Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
साथी, आप भी साथी। यहाँ कोई लीडर नहीं। सभी लीडर, सभी साथी हैं।··· अच्छा कामरेड, आपके गाँव में सबसे ज्यादे किस जाति के लोग हैं ? ···यादव ! ठीक है। भूमिहार ? ···एक घर भी नहीं ? गुड ! जुलूस में जितने आदमी थे, सब क्या बालदेवजी से प्रभावित हैं ? माने ब्लाइंड फौलोअर,···यानी आँख मूंदकर विश्वास करनेवाले तो नहीं ? अन्ध-भक्त तो नहीं ?"

"जी, अन्धा भक्त तो महन्थ सेवादास था, सो मर गया। उसकी कोठारिन तो···।"

"···ठीक है। अच्छी बात। आपने सारी बातें समझ लीं न ? मेम्बरी की जिल्द ले जाइए। कुछ लिटरेचर दे दीजिए इनको राजबल्ली ! जब कामरेड सैनिकजी को इधर भेज दीजिएगा।···ये हैं कामरेड गंगाप्रसादसिंह यादव सैनिकजी, और आप लोग हैं, कामरेड कालीचरन और···क्या नाम ? हाँ, बासुदेवजी। आज मेरीगंज से रामकृष्ण आश्रम में जो जुलूस आया था, इन्हीं लोगों की सर्दारत में। पार्टी प्लेज पर साइन कर दिया है। मेरीगंज में सबसे ज्यादे यादवों की आबादी है। वहाँ आपका जाना ही ठीक होगा। वहाँ आर्गेनाइज करने में कोई दिक्कत नहीं होगा।···वही, बस बालदेव है एक।···अच्छा कामरेड कालीचरन ! आपको और भी कुछ पूछना है ?" सोशलिस्ट पार्टी के जिला-मन्त्रीजी पूछते हैं।

"जी, यदि हम कोई काम करने लगें, दस पवलिक की भलाई का काम, और उसको कोई 'हिसाबात' कहकर रोके तो हम क्या करेंगे ?" कालीचरन को बस यही पूछना है।

जिला-मन्त्रीजी कुछ सोचने लगते हैं। लेकिन कामरेड राजबल्लीजी को कुछ सोचनेमें समय नहीं लगता; बस, तुतलाने में कुछ देरी लगे तो लगे—"अ-अ-अरे ! काम-काम-रेड, उससे साफ ल-प-लप-लफ़्जों में कह दीजिए कि फो-फो-फो-फो ट्टी-टी-टू के मुभमेंट में अहिंसा के भरोसे रहते तो आ-आ-आ-ज ग-न-ही नसीब नहीं होती। उससे साफ लप-लप-लफ़्जों में कह दीजिए कि तुम रि-रि-रि-ऐक्शनरी हो ! डि-डि-डि-डिम-डिमोरलाइज्ड हो। यह ले जाइए, 'डा-डा-डा-डायले डायलेक्टि'···'द···द···द्व···द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद', 'स-स-समाजवाद ही क्यों', दो किताबें। इसमें सब-कुछ लिखा हुआ है। "लाल प-प-पताका' की एक कापी ले जाइए ! इसका ग्राह-ग्राह-आ-ह-ग्राहक वनाइए। लाल झण्डा ले लिया है न ?"

लाल झण्डा !

उठ मेहनतकश अब होश में आ
हाथ में झण्डा लाल उठा,
जुल्म का नामोनिशान मिटा
उठ होश में आ बेदार हो जा !

कामरेड कालीचरन और कामरेड बासुदेव ! ···सुशलिंग पाटी ! ···रास्ते में कालीचरन बासुदेव को समझाता है, "यही पाटी असल पाटी है। गरम पाटी है। 'किरान्तीदल' का नाम नहीं सुना था ? ···'बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
भगतसिंह,' यह गाना नहीं सुने हो ? वही पाटी है। इसमें कोई लीडर नहीं। सभी साथी हैं, सभी लीडर हैं। सुना नहीं ! हिंसाबात तो बुरजुग्रा लोग बोलता है। बालदेवजी तो बुरजुग्रा है, पूंजीवाद है।···इस किताब में सब-कुछ लिखा हुग्रा है। बुरजुग्रा, वेटी बुरजुग्रा, पूंजीवाद, पूंजीपति, जालिम जमींदार, कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो।···ग्रब बालदेवजी की लीडरी नहीं चलेगी। हर समय हिंसाबात, कुछ करो तो बस ग्रनसन।···कपड़ा की मेम्बरी किसी तरह मिल जाय तब देखना !"

स्टेशन पर बासुदेवजी ने भी एक किताब खरीदी, सिर्फ एक ग्राने में। 'लाल-किताव' ! एक ग्रादमी झोली में लेकर बेच रहा था—ईशू सन्देश !

दो किताबें हुईं ग्रब—'ईशू सन्देश' ग्रौर 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' !

सत्रह

ग्राचारजगुरु कासीजी से ग्राये हैं।

सभी मठ के जमींदार हैं, ग्राचारजगुरु। साथ में तीस मुरती ग्राये हैं—भण्डारी, ग्रधिकारी, सेवक, खवास, चिलमची, ग्रमीन, मुंशी ग्रौर गवैया ! साधुग्रों के दल में एक नागा साधू भी है। यद्यपि वह दूसरे मत को माननेवाला मुरती है, फिर भी ग्राचारजजी उसको साथ में रखते हैं। बड़ा करोधी मुरती है। हाथ में छोटा-सा कुल्हाड़ा रखता है। लम्बी दाढ़ी, जटा, सारे देह में भभूत ग्रौर कमर में सिर्फ चाँदी की सिकड़ी ! नंगा रहता है। महन्थसाहेब के साथ वह जिस मठ पर जाता है, वहाँ के महन्थ ग्रौर ग्रधिकारी को छट्ठी का दूध याद करा देता है। क्या मजाल कि सेवा में किसी किस्म की तरोटी हो ! इसीलिए ग्राचारजगुरु उसको साथ में रखते हैं।

नागा बाबा जब गुस्सा होते हैं तो मुँह से ग्रश्लील-से-ग्रश्लील गालियों की झड़ी लग जाती है।···ग्राते ही लछमी दासिन पर बरस पड़े—"तैरी जात को मच्छड़ काटे ! हरामजादी ! रण्डी ! तैं समझती क्या है री ? ऐं, दुनियाँ को तैं ग्रन्धा समझती है ? बोल !···लाल मिर्च की बुकनी डाल दूं। छिनाल ! तैं ग्राचारजगुरु को गाली देती है ? तेरे मुँह में कुल्हाड़े का डण्डा डाल दूं, बोल ! साली, कुत्ती ! साधू का रगत बहाती है ग्रौर बाबू लोग से मुँह चटवाती है ! दूं ग्रभी तेरे गाल पर चाँटा; हट जा यहाँ से, कातिक की कुतिया !"

लछमी हाथ जोड़कर बैठी रहती है। नागा साधू की गालियों पर लोग ध्यान नहीं देते, बुरा नहीं मानते। वह तो ग्राशीर्वाद है। वह नागा बाबा का पाँव पकड़कर कहती है, "छिमा कीजिए परभू दासिन का ग्रपराध !"

रामदास की तो खड़ाऊँ से पीटते-पीटते देह की चमड़ी उधेड़ दी है नागा बाबा ने—"सूग्रर के बच्चे, कुत्ते के पिल्ले ! तैं महन्थ बनेगा रे ! ग्रा इधर ! तुझको

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
खड़ाऊ से टीका दे दूँ महन्थी का ! तेरी बहान को ! (खटाक्) तेरी माँ को ! (खटाक्) घसियारे का बच्चा ! जा लक्कड़ लाकर धूनी में डाल !"

लरसिंघदास खुश है। इसीलिए तो वह अगवानी करने स्टेशन तक गया था। सारी बातें सुनकर आचारजजी भी क्रोध से लाल हो गये थे।...दासिन को मठ से निकालना होगा। नागा बावा को पाँच 'भर' गाँजा दिया है लरसिंघदास ने। अधिकारीजी को एक सौ रुपैया कबूला है।...महन्थी तो धरी हुई है। सतगुरु की दया है।

आचारजगुरु ने लछमी से स्पष्ट कह दिया है—"रामदास को महन्थी का टीका नहीं मिल सकता। क्या सबूत है कि वह महन्थ सेवादास का चेला है ! है कहीं लिखा हुआ ? कोई वील है ? पन्थ के नियम के मुताबिक चेलाहीन मठ का महन्थ आचारज ही बहाल कर सकता है। तू मठ पर नहीं रह सकती। सेवादास ने तुझे रखेलिन बनाया था। सेवादास नहीं है, अब तू अपना रास्ता देख।"

"साहेब की जो मरजी !"

साहब की मरजी !...नागा बाबा की जो मरजी !

नागा बाबा रात में उठकर एक बार चारों ओर देखते हैं, फिर लछमी की कोठरी की ओर जाते हैं खाली पैर। खड़ाऊँ तो खट-खट करेगी !

...हरामजादी किवाड़ बन्द करके सोती है। यहाँ कौन सोया है ? वही पिल्ला रामदसवा !..."अरे उठ, तेरी जात को मच्छर काटे। दासिन को जगा। बाबा का गाँजा मारकर सेज पर सोयी हुई है। कहाँ है मेरा गाँजा ? जानता नहीं, तीन 'भर' रोज की खुराक है। कहाँ ?"

"सरकार ! आधी रात में गाँजा...।"

"चुप हरामजादे ! दासिन को जगा।"

"आज्ञा प्रभू !" लछमी किवाड़ खोलकर निकली है।

"गाँजा कहाँ है ?"

"हाजिर है सरकार !" लछमी एक बड़ी-सी पुड़िया नागा के हाथ में देती है।

...अरे ! हरामजादी के पास इतना गाँजा कहाँ से आया ? पूरा तीन 'भर' मालूम होता है।...यह साला रमदसवा, कोढ़ी का बच्चा यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?...

"अबे सूअर के बच्चे, तैं यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?"...खट्-खटाक् ! लछमी जल्दी से किवाड़ बन्द कर लेती है।

"अच्छा, कल देखना, तुझे बाल पकड़ मठ में घसीटकर नहीं निकाला तो कसम गुरु मचेन्दरनाथ की !"

लरसिंघदास एकान्त में एक बार लछमी से कहना चाहता है, 'तुम घबड़ाओ मत लछमी ! महन्थ तो मैं ही बनूंगा। तुम मठ में ही रहोगी। तुमको मठ से कोई निकाल नहीं सकता। तुम निराश मत होओ !' लेकिन मौका ही नहीं मिलता है। शायद सुबह ही लछमी कहीं चली न जाय।

आचारजगुरु के जवान अधिकारी को भी रात-भर नींद नहीं आयी, "पुरैनियाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिला में कम्बल के नीचे भी घुसकर ससुरे मच्छर काटे हैं हो !"

सुबह को लछमी बालदेवजी के पास जाती है। बालदेवजी पुरजी बाँट रहे थे। सारी बातें सुनकर बोले, "कोठारिनजी, ग्राचारजगुरु तो सभी मठ के नेता हैं। वे जो करेंगे, वही होगा। इसमें हम लोग क्या कर सकते हैं ? बड़ा धरम-संकट है ! किसी के धरम में नाक घुसाना ग्रच्छा नहीं है।···तीसरे पहर टीका होगा ? हम ग्रावेंगे।"

लछमी दासिन को बालदेवजी पर पूरा भरोसा था। तहसीलदार साहब घर में नहीं हैं। डाक्टरसाहब पर-पंचायत में नहीं जाते हैं। सिंघजी सुनकर गुम हो गये। खेलावनजी ने बालदेवजी पर ही बात फेंक दी—जाने बालदेव !···सतगुरु हो ! कोई उपाय नहीं।

"साहेब बन्दगी कोठारिनजी !"

"कौन ! कालीचरन बबुग्रा ! दया सतगुरु के !"

"हाँ, टीका कब होगा ? कीरतन नहीं करवाइएगा ?"

लछमी दासिन कालीचरन को रो-रोकर सुनाती है, "काली बाबू ! ऐसी खराब-खराब गाली ! उफ़ ! सतगुरु हो !···मैं ग्रब कहाँ जाऊँगी ? कौन सहारा है मेरा ?"

"ग्रच्छी बात ! ग्राप कोई चिन्ता मत कीजिए।···बालदेवजी क्या करेंगे, वह तो बुरजुग्रा हैं। रोइए मत।"

लछमी देखती है कालीचरन को···उस बार परयागजी के जादूघर में एक ग्रावलूस की मूर्ति देखी थी, ठीक ऐसी ही।

मठ पर सभी साधू-सती, बाबू-बबुग्रान, दास-सेवकान शामियाने में बैठे हैं। लरसिंघदास ने सिर का जुल्फा छिलवा लिया है। ग्रधकट्टी मूँछ को भी मुड़वा लिया है। साधुग्रों की भाषा में कहते हैं—मोंछभदरा। सुफेद मलमल की नयी लँगोटी ग्रौर कोपीन, देह पर चादर नहीं है।···चादर तो ग्राचारजगुरु देंगे। ग्राचारजगुरु का मुन्शी एकरारनामा ग्रौर सूरतहाल लिख रहा है। लछमी एक किनारे चुपचाप बैठी है जमीन पर। रामदास के सारे देह में हल्दी-चूना लगा है। बालदेवजी को लछमी पर बड़ी दया ग्रा रही है। लेकिन क्या किया जाय !

"सभी साधू-सती, सेवक-सेवकान, सुन लीजिए !" ग्राचारजजी का मुन्शी दलील पढ़ता है, "लिखितं लरसिंघदास चेले गोबरधनदास मोतफा जात वैरागी फिरके···। ग्रब ग्राप लोग इस पर दस्तखत कर दीजिए।"···लछमी फूट-फूटकर रो पड़ती है। सतगुरु हो।

"तैं चुप रह हरामजादी ! चुप रहती है या लगाऊँ डण्डा !" नागा बाबा चिल्लाते हैं, "तैं चुप !"

जो दस्तखत करना जानते हैं दस्तखत कर रहे हैं। बालदेवजी ने भी दस्तखत कर दिया। उनका हाथ जरा भी नहीं काँपा।···कालीचरन दलील हाथ में लेकर उठता है—"ग्राचारजजी ! ग्राप कहते हैं, महन्थ सेवादास बिना चेला के मरा है। ग्राप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू ही समझते हैं ?"

"कालीचरन !" बालदेवजी मना करते हैं, "बैठ जाग्रो।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"कालीचरन !" [illegible] डाँटते हैं ।

लेकिन कालीचरन आज नहीं रुकेगा । कोई हिंसावाद कहे या अनसन करे ! वह भी भाखन दे सकता है ।

"...हम जानते हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि रामदास इस मठ का चेला है, महन्थ सेवादास का चेला है । उसको महन्थी की टीका न देकर, आप एक नम्बरी बदमास को महन्थ बना रहे हैं ।...मठ में हम लोगों के बाप-दादे ने जमीन दान दी है, यह किसीकी बपौती सम्पत्ति नहीं...।"

"तेरी जात को मच्छड़ काटे, चुप साले ! कुत्ते के बच्चे ! अभी कुल्हाड़े से तेरा...! तेरी माँ को...।"

"चुप रह बदमास !" कामरेड वासुदेव उछलकर खड़ा होता है ।

"पकड़ो सैतान को !" कामरेड सुन्दर चिल्लाता है ।

"भागने न पावे !"

"मारो !"

...ले-ले ! पकड़-पकड़ ! मार-मार, हो-हो ! ...रुको, ऐ वासुदेव ! ऐ सुन्दर ! ...ऐ ! ...

नागा बाबा दाढ़ी छुड़ाते हैं, जटा छुड़ाते हैं, थप्पड़ों की मार से आँखों के आगे जुगनू उड़ते नज़र आ रहे हैं । गाँजे का नशा उतर गया है ।...आखिर दाढ़ी और जटा नोंचवाकर, कुल्हाड़ा छोड़कर ही भागते हैं ।...पकड़ो, पकड़ो ! छोड़ दो, छोड़ दो ! अब मत मारो ! नागा बाबा भागे जा रहे हैं । भभूत लगाया हुआ नंग-धड़ंग शरीर, बिखरी हुई जटा ! दौड़ते समय उनकी सूरत और भी भयावनी मालूम होती है । गाँव के कुत्ते पागल हो जाते हैं । भौं ! भौं ! ...नागा बाबा के पीछे दर्जनों गँवार कुत्ते दौड़ रहे हैं । अधिकारी महन्थ लरसिंघदास तो चार चाँटे में ही चें बोल जाते हैं—"नहीं लेंगे महन्थी, छोड़ दीजिए हमको !"

"छोड़ दो ! छोड़ दो !" कालीचरन हुक्म देता है । लरसिंघदास भी भागते हैं ।

पंचों को लकवा मार गया है; साधुओं की हालत खराब है । पंचों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही हैं । और सबों के बीच, कालीचरन हाथ में दलील लेकर सिकन्नरशाह बादशाह की तरह खड़ा है । पलक मारते ही क्या-से-क्या हो गया ! ...जैसे रामलील्ला का धनुसजग हो गया ।...

"अब आचारजजी, आपसे हम अरज करते हैं कि सुरतहाल पर रामदासजी का नाम चढ़ाकर महन्थी का टीका दे दीजिए !"

आचारजगुरु काँपते हुए कहते हैं, "ब-बुआ ! हम तो सतगुरु की दया से... हमको तो लोगों ने कहा कि सेवादास को कोई चेला ही नहीं था । जब रामदास उसका चेला है तो वही महन्थ होगा ।" मुन्शीजी, लिखिए सूरतहाल ! ले आओ, चादर, दही का बरतन !"

रामदास नहा-धोकर, देह के हल्दी-चूने के दाग को छुड़ा आया है । दही का टीका कपाल पर पड़ते ही सारे देह की जलन मिट गयी ।...सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पूजा-विदाई लिये बिना ही आचारजजी आसन तोड़ रहे हैं। पंचायत के लोग भी चुपचाप अपने-अपने घर की ओर वापस होते हैं। लछमी हाथ में पूजा-विदाई की थाली लेकर खड़ी है—"कबूल हो प्रभू ! दासिन का अपराध छिमा करो प्रभू !"

"काली बाबू !"

बालदेवजी उलटकर देखते हैं। लछमी कालीचरन को बुलाकर अन्दर ले जा रही है।···कालीचरन ने अन्याय किया है, घोर अन्याय किया है, हिंसावाद किया है। इस बार दो दिन का अनसन करना पड़ेगा।

खेलावनजी जाति-बिरादरी की पंचायत बुलाकर सब बदमाशों को ठीक करेंगे। हे भगवान ! साधुओं के शरीर पर हाथ उठाना !···

"काली बाबू, तुम देवता हो !"

कालीचरन कुश्ती लड़ता है। उस्ताद ने कहा है, कुश्ती लड़नेवालों को औरतों से पाँच हाथ दूर रहना चाहिए।···वह पाँच हाथ से ज्यादे दूरी पर खड़ा है।

अट्ठारह

"क्या नाम ?"

"सनिच्चर महतो।"

"कितने दिनों से खाँसी होती है ? कोई दवा खाते थे या नहीं ?···क्या, थूक से खून आता है ? कब से ?···कभी-कभी ? हूँ !···एक साफ़ डिब्बा में रात-भर का थूक जमा करके ले आना।···इधर आओ।···ज़ोर से साँस लो।···एक-दो-तीन बोलो।···ज़ोर से। हाँ, ठीक है।"

"क्या नाम ?"

"दासू गोप।"

"पेट देखें !···हूँ !···पिल्ही है। सूई लगेगी। सूई के दिन पुरजी लेकर आना। कल खून देने के लिए सुबह ही आ जाना। समझे !"

"क्या नाम ?"

"निरमला।"

"डागडरबाबू !" एक बूढ़ा हाथ जोड़कर आगे बढ़ आता है। गिड़गिड़ाता है—"हमारी बेटी है। आज से करीब एक साल पहले भोंमरा ने एक आँख में झाँटा मारा। इसके बाद दोनों आँखें आ गयीं। बहुत किस्म की जंगली दवा करवाये, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अब तो एकदम नहीं सूझता।"

बला की खूबसूरत है यह निरमला। दूध की तरह रंग है चेहरे का।··· विशुद्ध मिथिला की सुन्दरता। भौंरे ने गलती नहीं की थी। आँख देखें !···और

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरेबद [illegible] ···आह ! ···एक बूँद आर्जिरॉल के बगैर दो सुन्दर आँखें सदा के लिए ज्योतिहीन हो गयीं।···अब तो इलाज से परे हैं।···

डाक्टर ने आँखों की पपनियाँ उलटकर रोशनी की हल्की रेखा भी खोजने की चेष्टा की।···ऊँहूँ ! पुतलियाँ कफ़न की तरह सफ़ेद हो गयी हैं। वह सोचता है, यदि तूलिका से इन पुतलियों में रंग भरा जा सकता ! हाँ, कोई चित्रकार ही अब इन आँखों को सुन्दर बना सकता है, ज्योति दे सकता है।

"डागडरबाबू !" रोगिनी कहती है। आवाज में कितनी मिठास है ! बहुत नाम सुनकर आयी हूँ। बहुत उम्मीद लेकर आयी हूँ, बाईस कोस से। भगवान आपको जस दें !"

प्रकाश दो ! प्रकाश दो ! अँधेरे में घुटता हुआ प्राणी छटपटा रहा है, आत्मा वकल है—रोशनी दो ! डाक्टर क्या करे ?···डाक्टर को भावुक नहीं होना चाहिए।

"घबराइए नहीं, दवा दे रहा हूँ। यहाँ ठीक नहीं होगा तो पटना जाना पड़ेगा।"

"हाँ, दूसरा रोगी !···क्या नाम है ?"

"रामचलित्तर साह।"

"क्या होता है ?"

"जी ! कुछ खाते ही कै हो जाता है। पानी भी···"

"कब से ?"

"सात दिन से।"

"अरे ! सात दिन !···जरा इधर आओ।"

"जी ? बेमारी तो घर पर है।"

"घर कहाँ ?"

"जी, सरसौनी बिजलिया। यहाँ से कोस दसेक है।"

हठात् सभी रोगी एक ओर हट जाते हैं, खूँखार जानवर को देखकर जिस तरह गाय-बैलों का झुण्ड भड़क उठता है; सभी के चेहरे का रंग उतर जाता है। औरतें अपने बच्चे को आँचल में छिपा लेती हैं। सबकी डरी हुई निगाहें एक ही ओर लगी हुई हैं।

डाक्टर उलटकर देखता है—एक अधेड़ स्त्री।···भद्र महिला !

"कहिए, क्या है ?"

"डागडरबाबू ! यह मेरा नाती है, बस यही एक नाती ! मेरी आँखों का जोत है यह। एक साल से पाखाने के साथ खून आता है। इसको बचा दीजिए डागडरबाबू !···यह नहीं बचेगा।"

"घबराइए नहीं।···इधर आओ तो बाबू ! क्या नाम है ?···गनेश ! वाह ! जरा पेट दिखलाइए तो गनेशजी !"

गनेश की नानी दवा लेकर चली जाती है। रोगियों का झुण्ड फिर डाक्टर के टेबल को घेर लेता है।

चिचाय की माँ कहती है, "पारबती की माँ थी। डाइन है ! तीन कुल में एक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को भी नहीं छोड़ा। सबको खा गयी। पहले भतार को, इसके बाद देवर‘ देवरानी, बेटा-बेटी, सबको खा गयी। अब एक नाती है, उसको भी चबा रही है।”

चिचाय की माँ ने ऐसा मुँह बनाया मानो वह भी कुछ चबा रही हो।··· डाक्टर चिचाय की माँ को देखता है।···काली, मोटी, गन्दी और झगड़ालू यह बुढ़िया चिचाय की माँ, जो बेवजह बकती रहती है, चिल्लाती रहती है।···यह डाइन नहीं? सुमरितदास उस दिन कहता था—“चिचाय की माये तो जनाना डागडर है। पाँच महीने के पेट को भी इस सफ़ाई से गिरा देती है कि किसी को कुछ मालूम भी नहीं होता।” यह डाइन नहीं और गनेश की नानी डाइन है? आश्चर्य!

···गनेश की नानी! बुढ़ापे में भी जिसकी सुन्दरता नष्ट नहीं हुई, जिसके चेहरे की झुर्रियों ने एक नयी खूबसूरती ला दी। सिर के सफेद बालों के घुँघराले लट! होंठों की लाली ज्यों-की त्यों है। ठुड्डी में एक छोटा-सा गड्ढा है और नाक के बगल से एक रेखा निकल नीचे ठुड्डी को छू रही है। सुन्दर दन्त-पंक्तियाँ! ···जवानी की सुन्दरता आग लगाती है, और बुढ़ापे की सुन्दरता स्नेह बरसाती है। लेकिन लोग इसे डाइन कहते हैं। आश्चर्य!

“कहाँ रहती है?”

“इसी गाँव में। कालीचरन का घर देखा है न! उसी के पास। बैस बनियाँ है।···कितना ओझागुनी थक गया, इसको बस नहीं कर सका। जितिया परब[1] की रात में कितनी बार लोगों ने इसको कोठी के जंगल के पास गोदी में बच्चा लेकर, नंगा नाचते देखा है। गैनू भैंसवार ने एक बार पकड़ने की कोशिश की थी। ऐसा झरका बान[2] मारा कि गैनू के सारे देह में फफोले निकल आये। दूसरे ही दिन गैनू मर गया।···”

रोज रात में डाक्टर केस-हिस्ट्री लिखने बैठता है।···अभी उसके हाथ में कालाआजार के पचास ऐसे रोगी हैं, जिनके लक्षण कालाआजार के निदान को भटकानेवाले साबित हो सकते हैं।

एक: (क) सेबी मण्डल, उम्र ३५, हिन्दू (मर्द), गाँव मेरीगंज, पोलिया-टोली। तकलीफ: दाँत और मसूड़े में दर्द। दतुअन करने के समय खून निकलना, मुँह महकना, देह में खुजली, भूख की कमी। बुखार: नहीं। निदान: पायोरिया। दवा: कारबोलिक की कुल्ली। विटामिन सी का इंजेक्शन।

(ख) पन्द्रह दिन के बाद: शाम को सिरदर्द की शिकायत। बुखार ९९.५, रात में पसीना।···कैलशियम पाउडर।

(ग) पाँच दिन के बाद पेट खराब हो गया है। बुखार: १००। कार्मिनेटिव मिक्शचर। कालाआजार के लिए खून लिया गया।

(घ) अल्डेहाइट टेस्ट का फल: (+ +) कालाआजार! चिकित्सा: नियोस्टबोसन का इंजेक्शन।

---

१. जीताष्टमी। २. अग्निबाण।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो : (क) तेतरी, उम्र : ४७, हिन्दू (औरत), गाँव पासवानटोली, मेरीगंज।

तकलीफ : हड्डियों के हर जोड़ में दर्द : कभी-कभी नाक से खून गिरता है। बुखार : नहीं। (थर्मामीटर से देखा ६६.५)। भूख : नहीं। रोग अनुमान : गठिया, वात।

दवा : विटामिन बी का इंजेक्शन। मालिश का तेल। डब्ल्यू० आर० के लिए खून लिया।

(ख) डब्ल्यू० आर० (गरमी) : (—) गरमी नहीं।

(ग) एक सप्ताह बाद नाक से खून गिरा।···पेट खराब हुआ। कालाआज़ार के लिए खून लिया।

(घ) अल्डेहाइट टेस्ट का फल : सन्देहात्मक। फिर खून लिया।

(ङ) ब्रह्मचारी-टेस्ट का फल : (+)

चिकित्सा—युरिया स्टिबामाइन (ब्रह्मचारी)।

तीन : (क) रामेसर का बच्चा : उम्र २ महीने। नाभी में घाव। रात में रोता है, दूध फेंकता है।···माँ को कैलशियम पाउडर।

(ख) एक सप्ताह बाद सारे देह में चकत्ते। अनुमान : एलरजिक।

(ग) चार दिन के बाद : चकत्तों में पानी भर गया है। डब्ल्यू० आर० के लिए माँ का खून लिया। फल : (—) नहीं।

(घ) कालाआज़ार के लिए माँ का खून लिया। फल : (—) नहीं। काला-आज़ार के लिए बच्चे का खून लिया। फल : (+++) कालाआज़ार।

और इस बच्चे की यदि मृत्यु हुई तो ज़रूर किसी डाइन के मत्थे दोष मढ़ा जायगा। देह में फफोले! गनेश की नानी पर ही सन्देह किया जायगा। गनेश की नानी! न जाने क्यों वह गनेश की नानी से कोई प्यारा-सा सम्बन्ध जोड़ने के लिए बेचैन हो गया है। कमली कहती है, "मौसी! मौसी में बहुत गुन हैं। सीकों से बड़ी अच्छी चीजें बनाती है—फूलदानी, डाली, पंखे। कशीदा कितना सुन्दर काढ़ती है! पर्व-त्योहार और शादी-ब्याह में दीवार पर कितना सुन्दर चित्र बनाती है—कमल के फूल, पत्ते और मयूर! चौक कितना सुन्दर पूरती है!"··· वह भी उसे मौसी कहेगा।

"मौसी!"

"कौन?"

"मैं हूँ। डाक्टर। गनेश कहाँ है?"

"डागडरबाबू! आप? आइए, बैठिए। गनेश सो रहा है।···मैं तो अकचका गयी, किसने मौसी कहकर पुकारा!" बूढ़ी की आँखें छलछला आती हैं।

"मौसी! सुना है तुम एक खास किस्म का हलवा बनाती हो?" मौसी हँस पड़ती है, "अरे दुर! किसने कहा तुमसे? पगली कमली ने कहा होगा ज़रूर।···कमली कैसी है अब? इधर तो बहुत दिन से आयी ही नहीं है। पहले तो रोज़ आती थी।"

"अच्छी है।···अच्छी हो जायगी। मौसी! एक बात पूछूं?···तुम्हारी कोई

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बहन, माँ, बेटी या और कोई···सहरसा इलाके में, हनुमानगंज के पास कभी रहती थी ?" डाक्टर अपने बेतुके सवाल पर खुद हँसता है।

"सहरसा इलाके में हनुमानगंज के पास ?···रहो, याद करने दो।···नहीं तो ? क्यों, क्या बात है ?"

"यों ही पूछता हूँ। ठीक तुम्हारे ही जैसी मेरी एक मौसी वहाँ भी है।" बात को बदलते हुए डाक्टर कहता है, "मुझे एक फूल की डाली दो न, मौसी !"

उफ़ ?···सचमुच डाइन है यह बुढ़िया। इसी मुस्कराहट में जादू है। स्नेह की बरसा करती है। ऐसी आकर्षक मुस्कराहट ?

गनेश बड़ा भोला-भाला लड़का है ? बड़ा खूबसूरत ? गोरा रंग, लाल ओठ और घुंघराले बाल उसे नानी के पक्ष से ही मिले हैं।···बड़ा अकेला लड़का मालूम होता है। मौसी कहती है, "किसके साथ खेले ? गाँव के बच्चे अपने साथ खेलने नहीं देते।···मेरे ही साथ खेलता है।"

"गनेशजी, जरा पेट दिखाइए तो !···मौसी ! कल इसे सुबह ले आना तो ! खून लूंगा। होंठ मुरझाये रहते हैं।"

गनेश को अब एक मामा मिल गया।

"सचमुच ऐसा हलवा कभी नहीं खाया मौसी !···विश्वास करो।···गनेश को भी दो। कोई हरज नहीं।"

"मामा देखो !" गनेश गले में स्टेथस्कोप लटकाकर हँसता है।

"वाह ! मेरा भानजा डाक्टर बनेगा।"

डाक्टर जब मौसी के घर से निकला तो उसने लक्ष्य किया, कालीचरन के कुएँ पर पानी भरनेवाली स्त्रियों की भीड़ लग गयी है। सभी आँखें फाड़े, मुँह बाये, आश्चर्य से डाक्टर को देखती हैं—"इस डाक्टर को काल ने घेरा है सायद।"

"लाल सलाम !" कालीचरन मुट्ठी बाँधकर सलाम करता है, और डाक्टर को एक लाल परचा देते हुए कहता है, "कामरेड मन्त्रीजी आपको पहचानते हैं डाक्टरसाहब !···हाँ, कृष्णकान्त मिश्रजी !"

आइए ! आइए ! जरूर आइए !

कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो।

किसान राज : कायम हो।

मजदूर राज : कायम हो।

प्यारे भाइयो ! ता०···को मेरीगंज कोठी के बगीचे में किसानों की एक विशाल सभा होगी। सोशलिस्ट पार्टी पूर्णिया के सहायक मन्त्री साथी गंगाप्रसादसिंह यादव सैनिकजी···।

"परसों सभा है। आइएगा।···लाल सलाम !"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्नीस

चलो ! चलो ! सभा देखने चलो ।

सोशलिस्ट पार्टी की सभा की खबर ने सन्थालटोली को विशेष रूप से आन्दोलित किया है । गाँव में अस्पताल खुलने की खुशखबरी की कोई खास प्रतिक्रिया सन्थालों पर नहीं हुई थी । गाँव के लड़ाई-झगड़े और मेल-मिलाप से भी उन्हें कुछ लेना-देना नहीं । लेकिन यह सभा ? ज़मीन जोतनेवालों की ?···कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती सन्थाल किसानों के दिमाग की मुद्दत से उलझी हुई गुत्थी का सही सुलझाव ! जमीन जोतनेवालों की सभा !

"ज़मीन किसकी ?···जोतनेवालों की ! जो जोतेगा वह बोयेगा, जो बोयेगा वह काटेगा । कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो !" कालीचरन समझा रहा है ।

चारों ओर स्वस्थ, सुडौल, स्वच्छ और सरल इन्सानों की भीड़ । श्याम मुखड़ों पर सफ़ेद मुस्कराहट, मानो काले बादलों में तीज के चाँद के सैकड़ों टुकड़े । बिरसा माँझी का जवान बेटा मंगल माँझी कालीचरन के वाक्यों को गीतों की कड़ी में जोड़ने की चेष्टा करता है···

जोहिरे जोतबे सोहिरे बोयबे···

सनियाँ मुरमू कालीचरन की हर बात पर खिलखिलाकर हँसती है—हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ ! सरगम के सुर में हँसती है सनियाँ । तीतर की आवाज की तरह हँ हँ हँ हँ ! पीछे की ओर झूलता हुआ रंगीन आँचल रह-रहकर चंचल हो उठता है, मानो नाचने के लिए मोरनी पंख तौल रही हो । उसके चरण थिरकने के लिए चपल हो उठे हैं ।

मानर की मन्द आवाज़···रिंग रिंग ता धिन-ता !
डिग्गा की अटूट ताल···डा डिग्गा, डा डिग्गा !
उन्मुक्त स्वर लहरी···जोहिरे जोतबे सोहिरे बोयबे !
मुरली की लय पर पायलों का छुम छुम, छन्न छन्न !
डा डिग्गा डा डिग्गा
रिंग रिंग ता धिन-ता !
चल चल रे, सभा देखेला ।···

चार पुश्त पहले की बात ! सन्थाल परगना के तीन पहाड़ी अंचल की पथरीली माटी का मोह तोड़कर, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ते को तय करके जब इनके पूर्वज इस गाँव की नरम माटी पर आकर बसे थे ! गाँववालों ने जमींदार के पास जाकर फरियाद की थी, "हुजूर ! माई-बाप ! जंगली लोग हैं । सुनते हैं तीर-धनुष से जान मार देने पर भी सरकारबहादुर इनको कुछ नहीं कर सकता है । इन्हें हरगिज नहीं बसाया जाय हुजूर !"

लेकिन ज़मींदार ने समझाकर कहा था, "ऐसी बात नहीं । वे बड़े मिहनती होते हैं । धरमपुर इलाके में जाकर देखो, राजा लछमीनाथसिंह ने इनसे हज़ारों बीघा बनजर ज़मीन आबाद करवा लिया है; परती और भीठ ज़मीन से ही तेज़

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाबू को दो हजार मन गेहूँ उपजाकर सन्थालों ने दिया है । मालूम ?"

ज़मींदार ने गाँववालों को विश्वास दिलाया था कि इन्हें गाँव से अलग ही बसायेंगे । सभी ज़मींदारों ने इन्हें जंगलों में ही बसाया है ।

उसके बाद से ही बबूल, झरबेर और साँहुड़ के पेड़ों से भरे हुए जंगल हर साल साफ़ होकर आबाद होते गये । आज जहाँ सैकड़ों बीघे ज़मीन में मोती के दानों से भरी हुई गेहूँ की बालियाँ पुरवैया हवा में झूम रही हैं, धरती का वह टुकड़ा सर्वे के कागजात और नक्शे में जंगल के नाम से दर्ज है, जिस जंगल में बाघ का शिकार खेलने के लिए जिले-भर के राजा और ज़मींदार जमा होते थे । गाँव के नयी उम्र के लड़के तो विश्वास नहीं करते ।

नीलहे साहबों के नील के हौज़ ज्यादातर इन्हीं मूक इन्सानों के काले शरीर के पसीने से भरे रहते थे ।

साहबों के कोड़ों की मार खाकर, ज़मींदारों की कचहरियों में दिन-भर मोगलिया बाँधी[1] की सजा भुगतने के बाद शाम को मोहन की जादूभरी वंशी बजी और सब कष्ट दूर हो गये ।

रिंग रिंग ता धिन-ता
डा डिग्गा डा डिग्गा !...

सोने के अनाज से भरे हुए, धरती के गुप्त भण्डार का उद्‌घाटन करनेवालों पर धरती माता का कोप होना स्वाभाविक है । यही कारण है कि आज ज़मीन के मालिक़ों ने, ज़मीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका किसी किस्म का हक नहीं जमने दिया है । जिस जमीन पर उनके झोंपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं । हल में जुता हुआ बैल दिन-भर खेत चास[2] करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाय ? यह कैसी बात है ?

१९४७ के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल के समय इस ज़िले में एक अंग्रेज कलक्टर आया था । उसने इस व्यवस्था को अन्याय समझ सुधारने की चेष्टा की थी । जिले-भर के भूमिहार, ज़मींदार और राजा घबरा गये थे । ज़िले के अधिकांश नेता भूमिहार और ज़मींदार थे । अंग्रेज कलक्टर पर इलजाम लगाया गया—सन्थालों को उभारकर, ज़िले में अशान्ति फैलाकर, कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल को असफल बनाने का षड्‌यन्त्र करता है ! 'कांग्रेस सन्देश' के सम्पादकीय में सन्थालों के प्रति थोड़ी समवेदना प्रकट की थी । बेचारे विद्यालंकार सम्पादक को उसी दिन मालूम हुआ था कि विद्या का अलंकार कितना बेमानी है । ज़िला-मन्त्री ने आँखें लाल करके कहा था, "विद्यापीठ का शास्त्र यहाँ काम नहीं देगा । विद्यापीठ में गधे के सर पर सींग तो नहीं जम सकती है ।"...

ज़मींदारों ने अपने भाड़े के लठैतों को जगह-जगह सन्थालों की लहलहाती फ़सलों पर हुलका[3] कर, सन्थाल टोली पर चढ़ाई करवाकर, रुपये लाठी के हिसाब से बटोरे हुए लठैतों को सन्थालों के तीरों से जख्मी करवाकर, सबल प्रमाण पेश कर दिया था—सन्थालों के ज़ोर-ज़ुलम का मुख्य कारण है यह अंग्रेज कलक्टर ।

---

१. एक कड़ी सजा । २. जोतना । ३. धावा करना ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसी के बल पर वे कूद रहे हैं।

अंग्रेज कलक्टर की तुरन्त बदली हो गयी। बहुत-से सन्थाल सरकारी गोली से घायल हुए और सैकड़ों ने बिहार के विभिन्न जेलों में सफैयाकमान[1] में काम करते-करते सारी उम्र बिता दी। इसके बाद फिर कौन चूं करता है! लेकिन मान्‍र और डिग्गा की आवाज़ कभी मन्द नहीं हुई, बाँसुरी कभी मन्द नहीं हुई और न उनके तीरों में ही जंग लगे। आज भी कभी-कभी बनैले जानवरों के शिकार के समय, सूरज की किरणों में चमकदार चकाचौंध पैदा कर देते हैं इनके तीर!

मलेरिया और कालाआज़ार की क्रीड़ा-भूमि में भी ये सबल और स्वस्थ रह-कर क्रीड़ा करते हैं। हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से तराशकर बैठाये जैसे मांस का उभार कभी सूखा नहीं; ताज़े फूलों की पंखड़ियों जैसे उनके ओठ कभी ज़र्द नहीं हुए और न किसी सन्थाल के पेट में कभी पिल्ही बढ़ जाने की बात ही सुनी गयी। अस्पताल खुलने से उनका क्या फ़ायदा होगा? लेकिन ज़मीन!···जोतनेवालों की?···

"चलो! चलो! सभा देखने चलो!"

किसान राज कायम हो!
मजदूर राज कायम हो!
गरीबों की पाटी सोशलिस्ट पाटी,
सोशलिस्ट पाटी ज़िन्दाबाद!

"···यह जो लाल झण्डा है, आपका झण्डा है, जनता का झण्डा है, अवाम का झण्डा है, इन्कलाब का झण्डा है। इसकी लाली उगते हुए आफ़ताब की लाली है, यह खुद आफ़ताब है। इसकी लाली, इसका लाल रंग क्या है?···रंग नहीं! यह गरीबों, महरूमों मज़लूमों, मजबूरों, मज़दूरों के खून में रँगा हुआ झण्डा है!" कामरेड सैनिकजी भाषण दे रहे हैं।

"ऐं! खून में रँगा हुआ झण्डा!" बादरदास ने कालीचरन के कहने से हाथ में झण्डा लिया था। बादरदास वैष्णव है, मांस-मछली छूता भी नहीं; और यह आदमी के खून में रँगा हुआ झण्डा? उसका धरम भ्रष्ट कर दिया कलिया ने। छिः-छिः! वह हाथ में झण्डे का बाँस थामे खड़ा है?···वह अचानक ही झण्डे के बाँस को छोड़ देता है!···आदमी के खून में रँगा हुआ झण्डा!

जोतखी काका कहते हैं, "पताखा पतन, अशुभ, अमंगल और अनिष्ट की सूचना है।"

सैनिकजी अपना भाषण जारी रखते हैं। भाषण के बीच में रुक जाने से फिर, शुरू से याद करना पड़ता है—"जिस तरह सूरज का डूबना एक महान् सच है, पूंजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है। मिलों की चिमनियाँ आग उगलेंगी और उन पर मज़दूरों का कब्ज़ा होगा। ज़मीनों पर किसानों का कब्ज़ा होगा। चारों ओर लाल धुआँ मँडरा रहा है। उट्ठो, किसानों के सच्चे सपूतो! धरती

---

1. मेहतर कमाण्ड

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के सच्चे मालिको, उट्ठो ! क्रान्ति का मशाल लेकर आगे बढ़ो !"

"बोलिए एक बार प्रेम से—सोशलिस्ट पाटी की जै !" यही पार्टी असली है। किसानों की पार्टी, गरीबों की पार्टी। सभा-स्थल पर ही तीन सौ मेम्बर बन गये। सन्थालटोली का एक आदमी भी गैर-मेम्बर नहीं रहा। सब लाल ! सिर्फ़ सरदार टुडू का तेरह साल का लड़का रह गया है। वह रोता है, सरदार टुडू सैनिकजी के पास जाकर अपील करता है, "इस्का नाम लेम्बरी में नहीं लिखा जायगा ? क्यों ? उमेर कम नहीं, देखिए, इस्को मोंच का रेख आ रहा है।"

बालदेवजी कुछ बोलने को खड़े होते हैं। बासुदेव तुरत उठकर कहता है, "बालदेवजी, आपका बिख्यान हम लोग बहुत सुन चुके हैं। आप पूंजीबाद हैं। इस सभा में आप नहीं बोल सकते।"

जनता ने भी विरोध किया, "बैठ जाइए, बैठ जाइए ! जाइए, कपड़ा की पुर्जी बाँटिए, चीनी बिलेक कीजिए।"

···अरे बाप ! कितना टीन छोआ कहा नेताजी ने ? एक हज़ार टीन छोआ बिलेक कर दिया मेनिस्टर कांग्रेसी ने ! इसीलिए तो देहात से हुक्का उठ रहा है। अब लोग बीड़ी न पीयें तो क्या करें। हुक्का के तम्बाकू के लिए छोआ गूड़ कहाँ से आयेगा। सब बिलेक हो गया। अन्याय है !

तहसीलदारसाहब को तो नेताजी ने भरी सभा में बेज्जत कर दिया, अलबत्त गाली देते हैं नेताजी।···ज़मींदार के दुम ये तहसीलदार ! मुफ्तखोर !

मगर तहसीलदारसाहब हँसते ही रहे थे। उस रात को बिदापत नाच के बिकटा की भँड़ैती सुनने के समय जैसी मन्द मुस्कराहट उनके चेहरे पर थी, आज भी है।

कालीचरन अब खेलावनसिंह के कब्जे से बाहर है। कालीचरन यादव कुल-कलंक है। बूढ़ा कुकरू बुढ़ापे तक खेलावन का बैल चराता था और उसका बेटा लीडर हो गया। सुरिंलग लीडर ! इसको काबू में रखने का कोई हथियार भी नहीं। अँगूठे का टीप भी कभी नहीं लिया इससे !

सिपैहियाटोली का एक बच्चा भी इस सभा में नहीं था। उनके टोले में कटिहार से काली टोपीवाले दल के संजोजकजी आये हैं। लाठी-भाला टरेनि देते हैं। छोटी जाति के लोगों की सभा में वे नहीं जा सकते।

कालीचरन ने सैनिकजी के रहने का प्रबन्ध मठ पर किया है। महन्थ रामदास-जी तो नाम के महन्थ हैं, मठ की असल मालिकन तो लछमी है।···पन्द्रह सेर दूध को जलाकर खोआ बना है, मालपूआ की सोंधी सुगन्ध हवा में फैल रही है।

लछमी पूछती है, "काली बाबू ! नेताजी डोलडाल से आकर स्नान नहीं करेंगे ?"

सैनिकजी के साथ में 'लाल पताका' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक श्री चिनगारी-जी भी आये हैं। दुबले-पतले हैं, दिन-भर खाँसते रहते हैं; आँख पर बिना फ्रेम-वाला चश्मा लगाते हैं। दिन-भर सिगरेट पीते रहते हैं, शायद इसीलिए चिन-गारीजी नाम पड़ा है। डाक्टर ने अण्डा खाने के लिए कहा है। बिना अण्डा खाये इतना गरम अखबार कोई कैसे निकाल सकता है ?···लेकिन मठ पर अण्डे का

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रबन्ध कैसे हो सकता है ?

लछमी के अतिथि-सत्कार को भूलना असम्भव है। चिनगारीजी रात में सोते समय सैनिकजी से कहते हैं, "मैं लछमीजी पर एक मुक्तछन्द लिखना चाहता हूँ...

"...श्रो महान् सतगुरु की सेविका
गायिका पवित्र धर्मग्रन्थ की
ओ महान् मार्क्स के दर्शन की दर्शिका,
सुदर्शने, प्रियदर्शिनी,
तुम स्वयं द्वन्द्वयुक्त भौतिकवाद की
सिनथिसिस हो !"

बीस

कमली डाक्टर को पत्र लिखती है--

"प्राणनाथ ! ...तुम कल नहीं आये। क्यों नहीं आये ? सुना कि रात में...।"

कमली डाक्टर को रोज पत्र लिखती है। लिखकर पाँच-सात बार पढ़ती है, फिर फाड़ डालती है। उसकी अलमारी के एक कोने में फाड़ी हुई चिट्ठियों का ढेर लग गया है। पत्र लिखने और लिखकर पढ़ने के बाद उसको बड़ी शान्ति मिलती है। जी बड़ा हल्का मालूम होता है, और नींद भी अच्छी आती है।

"...सुना कि रात में तुम गेहुँअन साँप से बाल-बाल बच गये। भगवान को इसके लिए लाख-लाख धन्यवाद !"

रात में डाक्टर गेहुँअन साँप से बाल-बाल बच गये। गेहुँअन नहीं, घोड़-करैत। गेहुँअन और करैत का दोगला। घोड़े से ज्यादा तेज भाग सकता है। घोड़-करैत का कटा हुआ आदमी ओझा-गुणी का मुँह भी नहीं देख सकता। आधी रात को खरगोश और चूहे अपने-अपने पिंजड़ों में घबराकर दौड़-भाग करने लगे। डाक्टरसाहब ने प्यारू को पुकारा, लेकिन प्यारू की नींद नहीं टूटी। जानवरों के कमरे का दरवाजा खोलकर टार्च देते ही डाक्टर तड़पकर पीछे हट गये—साँप ठीक किवाड़ के पास ही अपनी पूँछ पर सारे धड़ को खड़ा किये फुफकार रहा था। तब तक प्यारू भी जग चुका था। उठते ही उसने बायें हाथ से ही ऐसी लाठी चलायी कि साँप वहीं ढेर हो गया। अढ़ाई हाथ का साँप ! डाइन का मन्तर अढ़ाई अक्षरों का होता है और डाइन का भेजा हुआ साँप अढ़ाई हाथ का !

सुबह को जिसने यह बात सुनी, बस एक ही राय कायम की—यह तो पहले से ही मालूम था। डाक्टरबाबू को इतना समझाया-बुझाया कि पारबती की माँ से इतना हेल-मेल नहीं बढ़ावें। नहीं माने, अब समझें। वह राच्छसनी किसी को छोड़ेगी ? जिसको प्यार किया, उसको ज़रूर खायेगी। डाक्टर बेचारा भी क्या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करे ! वह अपने मन से तो कुछ नहीं करता। उस पर तो पारबती की माँ ने जादू कर दिया है; वह अपने बस में नहीं। मुफ्त में बेचारे की जान चली जायगी एक दिन। च्‌: च्‌. !

कमली को डाइन, भूत और डाकिन पर विश्वास नहीं। तहसीलदारसाहब भी इसे मूर्खता समझते हैं। कालीचरन तो आदमी से बढ़कर बलवान किसी देवता को भी नहीं समझता, फिर डाइन-भूत, ओझा-गुणी किस खेत की मूली हैं। इन्हें छोड़कर गाँव के बाकी सभी लोग डाइन के बारे में एकमत हैं। बालदेवजी ने तो बहुत बार भूत को अपनी आँखों देखा है। भैंस के पीछे-पीछे खैनी-तम्बाकू माँगता है भूत ! डाकिन का पाँव उलटा होता है और वह पेड़ की डाल से लटककर झूलती है। भूत-प्रेत झूठ है ? तब कमला किनारे, कोठी के जंगल के पास में रात को जो भक्क-से राकस जल उठता है, दौड़ता है और देखते-ही-देखते एक से दस हो जाता है सो क्या है ?

"डाक्टरसाहब अब रोज मौसी के यहाँ जाते हैं। मौसी के यहाँ एक बार बिना गये उनको चैन नहीं," प्यारू कहता है। कमली सुनती है और हँसती है।

"डाक्टरसाहब गनेश को देखने जाते हैं, प्यारू !"

"वह लड़का तो आराम हो गया है। मुटाकर कोल्हू होता जा रहा है। उसको क्या देखने जाते हैं !"

"अच्छा प्यारू, डाक्टरसाहब तो मेरे यहाँ भी रोज़ आते हैं।"

"तुम्हारे यहाँ की बात दूसरी है दीदी !"

"क्यों ? दूसरी बात क्या है ?"

डाक्टरसाहब हँसते हुए आते हैं, "अच्छा ! तो प्यारूजी यहाँ दरबार कर रहे हैं। वह बुखारवाला खरगोश कैसे भाग गया ?"

"जी, हम दोपहर का दाना देने गये तो देखा कि पिंजड़ा खाली।"

"सुबह सूई देने के बाद तो मैंने पिंजड़ा बन्द कर दिया था। तुमने पानी पिलाने के बाद पिंजड़ा बन्द नहीं किया होगा। महीने-भर की मेहनत बेकार गयी।"

प्यारू को इन चूहों और खरगोशों से बेहद नफरत है।...आदमी के इलाज से जी नहीं भरता है तो जानवरों का इलाज करते हैं ! दिन-भर पिंजड़ों को लेकर पड़े रहते हैं। बुखार देखते हैं, सूई देते हैं और खून लेते हैं। जब से ये जानवर आये हैं, डाक्टरसाहब को प्यारू से बात करने की भी छुट्टी नहीं मिलती।...अब भाँगड़टोली के लोगों से कह रहे हैं—"दो-तीन सियार के बच्चों की ज़रूरत है। उस दिन मदारी से बन्दर माँग रहे थे। अजीब सौख है !"

प्यारू चुपचाप चला जाता है। माँ हँसती हुई आती है, "डाक्टरसाहब ! मैंने विषहरी माई को एक जोड़ी कबूतर और दूध-लावा कबूला है !"

"और मैंने भी विषहरी दवा के लिए लिख दिया है।"

"विषहरी दवा ?"

"हाँ, ऐन्टिवेनम एक दवा है, साँप के काटे हुए का इलाज होता है ! मैं ऐन्टिवेनम से भी ज्यादा प्रभावशाली और सस्ती दवा की खोज करना चाहता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हूँ। सुनते हैं, रौतहट स्टेशन के पास सँपेरों का टोला है। साँप पकड़वाकर रखना होगा।"

"तब माटी के महादेव नहीं, असली महादेव हो जाइएगा।" कमली व्यंग करना जानती है।

डाक्टरसाहब हँस पड़ते हैं और माँ हंसी को रोकते हुए कमली को डाँटती है, "जो मुँह में आया बोल दिया। ज़रा भी लाज-लिहाज़ नहीं। इसके बाप ने तो इसे और भी बतक्कड़ बना दिया है। तुम यहाँ आकर चुप बैठो तो ज़रा, मैं चाय बना लाऊँ।"

"तहसीलदारसाहब कहाँ गये हैं ?" डाक्टर पूछता है।

"कटिहार। सर्किल मैनेजर के कैम्प में गये हैं," कमली जवाब देती है। आज पहली बार कमली ने डाक्टर को अपने पास अकेला पाया है। वह अपने चेहरे को देख नहीं सकती, लेकिन ऐसा लगता है कि उसका चेहरा धीरे-धीरे लाल होता जा रहा है। आँखों की पलकों पर भारी बोझ लद गये हैं, कान की इयर-रिंग थरथरा रही है। सारे देह में गुदगुदी लग रही है। देह हलका लग रहा है।...बेहोशी ? वह बेहोश होना नहीं चाहती। नहीं, नहीं ! डा...क्टर !

"कमला !"

"जी !"

"कमला ! इधर देखो कमला !"

"डाक्टर, मुझे बचाओ !"

"कमला, आँखें खोलो !"

कमला ने आँखें खोल दीं। उसका सिर डाक्टर की गोद में है। माँ हाथ में चम्मच लिये खड़ी है, भय से माँ का मुंह पीला हो गया है, लेकिन डाक्टरसाहब मुस्करा रहे हैं।

"डाक्टरसाहब, इसकी बीमारी का तो टेर-पता ही नहीं चलता है।"

"लेकिन रोग तो धीरे-धीरे घट रहा है। बेहोश हुई, पर पाँच मिनट में ही स्वस्थ भी हो गयी। इसी तरह एक दिन जड़ से यह रोग दूर हो जायगा।...कमला को ही चाय बनाने दीजिए। जाओ कमला !"

कमला उठकर इस तरह दौड़ी मानो कुछ हुआ ही नहीं था। डाक्टर कमला की किताब हाथ में लेकर उलटता है—नल-दमयन्ती ! अस्याधिकारिणी कुमारी कमलादेवी।...दूसरी जगह कुमारी को काट दिया गया है और नाम के अन्त में बनर्जी जोड़ दिया गया है—कमलादेवी बनर्जी। डाक्टर जल्दी से पृष्ठ उलटता है—आर्ट पेपर पर नल-दमयन्ती की तस्वीर। नल के नीचे नीली पेंसिल से लिखा है 'प्रशान्त' और दमयन्ती के नीचे लाल पेंसिल से 'कमला'। डाक्टर के ललाट पर पसीने की छोटी-छोटी बूंदें चमक उठती हैं। उसे याद आता है, एक बार ममता के साथ बांकीपुर स्टेशन से लौट रहा था। रिक्शा पर बैठने के समय एक भिखारी ने घेर लिया था—'जुगल जोड़ी कायम रहे, सुहाग अचल रहे माँ का, बाल-बच्चा बनल रहे !' ममता ने बैग से इकन्नी निकालकर दी थी और डाक्टर की ओर देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ी थी; और डाक्टर के ललाट पर इसी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तरह पसीने की बूंदें चमक उठी थीं।

"डाक्टरसाहब, कमली के लिए एक अच्छा-सा वर ढूंढ़िए न! आपके देश में···आपके साथी-संगी···" माँ कहते-कहते सिर पर घूंघट सरकाकर चुप हो जाती है। तहसीलदारसाहब आ गये। रनजीत के हाथ में एक बड़ी रोहू मछली है।

"यह नज़राना कहाँ मिला ?" डाक्टरसाहब हँसते हैं।

"पकरिया घाट पर मछुआ लोग आज मछली मार रहे थे," तहसीलदार-साहब ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा।

कमला चाय ले आयी।

"डाक्टरसाहब, आज पाप की गठरी फेंक आया हूँ।" तहसीलदारसाहब ने चाय की प्याली में चुस्की लेते हुए कहा।

"मतलब ?"

"यह तहसीलदारी पाप की गठरी ही तो थी। यह नया सर्किल मैनेजर आते ही 'आग पेशाब' करने लगा। 'लाल पताका' अखबार ने ठीक ही लिखा था, 'राज पारबंगा के मीनापुर सर्किल का नया मैनेजर नादिरशाह का भतीजा है।' अब आप ही बताइए डाक्टरसाहब, कि जिन रैयतों के यहाँ सिर्फ़ एक ही साल का बकाया है, उन पर नालिश कैसे किया जाय ? फिर चुपचाप डिग्री जारी करवाकर नीलाम करो और ज़मीन खास कर लो। इतना बड़ा अन्याय मुझसे तो अब नहीं होगा। ज़माना कितना नाज़ुक है, सो तो समझते हैं नहीं। मैंने साफ़ इनकार कर दिया तो कड़ककर बोले, 'नहीं कर सकते तो इस्तीफ़ा दे दो।' गंगा-स्नान से भी बढ़कर ऐसे पुण्य का अवसर बार-बार नहीं मिलता। तुरत इस्तीफा दे दिया। सारी ज़िन्दगी तो गुलामी करते ही बीत गयी।··· कमला की माँ, आज मत्स भगवान आये हैं। कमला से कहो, डाक्टरसाहब को निमन्त्रण दे दे।"

तहसीलदारसाहब की रसिकता ने डाक्टर को एक बार फिर नल-दमयन्ती की याद दिला दी। कमली मुस्करा रही है। माँ कहती है, "बग़ैर मिर्च-मसाला की मछली कमली ही बना सकती है।"

डाक्टर महसूस करता है, कमला के निमन्त्रण को अस्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं।···कमला बनर्जी।···कमला की आँखें !

चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल
तिरिया बयरि दुहु लोचन···

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इक्कीस

रात को तन्त्रिमाटोली में सहदेव मिसर पकड़े गये !

यह सब खलासी की करतूत है । ऊपरी आदमी[1] के सिवा ऐसा जाल-फरेब गाँव का और कौन कर सकता है ? पुश्त-पुश्तैनी से बाबू लोग छोटे लोगों के टोले में जाते हैं । खेती-बारी के समय शाम को ही जनों को ठीक करना होता है, सूरज उगने से एक घण्टा पहले ही खेत पर मज़दूरों को पहुँच जाना चाहिए । इसलिए सभी बड़े किसान शाम या रात को ही अपने-अपने जनों को कह आते हैं । तन्त्रिमाटोली में जब से खलासी का आना-जाना शुरू हुआ है, तभी से नयी-नयी बातें सुनने को मिल रही हैं । देखा-देखी, दूसरे टोले में भी नियम-कानून, पंचायत और बन्दिश हो गयी है । बेचारे सहदेव मिसर को रात-भर तन्त्रिमा लोगों ने बाँधकर रखा ।...फुलिया के घर में घुसा था तो फुलिया ने हल्ला क्यों नहीं किया ? जिसके घर में घुसा उसकी नींद भी नहीं खुली, माँ-बाप को आहट भी नहीं मिली और उसका कुत्ता भी नहीं भूँका । गाँव के लोगों को बेतार से खबर मिल गयी । यह खलासी की बदमाशी है । यही हालत रही तो छोटे लोगों के टोले में जन के लिए जाना मुश्किल हो जायगा । कौन जाने, किस पर कब झूठ-मूठ कौन-सी तोहमत लग जाय ? पंचायत होनी चाहिए । राजपूतों ने यदि इस पंचायत में ब्राह्मणों का पक्ष नहीं लिया तो ब्राह्मण लोग ग्वालों को राजपूत मान लेंगे ।

"हमको कुछ नहीं मालूम," फुलिया पंचों के बीच हाथ जोड़कर कहती है, "जब आँगन में हल्ला होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं ।"

सहदेव मिसर के पास मँहगूदास के अँगूठे की टीप है—सादा काग़ज़ पर । मँहगू की टीक[2] सहदेव के हाथ में है । सहदेव जो चाहे कर सकता है । दोनों गायें और चारों बाछे कल ही खूंटे से खोलकर ले जायगा । इसके अलावा साल-भर का खरचा भी तो सहदेव ने ही चला दिया है । एक आदमी की मजदूरी से तो एक आदमी का भी पेट नहीं भरता है ।...लेकिन अब फुलिया के हाथ में ही सहदेव मिसर की इज्ज़त और अपने बाप की दुनिया है; उसकी बोली में ज़रा भी हेर-फेर हुआ कि सहदेव की इज्ज़त धूल में मिल जायगी और उसके बाप की दुनिया भी उजड़ जायगी ।

पंचायत में गाँव-भर के छोटे-बड़े लोग जमा हुए हैं । तहसीलदारसाहब पुरैनियाँ गये हैं । पंचायत में अकेले सिंघजी बोल रहे हैं । काली टोपीवाले संयोजक भी हैं । बालदेवजी भी हैं । कालीचरन बिना बुलाये ही आया है । सिंघजी अकेले ही जिरह-बहस कर रहे हैं । तहसीलदारसाहब रहते तो थोड़ी सहूलियत होती सिंघजी को ।

---

१. परदेशी । २. मजदूर । ३. चुटिया ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"...बात पूछने पर एक घण्टे में तो जवाब मिलता है।...हाँ, जब आँगन में हल्ला होने लगा तब तुम्हारी नींद खुली।...सुन लीजिए सभी पंच लोग।...अच्छा, जब तुम्हारी नींद खुली तो तुमने क्या देखा ?"

"सहदेव मालिक को आँगन में घेरकर सभी हल्ला कर रहे थे।"

"अच्छा, तुम बैठो। कहाँ, सहदेव मिसर ? अब आप बताइए कि मँहगूदास के यहाँ उतनी रात को आप क्यों गये थे ?"

"रात में हमारे पेट में ज़रा दर्द हुआ। लोटा लेकर बाहर निकले। जब दिसा-मैंदान से हम लौट रहे थे तो देखा कि कमला किनारेवाले खेत में किसी का बैल गहूँम चर रहा है। इसीलिए मँहगू को जगाने गया था।"

"क्यों ?"

"कमला किनारेवाली ज़मीन का पहरा करने के लिए मँहगूदास को ही दिया है।"

"अच्छा, तब ?"

"जब हम जा रहे थे तो रबिया और सोनमा को आपके खेत में सकरकन्द उखाड़ते पकड़ा। दोनों को डाँट-डपट दिया। मँहगूदास को जगाकर जैसे ही हम उनके आँगन से निकल रहे थे कि रबिया, सोनमा, तेतरा और नकछेदिया ने हमको पकड़ लिया और हल्ला करने लगे।"

"क्या बतायें, हमारा पाँच बीघा सकरकन्द इन्हीं सालों ने चुराकर खतम कर दिया।...अच्छा, आप बैठ जाइए।...कहाँ मँहगू ?"

"जी सरकार," मँहगू बूढ़ा हाथ जोड़कर खड़ा होता है।

"सहदेव मिसर ने तुमको जाकर जगाया था ?"

"जी सरकार !"

"अब पंच लोग फैसला करें कि असल बात क्या है।"

कालीचरन कैसे चुप रह सकता है ! पंचायत में एकतरफा बात नहीं होनी चाहिए। रबिया और सोनमा पार्टी का मेम्बर है। यह तो पंचायत नहीं, मुँहदेखी है। कालीचरन कैसे चुप रह सकता है—"सिंघजी, जरा हमको भी कुछ पूछने दीजिए।"

पंचायत के सभी पंचों की निगाहें अचानक कालीचरन की ओर मुड़ गयीं। सिंघजी गुस्से से लाल हो गये। लेकिन पंचायत में गुस्सा नहीं होना चाहिए। राजपूतटोली के नौजवान आपस में कानाफूसी करने लगे। संयोजकजी ने पाकेट टटोलकर देख लिया—सीटी लाना भूल तो नहीं गये हैं ? जोतखीजी एतराज करते हैं—"कालीचरन को हम लोग पंच नहीं मानते।"

"तो पहले इसी बात का फ़ैसला हो जाय कि पंचायत के कितने लोग हमको पंच मानते हैं और कितने लोग नहीं। एक आदमी के चाहने और न चाहने से क्या होता है !...अच्छा, पंच परमेसर ! क्या हमको इस पंचायत में बैठने, बोलने और राय देने का हक नहीं ? क्या हम इस गाँव के बासिन्दे नहीं हैं ?" कालीचरन खड़ा होकर कहता है, "यदि आप लोग हमको पंच मानते हैं तो हाथ उठाइए।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुमसुम बैठे हुए सैकड़ों मूक जानवरों के सिर में मानो अरना भैंसा[1] के सींग जम गये। सैकड़ों हाथ उठ गये।

"दोनों हाथ नहीं, एक हाथ ! ठहरिए, गिनने दीजिए। एक···दो, तीन, चार, पाँच···एक सौ पाँच।"

वालदेवजी ने हाथ नहीं उठाया।

"एक सौ पाँच। अब जो लोग हमको पंच नहीं मानते, हाथ उठायें।···एक, दो, तीन, चार, पाँच···पन्द्रह।"

"सिर्फ पन्द्रह !" सिंघजी को विश्वास नहीं होता है। खुद गिनते हैं। राजपूत और ब्राह्मणटोली के लोग कहाँ चले गये ? जोतखीजी के लड़के नामलरैन ने भी कलिया के पक्ष में ही हाथ उठाया है ?···

"फुलिया !" कालीचरन की बोली सुनकर डर लगता है। फुलिया फिर खड़ी होती है।

"देखो, यह पंचायत है। पंचायत में परमेसर रहते हैं। पंचायत में झूठ बोलने से हाथोंहाथ इसका फल मिलता है। सच-सच बताओ ! सच्ची बात क्या है ?"

"·········"

"बोलो !"

"सहदेव मिसर हमारे घर में घुसे थे।"

"तुमने हल्ला क्यों नहीं किया ?"

"·········"

"बोलो, डरने की कोई बात नहीं।"

"बाबा के डर से।"

"बाबा के डर से ?"

"हाँ, बाबा सहदेव मिसर का करजा धारते हैं।"

"बैठ जाओ।···मँहगू !"

मँहगू हाथ जोड़कर फिर खड़ा होता है।

"क्या बात है ?"

"······"

"फुलिया जो कहती है, ठीक है ?"

"······"

"डरो मत ! जो बात है, बताओ !"

"कौन गाछ ऐसा है जिसमें हवा नहीं लगती है और पत्ता नहीं झड़ता है !"

"दूसरों की बात मत कहो, अपनी बात बताओ !"

"अकेले हमको क्यों दोख देते हैं ? गाँव-भर का यही हाल है। कौन घर ऐसा है···"

"मैं तुमसे पूछता हूँ।"

"पहले तुम अपनी माँ से जाकर इमान-धरम से पूछो कि तुम किसके बेटा

---

१. जंगली।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो।" जोतखीजी हिम्मत करके कहते हैं। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो उठी हैं।

"जोतखी काका, हमको अपने बाप के बारे में मालूम है।"

"जोतखीजी अपनी स्त्री से पूछें कि उनके पेट में किसका बच्चा है।" वासुदेव चिल्लाकर कहता है।

"कौन नहीं जानता कि जोतखीजी का नौकर..."

"चुप रहो सुन्दर!" कालीचरन लोगों को शान्त करता है, "चुप रहो! शान्ती! शान्ती!"

'टू टू...टू टू,' संयोजकजी सीटी फूँकते हैं।

एक दर्जन से भी ज्यादा नौजवान राजपूतटोली से हाथ में लाठी लेकर दौड़ आये और पंचायत को चारों ओर से घेरकर खड़े हो गये।

"सिंघजी, इन लाठीवाले नौजवानों को आपने बुलाया है?...तो आप पंचायत नहीं, दंगा करवाना चाहते हैं?" कालीचरन पूछता है।

सिंघजी कहते हैं, "अब यह पंचायत नहीं हो सकती। पाटीबन्दी से कहीं इन्साफ होता है?"

सिंघजी राजपूतटोली के पंचों के साथ उठ खड़े होते हैं। काली टोपीवाले जवान, सिंघजी को, संयोजकजी को और राजपूतटोली के पंचों को चारों ओर से घेरे में लेकर, फौजी कवायद करते हुए चले जाते हैं।

जोतखीजी के साथ ब्राह्मणटोली के पंच लोग भी चूहेदानी में फँस गये हैं। खेलावनबाबू का सहारा है। बालदेवजी भी हैं। लेकिन कालीचरन का गुस्सा?...

"तो पंचायत का यह फ़ैसला है कि मँहगूदास अपनी बेटी फुलिया का चुमौना खलासी के साथ करा दे, और आज से सभी टोले के लोग बाबू लोगों पर नजर रखें।"

"पंचायत के सभी पंच एक स्वर से कालीचरन की राय का समर्थन करते हैं। जोतखीजी भी हाथ उठाते हैं और बालदेवजी भी।...यह तो नियाय बात है, इसमें डिफेट करना अच्छा नहीं।

"सहदेव मिसर के पास सादे कागज पर मेरा अँगूठा का टीप है। यदि उसे भरकर नालिस कर दे तब?" मँहगूदास गिड़गिड़ाकर कहता है।

"सहदेव मिसर जब मुकदमा करेंगे, सभी पंच तुम्हारी गवाही देंगे। वह एक पैसा भी तुमसे नहीं पा सकते।"

बाईस

सतगुरु हो! सतगुरु हो!

महन्थ रामदास भी छींकने, खाँसने और जमाही लेने के समय महन्थ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
सेवादासजी की तरह ही मुद्रा बनाते हैं, 'सतगुरु हो, सतगुरु हो' कहते हैं और आँखें स्वयं ही बन्द हो जाती हैं।

भजन, बीजकपाठ और सतसंग को अब लछमी ही सँभालती है। महन्थ रामदासजी पढ़ना-लिखना नहीं जानते, सतगुरु-वचन की गम्भीरता की तह तक नहीं पहुँच सकते, लेकिन खँजड़ी पर तो उनका पूरा अधिकार है। यों तो खँजड़ी भण्डारी भी बजाता है, लेकिन कोठारिन लछमी दासिन उसके ताल पर गड़बड़ा जाती है। तब महन्थ रामदासजी भण्डारी के हाथ से खँजड़ी ले लेते हैं। लछमी मुस्कराकर गाने लगती है···

सन्तो हो, करू बँहियाँ बल आपनी
छाड़ूँ बिरानी आस !
सन्तो हो, जिहि अँगना नदिया बहै,
सो कस मरे पियास ! हो सन्तो, सो कस मरे पियास !

सो कस मरे पियास ? महन्थ रामदास के आँगन में नदी बह रही है और वह प्यास से मर रहे हैं।···सतगुरु बचन में कहा है—'जस खर चन्दन लादे मारा, परमिल बास न जानु गमारा।' परमिल वास महन्थ रामदास को नहीं लगती, सो बात नहीं। परमिल वास से उनका भी मन मत्त हो जाता है, लेकिन वह क्या करें ? एक दिन मुँह से निकल गया था, "लछमी ! ज़रा इधर आना तो।" बस, चार घण्टे तक कोठारिन ने सतगुरु बचनामिरित की झड़ी लगा दी थी—"अन्तर जोति सबद इक नारी, हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी। ते तिरिये भंगलिग अनन्ता, तेउ न जाने आदि न अन्ता। महन्थसाहेब, आप अपने चित्त को मत विचलित कीजिए। यह आपके पूर्वजन्म का पुण्य है कि आपको महन्थी की गद्दी मिली है, नहीं तो आपके जैसे लोगों को भैंस चराने के सिवा और कोई काम भी नहीं मिल सकता। आप मेरे गुरुबेटा हैं, मैं आपकी गुरुमाई !"

एक-डेढ़ महीने में ही महन्थ रामदासजी का कलेवर बदल गया है। लछमी बड़े जतन से सेवा करती है। दूध, मक्खन और ताज़े फलों के सेवन से महन्थ-साहब के श्यामल मुखमण्डल पर भी लाली दौड़ गयी है। पेट जरा बाहर की ओर निकल रहा है, और तन का ताप भी कभी-कभी मन को बड़ा बेचैन कर देता है। लछमी सतगुरु बचनामृत बरसाकर शान्त करने की चेष्टा करती है। सतगुरु वचनामृत से भी बढ़कर तन के ताप को शीतल करती है कालीचरन की याद ! कालीचरन रोज़ मठ पर एक बार, थोड़ी देर के लिए ही, जरूर आता है। कभी पार्टी के लिए चन्दा, आफिस-घर बनाने के लिए बाँस-खड़ माँगने आता है। लछमी कहती है—"कालीचरन असल नियायी आदमी है। गाँव के सभी बड़े लोग सिर्फ कहने को बड़े हैं। कालीबाबू का सुभाव जरा तिब्र है, लेकिन दुनिया के लोग अब इतने कुटिल हो गये हैं कि सीधे लोगों की यहाँ गुज़र नहीं। फिर सुभाव में ज़रा कड़ापन तो सुपुरुख का लच्छन है।···"

महन्थ रामदास को पहले कालीचरन पर बड़ा सन्देह था। जब वह मठ पर आता तो महन्थसाहब छिपकर लछमी और काली की बातें सुनते थे, बाँस की टट्टी में छेद करके देखते थे। लेकिन कालीचरन हमेशा लछमी से चार हाथ दूर ही

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हटकर खड़ा रहता था। उसकी बोली में भी माया की मिलावट नहीं रहती थी। लछमी से बातें करते समय कभी उसकी पलकें शरमाकर झुकती नहीं थीं। बहुत कम लोगों को ऐसा देखा है रामदास ने। कालीचरन को बस अपनी सुशलिट पाटी से ज़रूरत है। लाल झण्डा और सुशलिट पाटी को वह औरत की तरह प्यार करता है।···उस पर सन्देह करना बेकार है। लेकिन, बालदेवजी? वह तो आजकल आते ही नहीं। उनकी नज़र बड़ी मैली है।

लछमी बालदेवजी को भूली नहीं है। कहती है, साधू सुभाव के पुरुष हैं; किसी का चित्त दुखाना नहीं चाहते। बालदेवजी मठ पर नहीं आते हैं; कहते हैं, लछमी दासिन ने हिसाबात करवाया है मठ पर, मठ पर नहीं जायेंगे।···बहुत सीधे हैं बालदेवजी। सच्चे साधू हैं। उनसे छिमा माँगना होगा।

महन्थ रामदासजी सोच-विचारकर देखते हैं, कालीचरन के डर से ही वह प्यासा है। कोई बात हुई कि लछमी उससे कह देगी; और उसके बाद? चादर-टीका के दिन कालीचरन और उसके गणों ने जो काण्ड किया था, उसे भूलना मुश्किल है। ··और उन्हीं की बदौलत तो रामदास महन्थ बना है।

माना कि कालीचरन के बल से उसे महन्थी मिली है। इसका यह अर्थ नहीं कि कालीचरन मठ के सभी मामले में दखल देगा। इन्साफन महन्थी की गद्दी पर तो उसका अधिकार था ही। यदि कल कालीचरन कहे कि गद्दी पर तुम्हारा हक नहीं तो क्या वह मान लेगा?···महन्थ रामदासजी धीरे से उठते हैं। दबे पाँव लछमी की कोठरी के पास जाते हैं। किवाड़ी खुली है? नहीं, बन्द है। महन्थ साहब बाहर से भी किवाड़ की छिटकनी खोलना जानते हैं। पतली-सी लकड़ी फँसाकर खोलते हैं।···लछमी अब किवाड़ में ओखल नहीं लगाती है।···लछमी सोयी है। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त हैं, बाल बिखरे हुए हैं। लालटेन की मद्धिम रोशनी में भी उसकी सूरत चमक रही है।···

"कौन?"

"······"

"रामदास?"

"·········"

"रामदास! हाथ छोड़ो। बैठो। आखिर तुम चित्त को नहीं सँभाल सके। माया ने तुम्हें भी अन्धा बना दिया।"

"माया से कोई परे नहीं। माया को कोई जीत नहीं सकता," महन्थ साहब आज लछमी को हर बात का जवाब देंगे।

"तुम नरक की ओर पैर बढ़ा रहे हो। अब भी चेतो।"

"अब चेतने से फ़ायदा नहीं। मुझे सरग नहीं चाहिए।···इस नरक में पहली बार नहीं आया हूँ।"

लछमी को बचपन की बातों की याद दिलाना चाहता है रामदास। लछमी हाथ छुड़ाकर बिछावन पर से उठना चाहती है, लेकिन महन्थसाहब ने दस मिनट पहले ही चौथी चिलम गाँजा फूंका है।

"मैं तुम्हारी गुरुमाई हूँ रामदास!"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"कैसी गुरुमाई ? तुम मठ की दासिन हो। महन्थ के मरने के बाद नये महन्थ की दासी बनकर तुम्हें रहना होगा । तू मेरी दासिन है ।"

"चुप कुत्ता !" लछमी हाथ छुड़ाकर रामदास के मुँह पर जोर से थप्पड़ लगाती है। दोनों पाँवों को ज़रा मोड़कर, पूरी ताकत लगाकर रामदास की छाती पर मारती है । रामदास उलटकर गिर पड़ता है ।···सतगुरु हो !

सन्तो अचरज भी एक भारी
पुत्र धयल महतारी ।
एके पुरुष एकहि नारी
ताके देखु बिचारी ।

"भण्डारी ! भण्डारी !"

"सरकार !"

"पानी लाओ !"

लछमी थर-थर काँपती है। महन्थ सेवादास की दम तोड़ती हुई मूर्ति उसकी आँखों के सामने दिखायी पड़ रही है। नहीं, मरा नहीं है। भण्डारी कहता है, "महन्थसाहब को फिर मिरगी की बीमारी शुरू हुई ? कल रामपुर मठ से जो साधू आया है, मिरगी की दवा जानता है। कल ही दिलवा दीजिए ।"

सतगुरु हो !

महन्थसाहब को बुखार है, छाती में दर्द है ! डाक्टरसाहब ने मालिश का तेल भेज दिया है। लछमी महन्थसाहब की छाती पर तेल-मालिश कर रही है। महन्थसाहब कराह रहे हैं, "सतगुरु हो ! अब नहीं बचेंगे। हमको कासीजी भेज दो कोठारिन ! हम अपने पाप का प्राच्छित करेंगे ।···हमको जाने से ही क्यों न मार दिया ?···हाय रे ! सतगुरु हो !"

"जाय हिन्द कोठारिनजी !"

"जै हिन्द ! आइए बालदेवजी ! बहुत दिन बाद ?"

"रामदा···महन्थसाहेब को क्या हुआ है ?"

"बुखार है, छाती में दर्द है ।"

"दर्द है ? पुरानी गाये के घी की मालिश कीजिए ।"

पुरानी गाये का घी अर्थात् गाय का पुराना, सड़ा घी । सुनते ही लछमी को मिचली आने लगती है। महन्थ सेवादास को भी जब दमे का दौरा होता था तो गाय का घी ही मालिश करवाते थे ।

"कोठारिनजी ! सिवनाथबाबू आ रहे हैं। यहाँ एक चरखा-सण्टर खुलना चाहिए । कुछ मदत दिया जाय ।"

"चरखा-सण्टर ! इसमें क्या होगा ?"

"चरखा-सण्टर में ? यही चरखा, करघा, धुनकी और बिनाई की टरेनि होगी।"

"गाँव में तो रोज़ नया-नया सण्टर खुला रहा है—मलरिया सण्टर, काली टोपी सण्टर, लाल झण्डा सण्टर, और अब यह चरखा सण्टर !"

"हाँ, नये ज़माने में तो रोज़ नयी-नयी बात होगी। सुनते हैं आपने सोशलिट पाटी को काफी मदत दी है।···लेकिन कोठारिनजी ! गन्ही महतमा का रस्ता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही सबसे पुराना और सही रस्ता है। नयी-नयी पाटी खुल रही है, मगर किसी का रस्ता ठीक नहीं। सब हिंसाबाद के रस्ते पर हैं।"

"सतगुरु हो! सतगुरु हो! कोठारिन, इसको जो चन्ना देना है, देकर बिदा करो। सतगुरु हो!" महन्थसाहब दर्द से छटपटाते हैं।···बालदेवजी की नजर बड़ी मैली है। दस रुपये का एक नोट निकालकर देते हुए लछमी कहती है, "आजकल तो हाथ एकदम खाली है। आप तो आजकल इधर का रास्ता ही भूल गये हैं। हमसे जो अपराध हुआ है, छिमा कीजिए।"

"नहीं कोठारिनजी, आजकल छुट्टी ही नहीं मिलती है कभी। कपड़े की पुर्जी बाँटने का काम नया मिला है, एक आफत में जान फँस गयी है। कांगरेस का भी कोई काम नहीं कर सकता हूँ। उधर दूसरी पाटीवालों को मौका मिल गया है। कालीचरन दिन-रात खटता है। हमारे कांगरेस के मिम्बरों को भी सोशलिस्ट पाटी का मिम्बर बना लिया है। इसलिए सिवनाथबाबू को बुला रहे हैं। चरखा-सण्टर खुलेगा। एक पुराना काजकर्ता बावनदास भी आ रहा है। पुराना तो नहीं है, मेरे ही साथ सुराजी में नाम लिखाया था।···बावनदास बौना है, सिरफ डेढ़ हाथ ऊँचा। वैष्णव है। आयेगा तो यहाँ ले आयेंगे। जाय हिन्द!"

"जै हिन्द!"

बालदेवजी को फिर लछमी के देह की सुगन्ध लगी। कितनी मनोहर!

लछमी देखती है बालदेवजी आजकल बहुत दुबले हो गये हैं। बालदेवजी के दिल में ज़रा भी मैल नहीं। कितने सरल हैं!···न जाने क्यों, लछमी का जी आज बालदेवजी को देखकर इतना चंचल हो रहा है। बालदेवजी सच्चे साधू हैं।

बिरह की ओदी लाकड़ी
सपुचै और धुधुआये।
दुख से तबहि बाचिहौं
जब सकलो जरि जाये!

तेईस

गाँव के लोग अर्थशास्त्र का साधारण सिद्धान्त भी नहीं जानते। 'सप्लाई' और 'डिमाण्ड' के गोरख-धन्धे में वे अपना दिमाग नहीं खपाते। अनाज का दर बढ़ रहा है; खुशी की बात है। पाट का दर बढ़ रहा है, बढ़ता जा रहा है, और भी खुशी की बात है। पन्द्रह रुपये में साड़ी मिलती है तो बारह रुपये मन धान भी तो है। हल का फाल पाँच रुपये में मिलता है, दस रुपये में कड़ाही मिलती है तो क्या हुआ? पाट का भाव भी तो बीस रुपये मन है। खुशी की बात है।

अनाज के ऊँचे दर से गाँव के तीन ही व्यक्तियों ने फायदा उठाया है—तहसीलदारसाहब ने, सिंघजी ने और खेलावनसिंह यादव ने। छोटे-छोटे किसानों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की ज[illegible] रोज मज़दूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले सिर्फ पाँच आने रोज मज़दूरी मिलती थी और उसी में घर-भर के लोग खाते थे।

तहसीलदारसाहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाज़े पर दर्जनों बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली। चमगादड़ों के अड्डे हैं।…सरकार शायद धान-जप्ती का कानून बना रही है।

कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं; बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं।

शिवनाथ चौधरी सभा में खादी के अर्थशास्त्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। आँकड़े देकर साबित कर रहे हैं कि यदि घर का एक-एक व्यक्ति चरखा चलाने लगे तो गाँव से गरीबी दूर हो जायगी; अन्न-वस्त्र की कमी नहीं रहेगी।

चरखा सेण्टर खुल गया है। अब गाँव में गरीबी नहीं रहेगी। पटना से दो मास्टर आये हैं—चरखा मास्टर और करघा मास्टर। एक मास्टरनी भी आयी हैं—औरतों को चरखा सिखाने के लिए। औरतों से कहती हैं, "चरखा हमार भतार-पूत, चरखा हमार नाती; चरखा के बदौलत मोरा दुआर झूले हाथी।"

चरखा की बदौलत हाथी? जै…गांधीजी की जै!

सैनिकजी और चिनगारीजी की तरह गरम भाखन शिवनाथ चौधरीजी नहीं देते हैं, लेकिन बात पक्की कहते हैं। एकदम हिसाब से सब बात कहते हैं। खूब ज्ञान की बात कहते हैं! कल का पिसा हुआ आटा नहीं खाते हैं। चीनी नहीं, गुड़ खाते हैं। त्यागी आदमी हैं। चौधरीजी के साथ में दरभंगा ज़िले में तमोड़िया टीशन से रमलगीना बाबू आये हैं। सुनते हैं, पानी से ही बीमारी का इलाज करते हैं। आग में पकायी हुई चीज़ नहीं खाते हैं। साग की हरी पत्तियाँ चबाकर खाते हैं। कहते हैं, इसमें बहुत ताकत है। वह भी असल त्यागी हैं। देह में सिर्फ हड्डियाँ बाक़ी बच गयी हैं, मांस का लेश भी नहीं। दिन-भर में करीब पन्द्रह बार हाथ में लोटा लेकर मैदान की ओर जाते हैं।

सादा कागजवाला एक फाहरम[1] बाँट हुआ है। फाहरम पर महतमाजी की छापी[2] है और नीचे लिखा है…

बापू कहते हैं:

जो पहने सो काते,
जो काते सो पहने।

सोशलिट पाटीवालों ने भी फाहरम बाँट किया था। लेकिन वह लाल रंग का था और उसमें एक दोहा ज्यादा था…

जो जोतेगा सो बोयेगा।
जो बोयेगा सो काटेगा।
जो काटेगा वह बाँटेगा।

---

१. परचा। २. तस्वीर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालदेवजी की जगह पर बौनदास आया है। यही दुहैनियाँ सभा में रजिन्नर बाबू के सामने भाखन देता था। बालदेवजी को पुर्जी बाँटने से छुट्टी नहीं मिलती है, इसीलिए पवलि का काम करने के लिए बौनदास को यहाँ भेजा गया है। बड़ा बहादुर है बौनदास! कहते हैं, जब ४२ के मोमेंट में लोग कचहरी पर झण्डा फहराने जा रहे थे तो मलेटरी ने घेर लिया था। बौनदास एक मलेटरी के फैले हुए पैर के बीच से उस पार चला गया और कचहरी के हाता में झण्डा फहरा दिया···रमैन में हलुमानजी ने सुरसा को मसक रूप धरकर जिस तरह छकाया था, उसी तरह।···

"इस आर्यावर्त में केवल आर्य अर्थात् शुद्ध हिन्दू ही रह सकते हैं," काली टोपीवाले संयोजकजी बौद्धिक क्लास में रोज़ कहते हैं, "यवनों ने हमारे आर्यावर्त की संस्कृति, धर्म, कला-कौशल को नष्ट कर दिया है। अभी हिन्दू सन्तान म्लेच्छ संस्कृति की पुजारी हो गयी है। शिवाजी, महाराणा प्रताप···।"

बौद्धिक क्लास! सोशलिस्ट पार्टी का वासुदेव कहता है······बुद्धू किलास। वासुदेव ही नहीं, काली टोपीवाले बहुत से जवान भी बुद्धू किलास ही कहते हैं।

लाठी, भाला और तलवार हाथ में लेते ही खून गरम हो जाता है राजपूत नौजवानों का। उस दिन हरगौरी कह रहा था—"संजोजकजी! यवनों पर मुझे क्रोध नहीं होता। यवनों का पक्ष लेनेवाले हिन्दुओं की तो गरदन उड़ा देने को जी करता है।" संयोजकजी ज़रा दूर हट गये थे, नहीं तो हरगौरी ने इस तरह तलवार चलायी थी कि संयोजकजी की गरदन ही धड़ से अलग हो जाती।··· आरजाव्रत!···मेरीगंज का ही नाम अब शायद 'आरजाव्रत' हो गया है! लेकिन इस गाँव में तो एक भी मुसलमान नहीं!···

गाँव-भर के हलवाहों, चरवाहों और मजदूरों का नेता कालीचरन है। छोटा नेता वासुदेव सबों को समझाता है, "भाई, आदमी को एक ही रंग में रहना चाहिए। यह तीन रंग का झण्डा···थोड़ा सादा, थोड़ा लाल और पीला···यह तो खिचड़ी पाटी का झण्डा है। कांग्रेस तो खिचड़ी पाटी है। इसमें ज़मींदार हैं, सेठ लोग हैं और पासंग मारने के लिए थोड़ा किसान-मज़दूरों को भी मेम्बर बना लिया जाता है। गरीबों को एक ही रंग के झण्डेवाली पाटी में रहना चाहिए।"

तहसीलदारसाहब भी कांग्रेसी हो गये हैं।

उन्होंने चरखा सेण्टर के लिए अपना गुहाल-घर दे दिया है; खद्दर पहनने लगे हैं। बोलते थे, सारी ज़िन्दगी तो झूठ-बेईमानी करते ही गुजर गयी। आखिरी उम्र में पुण्य भी करना चाहिए।···तहसीलदारसाहब चवन्निया मेम्बर नहीं बने हैं। चवन्निया मेम्बर तो सभी बनते हैं। तहसीलदारसाहब चार-सौ-टकिया मेम्बर बने हैं। देखा नहीं? शिवनाथबाबू ने रसीद काटकर दिया और तहसीलदारसाहब ने तुरत मन्धाता[1] तम्बाकू के पत्तों के बराबर चार नम्बरी नोट निकालकर दे दिया। खड़-खड़ करता था नोट!···अब सोशलिस्ट पाटी का चलना मुश्किल है। पाटी में एक भी धनी आदमी नहीं है। मठ की कोठारिन कब तक

१ तम्बाकू की एक किस्म।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पाटी चलायेगी।

दफ़ा ४० की लोटिस आयी है।

ज़िला कांग्रेस के मन्त्रीजी ने लोटिस भेज दिया है। सोशलिस्ट पार्टी तो ज़ोर-जबर्दस्ती ज़मीन पर कब्ज़ा करने को कहती है। कांग्रेस के मन्त्रीजी ने दफ़ा ४० कानून पास करके नोटिस भेज दिया है। बालदेवजी हाट में लोटिस बाँट रहे हैं; ···दफ़ा ४० कानून पास हो गया। अधिया, बटैयादारी करनेवाले किसान अपनी ज़मीन नकदी करा लें, बहती गंगा में हाथ धो लें। नया कानून पास हो गया। हिंसाबाद करने की ज़रूरत नहीं। पुरैनियाँ कचहरी में दफ़ा ४० का हाकिम आ गया है। दरखास दे दो, बस, ज़मीन नकदी हो जायगी।

वाजिब बात कहते हैं बालदेवजी। यदि बिना तूलफजूल किये ही जमीन नकदी हो रही है तो सोशलिट पाटी में जाने की क्या जरूरत है? कांग्रेस का राज है, जिस चीज़ की ज़रूरत हो, कांग्रेस के मन्त्रीजी से कहो। कानून बना देंगे। तब, एक बात है। इस तरह छिटपुट होकर कहने से कांग्रेस के मन्त्री भी कुछ नहीं कर सकते हैं। सबों को एक जगह मिलना चाहिए, मिलकर एक ही बात बोलनी चाहिए। दस मिलकर करो काज, हारो-जीतो क्या है लाज! ···गलती तो पबलि की ही है, कोई कांग्रेस में तो कोई सुशलिट में तो कोई काली टोपी में, इस तरह तितिर-बितिर रहने से पबलि की कोई भलाई नहीं हो सकती। बालदेवजी ठीक कहते हैं!

"फॉट्टी बी० टी० ऐक्ट?" सोशलिस्ट पार्टी के ज़िला मन्त्रीजी कॉमरेड कालीचरन को समझाते हैं, "फौट्टी बी० टी० ऐक्ट तो कोई नया कानून नहीं। यह तो पुराना कानून है। कांग्रेस के मन्त्री ने परचे बँटवाये हैं? ठीक है। आप भी गांव के किसानों से कहिए कि जितने बड़े किसान हैं, सबों की जमीन पर धावा कर दें। कोई किसी के खिलाफ गवाही नहीं दे। कानून से क्या होता है? असल चीज है, साबित करना। सबूत पक्का होना चाहिए। गवाहों के इज़हार में भी जरा डेढ़-बेढ़ नहीं हो। यह तो तभी हो सकता है जब सभी गरीब एक झण्डे के नीचे एक पार्टी में, एक सूत्र में बँध जायँ। तहसीलदारसाहब कांग्रेसी हो गये हैं। बस, उन्हीं की जमीन पर किसानों द्वारा दावा करवा दीजिए। रंग खुल जायगा। तब देखिएगा कि कांग्रेस के मन्त्रीजी की नोटिस-बाजी की क्या कीमत है! ···'लाल-पताका' के इस अंक में चिनगारीजी का इस सम्बन्ध में एक विशेष आर्टिकल है, ज्यादे कौपी ले जाइए इस बार।"

"···दफा ४०, आधी और बटैयादारी करनेवालों को ज़मीन पर सर्वाधिकार दिलाने का कानून है। लेकिन कानून में छोटा-सा छेद भी रहे तो उससे हाथी निकल जा सकता है।···जितने दफा ४० के हाकिम नियुक्त हुए हैं, सभी या तो जमींदार अथवा बड़े-बड़े किसानों के बेटे हैं। उनसे गरीबों की भलाई की आशा बेकार है। लेकिन, एकता की शक्ति कानून से भी बढ़कर है। सोशलिस्ट पार्टी के लाल झण्डे के नीचे होकर हम प्रतिज्ञा करें कि जमींदारों और बड़े किसानों के पक्ष में गाँव का एक बच्चा भी गवाही नहीं देगा। 'लाल पताका' आधीदारों को विश्वास दिलाता है···।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहना वाजिब है !

"बात वाजिब नहीं, यह बात का बतंगड़ है !"

जोतखीजी सभी बात में मीन-मेख निकालते हैं, "दो भैंस की लड़ाई में दूब के सिर आफत। कांग्रेस और सुशलिंग अपने में लड़ रहा है। दोनों अपना-अपना मेम्बर बनाना चाहता है। चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जायेंगे।"

"गरीब पीसे नहीं जायेंगे, गरीबों की भलाई होगी। एक पाटी रहने से काम नहीं होता है। जब दो दलों में मुकाबला और हिड़िस[1] होता है तो फायदा पबलि का ही होता है। उस बार रौतहट मेला में बिदेसिया नाचवाला आया था। मन लगाकर न तो नाच करता था और न गाना ही अच्छी तरह गाता था। तीसरे दिन बलवाही नाच[2] का भी एक दल आ गया। दोनों में मुकाबला हो गया। साम ही से दोनों दलों ने नाच शुरू किया; कितना गजल, कौवाली, खेमटा और दादरा गाया, इसका ठिकाना नहीं। सूरज उगने तक दोनों दलवाले नाचते ही रहे। तब मेला मनेजर बाबू ने दोनों दलों के लोगों को समझा-बुझाकर नाच बन्द करवाया था।"

चलित्तर कर्मकार आया है।

किरान्ती चलित्तर कर्मकार ! जाति का कमार है, घर सेमापुर में है। मोमेंट के समय गोरा मलेटरी इसके नाम को सुनते ही पेसाब करने लगता था। बम-पेस्तौल और बन्दूक चलाने में मसहूर ! मोमेंट के समय जितने सरकारी गवाह बने थे, सबों के नाक-कान काट लिये थे चलित्तर ने। बहादुर है। कभी पकड़ाया नहीं। कितने सीआईडी को जान से खतम किया। धरमपुर के बड़े-बड़े लोग इसके नाम से थरथर काँपते थे। ज्यों ही चलित्तर का घोड़ा दरवाजे पर पहुँचा कि 'सीसी सटक'। दीजिए चन्दा।···पचास ! नहीं, पाँच सौ से कम एक पैसा नहीं लेंगे। नहीं है? चाबी लाइए तिजोरी की। नहीं ?···ठायँ। ठायँ ! ···दस खूनी केस उसके ऊपर था, लेकिन कभी पकड़ा नहीं गया। आखिर हारकर सरकार ने मुकदमा उठा लिया। किरान्ती चलित्तर कर्मकार कालीचरन के यहाँ आया है? बस, तब क्या है? करैला चढ़ा नीम पर। चलित्तर भी सोशलिट पाटी में है? तब तो जरूर बम-पेस्तौल की टरेनि ही देने आया है। बम-पेस्तौल के सामने काली टोपीवालों की लाठी क्या करेगी? हाथी के आगे पिद्दी !

चरखा-कर्घा, लाठी-भाला और बम-पेस्तौल ! तीन टरेनि !

---

१. प्रतियोगिता। २. बाउल सुर में गीत गाकर नाचनेवाला दल।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चौबीस

हाँ रे, अब ना जीयब रे सैयाँ
छतिया पर लोटल केश,
अब ना जीयब रे सैयाँ !

महँगी पड़े या अकाल हो, पर्व-त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली ? फागुन महीने की हवा ही बावरी होती है। आसिन-कातिक के मैलेरिया और कालाआज़ार से टूटे हुए शरीर में फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। रोने-कराहने के लिए बाकी ग्यारह महीने तो हैं ही, फागुन-भर तो हँस लो, गा लो। जो जीयै सो खेलै फाग। दूसरे पर्व-त्योहार को तो टाल भी दिया जा सकता है। दीवाली में एक-दो दीप जला दिये, बस छुट्टी। लेकिन होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगाकर जिलाती है। बौरे हुए आम के बाग से हवा आकर बच्चे-बूढ़ों को मतवाला बना जाती है।···चावल का आटा, गुड़ और तेल ! पूआ-पकवान के इस छोटे-से आयोजन के लिए मालिकों के दरवाज़े पर पाँच दिन पहले से ही भीड़ लग जाती है। बखार के मुँह खोल दिये जाते हैं। मालिक बही-खाता लेकर बैठ जाते हैं, पास में कजरौटी खुली हुई रहती है। धान नापनेवाला धान की ढेरी से धान नापता जाता है।···बादरदास को एक मन ! ···सोनाय ततमा को तीन पसेरी ।···सादा कागज पर अँगूठे का निशान देते जाओ। भादों महीने में यदि भदै धान चुका दोगे तो ड्योढ़ा, यानी एक मन का डेढ़ मन। यदि अगहनी फ़सल में चुकाओगे तो डेढ़ मन का तीन मन। सीधा हिसाब है।

गाँव के सभी बड़े-बड़े किसानों का अपना-अपना मजदूर टोला है—सिंघजी का ततमाटोला और पासवानटोला; तहसीलदारसाहब का पोलियाटोला, धानुक-टोला, कुर्मीटोला, और कियोटटोला; खेलावन यादव का गुआरटोला और कोयरी-टोला। सन्थालटोली पर किसी का खास अधिकार नहीं।

इस बार तहसीलदारसाहब को छोड़कर किसी ने मजदूरों को धान नहीं दिया।···अँगूठे का निशान नहीं देंगे और धान लेंगे ? बाप-दादे के अमल से अँगूठे का निशान देते आ रहे हैं, कभी बेईमानी नहीं हुई। इस साल बेईमानी कर लेंगे ? कालीचरन ने टीप देने को मना किया है तो कालीचरन से ही धान लो।"

तहसीलदार को नये टीप की जरूरत नहीं। पुराने टीप ही इतने हैं कि कोई इधर-उधर नहीं कर सकता। दूसरे किसानों के मजदूरों को भी तहसीलदार साहब ने इस बार धान दिया है, लेकिन कालीचरन को जमानतदार रखकर। धान वसूलवा देना कालीचरन का काम होगा। अरे, ड्योढ़ा नहीं तो सवैया ही सही।···जो भी हो, तहसीलदार के दिल में दया-धर्म है। बाकी मालिक लोग तो पिचाश हैं, पिचाश !

एक ओर लौटस बारी रे विहउवा !

फगुआ का हरएक गीत देह में सिहरन पैदा करता है। फुलिया का चुमौना खलासीजी से हो गया है। खलासीजी बिदाई कराने के लिए आये थे। लेकिन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
फुलिया इस होली में जाने को तैयार नहीं हुई ! खलासीजी बहुत बिगड़े; धरना देकर चार दिन तक बैठे रहे। आखिर में रूठकर जाने लगे। फुलिया ने रमजू की स्त्री के आँगन में खलासीजी से भेंट करके कहा था—"इस साल होली नैहर में ही मनाने दो। अगले साल तो···।"

नयना मिलानी करी ले रे सैयाँ, नयना मिलानी करी ले !
अबकी बेर हम नैहर रहबौ, जे दिल चाहय से करी ले !

दोपहर से शाम तक रमजूदास की स्त्री के आँगन में रहकर फुलिया ने खलासीजी को मना लिया है। होली के लिए खलासीजी ने एक रुपया दिया है।··· बेचारा सहदेव मिसिर इस बार किससे होली खेलेगा ? पिछले साल की बात याद आते ही फुलिया का देह सिहरने लगता है। भांग पीकर धुत्त था सहदेव मिसर; एक ही पुआ को बारी-बारी से दाँत से काटकर दोनों ने खाया था।···अरे, जात-धरम ! फुलिया तू हमारी रानी है, तू हमारी जाति, तू ही धरम, सबकुछ।"··· बाबू को दारू पीने के लिए डेढ़ रुपया दिया था और माँ को अठन्नी।···रात-भर सहदेव मिसर जगा रह गया था।···फुलिया के देह के पोर-पोर में मीठा दर्द फैल रहा है। जोड़-जोड़ में दर्द मालूम होता है। कई बाँहों में जकड़कर मरोड़े कि जोड़ की हड्डियाँ पटपटाकर चटख उठें और दर्द दूर हो जाय।···सहदेव मिसर को खबर भेज दें !···लेकिन गाँववाले ?···ऊँह, होली में सब माफ़ है। ···वह आवेगा ? नाराज जो है !

अरे बँहियाँ पकड़ि झकझोरे श्याम रे
फूटल रेसम जोड़ी चूड़ी
मसकि गयी चोली, भींगावल साड़ी
आँचल उड़ि जाये हो
ऐसो होरी मचायो श्याम रे···!

कमल की आँखें लाल हो रही हैं; पिछले साल होली के ही दिन वह बेहोश हुई थी। इस बार क्या होगा ? वह बेहोश नहीं होगी इस बार। इस बार डाक्टर है; उसे बेहोश नहीं होने देगा।···लेकिन सुबह से ही डाक्टर बाहर है। रोगी देखने गया है रामपुर। यदि वह आज नहीं आया तो ?···नहीं, वह जरूर आयेगा। माँ ने एक सप्ताह पहले ही निमन्त्रण दे दिया है। रंग, अबीर,··· गुलाल ! पिचकारी !

"माँ !"

"क्या है बेटी ?"

"तुम्हारा डाक्टर आज नहीं आवेगा ?"

"क्यों, क्या बात है बेटी ?"

"मेरा जी अच्छा नहीं।"

"ऐसा मत कहो बेटी, दिल को मजबूत करो। कुछ नहीं होगा।"

···आजु ब्रज में चहुदिश उड़त गुलाल !

चारों ओर गुलाल उड़ रहा है। डाक्टर को कोई रंग नहीं देता है। रामपुर में भी किसी ने रंग नहीं दिया। रास्ते में एक जगह कुछ लड़के पिचकारी लेकर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
खड़े थे, लेकिन डाक्टर को देखते ही सहम गये। ...रंग नहीं, गोबर है। रंग के लिए इतने पैसे कहाँ! डाक्टर को लोग रंग नहीं देते। वह सरकारी आदमी है, सरकारी उर्दी पहने हुए हैं। सरकारी उर्दी पर रंग देने से जेल की सजा होती है। डाक्टर सरकारी आदमी है, बाहरी आदमी है। वह गाँव के समाज का नहीं।... यह डाक्टर की ही गलती है। शुरू से ही वह गाँव से, गाँववालों से अलग-अलग रहा है। उसका नाता सिर्फ रोग और रोगी से रहा। उसने गाँव की ज़िन्दगी में कभी घुलने-मिलने की चेष्टा नहीं की। लेकिन डाक्टर को अब गाँव की ज़िन्दगी अच्छी लगने लगी है, गाँव अच्छा लगने लगा है और गाँव के लोग अच्छे लगते हैं। वह गाँव को प्यार करता है। उसे कोई रंग क्यों नहीं देता? वह रंग में, गोबर में, कीचड़ में सराबोर होना चाहता है!

"अर र र र! कोई बुरा न माने, होली है!"

डाक्टर के सफेद कुर्त्ते पर लाल-गुलाबी रंगों की छींटे छरछराकर पड़ती हैं।

"ओ कालीचरन!"

"बुरा मत मानिए डाक्टरसाहब, होली है।"

डाक्टर मनीबेग से दस रुपये का नोट निकालकर कालीचरन को देता है—होली का चन्दा! रंग और अबीर का चन्दा!

होली है! होली है! होली है!

गनेश हाथ में पिचकारी लिये मौसी का आँचल पकड़कर खड़ा है। मौसी हँसकर कहती है, "सुबह से ही रंग खेलने के लिए जिद्द कर रहा है। मेरी एक साड़ी को तो रंग से सराबोर कर दिया है। अब जिद्द पकड़ा है कि गाँव के लड़कों के साथ खेलेंगे।"

"आओ भैया गनेश!" कालीचरन गनेश का हाथ पकड़कर ले चलता है। गनेश खुश होकर डाक्टर पर रंग की पिचकारी से फुहारें बरसाता हुआ कालीचरन के साथ भाग जाता है। मौसी खुश है।

"जुगजुग जियो काली बेटा!"

"बड़ा मस्त नौजवान है।" डाक्टर कहता है।

"कमली पाँच बार पुछवा चुकी है—डाक्टरसाहब लौटे हैं या नहीं। मुझे धमकी दे गयी है—आज डाक्टर को तुम नहीं खिला सकतीं। आज मेरे यहाँ निमन्त्रण है।"

ढोल-ढाक, झाँझ-मृदंग और डम्फ!
होली, फगुआ, भड़ौवा और जोगीड़ा!

कालीचरन का दल बहुत बड़ा है। दो ढोल, एक ढाक है, झाँझ-डम्फ। सभी अच्छे गानेवाले भी उसी के दल में हैं। सुन्दरलाल, सुखीलाल देवीदयाल और जोगीड़ा कहनेवाला महन्था। मिडिल में पढ़ता है; पढ़ने में बड़ा तेज है! दोहा-कवित्त जोड़ने में उसको चाँदी की चकत्ती मिली है। गाँव के छोटे-छोटे दल भी कालीचरन के दल में मिल गये हैं।

जोगीड़ा सर...र र...

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जोगीड़ा सर-र र…
जोगीजी ताल न टूटे
तीन ताल पर ढोलक बाजे
ताक धिना धिन, धिन्नक तिन्नक
जोगीजी !
होली है ! कोई बुरा न माने होली है !
बरसा में गड्ढे जब जाते हैं भर
बेंग हजारों उसमें करते हैं टर्र
वैसे ही राज आज कांग्रेस का है
लीडर बने हैं सभी कल के गीदड़…जोगीजी सर…र र…!
जोगीजी, ताल न टूटे
जोगीजी, तीन ताल पर ढोलक बाजे
जोगीजी, ताक धिना धिन !
चर्खा कातो, खध्धड़ पहनो, रहे हाथ में झोली
दिन दहाड़े करो डकैती बोल सुराजी बोली…जोगीजी सर…र र…!

सिर्फ़ जोगीड़ा ही नहीं। महन्था ने नया फगुआ गीत भी जोड़ा है। बटगमनी फगुआ—राह में चलते हुए गाने के लिए।

आयी रे होरिया आयी फिर से !
आयी रे !
गावत गाँधी राग मनोहर
चरखा चलावे बाबू राजेन्दर
गूंजल भारत अमहाई रे ! होरिया आयी फिर से !
वीर जमाहिर शान हमारो,
बल्लभ है अभिमान हमारो,
जयप्रकाश जैसो भाई रे ! होरिया आयी फिर से !

होली है ! होली है ! होली है !

कोयरीटोले का बूढ़ा कलरू महतो कहता है, "अरे डागडरसाहेब ! अब क्या लोग होली खेलेंगे ! होली का जमाना चला गया। एक ज़माना था जब कि गाँव के सभी बूढ़ों को नंगा करके नचाया जाता था, एकदम नंगा। उस बार राज के मनेजर जनसैन साहेब के साथ तीन-चार साहेब आये थे। काला बक्सा में आँख लगाकर छापी लेते थे। बाद में खानसामाँ से मालूम हुआ कि बिलैत के गजट में छापी हुआ था। एकदम नंगा !"

कामरेड वासुदेव 'भँड़ौवा' गाने के लिए कह रहे हैं, "अब एक नया भँड़ौवा हो। एकदम नया ताजा माल ! जर्मनवाला !"

डाक ढिन्ना, ताक ढिन्ना।

अरे हो बुड़बक बभना, अरे हो बुड़बक बभना,
चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाये।
सुपति-मउनियाँ लाये डोमनियाँ, माँगे पियास से पनियाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुआँ के पानी न पाये वेचारी, दौड़ल कमला के किनरियाँ,
सोही डोमनियाँ जब बनली नटिनियाँ, आँखी के मारे पिपनियाँ
तेकरे खातिर दौड़ले बौड़हवा, छोड़के घर में बभनिया।
जोलहा धुनियाँ तेली तेलनियाँ के पीये न छुअल पनियाँ
नटिनी के जोवना के गंगा-जमुनुवाँ में डुबकी लगाके नहनियाँ।
दिन भर पूजा पर आसन लगाके पोथी-पुरान वँचनिया
रात के ततमाटोली के गलियन में जोतखीजी पतरा गननियाँ।
भकुआ बभना, चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाये !

कोई बुरा न माने होली है ! होली है !

तहसीलदारसाहब की ड्योढ़ी पर पैर रखते ही डाक्टर के मुँह पर गुलाल मल दिया गया। डाक्टर की आँखें बन्द हैं, लेकिन स्पर्श में ही वह समझ गया है कि गुलाल किसने मला है। कमली !···वसन्तोत्सव की कमली ! डाक्टर याद करने की चेष्टा करता है, एक बार किसी चित्रकार का 'मैथिली' शीर्षक चित्र किसी मासिक पत्रिका में देखा था !···कौन था वह चित्रकार !

"डाक्टर बेचारे के पास न अबीर है और न रंग की पिचकारी। यह एक-तरफा होली कैसी !···लीजिए डाक्टरबाबू, अबीर लीजिए। और इस बाल्टी में रंग है।" माँ बेहद खुश है आज। पिछले साल होली के दिन इसी आँगन में मातम हो रहा था और इस साल उसकी बेटी चहकती फिर रही है।···दुहाई बाबा भोलानाथ !

बेचारा डाक्टर रंग भी नहीं देना जानता; हाथ में अबीर लेकर खड़ा है। मुँह देख रहा है, कहाँ लगावे !

"ज़रा अपना हाथ बढ़ाइए तो।"

"क्यों ?"

"हाथ पर गुलाल लगा दूं ?"

"आप होली खेल रहे हैं या इन्जेक्शन दे रहे हैं ? चुटकी में अबीर लेकर ऐसे खड़े हैं मानो किसी की माँग में सिन्दूर देना है !" कमली खिलखिलाकर हँसती है। रंगीन हँसी !

डाक्टर अब पहले की तरह कमली की बोली को एक बीमार की बोली समझकर नहीं टाल सकता है। कमरे में लालटेन की हलकी रोशनी फैली हुई है; सामने कमली खड़ी हँस रही है। ऐसी हँसी डाक्टर ने कभी नहीं देखी थी। वह स्वस्थ हँसी है—विकारशून्य ! कमली का अंग-अंग मानो फड़क रहा है। डाक्टर अपने दिल की धड़कन को साफ़-साफ़ सुन रहा है। उसके ललाट पर आज भी पसीने की बूंदें चमक रही हैं। सामने दीवार पर एक बड़ा आईना है। डाक्टर उसमें अपनी सूरत देखता है···ललाट पर पसीने की बूंदें, मानो दूल्हे के ललाट पर चन्दन की छोटी-छोटी बिंदियाँ सजायी गयी हैं !···डाक्टर को भवभूति के माधव-मालती की याद आती है। होली को पहले मदनमहोत्सव कहा जाता था। आम की मंजरियों से मदन की पूजा की जाती थी। इसी मदनोत्सव के दिन माधव और मालती की आँखें चार हुई थीं और दोनों प्रेम की डोरी में बँध गये थे। जहाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
राधेश्याम खेले होरी !

डाक्टर अबीर की पूरी झोली कमली पर उलट देता है। सिर पर लाल अबीर बिखर गया—मुँह पर, गालों पर और नाक पर।···कहते हैं, सिन्दूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिन्दूर झड़कर गिरता है, वह अपने पति की बड़ी दुलारी होती है।···

ऐसी मचायो होरी हो,
कनक भवन में श्याम मचायो होरी !

पचीस

बावनदास आजकल उदास रहा करता है।

"दासजी, चुन्नी गुसाईं का क्या समाचार है ?" रात में बालदेवजी सोने के समय बावनदास से बातें करते हैं।

"चुन्नी गुसाईं तो सोसलिट पाटी में चला गया।"

बालदेवजी आश्चर्य से मुँह फाड़कर देखते ही रह जाते हैं।

"बालदेवजी भाई, अचरज की बात नहीं। भगवान जो करते हैं अच्छा करते हैं।

"याद है दासजी, चन्ननपट्टी की सभा, तैवारीजी का लेक्चर और तनुकलाल का गीत ! याद करके आज भी रोवाँ कलप उठता है।···गंगा रे जमुनवाँ की धार···।"

"लेकिन भारथमाता अब भी रो रही हैं बालदेव !" बावनदास को नींद आ रही है।

बालदेवजी चमक उठते हैं। भारथमाता अब भी रो रही हैं ? ऐं ?···क्या कहता है बावनदास ?

बावनदास करवट लेते हुए कहता है, "बिलैती कपड़ा के पिकेटिन के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिन के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव ? चानमल मड़बाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है। और सुनोगे ?···दुलारचन्द कापरा को जानते हो न ? वही जुआ कम्पनीवाला, एक बार नेपाली लड़कियों को भगाकर लाते समय जो जोगबनी में पकड़ा गया था। वह कटहा थाना का सिकरेटरी है।···भारथमाता और भी, जार-बेजार रो रही हैं।"

बालदेवजी को आश्चर्य होता है। वह बावनदास से बहस करना चाहता है। लेकिन बावन तो खर्राटा लेने लगा।···बालदेवजी के समझ में कोई बात नहीं आ

Funding by IKS-MoE

रही है।···भारतमाता जार-बेजार रो रही है !
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बावनदास, चुन्नी गुसाईं और बालदेवजी ! तीनों ने एक ही दिन इस संसार के माया-मोह को त्यागकर सुराजी में नाम लिखाया था।

गृहस्थ चुन्नी गुसाईं ! चार बीघे ज़मीन, दो-चार आम-कटहल के पेड़, एक गाय और दो छोटे-छोटे लड़कों का एकमात्र अभिभावक। स्वभाव से धर्मभीरु। चन्दनपट्टी में सभा देखने गया। तैवारीजी ने भाखन दिया और तनुकलाल ने गीत गाया। सभी रोने लगे। चुन्नीदास के मन का मैल भी आँसुओं की धारा में बह गया। उसी दिन सुराजी में नाम लिखा लिया। चर्खा-कर्घा, झण्डा-तिरंगा और खद्दर को छोड़कर सभी चीजें मिथ्या हैं। सुदेशी वाना, विदेशी बैकाठ !

अरे देसवा के सब धन-धान विदेसवा में जाये रहे।
महँगी पड़त हर साल कृसक अकुलाय रहे।

दुहाई गाँधी बाबा !···गाँधी बाबा अकेले क्या करें ! देश के हरेक आदमी का कर्तव्य है···।

का करें गाँधीजी अकेले, तिलक परलोक बसे,
कवन सरोजनी के आस अबहिं परदेस रही।

दुहाई गाँधी बाबा। चुन्नीदास को अपने शरण में ले लो प्रभू !···विदेशी कपड़ा बैकाठ···नीमक कानून···जेल। गाँजा-दारू छोड़िए प्यारे भाइयो···जेल। व्यक्तिगत सत्याग्रह···जेल। १९४२···जेल।···सब मिलकर दस बार जेल-यात्रा कर चुका है चुन्नी गुसाईं !

और वह सोसलिट पार्टी में चला गया ?

बावनदास !

पूर्वजन्म का फल अथवा सिरजनहार की मर्ज़ी। प्रकृति की भूल अथवा थायराएड, थायमस और प्युटिटिरी ग्लैंड्स के हेर-फेर ! डेढ़-हाथ की ऊँचाई ! साँवला रंग, मोटे होंठ, अचरज में डाल देनेवाली दाढ़ी और चौंका देनेवाली मोटी-भोंडी आवाज। ऊँचाई के हिसाब से आवाज़ दसगुना भारी। अजीब चाल, मानो लुढ़क रहा हो। अज्ञात कुलशील। जन्मजात साधू। जिस ओर होकर गुज़रता, लोगों की निगाहें बरबस अटक जातीं। फिर ताज्जुब की हँसी-मुस्कराहट। पीछे-पीछे बच्चों का हुजूम, तमाशा; कुत्ते भूंकते, इन्सान हँसते ! गर्भवती औरतें छिप जातीं अथवा छिपा दी जातीं।···और जब भगवान ने उसे चलता-फिरता तमाशा ही बनाकर भेजा है, लोग उसे देखकर खुश हो लेते हैं तो क्यों न वह पारिश्रमिक माँग ले !···दे-दे मैया कुछ खाने को ! भगवान भला करेंगे। सेत्ताराम, सेत्ताराम !

चन्दनपट्टी की उस सभा ने, तैवारीजी के भाखन और तनुकलाल के गीत ने, इस डेढ़ हाथ के आदमी को भी झकझोर दिया था।···न जाने पूर्वजन्म के किस पाप का फल भोग रहा हूँ। क्या होगा यह सरीर रखकर ? चढ़ा दो गाँधी बाबा के चरण में, भारथमाता की खातिर !

अरे देसवा के खातिर मजहरुलहक भइलैं फकिरवा से
दीन भइलैं राजेन्दरप्रसाद देसवासियो !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और वह तो फकीर ही है।···तुलसी गुसाईं ने नाम लिखा लिया ? मेरा भी नाम लिख लिया जाये।—रामकिसुनबाबू की स्त्री उसे देखते ही चिल्ला उठी थीं—भगवान ! बावन भगवान !"—उन्होंने पूर्णिया आने के लिए कहा था।

सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! बन्देमहातरम् ! बन्देमहातरम् !

जिले की राजनीति के जनक राजकिसुनबाबू के बँगले पर वह जिस समय हाजिर हुआ, उस समय पुलिस की लारी खड़ी थी। दारोगासाहब इन्तिजार कर रहे थे। रामकिसुनबाबू अपनी आभारानी को जरूरी हिदायतें दे रहे थे।

बन्दे महातरम् ! बन्दे महातरम् !

"तुमि जाओ ! आसार जन्ये भेबो ना। ओई द्याखो, भगवान आमार काछे निजेई एसे गेछेन।" आभारानी की आँखें आनन्द से चमक उठी थीं।

आभारानी ने बावनदास को 'भगवान' छोड़कर किसी दूसरे नाम से कभी नहीं पुकारा।

कुछ दिनों बाद आभारानी भी गिरफ्तार हुईं। बावन भी पकड़ा गया। पुलिस ने एकाध डण्डा लगाकर उसे भगा देना चाहा, पर पहले ही डण्डे की चोट को आभारानी ने झपटकर अपने शरीर पर ले लिया तो पुलिस के पाँव के नीचे की मिट्टी खिसक गयी थी।···"आमार भगवान के मारो ना।"···खून से लथपथ खादी की सफेद साड़ी। पत्थर को भी पिघला देनेवाली, करुणा से भरी बोली, 'आमार भगवान !' बावन के पूर्वजन्म के सारे पाप मानो अचानक ही पुण्य में बदल गये। सूखे ठूँठ में नयी कोंपल लग गयी। उसके मुँह से मोटी आवाज निकली थी—"माँ !"

माँ ! महात्मा गाँधीजी भी आभारानी को माँ ही कहते। १६३४ में भूकम्प-पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर जब बापू आये थे, साथ में थे रामकिसुनबाबू, आभारानी और बावनदास। बावनदास के बिना आभारानी एक डग भी कहीं नहीं जा सकतीं। गांधीजी हँसकर बोले थे, "माँ, तुम्हारे भगवान से ईर्ष्या होती है।"···दन्तहीन, पोपले मुँह की वह पवित्र हँसी, बच्चों की हँसी जैसी !

फुलकाहा बाजार ! लाखों की भीड़। ऊँचा मंच: ···'महात्मा गाँधी की जय !'···रह-रहकर आकाश हिल उठता है।···जय ! फिर आकाश हिलता है। रेलमपेल ! पुष्पवृष्टि !···चरणधूलि ! सीटी···स्वयंसेवक। कॉर्डन डालो··· घेरा···घेरा !

मंच पर आगे-आगे रामकिसुनबाबू, आभारानी के कन्धे का सहारा लिये गाँधीजी।···वही गाँधीजी !···जै !···जै !···आभारानी हाथ का सहारा देकर फिर किसको मंच पर चढ़ा रही हैं ? कौन है वह ?···अरे बावनदास ! बौना !···गाँधीजी तर्जनी से सबों को शान्त रहने के लिए कह रहे हैं।···लाखों की भीड़ में बावनदास खँजड़ी बजाकर गाता है 'एक राम-नाम धन साँचा जग में कछु न बाँचा हो !" आवाज़ दूर तक नहीं पहुँचती। लेकिन बावनदास ! डेढ़ हाथ ऊँचा यह 'भ्रर-आदमी' कितना बड़ा हो गया है ! महात्माजी भीख माँगते हैं। हरिजनों के लिए दान दीजिए ! रुपये की थैली, सोने की अँगूठी, चेन, बुताम, हार, कंगन, अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, इकन्नी, पत्थर का टुकड़ा। किन्तु सब-कुछ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देकर भी बावनदास से बड़ा होना असम्भव !

बावनदास को मानो कुबेर का भण्डार मिल गया; ठूंठ के कोंपल नवपल्लव हो गये···बापू !

१९३७। पण्डित जवाहरलाल नेहरू चुनाव के तूफ़ानी दौरे पर आये हैं। बावनदास को देखकर ताज्जुब की मुद्रा बनाकर कुछ देर तक देखते ही रह गये। फिर ललाट पर बल और नाक पर अँगुली डालते हुए, गांगुलीजी से अँग्रेजी में बोले, "आई काण्ट रिमेम्बर दि नेम ऑफ दैट बुक।" (मुझे उस किताब का नाम याद नहीं आ रहा है)।

"किंग ऑफ दि गोल्डन रिवर !" गांगुलीजी ने छूटते ही जवाब दिया। फिर दोनों एक ही साथ हँस पड़े।

अब बावनदास भजन ही नहीं गाता, बिख्यान देना भी सीख गया है। वह बोलने को उठता है। माइक-स्टैंड काफी ऊँचा है। ऑपरेटर हैरान है। जल्दी-बाज़ी में वह क्या करे ? कभी ऊँचा कभी नीचा करता है, फिर भी बावनदास से काफी ऊँचा है माइक-स्टैंड। नेहरूजी बड़ी फुर्ती से उठकर जाते हैं, माइक खोलकर हाथ में ले लेते हैं। झुककर बावनदास के मुँह के पास ले जाते हैं, "बोलिए !" जनता हँसती है। बावन ज़रा घबरा जाता है। नेहरूजी मुस्कराकर उसके गले में माला डाल देते हैं, "बोलिए !" प्रेस रिपोर्टरों के कीमती कैमरों के बटन एक ही साथ 'क्लिक-क्लिक' कर उठे थे। 'नैशनल हेरल्ड' के मुखपृष्ठ पर बड़ी-सी तस्वीर छपी थी—बावनदास के गले में माला है, नेहरूजी हाथ में माइक लेकर झुके हुए हैं, मुस्करा रहे हैं। तस्वीर के ऊपर लिखा हुआ था, 'माइक ऑपरेटर नेहरू !'

अगस्त १९४२। कचहरी पर चढ़ाई। धायँ-धायँ ! पुलिस हवाई फ़ायर करती है। लोग भाग रहे हैं। बावनदास ललकारता है, जनता उलटकर देखती है। डेढ़ हाथ का इन्सान सीना ताने खड़ा है।···'बम्बई से आई आवाज़ !'··· जनता लौटती है। बावनदास पुलिसवालों के पाँवों के बीच से घेरे के उस पार चला जाता है और विजयी तिरंगा शान से लहरा उठता है।···महात्मा गाँधी की जय !

बावन को गाँधीजी जानते हैं, नेहरूजी जानते हैं और राजेन्द्रबाबू भी पहचानते हैं। प्रान्त-भर के लीडर और राजनीतिक कार्यकर्ता जानते हैं। कैम्प जेल में सुपरिंटेण्डेण्ट की बदमाशी के खिलाफ कैदियों ने सामूहिक अनशन किया था। अन्त तक बावनदास और चुन्नी गुसाईं ही टिके रहे थे। पच्चीस दिन का अनशन ! रदरफ़ोर्ड और आर्चर ने इन दोनों को 'देखने माँगा' था। गाँधीजी की कठोर परीक्षा में, सत्य की परीक्षा में, सत्याग्रह की परीक्षा में, खरे उतरनेवाले दो कुरूप और भद्दे इन्सान !

'सुराजी' में नाम लिखने के बाद सिर्फ दो बार बावन को माया ने अपने मोहजाल में फँसाने की कोशिश की थी। दोनों बार वह चेत गया था। मोहफाँस में फँसते-फँसते वह बच गया था।···महात्माजी की कृपा !

एक बार रामकिसुनबाबू ने सिमरबनी से मुठिया में वसूल हुआ चावल लाने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
को भेजा था —"चावल बेचकर रुपया ले आना।" पाँच रुपये तीन आने। लौटती बार सिमराहा स्टेशन बाजार में जगमोहन साह की दूकान पर वह दही-चूड़ा खाने गया था। जगमोहन साह जलेबियाँ छान रहा था और सहुआइन जलेबियों को रस में डुबो रही थी। बावनदास के मन में बहुत देर तक रस में डूबी हुई जलेबियाँ चक्कर काटती रहीं।…पथराहा के फागूबाबू ने अपने बाप के श्राद्ध में कंगाल भोजन कराया था। एक युग हो गया, बावन ने फिर जलेबी नहीं चखी। आखिर बावनदास ने दही-चूड़ा पर दो आने की जलेबियाँ ले लीं।

लेकिन पेट में पहुँचने के बाद उसे अचानक ज्ञान हुआ। उसकी आँखों के आगे से माया का पर्दा उठ गया।…ये पैसे ? मुठिया ?…उसकी आँखों के सामने गाँव की औरतों की तस्वीरें नाचने लगीं। …हाँड़ी में चावल डालने के पहले, परम भक्ति और श्रद्धा से, एक मुट्ठी चावल गाँधी बाबा के नाम पर निकालकर रख रही हैं। कूट-पीसकर जो मजदूरी मिली है, उसमें से एक मुट्ठी ! भूखे बच्चों का पेट काटकर एक मुट्ठी ! और बावन ने उस पैसे से अपनी जीभ का स्वाद मिटाया ?…व्रतभंग ! तपभ्रष्ट ! …दुहाई गाँधी बाबा ! छिमा करो ! बावन फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी आँखों से आँसू झड़ रहे थे और वह कण्ठ में अँगुलियाँ डालकर कै करता जाता था !…सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! दो दिनों का उपवास ! आत्मशुद्धि, प्रायश्चित्त ! रामकिसुनबाबू ने बहुत समझाया, आभारानी परोसी हुई थाली लेकर सामने बैठी रहीं, लेकिन बावन ने उपवास नहीं तोड़ा। …"माँ, इस अपवित्तर मन को दण्ड देने से मत रोको। अशुद्ध आतमा मुझे बाबा की राह से डिगा देगी !"

माया का दूसरा फन्दा…

मकान कानून तोड़ने के समय श्रीमती तारावती देवी पटना से आयी थीं। उनकी बोली में मानो जादू था। वह जहाँ जातीं, लोग उनके भाषण सुनने के लिए उमड़ पड़ते थे।…जवान औरत ! सिर पर घूंघट नहीं। भगवती दुर्गा की तरह तेजी से जल-जल करती है, सरकार को पानी-पानी कर देती है। "…मुट्ठी-भर अंग्रेजों को हम नाच नचा देंगे। गोली, सूली और फाँसी का डर नहीं।" पुलिस-दारोगा डर से थर-थर काँपते हैं। "…अंग्रेजों के जूठे पत्तल चाटनेवाले ये हिन्दुस्तानी कुत्ते ?" जरूर उसमें भगवती का अंश है। सभा खत्म होने के बाद उनके निवास-स्थान पर भी भीड़ लग जाती थी। बहुत-सी बाँझ-निपुत्तर औरतें चरण-धूलि लेने आती थीं। भगवती ! उनके खाने-पीने और आराम करने के समय भी लोग जमे रहते थे। आखिर स्वयंसेवकों के पहरे का प्रबन्ध करना पड़ा था।

एक दिन चन्दनपट्टी आश्रम में, दोपहर को तारावतीजी बिछावन पर आराम कर रही थीं। सामने के दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था और पर्दे के इस पार ड्युटी पर बावनदास। फागुन की दोपहरी। आम की मंजरियों का ताजा सुवास लेकर बहती हुई हवा पर्दे को हिला-डुलाकर अन्दर पहुँच जाती थी। तारावतीजी की आँखें लग गयीं। बावन ने हिलते-डुलते पर्दे के फाँक से यों ही जरा झाँककर देखा था। उसका कलेजा धक् कर उठा था, मानो किसी ने उसे जोर से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
पीछे की ओर धकेल दिया हो।···धीरे-धीरे पर्दे को हिलानेवाली फागुन की आवारा हवा ने बावन के दिल को भी हिलाना शुरू कर दिया। बावन ने एक बार चारों ओर झाँककर देखा, फिर पर्दे के पास खिसक गया! झाँका। चारों ओर देखा और तब देखता ही रह गया मन्त्र-मुग्ध सा! ···पलंग पर अलसायी सोयी जवान औरत! बिखरे हुए घुँघराले बाल, छाती पर से सरकी हुई साड़ी, खद्दर की खुली हुई अँगिया! ···कोकटी खादी के बटन! ···आश्रम की फुलवारी का अंग्रेजी फूल 'गमफोरना', पाँचू राउत का बकरा रोज़ आकर टप-टप फूलों को खा जाता है।···बावन के पैर थरथराते हैं। वह आगे बढ़ना चाहता है। ···वह जानता है! वह इस औरत के कपड़े को फाड़कर चित्थी-चित्थी कर देना चाहता है। वह अपने तेज़ नाखूनों से उसके देह को चीर-फाड़ डालेगा। वह एक चीख सुनना चाहता है। वह अपने जबड़ों से पकड़कर उसे झकझोरेगा। वह मार डालेगा इस जवान गोरी औरत को। वह खून करेगा।···ऐं! सामने की खिड़की से कौन झाँकता है? गाँधीजी की तस्वीर? दीवार पर गाँधीजी की तस्वीर! हाथ जोड़कर हँस रहे हैं बापू! ···बाबा! धधकती हुई आग पर एक घड़ा पानी! बाबा, छिमा! छिमा! दो घड़े पानी! दुहाई बापू! पानी, पानी, पानी! शीतल जल! ठण्डक···!

बावन आँखें खोलता है। रामकिसुनबाबू पानी की पट्टी दे रहे हैं। माँ पंखा झल रही हैं। गांगुलीजी चुपचाप खड़े हैं और घबरायी हुई तारावती कह रही हैं, "चीख सुनकर मेरी नींद खुली तो देखा यह धरती पर छटपटा रहा है।"

दूसरे दिन आभारानी एक गिलास टमाटर का रस देते हुए बोली थीं, "भगवान, आज थेके तोमाय रोज एक गिलास ऐई रस, आर रात्रे दुध खेते हबे।"

लेकिन, बावन तो सात दिनों का उपवास-व्रत ले चुका था। आत्मशुद्धि, इन्द्रियशुद्धि, प्रायश्चित्त! आभारानी हारकर 'ता हले आमियो खाबो ना' धमकी देकर चली गयीं। तब बावन ने गाँगुलीजी के पास जाकर धीरे-धीरे सारी कहानी सुना दी—"गांगुलीजी! आप माँ को समझा दीजिए। मैं व्रत तोड़ नहीं सकता। कल माया ने···!"

गाँगुलीजी ने हँसते हुए आभारानी से कहा था, "भगवानेर व्रत-भंग हउबा असम्भव। कारण गुरुतर। तबे आपनार भाग्य भालो जे बेचारा के सूरदासेर कथा मने पड़े नि, नईले एतखन आर भगवानेर चोख थाकतो ना।" (भगवान का व्रत-भंग होना असम्भव है। आपका भाग्य अच्छा है कि उन्हें सूरदास की बात याद नहीं आयी, वरना अब तक भगवान की आँख नहीं रहती।)

आभारानी अवाक् होकर गांगुलीजी की ओर देखती रह गयी थीं, "की जानी बापू?"

देवताओं और मन्दिरों के नगर, बनारस में रहकर भी आभारानी को सबसे पहले अपने 'भगवान' की याद आती है। कभी-कभी गांगुलीजी के नाम मनी-आर्डर आता है, "भगवानेर कापड़ेर जन्य।···भगवानेर दूधेर जन्य।"

···और वही बावनदास कहता है, भारथमाता जार बेजार रो रही हैं!

बालदेवजी को लछमी दासिन की याद आती है।···वह भी रो रही थी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

…लेकिन कालीचरन ? सोसलिट पाटी !…

बालदेव निराश नहीं होगा । उसे नींद नहीं आ रही है। बहुत खटमल हैं। …हाँ, वह कल बावनदास से पूछेगा, यदि घर में खटमल ज्यादा हो जायें तो क्या घर में ही आग लगा देनी चाहिए ?

छब्बीस

बाबू हरगौरीसिंह राज पारबंगा के नये तहसीलदार बहाल हुए । 'बेतार का खबर' सुमरितदास सबों से कहता है, "देखो-देखो, कायस्थ के जूठे पत्तल में राजपूत खा रहा है। तहसीलदार विश्वनाथबाबू को राज पारबंगा के कुमार साहेब ने बुलाकर बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन तहसीलदार ने कहा, थूक फेंक-कर चाटना आदमी का काम नहीं ।…तहसीलदारी में अब क्या मज़ा है ! अब तो यह सूखी हड्डी है ।"

वास्तव में अब तहसीलदारी में कोई मजा नहीं रह गया है। ज़माना बदल गया है। तहसीलदारसाहब के बाप देवनाथ मल्लिक सिर्फ़ पाँच रुपये माहवारी पर बहाल हुए थे। लेकिन ऊपरी आमदनी ? तीन साल बीतते-बीतते अस्सी-नब्बे बीघे धनहर[1] जमीन के मालिक बन गये थे । आदमी की ऊपरी आमदनी ही असल आमदनी है। और तहसीलदारी रोब का क्या पूछना ! तहसीलदार के खेत में मज़दूरी करनेवालों को कभी मज़दूरी नहीं मिलती थी। राज पारबंगा के राजा तो तिरहुत में रहते थे, उन्हें किसी ने कभी देखा भी नहीं। असल राजा तो बूढ़े देवनाथ मल्लिक ही थे। उस समय कटिहार शहर ठिकाने से बसा भी नहीं था। बूढ़े तहसीलदारसाहब साहब अपने सलीमशाही जूतों के तल्ले में ही काँटियाँ पुरैनियाँ से ठुकवाकर मँगाते थे और तीन महीने में ही काँटियाँ झड़ जाती थीं। सुनते हैं, वे बोलते बहुत कम थे, कान से कुछ कम सुनते थे; और जब बोलते थे तो '…मारो साले को दस जूता।' कमला नदी के बगल में जो गड्ढा है, उसी में जोंक पालकर रखा था। जिसने तहरीर, तलबाना या नज़राना देने में देर की, उसे गड्ढे में चार घण्टों तक खड़ा करवा दिया। पाँव के अँगूठे से लेकर जाँघ तक मोटे-मोटे जोंक घुंघरू की तरह लटक जाते थे।…वह ज़माना तो बूढ़े तहसीलदार के साथ ही चला गया।

"जब नीलकोठी के साहबों के भी जुल्म से ऊबकर जगह-जगह किसानों ने बलवा करना शुरू किया तो जमींदारों ने अपने तहसीलदार और पटवारियों को गुप्त रूप से हिदायत दी, ज्यादा ज़ोर-जुल्म मत करो !"

विश्वनाथबाबू ने भी अच्छी तरह ही निभाया। रैयतों पर विशेष ज़ोर-जुल्म

---

१. उपजाऊ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
करने की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी। उनके पूर्वजों ने रैयतों के दिल और दिमाग पर तहसीलदार की ऐसी धाक जमा रखी थी कि उन्हें विशेष कुछ नहीं करना पड़ता था। कहावत मशहूर थी, जमदूत थोड़ा मुहलत भी दे सकता है, पर तहसीलदार नहीं। हर बार तमादी के पहले जनरल मैनेजर डफ साहब का खीमा आता था। खीमा आने के पहले ही बगैर जोत-ज़मीनवाले आदमी भी गाँव छोड़कर नेपाल के जिले मोरंग भाग जाते थे।...कोठी के बगीचे में पचासों छोटे-बड़े तम्बू और शामियाने तान दिये जाते थे। पचास सिपाही, चार हाथी, मोटरगाड़ी, खान-सामा, बावर्ची, नाई और धोबी। पाँच गाँव की बैलगाड़ियों पर खीमे के सामान लदकर आते थे।

इलाके-भर के बदमाश और टेढ़े लोगों की फ़ेहरिस्त तहसीलदार पहले ही बनाकर रखते थे। सुमरितदास मोटे असामियों को चुपचाप एकान्त में ले जाकर खबर सुना देता था—तुम्हारा नाम तो फ़ेहरिस्त में सबसे ऊपर है!

...ऐं? सबसे ऊपर? सुननेवाले पर मानो वज्र गिर पड़ता था।...जैसे भी हो, नाम तो कटाना ही होगा!

फ़ेहरिस्त बनाने के समय तहसीलदारसाहब सुमरितदास की भी राय लेते थे। सुमरितदास साल-भर की घटनाएँ याद करते हुए लिखाता था—"हाँ, अनन्त पर्व के दिन रनजीत दूध लाने के लिए गया था तो गुअरटोली के सतकौड़ी ने झूठ बोलकर बर्तन वापस कर दिया था—भैंस सूख गयी। कुंजरटोली के फरजन्द मियाँ ने करैला नहीं दिया था...।" तहसीलदारसाहब ऐसे लोगों के नाम याद करते जिन्होंने राज के मुकदमों में गवाही देने से इनकार किया; दाखिल-खारिज करवाकर तहसीलदार का नज़राना हड़प गया, किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गयी है, कौन राह चलते ऐंठकर चलते हैं और पंचायत में उनके सिपाहियों के विरुद्ध किन लोगों ने गवाहियाँ दी थीं।

डफसाहब खज़ाना-वसूली से ज्यादा महत्त्व देते थे राज के रोब को। राज का रोब ही असल चीज़ है। उनका कहना था—"अमारा स्टेट में एक भी बडमाश को अम नहीं देखने माँगटा। टुम अमारा टेसीलडार को जूठा बोला। अमारा अमला जूठा? टुम साला का बच्चा सच्चा?"

"चेटरु माण्डल।"

"माय-बाप!" हाथ जोड़े एक अर्धनग्न आदमी थर-थर काँपता हुआ खड़ा हुआ।

"टुम मुकडमा में गुआई क्यों नेई डिया?"

"माय-बाप...!"

"फँ...माय-बाप का बच्चा! सिपाय, चाबुक डेगा।"

शपाक्! शपाक्! शपाक्!...कोड़े बरसने लगते!

"सि। टुम चेटरी आय? राचपट आय? टुम अमारा टेसीलडार से नेई जीट सकेगा। हम टुमको बेज्जट करेगा। बडमाश...।"

और इसके बाद साल-भर तक इलाके में अमन-चैन का राज! तहसीलदार साहब के डर से लोग थर-थर काँपते रहते थे। लेकिन अब? ज़माना बदला ही

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नहीं है, साफ़ उलट गया है।

सिंघजी ने बहुत कोशिश पैरवी करके हरगौरीसिंह को तहसीलदारी दिला दी है। मैनेजरसाहब को पूरे चार सौ रुपये की सलामी दी गयी है। सुना है, बहीबस्ता लेते समय ही छींक पड़ गयी है। अब नये तहसीलदार की तहसीलदारी कैसी चलती है, देखना है।

राजपूतटोली का बच्चा-बच्चा खुश है। शिवशक्करसिंह सबों से कहते हैं, "हरगौरी एक किलास और पढ़ लेता तो मनेजरी धरी थी···"

काली कुर्तीवाले संयोजकजी बौद्धिक क्लास में समझा रहे हैं—"जिस तरह यह तहसीलदारी कायस्तों के हाथ से राजपूतों के हाथ में आयी है, उसी तरह सारे आर्यावर्त के राजकाज का भार हिन्दुओं के हाथ में आयेगा। और उस दिन आर्यावर्त के कोने-कोने में हिन्दू-राज की पताका लहरायेगी।"

जोतखीजी सलाह देते हैं—"बिना लछमी की पूजा किये बही-बस्ता में हाथ नहीं लगाया जाय। शुक्रवार को शुभ दिन है। कार्यारम्भ, यात्रा, गृहनिर्माण आदि।"

बालदेवजी को बार-बार अपने सपने की बात याद आती है—विशाल सभा, हरगौरी माला पहना रहा है लछमी को।

कॉमरेड कालीचरन और वासुदेव अपनी पार्टी के मेम्बरों से कहते हैं, "पुराने तहसीलदार यदि नागनाथ थे तो यह नया तहसीलदार साँपनाथ है। दोनों में कोई फर्क नहीं। दोनों ही जालिम जमींदार के कठपुतले हैं। सोशलिस्ट पार्टी के सिक्रेटरीसाहब ने कहा है, लोग संघर्ष के लिए तैयार रहें।"

बावनदास के लिए यह गाँव नया है, गाँव के लोग नये हैं। वह अभी चुप है। न जाने क्यों, उसका जी नहीं लगता है।

चरखा सेण्टर में सिर्फ चरखा-कर्घा ही नहीं, बूढ़े लोगों को रात में पढ़ाया भी जाता है। औरतों और बच्चों को मास्टरनीजी पढ़ाती हैं और बूढ़ों को मास्टरजी। बूढ़ा बिरंचीदास दस दिनों से पढ़ने आता है, लेकिन 'क' के बदले 'ग' से ही ककहरा शुरू करता है···'ग घ क ख'। मास्टरजी हैरान हैं···क्या सचमुच ही बूढ़ा तोता पोस नहीं मानता ?

सत्ताईस

डाक्टर की जिन्दगी का एक नया अध्याय शुरू हुआ है। उसने प्रेम, प्यार और स्नेह का बायोलॉजी के सिद्धान्तों से ही हमेशा मापने की कोशिश की थी। वह हँसकर कहा करता, "दिल नाम की कोई चीज़ आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पता नहीं आदमी 'लंग्स' को दिल कहता है या 'हार्ट को। जो भी हो, 'हार्ट', 'लंग्स' या 'लीवर' का प्रेम से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज़ है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जायेगा।...दिल वह मन्दिर है जिसमें आदमी के अन्दर का देवता बास करता है।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी को कभी भूल नहीं सका। प्रत्येक इतिहास पर गौरव करनेवाले युग में पले हुए हर व्यक्ति को अपने खानदान की ऐसी कहानी चाहिए जिसके उजाले से वह दुनिया में चकाचौंध पैदा कर दे। लेकिन डाक्टर के वंश-इतिहास पर काली रोशनाई पुती हुई है—जेल की सेंसर की हुई चिट्ठियों की तरह। काली रोशनाई से किसी हिस्से को इस तरह पोत दिया जाता है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि उस हिस्से में कभी कुछ लिखा हुआ था।...जन्म देनेवाली माँ ने भी जिसे दूर कर दिया।...अँधेरे में एक अभागिन माँ, दिल का दर्द दबाये और आँचल में अपने नवजात शिशु को छिपाये खड़ी है। एक काली और भयावनी छाया आकर हाथ बढ़ाती है, माँ अन्तिम बार अपने कलेजे के टुकड़े को, रक्त के पिण्ड को, एक पलक निहारती है, चूमती है। भयावनी छाया उसके हाथ से शिशु को छीन लेती है। माँ दाँतों से ओठ दबाये खड़ी रह जाती है!

डाक्टर ने अपनी माँ के स्नेह को, अँधेरे में खड़ी 'सल्हुटेड' तस्वीर-सी माँ के दुलार की कीमत को, समझने की चेष्टा की है। वह गला टीपकर मार भी तो सकती थी। खटमल को मसलने के लिए अँगुलियों पर जितना जोर डालना पड़ता है, उस पाँच घण्टे की उम्र के शिशु की जीवन-लीला को समाप्त करने के लिए उतने-से ज़ोर की ही आवश्यकता थी। माँ ऐसा नहीं कर सकी।...शायद उसने चेष्टा की होगी। गले पर एक-दो बार उँगलियाँ गयी होंगी। सोया हुआ शिशु मुस्करा पड़ा होगा और वह उसे सहलाने लगी होगी।...उसने अपनी बेबस, लाचार और अभागिनी माँ के मन में उठनेवाले तूफ़ान के झकोरे की कल्पना की है।...वह अपनी माँ के पवित्र स्नेह का; अपराजित प्यार का जीता-जागता प्रमाण है!

किसी भी अभागिन माँ की कहानी सुनते ही वह मन-ही-मन उसकी भक्ति करने लगता है। पतिता, निर्वासित और समाज की दृष्टि में सबसे नीच माँ की गोद में वह क्षण-भर के लिए अपना सिर रखने के लिए व्याकुल हो जाता है।... किसी स्त्री को प्रेमिका के रूप में कभी देखने की चेष्टा उसने नहीं की। वह मन-ही-मन बीमार हो गया था। एक जवान आदमी को शारीरिक भूख नहीं लगे तो वह निश्चय ही बीमार है, अथवा 'एब्नॉर्मल' है।

डाक्टर ने एक नये मोड़ पर मुड़कर देखा, दुनिया कितनी सुन्दर है!

वह लोक-कल्याण करना चाहता है। मनुष्य के जीवन को क्षय करनेवाले रोगों के मूल का पता लगाकर नयी दवा का आविष्कार करेगा। रोग के कीड़े नष्ट हो जायेंगे, इन्सान स्वस्थ हो जायेगा। दुनिया-भर के मेडिकल कालेजों में उसके नाम की चर्चा होगी। 'प्रशान्त-मेथड,' 'प्रशान्त रिऐक्शन'। डब्ल्यू० आर०

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
की तरह पी० आर० कहेंगे लोग। इसके बाद! ···'टेस्ट-ट्यूब बेबी' किसे माँ कहेगा? तब शायद माँ एक हास्यास्पद शब्द बनकर रह जायेगा।···जानते हो, पहले माँ हुआ करती थी?···एक अर्धनग्न से भी कुछ आगे लड़की, 'टेली-काफे' के द्वारा अमेरिकन पेस्ट्री का घर बैठे स्वाद लेती हुई मुड़कर कहेगी—'प्रीटेस्ट ट्यूब एज? सि-सि!···म्वाँ! ट्यूब म्वाँ!'

···माँ! माँ वसुन्धरा, धरती माता! माँ अपने पुत्र को नहीं मार सकी, लेकिन पुत्र अपनी माँ को गला टीपकर मार देगा। शस्य श्यामला!···

भारतमाता ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा मैला-सा आँचल!

मैला आँचल! लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डाक्टर को सभी चीजें नयी लगती हैं। कोयल की कूक ने डाक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किन्तु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैंती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

सब दिन बोले कोयली भोर भिनसरवा···वा···वा
बैरिन कोयलिया, आजु बोलय आधी रतिया हो रामा···आँ···आँ
सूतल पिया के जगावे हो रामा···आँ···आँ

किसी के पिया की नींद न टूट जाये! गहरी नींद में सोये हुए पिया के सिर-हाने पंखा झलती हुई धानी को डर है, पिया की नींद न खुल जाये; सपना न टूट जाये!

डाक्टर भी किसी की दुलार-भरी मीठी थपकियों के सहारे सो जाना चाहता है, गहरी नींद में खो जाना चाहता है। जिन्दगी की जिस डगर पर वह बेतहाशा दौड़ रहा था, उसके अगल-बगल, आस-पास, कहीं क्षणभर सुस्ताने के लिए कोई छाँव नहीं मिली। उसने किसी पेड़ की डाली की शीतल छाया की कल्पना भी नहीं की थी। जीवन की इस नयी पगडण्डी पर पाँव रखते ही उसे बड़े ज़ोरों की थकावट मालूम हो रही है। वह राह की खूबसूरती पर मुग्ध होकर छाँह में पड़ा नहीं रह सकेगा। मंजिल तक पहुँचने का यह कितना ज़बरदस्त रास्ता है जो राही को मंजिल तक पहुँचने की प्रेरणा देता है!···वह क्षण-भर सुस्ताने के लिए उदार छाया चाहता है। प्यार!···

सूतल पिया के जगावे हो रामा!

पिया जग गये, धानी ने पिया को बिदाई दी। पिया को जाना है। हिमालय की चोटी को उषा की प्रथम किरण ने छूकर स्वर्णिम कर दिया। ग्राम के बागों में कोयल-कोयली, दहियल और बुलबुल ने सम्मिलित सुर में मंगल-गीत गाये! खेतों से गीत की कड़ियाँ पुरवैया के सहारे उड़ती आती हैं और डाक्टर के दिल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
में हलचल मचा जाती हैं।···गेहूँ की कटनी हो रही है। झुनायी हुई रव्वी की फ़सल की सोंधी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है।

"डाक्टरसाहब!"

"क्या है?"

"ज़रा चलिए! मेरी बहन को कै हो रही है।"

"पेट भी चलता है?"

"जी!"

डाक्टर तुरत तैयार होकर चल देता है। पास के ही गाँव में जाना है।··· डॉयरिया होगा। लेकिन 'सेलाइन ऐपरेटस' भी ले लेना अच्छा होगा।

"तीस बार पेट चला है?"

बिछावन पर पड़ी हुई युवती पीली पड़ गयी है। उसके हाथ-पाँव अकड़ रहे हैं। पेशाव बन्द है। हैजा ही है। डाक्टर 'सेलाइन ऐपरेटस' ठीक करता है। स्पिरिट स्टोव जलाता है, नार्मल-सेलाइन की बोतल निकालता है। बूढ़ा बाप हाथ जोड़कर कुछ कहना चाहता है, और आखिर कह ही डालता है, "डाक्टर-साहब, यह जो जकसैन दे रहे हैं इसका कितना होगा?"

छोटे जकसैन का फीस तो दो रुपया है। इतने बड़े जकसैन का तो जरूर पचास रुपया होगा।

"क्यों? पचास रुपया," डाक्टर मुस्कराता है।

"तो रहने दीजिए। कोई दवा ही दे दीजिए।"

"दवा से कोई फ़ायदा नहीं होगा।"

"लेकिन मेरे पास इतने रुपये कहाँ हैं?"

"बैल बेच डालो," डाक्टर पहले की तरह मुस्कराते हुए सेलाइन देने की तैयारी कर रहा है।

"डाक्टरबाबू, बैल बेच दूंगा तो खेती कैसे करूँगा? बाल-बच्चे भूखों मर जायेंगे।···लड़की की बीमारी है।"

"क्या मतलब?"

"हुज़ूर, लड़की की जात बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है!"

···लड़की की जाति बिना दावा-दारू के ही आराम हो जाती है! लेकिन वेचारे बूढ़े का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलानेवाले समाज में भी लड़कियाँ बला की पैदाइश समझी जाती हैं। जंगल-झार!

डिग-डिग, डिडिग-डिडिग!

"···कल सुबह को इसपिताल में हैजा की सूई दी जायेगी। सभी लोग—बाल-बच्चे, बूढ़े-जवान, औरत-मर्द,—आकर सूई ले लें।"···डिग-डिग डिडिग! गाँव का चौकीदार ढोलहा दे रहा है।

हैजा के पहले रोगी को बचा लिया गया, लेकिन गाँव को नहीं बचाया जा सका। डाक्टर ने ढोल दिलवाकर लोगों को सूई लेने की खबर दी, लेकिन कोई नहीं आया। कुआँ में दवा डालने के समय लोगों ने दल बाँधकर विरोध किया—"चालाकी रहने दो! डाक्टर कूपों में दवा डालकर सारे गाँव में हैजा फैलाना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
चाहता है। खूब समझते हैं !

डाक्टर ने बालदेवजी, कालीचरन और चरखा सेण्टर के लोगों को खबर देकर बुलवाया। सहायता माँगी, "यदि लोगों ने सूई नहीं लगवायी और कुओं में दवा नहीं डालने दी तो एक भी गाँव को बचाना मुश्किल होगा।"

दोपहर को बालदेवजी, कालीचरनजी और चरखा सेण्टर के मास्टर-मास्टरनीजी डाक्टरसाहब के साथ दल बाँधकर निकले और कुओं में दवा डाल दी गयी। सूई देने की समस्या जटिल थी। कालीचरन ने कहा, "एक बात ! आज कोठी का हाट है। हाट लगते ही चारों ओर घेर लिया जाये और सबों को जबर्दस्ती सूई दी जाये ! जो लोग बाकी बच रहेंगे, उन्हें घर पर पकड़कर दी जाये।"

डाक्टर को यह सुझाव अच्छा लगा, लेकिन बालदेवजी ने एतराज किया, "किसी की इच्छा के खिलाफ, ज़ोर-ज़बर्दस्ती करना···।"

"क्या बेमतलब की बात बोलते हैं," चरखा सेण्टर की मास्टरनी बालदेवजी की बात काटते हुए बोली, "कालीचरनजी ठीक कहते हैं।"

बालदेवजी की कनपट्टी गर्म हो जाती है।···यह औरत बोलने का ढंग भी नहीं जानती ! नारी का सुझाव करकस नहीं होना चाहिए। कोठारिनजी कितनी मीठी बोली बोलती हैं। और यह तो मर्दाना औरत है। चरखा सेण्टर की मास्टरनी ! हुँ ! बहुत महिला कांग्रेसी को देखा है···मायेजी, तारावती देवी, सरस्सत्ती, उखादेवी, सरधादेवी। लेकिन कोई तो इतना करकस नहीं बोलती थी।···हुँ ! कालीचरनजी ठीक कहते हैं !···जबर्दस्ती करना हिंसावाद नहीं तो और क्या है ?

कालीचरन के दलवालों ने हाट को घेर लिया है। डाक्टरसाहब आम के पेड़ के नीचे टेबल पर अपना पूरा सामान रखकर तैयार हैं। कालीचरन एक-एक आदमी को पकड़कर लाता है, मास्टरनीजी स्पिरिट में भिगोयी हुई रुई बाँह पर मल देती हैं और डाक्टरसाहब सूई गड़ा देते हैं। तहसीलदारसाहब नाम लिखते जाते हैं। हाट में भगदड़ मची हुई है। लेकिन भागकर किधर जाओगे ? चारों ओर सुर्स्लिग पाटी का सिपाही खड़ा है।

"माई गे ! माई गे ! हे बेटा काली !"

"क्यों, रोती क्यों है ?"

"हे बेटा !"

सारे देह में गोदना गोदाने के समय देह में सूई नहीं गड़ी थी। चलो !

सात सौ पचीस लोगों को सूई दे दी गयी है। अब जो लोग घर में रह गये हैं, उन्हें कल सुबह ही, सूरज उगने के पहले ही दे देनी होगी।

डाक्टरसाहब कहते हैं, "बीमारों की सेवा के लिए स्वयंसेवक चाहिए।"

कालीचरन अपने दल के साठ स्वयंसेवकों के साथ रात को अस्पताल में दाखिल हो जायेगा।

चरखा सेण्टर की मास्टरनीजी बड़ी निडर हैं। वह भी सेवा करने के लिए अपना नाम लिखाती हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बावनदास हँसकर कहता है, "मुझे देखकर तो रोगी लोग डर जायेंगे डाक्टर साहब, मुझे और कोई काम दीजिए !"

बालदेवजी चुप हैं। उनको हैज़ा का बहुत डर है।

अट्ठाईस

डाक्टर आदमी नहीं, देवता है देवता !

तन्त्रिमाटोली, पोलियाटोली, कुर्मछत्रीटोली और रैदासटोली में सब मिलाकर सिर्फ़ पाँच आदमी नुकसान हुए। घर-घर में एक-दो आदमी बीमार थे, लेकिन डाक्टर देवता है। दिन-रात, कभी एक पल चैन से नहीं बैठा। मास्टरनीजी भी देवी हैं। कालीचरन भी बहादुर है। कैं और दस्त से मरे बिछावन पर लेटे हुए रोगी की सेवा करना, कपड़े धोना, दवा डालकर गन्दगी जलाना आदमी का काम नहीं, देवता ही कर सकते हैं। एक पैसा भी फ़ीस नहीं लिया और मुफ़्त में रात-रात-भर जगकर लोगों का इलाज करते रहे। रेसमलाल कोयरी के इकलौते बेटे को जम के मुँह से छुड़ा लिया। रेसम ने डाक्टर को खुशी-खुशी एक गाय बक्सीस दी, लेकिन डाक्टरसाहब ने कहा, "अपने लड़के को इस गाय का दूध पिलाओ। दूध बिक्री मत करो। यही हमारी बक्सीस है।"

बावनदास भी अवतारी आदमी हैं। रात-भर नीम के पेड़ के नीचे बैठकर खँजड़ी बजाकर गाते रहते थे—'मालिक सीताराम सोच मन काहे करो ! सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! बन्दे महातरम् ! ···मालिक सीताराम !'

भयावनी रात में, जबकि आदमी अपनी छाया से डरते थे, बावन का गीत डरे हुए लोगों को बल देता था···'मालिक सीताराम सोच मन काहे करो।'··· निर्बल के बल राम !

ब्राह्मणटोली में तीन आदमी मरे। और जोतखीजी की स्त्री तो दूसरी बीमारी से मरी। बच्चा अटक गया था।···कायस्थटोली, सन्थालटोली और यादवटोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूतटोली में पाँच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा, लेकिन डाक्टरसाहब ने सबों को बचा लिया। पन्द्रह दिनों के बाद कमली ने डाक्टर की सूरत देखी है।

कमली ने मन-ही-मन कितनी बातें गढ़ रखी थीं। वह रूठी रहेगी, बोलेगी नहीं।···पन्द्रह दिनों में एक बार भी तो आते ! रहने दीजिए, यही होता न कि रोग का छूत मुझे लग जाता। मैं मर जाती। आपका क्या बिगड़ता ? चरखा सेण्टर की मास्टरनीजी जो थीं ! ···रात-भर खूब चाय बनाकर पिलाती थीं न ?

लेकिन डाक्टर को देखते ही वह सबकुछ भूल गयी। डाक्टर का चेहरा एकदम काला हो गया है। आँखें धँस गयी हैं। प्यारू ठीक ही कहता था, "डाक्टर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
साहब दुनिया-भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे हैं। खाना-पीना तो एकदम कम हो गया है।"…कमली चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिए डाक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डाक्टर से लिपट जायेगी।

"कहिए हैज़ा डाक्टरसाहब !" कमली हँसते हुए डाक्टर के पास जाती है।

"हैज़ा डाक्टर ? सुनिए लड़की की बात ज़रा ! मैं पूछती हूँ तुमसे, कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो ?" माँ डाँटते हुए कहती है।

"वाह रे ! रामपुर के बटैयादार लोग उस दिन आकर बाबूजी से पूछ रहे थे कि हैज़ा डाक्टर कहाँ रहता है। सुना था नहीं ? लोग इन्हें हैज़ा डाक्टर ही कहते हैं।" कमला खिलखिलाकर हँसती है।

माँ हँसते हुए चली जाती है। डाक्टर मुस्कराते हुए कहता है, "लोग हैज़ा डाक्टर कहते हैं, लेकिन तुमको तो कहना चाहिए बेहोशी डाक्टर !"

"अहा-हा ! बहोशी डाक्टर की सूरत तो आज पन्द्रह दिनों बाद दूज के चाँद की तरह देखने को मिली है और बात बनाते हैं !" कमली मुँह फुलाती है !

"नहीं कमला, इस बीच मुझे बराबर यही डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ गड़बड़ी पैदा की तो क्या होगा।"

"तो मैं जान-बूझकर बेहोश होती हूँ, क्यों ?"

"हाँ, जान-बूझकर।"

"क्यों ?"

"क्योंकि बेहोश होने से ही बेहोशी डाक्टर आता है।"

"ऊँ ! डाक्टर आवे न आवे मेरी बला से !"

"अच्छी बात है, तो मैं चला।"

"ऊँ !"

"डाक्टरसाहब इतने दिनों बाद आये हैं, चाय बना देगी, सो तो नहीं, बैठकर झगड़ा कर रही है।" माँ अन्दर से ही कहती है।

कमली दाँत से जीभ को दबाते हुए उठ भागती है—माँ सब सुन रही थी शायद।

डाक्टर ने इस बार आसपास के पन्द्रह गाँवों का परिचय प्राप्त किया है; भयातुर इन्सानों को देखा है, बीमार और निराश लोगों की आँखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मध्यवित्त किसानों की अन्दर-हवेली और बेज़मीन मजदूरों की झोंपड़ियों में आने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय, छींके पर टँगी हुई खाली मिट्टी की हाँड़ियों से उसका सिर टकराया है। सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है…ग़रीबी, गन्दगी और जहालत से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किशोर-किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने। कमला नदी के गड्ढों में खिले हुए कमल के फूलों की तरह ज़िन्दगी के भोर में वे बड़े लुभावने, बड़े मनोहर और सुन्दर दिखायी पड़ते हैं, किन्तु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई, वे कुम्हला जाते हैं। शाम होने से पहले ही पपड़ियाँ झड़ जाती हैं !…कश्मीर के कमल और पूर्णियाँ के कमल में

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शायद यही फ़र्क है।···ग्रौर कमली तो राजकमल !

"मैं तुम्हें राजकमल कहूँगा।"

"ग्रौर मैं तुम्हें प्रशान्त महासागर कहूँगी।" कमला ने ग्राज ग्रनजाने ही 'तुम' कह दिया।

"प्रशान्त महासागर में राजकमल नहीं खिलता, मैं कमला नदी का गड्ढा ही होना पसन्द करूँगा।" डाक्टर हँसता है।

कमली की बड़ी-बड़ी ग्राँखों की पलकें एक बार ऊपर उठकर झुक गयीं।

"तुमने मुझे ग्राज तक ग्रपना ग्रस्पताल क्यों नहीं दिखलाया ? तुम्हारे चूहे, खरगोश, सियार ग्रौर नेवले···"

"माँ ग्रौर बाबूजी तुम्हें ग्रस्पताल जाने देंगे ?"

"क्यों नहीं ?"

"तो ग्राज ही चलो, ग्रभी।"

कमली डाक्टर के साथ ग्रस्पताल की ग्रोर जा रही है। चैत का सूरज पच्छिम की ग्रोर निष्प्राण-सा, पूर्णिमा के उगते हुए चांद का-सा मालूम हो रहा है। दिन-भर धू-धूकर चलनेवाली पछिया हवा गिर गयी है।

गाँव के पनघट पर स्त्रियों की भीड़ ग्राँखें फाड़कर इन दोनों को देखती है, झगड़े बन्द हो जाते हैं, पानी भरना रुक जाता है। नज़र से ग्रोझल होने के बाद फिर सबों के मुँह से ग्रपनी-ग्रपनी राय निकलती है।···कमली ग्रब ग्राराम हो गयी। डाक्डरसाहब ने इसको बचा लिया।···दोनों की जोड़ी कैसी ग्रच्छी है ! सतलरैंना बैसकोप का एक किताब लाया है, उसमें ऐसी ही एक जोड़ी की छापी है, ठीक ऐसी ही !···डाक्टर भी कायस्त है क्या ? कौन जात है ? क्या जाने बाबा, इलाज करते-करते कहीं···! क्या बकती है—सिर की गर्मी शाम को मैदान की हवा में ठण्डी होती है, जानती नहीं ? मौसी ने जब जुगलजोड़ी देखी तो उसके हाथ स्वयं ही ग्राँचल के खूँट पर चले गये। ग्राँचल पसारकर मन-ही-मन बोली, "दुहाई कमला मैया !"

गणेश पास ही गुल्ली खेल रहा था। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया···

पूलब से छाहेब ग्राया
पच्छिम छे मेम
छाहेब बोले गिट्टिल-पिटिल
खिल-खिल हँछे मेम !

कमला ग्रौर डाक्टर ने उलटकर देखा। गणेश ताली बजाकर हँस रहा था, "देखो नानी, छाहेब-मेम।"

दोनों ने हँसते हुए मौसी को प्रणाम किया। गणेश भागकर मामी के ग्राँचल में छिप जाता है। कमली चिल्लाकर कहती है, "ग्रच्छा, ठहरिए गोबरगणेशजी ! ग्रभी लौटती हूँ तो कान पकड़कर चाँद दिखाऊँगी।

तहसीलदारसाहेब रास्ते में ही मिले। हँसते हुए बोले, "ग्राज शायद यही पागलपन सवार हुग्रा था ! ···ग्रच्छी बात है, सुबह-शाम की हवा में बहुत गुण हैं।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
सभी एक ही साथ हँस पड़े ।

कोठी के बाग में गुलमुहर की बड़ी-बड़ी डालियाँ, लाल-लाल फूलों से जलती हुई, हवा के हल्के झोंकों में हिल-डुल रही थीं । अमलतास के पीले फूल नववधू की पीली ओढ़नी की याद दिला रहे थे । योजन-गन्धा शाम की हवा में पागलपन बिखेर रही थी । शिरीष के फूलों की पँखुड़ियाँ मंगल-आशीष की तरह झड़ रही थी ।···मार्टिन ने बड़े जतन से फूल लगाये थे । बाग लगाते समय उसने ऐसी ही शामों की कल्पना की होगी—बाँहों में पड़ी हुई मेरी के लाल होंठों की ताजगी को और भी प्राणमय बनाने के लिए । पानी पटानेवाले मालियों पर वह कड़कते हुए बोला होगा—'डेको ! एक भी गाछ सूखने पर पचास बेंट डेगा ।'

चैत की गोधूली में अपनी सारी तेजी खोकर सूरज ने श्याम-सलोनी सन्ध्या के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया था । दूर तक फैली हुई ताड़ों की पंक्तियाँ, कुछ मटमैली, कुछ सिन्दूरी-सी पृष्ठभूमि में गर्दन ऊँची करके सूरज को अतल गहराई मे डूबते हुए देख रही थीं । गाय और बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे सावित्री-नाच का गीत गा रहे थे···

आहे सखी चलू फुलवारी देखे हे
देखिवो सुन्दर रूप
नाना रसना फूल अनूप, चलू फुलवारी देखे हे !

गुलमुहर के लाल-लाल फूल बुझ गये और अमलतास की पीली ओढ़नी न जाने कब सरककर गिर पड़ी । किन्तु योजन-गन्धा अब भी पागल बना रही है ।··· डाक्टर देवता नहीं, आदमी बनना चाहता है !

एक जोड़ी निर्मल आँखों की पलकें ज़रा ऊपर की ओर उठीं और फिर झुक गयीं ।

उनतीस

कल 'सिरवा' पर्व है ।

कल पड़मान में 'मछमरी' होगी—मछमरी अर्थात् मछली का शिकार । आज चैत्र संक्रान्ति है । कल पहली वैशाख, साल का पहला दिन । कल सभी गाँव के लोग सामूहिक रूप से मछली का शिकार करेंगे । छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी टापी और जाल लेकर सुबह ही निकलेंगे । आज दोपहर को सत्तू खायेंगे । सतुआनी पर्व है आज । आज रात की बनी हुई चीजें कल खायेंगे । कल चूल्हा नहीं जलेगा । बारहों मास चूल्हा जलाने के लिए यह आवश्यक है कि वर्ष के प्रथम दिन में भूमिदाह नहीं किया जाये । इस वर्ष की पकी हुई चीज़ उस वर्ष में खायेंगे ।

सारे मेरीगंज के मछली मारनेवालों का सरदार है कालीचरन । भुरुकवा उगने के समय ही निकलना होगा । बारह कोस ज़मीन तय करना होगा । इस कालीचरन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ने ऐलान कर दिया है, जुलूस बनाकर चलना होगा, लाल झण्डे के साथ। नारा भी लगाते चलना होगा। ज़मींदार फैंजबख्श अली ने इस बार पड़मान नदी के 'जलकर'को खास में रखा है! उसके अमलों ने कहा है कि मछली नहीं मारने देंगे, मलेटरी मंगाकर तैनात रखेंगे। देखना है मलेटरी को!

नये तहसीलदार बाबू हरगौरीसिंह के यहाँ नया खाता खुलेगा। शाम को सतनारायण की पूजा होगी। डाक्टर को भी निमन्त्रण है।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद ने तहसीलदारी छोड़ दी है तो क्या, नया खाता भी न करेंगे? उनके यहाँ भी सत्यनारायण व्रत की कथा होगी। डाक्टरसाहब को निमन्त्रण है।

मौसी ने होली में डाक्टर को नहीं खिलाया था। इस बार डाक्टर को वही खिलायेगी।

मठ पर भी नया खाता होता है। इस बार नये महन्थ रामदासजी के हाथ से खाता खुलेगा। इसीलिए विशेष आयोजन है। बीजक पाठ, साहेब भजनावली, ध्यान और अन्त में वैष्णव-भोजन। बालदेवजी और बावनदास को विशेष निमन्त्रण है। लछमी दासिन ने भण्डारी के मार्फत कहला भेजा है, "बालदेवजी जरूर आवें। गाँव में वैष्णव है ही और कौन!"

बेतार सुमरितदास अब नये तहसीलदार का कारपरदाज है। वह कहता फिरता है,' हरगौरी बाबू हीरा आदमी है। सारा कागज-पत्तर हमीं पर फेंककर निश्चिन्त! देखिए तो, हम कितना समझाते हैं कि बाबूसाहेब! बही-बस्ता, सेयाहा और कर्चा किसी दूसरे को छूने नहीं देना चाहिए। लेकिन हरगौरीबाबू हीरा आदमी हैं। बिश्नाथपरसाद तो एक नम्मर के मखीचूस और सक्की आदमी हैं। कायस्त और राजपूत का कलेजा बराबर हो भला!…हुँ! कँगरेसी हुए हैं! सुमरितदास से कौन बात छिपी हुई है? अब तो गाँव का चाल-चलन एकदम बिगड़ जायेगा। जवान बेटी को एक परदेसी जवान के साथ हँसी-मसखरी करने की, घूमने-फिरने की आजादी दे दी है बिश्नाथपरसाद ने। गाँव का चाल-चलन नहीं बिगड़े तो सुमरितदास का नाम बदल देना।"

नये तहसीलदार बाबूहरगौरीसिंह के यहाँ रात में एक भी रैयत नहीं आया। पुन्याह में जो सलामी मिलती है, वह रकम जमींदार की होती है, लेकिन खाता खुलने के दिन की सलामी तो तहसीलदार की खास आमदनी है। सुमरितदास ने आकर खबर दी—"सभी रैयत बिश्नाथपरसाद के यहाँ गये थे। डेढ़ सौ रुपये सलामी में पड़े थे। मछली मारकर लौटते समय रास्ते में रैयतों ने मिटिन किया था कि नये तहसीलदार के यहाँ नहीं जायेंगे। कुकरा का बेटा कलिया लीटरी करता है। बाप काटे घोड़ा का घास और बेटा का नाम दुरगादास! अभी ततमा-टोली का बिरंचिया कहता था कि रैयतों का पेट जो भरेगा वही असल जमींदार है। नये तहसीलदार ने कभी एक चुटकी धान भी दिया है?…शास्तर-वचन कभी झूठ नहीं होता…राड़ं एड़ं कनमोचड़ं, जूता मारं पवित्तरम! समझे तहसीलदार-साहब, राड़ और काँटों को काँटीवाले जूते से बस में किया जाता है।"

बालदेवजी का काम छूट गया।

कपड़े, चीनी और किरासन तेल की पुर्जी अब तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
देंगे। बालदेवजी को क्यों छोड़ दिया ?···सायद उनको विलेक पकड़ा गया। पाप कितने दिनों तक छिपेगा ? खेलावन ने जो परमेसरसिंघ की ज़मीन मोल ली है, सो किस रुपये से ? वह बालदेवजी की ही ज़मीन है। खेलावन के घर में जाकर देखा, आज भी गाँठ-के-गाँठ कपड़ा पड़ा हुआ है; टीन-का-टीन तेल है। खेलावन के सभी सगे-सम्बन्धियों के यहाँ कपड़े गये हैं। यह बात कितने दिनों तक छिपी रहेगी ? सुनते हैं कि कंगरेस ने अपना खौफ़िया बहाल किया है। अँगरेज का खौफ़िया तो ऊपर से ही किसी बात का पता लगाता था, कंगरेस के खौफ़िया को हांड़ी के चावल का भी पता रहता है।

स्त्री की मृत्यु के बाद जोतखीजी बहुत गुमसुम रहते हैं।···डाक्टर को कितना कहा कि कोई दवा देकर रागनारायण की माँ को उबारिए, लेकिन कौन सुनता है ! बस, एक ही जवाब। बच्चा को पेट काटकर निकालना होगा। शिव हो ! शिव हो ! परायी स्त्री को बेपर्द करने की बात कैसे उसके मुँह से निकली ?··· पारबती की माँ ने बदला ले लिया। पाँच साल पहले पंचायत में जोतखीजी ने कहा था कि पारबती की माँ को मैला घोलकर पिलाया जाये। विश्वनाथप्रसाद ने पारबती की माँ का पक्ष लिया था, नहीं तो उसी बार उसका सभी 'गुण-मन्तर' शेष हो जाता।···इस बार पारबती की माँ ने बदला चुका लिया।···अच्छा ! ब्राह्मण का श्राप निष्फल नहीं होगा। देखना, देखना ! इस कलियुग में भी असल ब्राह्मण रहता है, देखना !

अरे ! वह जमाना चला गया जब राजपूतटोली और बाभनटोली के लोग बात-बात में लात-जूता चलाते थे। याद नहीं है ? एक बार टहलू पासवान का गुरु घोड़ी पर चढ़कर आ रहा था। गाँव के अन्दर यदि आता तो एक बात भी थी। गाँव के बाहर ही सिंघजी ने घोड़ी पर से नीचे गिराकर जूते से मारना शुरू कर दिया था—'साला दुसाध, घोड़ी पर चढ़ेगा !'···अब वह ज़माना नहीं है। गांधीजी का ज़माना है। नया तहसीलदार हुआ है तो क्या ? हमारा क्या बिगाड़ लेगा ? न जगह, न ज़मीन है; इस गाँव में नहीं उस गाँव में रहें, बराबर है।··· धमकी देते हैं कि जूते से रैंट करेंगे। अच्छा ! अच्छा !

युगों से पीड़ित, दलित और उपेक्षित लोगों को कालीचरन की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं। ऐसी लगता है, कोई घाव पर ठण्डा लेप लगा रहा हो। लेकिन कालीचरन कहता है—"मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुए को जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पार्टी आपकी पार्टी है, गरीबों की, मजदूरों की पार्टी है। सोशलिस्ट पार्टी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह काँगरेस का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ।"

कालीचरन आग उगलता है, लेकिन सुननेवालों का जलता हुआ कलेजा ठण्डा हो जाता है।···ज़मीन, जोतनेवालों की ! पूंजीवाद का नाश !

बावनदास फिर एक फाहरम लाया है। मन्त्रीजी ने भेज दिया है। इस बार पटना का छापा फाहरम है, पुरैनियाँ का नहीं। पटना का फाहरम कच्चा नहीं हो सकता।···इस फाहरम पर अपना नाम, अपने बाप का नाम, ज़मीन का खाता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नम्बर, खसरा नम्बर लिखकर पुरैनियाँ कचहरी में दे दो 'दफा ४०' के हाकिम को। ज़मीन नकदी हो जायेगी। सच ?…हाँ, अँगूठे का टीप देना होगा।…और जिन लोगों ने चरखा सेण्टर में दसखत करना सीख लिया है, उन्हें भी टीप देना होगा ?

बालदेवजी क्या करें ? खेलावन भैया कुछ समझते ही नहीं। रोज कहते हैं, "बालदेव, कमला किनारेवाली ज़मीन में कलरू पासवान के दादा का नाम कायमी बटैयादार की सूरत से दर्ज है। कलरू से कहकर सपुर्दी दिला दो।… लेकिन बालदेवजी क्या करें ? चौधरीजी को वह सब दिन से गुरु की तरह मानता आ रहा है। कभी किसी काम में तरोटी नहीं होने दिया। इतना चौअन्नियाँ मेम्बर बनाकर दिया। गाँव में चरखा सेण्टर खुलवा दिया, लेकिन जिला कमेटी के मेम्बर तहसीलदारसाहब हो गये। बालदेव को कोई खबर नहीं दी गयी। कपड़े की मेम्बरी भी नहीं रही। नीमक कानून के समय से जेल जाने का यही बख्शीस मिला है। कालीचरन की पाटीवाले ठीक कहते हैं, "काँगरेस अमीरों की पाटी है।" …लेकिन वह कालीचरन की पाटी में तो नहीं जा सकता। कालीचरन की आँखें उसने ही खोलीं। रात-रात-भर जागकर कालीचरन को जेहल का कितना किस्सा, गाँधीजी का किस्सा, जमाहिरलाल का किस्सा सुनाया। कालीचरन उसका चेला है। वह आखिर चेला की पाटी में जायेगा ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता !… खेलावन भैया कुछ नहीं समझते हैं। पासवानटोली में अब उसकी पैठ नहीं। कलरू उसकी बात नहीं मानेगा। उसका लीडर कालीचरन है।…तहसीलदारसाहब को तो लोग डर से लीडर मानते हैं।

नये तहसीलदारसाहब भी फ़ेहरिस्त तैयार कर रहे हैं। सुमरितदास सबों का नाम लिखा रहा है—"सबसे पहले लिखिए बिरंचिया का नाम। सोनमा दुसाध, किराय कोयरी, ये सब देनदार कलम हैं। अब लिखिए—झोपड़िया कलम। हाँ, जिन लोगों को अपनी झोंपड़ी के सिवा कुछ भी नहीं।…बस, यह फिरिस्त मनेजर-साहब को दे दीजिएगा और कहिएगा कि खेमा लेकर जल्दी इलाके में आवें, नहीं तो सारा सर्किल खराब हो जायेगा।"

लछमी दासिन के दिल में बालदेवजी ने घर कर लिया है। खातावही के दिन आये थे। एकदम सूख गये हैं बालदेवजी। लछमी कितनी समझाती है कि काम-काज छोड़कर कुछ दिन आराम कीजिए, लेकिन कौन सुनता है ? पहले जान तब जहान ! जब शरीर ही नहीं रहेगा तो परमारथ का कारज कैसे होगा ? शरीर ही तीरथ है। कितना कहने पर, सतगुरुसाहेब की कसम धराने पर यह मंजूर किया है कि एक वेला रोज मठ पर आया करेंगे। शाम के सतसंग में बैठेंगे। भण्डारी से कह दिया है घी और दूध की मलाई रोज कटोरे में चुराकर रख दिया करेगा। रामदास बालदेव का आना पसन्द नहीं करता है।…जैसे भी हो, बाल-देवजी के शरीर की सेवा करेगी लछमी। अब बालदेवजी के आने में जरा भी देर होती है तो लछमी का दिल धड़कने लगता है; मन चंचल हो जाता है। सतगुरुसाहेब ने कहा है :

ई मन चंचल, ई मन चोर,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ई मना सुध ठगहार
मन मन करत सुर नर मुनि
मन के लक्ष दुआर।

लछमी का मन चंचल है, पर चोर नहीं। बालदेवजी चोरी से उसके मन में नहीं आते हैं। मन के लक्ष दुआर हैं, बालदेवजी एक ही साथ लक्ष दुआर से उसके मन में पैठ जाते हैं···एक लक्ष बालदेवजी !

तीस

अखिल भारतीय मेडिकल गज़ट में डा० प्रशान्त, मैलेरियोलॉजिस्ट के रिसर्च की छमाही रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। गज़ट के सम्पादक-मण्डल में भारत के पाँच डाक्टर हैं। इस रिपोर्ट पर उन लोगों ने अपना-अपना नोट दिया है।···मद्रास के डाक्टर टी० रामास्वामी एम० एस-सी०, डी० टी० एम० (कैल०), पी० एच-डी० (एडिन०), एफ० आर० एस० जे० (एडिन०) ने लिखा है : "हमें विश्वास हो गया कि डा० प्रशान्त मैलेरिया और कालाआज़ार के बारे में ऐसे तथ्यों का उद्‌घाटन करेंगे जिनसे हम अब तक अनभिज्ञ थे।···नयी दवा तथा नये उपचार की सम्भावनाओं के लिए सारा मेडिकल-संसार उनकी ओर निगाहें लगाये बैठा है।"

प्रशान्त की विस्तृत रिपोर्ट में मैलेरिया और कालाआज़ार से सम्बन्धित मिट्टी, हवा-पानी तथा इसमें पलनेवाले प्राणियों पर नयी रोशनी डाली गयी है। अपनी रिपोर्ट में डाक्टर ने एक जगह लिखा है :

"यहाँ के लोग सुबह को बासी भात खाकर, पाट धोने के लिए गन्दे गड्‌ढों में घुसते हैं और करीब सात घण्टे तक पानी में रहते हैं। गन्दे गड्‌ढों को देखने से ऐसा लगता है कि पानी के आध इंच धरातल की जाँच करने पर एक लाख से ज्यादा मच्छड़ के अण्डे ज़रूर पाये जायेंगे। किन्तु यहाँ के मच्छड़ गन्दे गड्‌ढों में बहुत कम अण्डे देते पाये गये हैं। इनका कोई-कोई ग्रुप तो इतना सफ़ाई-पसन्द होता है कि निर्मल और स्वच्छ तालाबों को छोड़कर और कहीं अण्डे देता ही नहीं।···बेचारे खरगोशों को क्या पता कि उनकी जीभ में जो दाने निकल आते हैं, कानों के अन्दर जो खुजलाहट होती है, कोमल-से-कोमल घास की पत्तियाँ भी खाने में अच्छी नहीं मालूम होती हैं, ये कालाआज़ार के लक्षण हैं।"

मनुष्य के शत्रु, कीड़े-मकोड़ों के बारे में डाक्टर ने लिखा है—"मच्छड़ों को नष्ट करने के उपाय जो हमें बहुत पहले बता दिये गये हैं, हम उन्हीं को आज भी आँख मूँदकर दुहरा रहे हैं। जिन कीड़ों को हम नष्ट करना चाहते हैं, उनके बारे में हमारी जानकारी बहुत थोड़ी होती है। हमें उनकी आदत, स्वभाव और व्यवहार के ढंगों के बारे में जानना होगा।···एनोफिलीज़ के भी कई ग्रुप हैं, हर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रुप के अलग-अलग ढंग हैं। किन्तु, किसी ग्रुप में भी तरह-तरह के छोटे-छोटे सब-ग्रुप होते हैं जिनकी आदतों और प्रजनन-ऋतु में विभिन्नता पायी गयी है।···उनके लुकने-छिपने, पसन्दगी और नापसन्दगी में भी फ़र्क है।···मैंने एक ही ग्रुप के मच्छड़ों को तीन किस्म से अण्डे छोड़ते पाया है और हर ग्रुप में कुछ दल-विशेष हैं जो हवा में अण्डे छोड़ते हैं।···इनकी चालाकी और बुद्धिमानी का सबसे दिलचस्प उदाहरण यह है कि एक ही मौसम में एक ही ग्रुप के मच्छड़ हमले के लिए पन्द्रह तरह के तरीके व्यवहार करते हैं।···कुछ तो एकदम डाइव फ्लाइंग करके ही हमला करते हैं।"

इसके अलावा डाक्टर ने मैलेरिया और कालाआज़ार में रक्त-परिवर्तन पर भी कुछ नयी बातें कही हैं।

ममता की चिट्ठी आयी है···"पटना मेडिकल कालेज को इस बात पर गर्व है कि बिहार का एकमात्र मैलेरियोलॉजिस्ट डा० प्रशान्त उसी की देन है।" ममता ने और भी बहुत-सी बातें लिखी हैं। बहुत-सी बातें, जिसे प्रशान्त करीब-करीब भूल गया है या भूल जाना चाहता है।···पटना क्लब का नाम पाटलिपुत्र क्लब हो गया है। मिस रेवा सरकार ने बैडमिन्टन में रोमेश पाल को हरा दिया।···इन बातों में प्रशान्त को अब कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन ममता जब पत्र लिखती है तो वह कुछ भी बाद नहीं देती, छोटी-से-छोटी बात का भी जिक्र करती है।···"पटना मार्केट के सामने जो चाय की दुकान थी, उसका बूढ़ा मालिक मर गया। तुम्हें याद है! वही जो तुमको रोज़ सलाम करके चाय के लिए निमन्त्रित करता था···कश्मीरी चाय?···" प्रशान्त को हँसी आती है। बेचारी ममता! उसे क्या मालूम कि मछली को लेकर पालतू नेवले से झगड़ा करने में जो आनन्द आता है, वह किसी खेल में नहीं। प्रशान्त कभी स्पोर्ट्स‍मैन नहीं रहा। वह किसी भी खेल का खिलाड़ी नहीं रहा। फिर भी उसे खेलों से बड़ी दिलचस्पी रहती थी। उसने ताश के पत्तों को कभी हाथ से स्पर्श नहीं किया, लेकिन साप्ताहिक ब्रिज नोट्स को वह गम्भीरता से पढ़ जाता था। चर्चिल का भाषण पढ़ना भले ही भूल जाये, कलकत्ता के आइ० एफ० ए० के मैचों की रिपोर्ट वह सबसे पहले पढ़ लेता था।···लेकिन अब तो वह खुद खिलाड़ी है। नेवले का गुर्राना, चिल्लाना, पूँछ के रोओं को खड़ा कर हमला करना और हमला करते हुए इसका ख्याल रखना कि चोट नहीं लग जाये, नाखून नहीं गड़ जाये। स्पोर्ट्समेन्स स्पिरिट और किसको कहते हैं?

डाक्टर ममता श्रीवास्तव! दरभंगा के प्रसिद्ध डाक्टर कालीप्रसाद श्रीवास्तव की सुपुत्री ममता ने डाक्टरी पास करने के बाद एक हेल्थयूनिट की स्थापना की है। शहर के गरीब मुहल्लों में यूनिट ने अपने सेवा-कार्य का जो परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। पटना की महिला-समाज-सेविकाओं में ममता का नाम सबसे पहले लिया जाता है। गरीब की झोंपड़ी से लेकर गवर्नमेण्ट हाउस तक उसकी पहुँच है। जो उसके निकट सम्पर्क में रह चुके हैं, उनका कहना है कि ममता दीदी दिन-रात मिलाकर सिर्फ चार घण्टे ही आराम करती हैं। दूर से देखनेवाले उसके चरित्र पर भी सन्देह करते हैं। उसकी सार्वजनीन मुस्कराहट

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोगों को कभी-कभी भ्रम में डाल देती है। और जिन लोगों का काम सिर्फ बैठकर आलोचना करना है, वे कहते हैं कि तरह-तरह के जाल फैलाकर सरकार से रुपया वसूलना और उड़ाना ही ममता देवी का काम है।...विकारपूर्ण मस्तिष्कवाले किसी मिनिस्टर का नाम लेकर मुस्करा देते हैं—मिस ममता श्रीवास्तव नहीं मिसेज़...कहो !

डाक्टर प्रशान्त ममता का ऋणी है। ममता से उसे प्रेरणा मिली है।

...“डाक्टर ! रोज़ डिस्पेन्सरी खोलकर शिवजी की मूर्ति पर बेलपत्र चढ़ाने के बाद, संक्रामक और भयानक रोगों के फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठे रहना, अथवा अपने बँगले पर सैकड़ों रोगियों की भीड़ जमा करके रोग की परीक्षा करने के पहले नोटों और रुपयों की परीक्षा करना, मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों पर पाण्डित्य की वर्षा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझना और अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रुदन को ज़िन्दगी का एक संगीत समझकर उपभोग करना ही डाक्टर का कर्तव्य नहीं !”

...ममता को प्रशान्त पर सन्देह है। वह समझती है कि घोर देहात में प्रशान्त छटपटा रहा है; अपनी गलती पर पछता रहा है ! इसलिए वह हर पत्र में, शहर की सामाजिक जिन्दगी पर कुछ लिख डालती है। एक पत्र में उसने लिखा है, “बुशशर्ट का युग है। पाँच साल पहले बाँकीपुर की सड़कों पर, पार्कों और मैदानों में दानापुर कैण्ट के गोरे फौजियों ने ज़िन्दगी के जिन कुत्सित और बीभत्स पहलुओं का प्रदर्शन किया, हमारे समाज के अचेतन मन पर उसकी ऐसी गहरी छाप पड़ी कि आज हर आदमी के अन्दर का भूखा टामी अधीर हो उठा है। युद्ध के विषैले गैसों ने सारे समाज के मानस को विकृत कर दिया है। काले बाजार के अँधेरे में एक नयी दुनिया की सृष्टि हो गयी है, जहाँ सूरज नहीं उगता, चाँद नहीं चमकता और न सितारे ही जगमगाते हैं।...इस दुनिया में माँ-बेटा, पिता-पुत्र, भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसा कोई सम्बन्ध नहीं।...कल एक गरीब ने विटामिन ‘सी’ की सूई आठ रुपये में खरीदी है। पाँच आने का छोटा-सा ऐम्प्यूल !...मेरे मुहल्ले के महाराज महता को तुम ज़रूर जानते होगे, उसकी छोटी बेटी फुलमतिया, जो मिल्क सेण्टर में पिछले साल तक दूध पीने आती थी और ताली बजा-बजाकर नाचती थी, उसे तुम भूले नहीं होगे, शायद ! परसों से अस्पताल में पड़ी हुई है। रामनवमी की शाम को नयी रंगीन साड़ी पहनकर फुदकती हुई राममन्दिर गयी थी और रात को दो बजे पुलिस ने ‘सिटी’ के एक पार्क में उसे कराहते हुए पाया। फुलमतिया का बयान है—टेढ़ीनीम गली के पास एक मोटरगाड़ी रुक गयी और दो आदमियों ने पकड़कर उसे मोटर में बिठा दिया।...बड़े-बड़े बाबू लोग थे !...

“मंजरअली रोड से लेकर अशोकपथ तक विदेशी शराब की दस दुकानें खुल गयी हैं।

“...कल विलिंगडन हॉल में टी० बी० सेनेटोरियम के लिए स्थानीय महिला कालेज की लड़कियों ने एक ‘चैरिटी शो’ का आयोजन किया था। ज्योंही वीणा (बैरिस्टर प्राणमोहन सिन्हा की पुत्री) स्टेज पर उतरी कि ऊपर की गैलरी से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
दुअन्नी-इकन्नी फेंकी जाने लगी और तरह-तरह की भद्दी आवाज़ें कसी जाने लगीं। पुलिस ने शान्ति कायम करने की चेष्टा की, किन्तु उन पर ईंट-पत्थरों की ऐसी वर्षा की गयी कि हॉल के सभी दरवाज़ों और खिड़कियों के काँच टूट गये। बहुत लोग घायल हुए। घायलों में महिलाओं और बच्चों की संख्या ही ज्यादा थी।…और सबसे आश्चर्य की बात सुनोगे ? कहा जाता है कि खुराफ़ातियों का लीडर था अमलेश सिन्हा, वीणा का चचेरा भाई। प्राणमोहन बाबू ने, कुछ दिन हुए, अपने घर में अमलेश का आना-जाना बन्द कर दिया था। शराब के नशे में अमलेश ने कई बार घर की नौकरानियों के साथ अशोभनीय व्यवहार किया था। इसलिए (उनकी पुत्री और अपनी चचेरी बहन) वीणा के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है।"

…कोठी के जंगल में सन्थालिनें लकड़ी काट रही हैं और गा रही हैं। कुछ दिन पहले इसी जंगल में सन्थालिनों ने एक चीते को कुल्हाड़ी और दाब से मार दिया था। शोरगुल सुनकर गाँव के लोग जमा हो गये थे। मरे हुए बाघ को देखकर भी लोगों के रोंगटे खड़े हो गये थे और बहुत तो भाग खड़े हुए थे, किन्तु सन्थालिनें हमेशा की तरह मुस्करा रही थीं। मकई के दानों की तरह सफ़ेद दन्त-पंक्तियाँ…और वही सरल मुस्कराहट ! चीते के अचानक हमले से दो-तीन युवतियाँ सामान्य घायल हो गयी थीं। उनके होंठों पर भी वैसी ही मुस्कराहट खेल रही थी। उनके जख़्मों को धोकर मरहम-पट्टी करते समय डाक्टर के शरीर में एक बार सिहरन की हल्की लहरें दौड़ गयी थीं और सन्थालिनें खिलखिला-कर हँस पड़ी थीं…हँ…! हँ…हँ ! जख़्म पर तेज़ दवा लगने पर इस तरह हँसना डाक्टर ने पहली बार देखा, सुना।

आबनूस की मूर्तियाँ, जूड़े में गुँथे हुए शिरीष और गुलमुहर के फूल ! सन्थालिनें गाती हैं :

छोटी-मोटी पुखरी, चरकुलिया पिण्ड रे
पोरोइनी फूटे लाले-लाल
पासचे तेरी फूल देखी फूलय लावेलव
पासचे तेरी आधा दिन लगित !

चारों ओर से बँधाये हुए एक छोटे-से पोखरे में पुरइन (कमल) के लाल-लाल फूल खिले हैं। उस फूल पर तुम मुग्ध हुए हो। मुझे भी देखकर तुम मोहित होते हो। किन्तु वह मोह आधे दिन का ही तो नहीं ?…

नहीं, नहीं ! आधे दिन के लिए नहीं। प्राणों में घुले हुए रंगों का मोह आधे दिन में ही नहीं टूट सकता।

इकतीस

मंगलादेवी, चरखा-सेण्टर की मास्टरनीजी बीमार हैं।

डाक्टर ने खून जाँचकर देखा, कालाआज़ार नहीं, टाइफायड है। चरखा-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेण्टर के दोनों मास्टर तहसीलदारसाहब के गुहाल में रहते हैं और मास्टरनीजी भगमान भगत की एक झोंपड़ी में । भगमान भगत ने गाड़ी-बैल रखने के लिए एक झोंपड़ी बनायी थी, लेकिन अब अगले साल टीन का मकान देने का इरादा है, इसलिए इस बार गाड़ी-बैल नहीं खरीद सका । चरखा-सेण्टर खुलने पर गाँव के लोगों ने भगमान भगत से कहा—'घर तो खाली ही है । मास्टरनीजी के रहने के लिए घर नहीं है ! चरखा-सेण्टर का घर बनेगा तो आपका घर खाली कर दिया जायेगा ।'…कोटापरमिट के ज़माने में कँगरेसी लोगों की बात काटना ठीक नहीं । नहीं तो कटिहार में इतनी बड़ी झोंपड़ी का ही किराया पन्द्रह रुपया मिलता !

मंगलादेवी ने हैज़ा के समय रात-रात-भर जागकर रोगियों की सेवा की और जब वह खुद बीमार पड़ी तो उसके पास बैठनेवाला भी कोई नहीं । चरखा-सेण्टर के दोनों मास्टरसाहब बारी-बारी से एक-एक घण्टा ड्यूटी दे जाते हैं । रात में चिचाये की माँ आकर सोती है । लेकिन, बूढ़ी इतना हुक्का पीती और खाँसती है कि मंगलादेवी के ज्वर की ज्वाला और भी तीव्र हो जाती है । बुढ़िया जब सोती है तो इतने जोरों से खर्राटे लेती है कि पास-पड़ोस की नींद खुल जाये । डाक्टर कहता है—यदि यही हालत रही तो सँभालना मुश्किल होगा । घर खत लिखकर किसी को बुला लेना ठीक होगा ।

घर ? यदि घर से कोई आनेवाला होता अथवा खबर लेनेवाला होता तो मंगलादेवी चरखा-सेण्टर में क्यों भर्ती होती ? उसे घर छोड़े हुए पाँच साल हो रहे हैं । मंगलादेवी ने दुनिया को अच्छी तरह पहचाना है । आदमी के अन्दर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है । विधवा-आश्रम, अबला-आश्रम और बड़े बाबुओं के घर आया की जिन्दगी उसने बितायी है । अबला नारी हर जगह अबला ही है । रूप और जवानी ?…नहीं, यह भी गलत । औरत होना चाहिए, रूप और उम्र की कोई कैद नहीं । एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख-चैन से नहीं सो सकती । मंगलादेवी के लिए जैसा घर वैसा बाहर । उसका कौन है अपना ? कोई नहीं !

"कौन…?…कालीचरन बाबू !"

"डाक्टरसाहब ने कहा है कि इस झोंपड़ी में आपकी बीमारी अच्छी नहीं होगी । हम लोगों का कीर्तनवाला घर साफ़-सुथरा है, हवादार है ।"

मंगलादेवी यादवटोली के कीर्तन-घर में आ गयी है । कीर्तन-घर में ही सोशलिस्ट पार्टी का ऑफिस है । कालीचरण इसे ऑफिस ही कहता है ।…लेकिन सोशलिस्ट ऑफिस का नाम सुनकर मंगलादेवी शायद नहीं आती ।

"दवा पी लीजिए ।"

"नहीं पियूँगी ।"

"पी लीजिए मास्टरनीजी ! दवा…"

"कालीबाबू, एक बात कहूँ ?"

"कहिए !"

"आप मुझे मास्टरनीजी मत कहिए ।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"तब क्या कहूँ ?"

"क्यों ? मेरा नाम नहीं है ?"

"मंगलादेवी ?"

"नहीं।"

"तो ?"

"सिर्फ...मंगला।"

"दवा पी लीजिए।"

"मंगला कहिए।"

"मंगला !"

पन्द्रह दिनों से कालीचरन मंगलादेवी की सेवा कर रहा है। दिन में तो और लोग भी रहते हैं, लेकिन रात में कालीचरन की ड्यूटी रहती है। डाक्टर कहते हैं, अब कोई खतरा नहीं। कमज़ोरी है, कुछ दिनों में ठीक हो जायेगी।

मंगलादेवी के शरीर में सिर्फ हड्डियाँ बच रही हैं। बाल झड़ रहे हैं। वह खाने के लिए बच्चों की तरह रूठती है, रोती है और बर्तन फेंकती है।...बार्ली नहीं पियूँगी। छेना का पानी भी कोई भला आदमी पीता है ! कालीचरन हाथ में पथ्य का कटोरा लेकर घण्टों ख़ुशामदें करता—'लीजिए, इसमें नीबू डाल दिया है। अब खा लीजिए। कल नहीं, परसों भात मिलेगा।'

कालीचरन का व्रत टूट गया है। उसके पहलवान गुरु ने कहा था—"पट्ठे ! जब तक अखाड़े की मिट्टी देह में पूरी तरह रचे नहीं, औरतों से पाँच हाथ दूर रहना।" कालीचरन का व्रत टूट गया। पाँच हाथ दूर रहने से मंगलादेवी की सेवा नहीं की जा सकती थी। बिछावन और कपड़े बदलते समय, देह पोंछ देने के समय कालीचरन को गुरुजी की बात याद आती तो थी, लेकिन क्या किया जाये !

"काली कहाँ गया ? काली !"

"क्या है ?"

"कहाँ की चिट्ठी है ?"

"सिकरेटरीसाहब ने लिखा है, सोमवार को जिला पार्टी की रैली है। लेकिन...मैं कैसे जाऊँगा ?"

"क्यों ?...तुम जाओ। मैं तो अब अच्छी हो गयी।"

रैली के बाद सेक्रेटरीसाहब ने कालीचरन को रोक लिया है—"कामरेड आप दो दिन और रह जाइए। सैनिकजी की स्त्री अस्पताल में भर्ती हैं। सैनिकजी पटना गये हैं। परसों आ जायेंगे। अस्पताल में दोनों बेला खाना पहुँचाना है ...कोई है नहीं।"

सेक्रेटरीसाहब की बात को टालना बड़ा कठिन है। कामरेड की स्त्री ! ...कालीचरन को रह-रहकर मंगला की याद आती है। वह राह देख रही होगी। बासुदेव जाकर कहेगा कि दो दिन के बाद आयेंगे। सुनते ही उसका मुँह सूख जायेगा, चेहरा फक् हो जायेगा। एकदम बच्ची की तरह है मंगला का मुँह !... कालीचरन ने बिहदाना और सन्तोला भेज दिया है। वह छुएगी भी नहीं। बासुदेव क्या समझायेगा ?...हत्तेरे की ! ये शहर के लौण्डे बड़े बदमाश होते

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हैं । ठीक [illegible] सैकिल की घण्टी बजायेगा । अ···अभी तो सब खाना गिर जाता ।

"उल्लू कहीं का ! गिलास ऐसे ही धोना है ?"···उल्लू ! कालीचरन के गाल पर मानो किसी ने ज़ोर से एक तमाचा जड़ दिया । उल्लू ! उसका सारा शरीर झिनझिन कर रहा है । सैनिकजी की स्त्री ने उसे क्या समझा है ?··· नौकर ?

"बहनजी, गिलास···"

"खबरदार ! बहिनजी मत बोल !"

बगल की खाट पर जो चमगादड़ जैसी औरत लेटी हुई थी, बोली, "कौन देस का आदमी है ! आदमी है या भूत ? बात भी नहीं करना जानता है !"

"अरे जानती नहीं हैं, ग्वाला साठ बरस तक···।" सैनिकजी की स्त्री बोलीं ।

कालीचरन पूरा नहीं सुन सका । उसका सिर चकराने लगा । सैनिकजी भी तो ग्वाला ही हैं ! कालीचरन की आँखों के आगे सरसों के फूल जैसी चीजें उड़ने लगीं । यदि किसी मर्द ने ये बातें कही होतीं तो आज खून हो जाता, खून । कालीचरन की कनपट्टी गर्म हो गयी है ।···मंगलादेवी भी तो औरत ही है । हुँ ! कहाँ मंगला और कहाँ यह भूतनी !···गले की आवाज एकदम खिखिर[1] की तरह है । खेंक, खेंक । बातें करती है तो लगता है मानो दाँत काटने के लिए दौड़ रही है । शायद यह भी कोई रोग ही है ।

रौतहट स्टेशन पर गाड़ी से उतरकर कालीचरन जल्दी-जल्दी घर लौट रहा है ।···उसे देखते ही मंगला खुशी से खिल जायेगी । सन्तोला सूख गया होगा, बिहदाना पड़ा होगा । दोनों ओर का रेल-भाड़ा बचाकर कालीचरन ने एक पैकिट बिस्कुट खरीद लिया है । डाक्टरसाहब ने मंगला को बिस्कुट खाने के लिए कहा है । कालीचरन ने कभी बिस्कुट नहीं खाया है । शायद इसमें मुर्गी का अण्डा रहता है । वह रह-रहकर बिस्कुट के डब्बे को छूकर देखता है ! इसके अन्दर 'कुड़कुड़' क्या बोलता है ? कहीं अण्डा फूटकर···!

"सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! जै हिन्द, कालीजी !"

"ऐं ? ओ बावनदासजी, हम तो चमक गये । यहाँ क्यों पड़े हैं ?"

"आप तो इस तरह आँख मूंदकर सरेसा[2] घोड़े की तरह चल रहे हैं कि···!"

जंगली जामुन के पेड़ की छाया में बावनदास लेटा हुआ था । छाया में जाने पर कालीचरन को मालूम हुआ कि धूप कितनी तेज़ है ।

"हम तो रात की गाड़ी से ही उतरे । कल दफा ४० का फैसला हो गया ।"

"हो गया ?···क्या हुआ ?"

"अरे होगा क्या ? सबों की दरखास खारिज हो गयी । ···हम पहले ही जानते थे । कल गाँव के सभी रैयत आये थे । फैसला सुनकर सभी रोने लगे ।

---

१. लोमड़ी । २. तेज दौड़नेवाले घोड़े की जाति ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अब ज़मींदार ज़मीन भी छुड़ा लेगा।"

"ज़मीन छुड़ा लेगा ? ···नहीं, उस दिन हम लोगों की रैली में परसताव पास हो गया। ज़मींदार लोग रैयतों को ज़मीन से बेदखल नहीं कर सकते। इसके लिए पाटी संघर्ख करेगी।"

"कालीबाबू ! परसताव-उरसताव से कुछ नहीं होता है।" बावनदास के होंठों पर भेद-भरी मुस्कान दौड़ जाती है।

"आप बैठिए दासजी, हमको जरा जल्दी है।"

"हाँ, आप जाइए।···हम आपके डेग पर जा भी नहीं सकेंगे।"

कालीचरन चलते-चलते सोच रहा है, अब ठीक हुआ है। यदि रैयत की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी लोग कँगरेस में चले जाते। अब संघर्ख में सभी सोशलिस्ट पाटी में ही रहेंगे।

"क्या है ? बिस्कुट !" मंगलादेवी प्यार-भरी झिड़की देती है, "किसने कहा फिजूल पैसा खर्च करने को ? वह देखो तुम्हारा, सन्तरा और बेदाना पड़ा हुआ है। मैं नहीं खाती।"

"डाक्टरसाहब ने कहा था···"

"डाक्टरसाहब ने कहा था !" मंगला बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहती है, "डाक्टरसाहब ने कहा था कि खुद भूखे रहकर सन्तरा, वेदाना और बिस्कुट ख़रीदकर लाना ?"

कालीचरन को सैनिकजी की स्त्री की याद आती है। उल्लू ! ···साठ साल तक नाबालिग ! ···

"खा लो मंगला !"

"पहले तुम एक बिस्कुट खाओ।"

बिस्कुट मीठा, कुरकुरा और इतना सुआदवाला होता है ? इसमें दूध, चीनी और माखन रहता है, अण्डा नहीं ?

बत्तीस

बैशाख और जेठ महीने में शाम को 'तड़बन्ना' में जिन्दगी का आनन्द सिर्फ़ तीन आने लबनी बिकता है।

चने की घुघनी, मूड़ी और प्याज, और सुफेद झाग से भरी हुई लबनी ! ··· खट-मिट्ठी, शकर-चिनियाँ और बैर-चिनियाँ ताड़ी के स्वाद अलग-अलग होते हैं। बसन्ती पीकर बिरले पियक्कड़ ही होश दुरुस्त रख सकते हैं। जिसको गर्मी की शिकायत है, वह पहर-रतिया पीकर देखे। कलेजा ठण्डा हो जायेगा, पेशाब में ज़रा भी जलन नहीं रहेगी। कफ प्रकृतिवालों को संझा पीनी चाहिए; रात-भर देह गर्म रहता है।

Funding by IKS-MoE

साल-भर के झगड़ों के फैसले तड़बन्ना की बैठक में ही होते हैं और मिट्टी के चुक्कड़ों की तरह दिल भी यहीं टूटते हैं ।शादी-ब्याह के लिए दूल्हे-दुलहिन की जोड़ियाँ भी यहीं बैठकर मिलायी जाती हैं और किसी की बीवी को भगा ले जाने का प्रोग्राम भी यहीं बनता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जगदेवा पासमान, दुलारे, सनिच्चर और सुनरा ताड़ी पी रहे हैं । सोमा जट आज आनेवाला है । रौतहट के हाट में उसने कहा था, एतवार को तड़बन्ना में आयेंगे । सोमा जट हाल ही में जेल से रिहा हुआ है । नामी डकैत है, लेकिन अब सोशलिस्ट पाटी का मेम्बर बनना चाहता है । सुनरा ने कालीचरन से पूछा और कालीचरन ने जिला सिक्रेटरीसाहब से पूछा । सिक्रेटरीसाहब ने कहा, "साल-भर तक उनके चाल-चलन को देखकर तब पार्टी का मेम्बर बनाया जायेगा । उस पर नज़र रखना होगा ।"

नजर क्या रखना होगा, बीच-बीच में सिक्रेटरीसाहब को जाकर कहना होगा —सोमा का चाल-चलन एकदम सुधर गया है । कालीचरन को वासुदेव समझा देगा ।...सोमा यदि पाटी में आ जाये तो सारे इलाके के बड़े लोग ठीक हो जायें । पाटी में आ जाने से थाना-पुलिस क्या करेगा ! सिकरेटरीसाहब क्या दारोगा-साहब से कम हैं ? देखते हो नहीं, जब भाखन देने लगते हैं तो जमाहिरलाल को भी पानी-पानी कर देते हैं । मजाल है दारोगा-निसपिट्टर की कि पाटी के खिलाफ मुँह खोले ? खेल है ! 'लाल पताका' अखबार में तुरत 'गजट छापी' हो जायेगा ...'दारोगा का जुलम !'

...चलित्तर करमकार को तो पाटी से निकाल दिया है । सीमेन्ट में बहुत पैसा गोलमाल कर दिया । हिसाब-पत्तर कुछ भी नहीं दिया तो उसको निकालेगा नहीं ? पाटी का बन्दूक-पेस्तौल भी नहीं दिया ।...लेकिन सिक्रेटरीसाहब कालीचरनजी से प्रायबिट में बोले हैं, किसी तरह उससे बन्दूक-पेस्तौल ऊपर करो । सरकार को जमा देना है । इसीलिए कालीचरनजी उससे हेल-मेल कर रहे हैं ।...यह बात एकदम गुपुत है । खबरदार, कहीं बोलना नहीं सनिचरा ! हाँ; नहीं तो जानते हो ? किरान्ती पाटी की बात खोलने की क्या सजा मिलती है ?... ढायँ ! लोग पूछें तो कहना चाहिए कि...

"क्या पाटी को अब बन्दूक-पेस्तौल का काम नहीं है ?"

"नहीं ।" सुन्दर मुस्कराता है । अर्थात् इतनी जल्दी तुम लोग सभी बातों को जान लेना चाहते हो ? अभी कुछ दिन और मेम्बरी करो । जब तुम्हारा कान-फारम[1] हो जायेगा तब सारी बातें जानोगे । नये मेम्बरों का कान कच्चा होता है । यहाँ सुना और वहाँ उगल दिया । कानफारम होने दो...।

"कामरेड सोमा ? आओ ! तुम्हारी ही बात हो रही थी ? आसरा में बैठे-बैठे दो लबनी ताड़ी खतम हो गयी ।" सुन्दर हँसता है ।

सुन्दर आजकल हमेशा खद्दर का पंजाबी कुर्ता पहने रहता है । पंजाबी के गले में दो इंच की ऊँची पट्टी लगी हुई है । इसको 'सोशलिट-काट' कुर्ता कहते

१. कन्फ़र्म ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
है; सोशलिट को छोड़कर और कोई नहीं पहन सकता। गाँव के मेम्बरों में सिर्फ तीन मेम्बर ही ऐसा कुर्ता पहनते हैं—काली, बासुदेव और सुन्दर। बाकी मेम्बरों ने जीवन में कभी गंजी भी नहीं पहनी है। लेकिन बिना सोशलिट-काट कुर्ता पहने कोई कैसे जानेगा कि सोशलिट है, किरान्ती है! एक कुर्ते में सात रुपये खर्च होते हैं।···बासुदेव आजकल बीड़ी नहीं पीता, मोटरमार-सिकरेट पीता है। सिक्रेटरीसाहब सैनिकजी, चिनगारीजी, मास्टरसाहब, सभी बड़े-बड़े लीडर सिकरेट पीते हैं। सोशलिट पाटी के मेम्बर को बीड़ी नहीं, सिकरेट पीना चाहिए।

आज की बैठकी का पूरा खर्चा सोमा ही देगा। इसलिए हाथ खींचकर चुक्कड़ भरने की ज़रूरत नहीं। ढाले चलो। एक लबनी, दो लबनी, तीन लबनी! ···चरखा-सेण्टरवाले कह रहे हैं, अगले साल से ताड़ी का गुड़ बनेगा। कोई ताड़ी नहीं पी सकेगा। इस साल पी लो, जितना जी चाहे।

सोमा का शरीर कालीचरन से भी ज्यादा बुलन्द है। पुलिस-दारोगा की मार से हड्डियाँ टूटकर गिरहा[1] गयी हैं। गिरहवाली हड्डी बड़ी मज़बूत होती है। कालीचरन के देह में हाथीदाँत का कड़ापन है और सोमा के चेहरे पर लोहे की कठोरता। कालीचरन की आँखों में पानी है और सोमा की आँखें बिल्ली की तरह चमकती हैं।

"कौन हरगौरी? शिवशक्करसिंह का बेटा?···तहसीलदार हुआ है? कालीचरनजी हुकुम दें तो एक ही रात में उसकी हड्डी-पसली एक कर दें।" सोमा मूंछ में लगी हुई ताड़ी की झाग को पोंछते हुए कहता है।

"कामरेड! अब मूंछ कटाना होगा। पाटी का मेम्बर होने से मूंछ नहीं रखना होगा।" सुन्दर कहता है।

"कटा लेंगे, लेकिन कालीचरनजी हुकुम दें तो···!"

"अच्छा, अच्छा, कामरेड, अभी ठहरो। संघर्ष होनेवाला है। परसताब पास हो गया है। तब देखेंगे तुम्हारी बहादुरी!"

"बलदेवा को गाँव से भगा नहीं सकते हो तुम लोग? सुनते हैं कि मठ की कोठारिन से खूब हेल-मेल हो गया है। कालीचरनजी हुकुम दें तो एक ही दिन में उसको चन्ननपट्टी का रास्ता दिखला दें।"

"अरे, बालदेवजी तो मुर्दा हो गये, मुर्दा! अब उनको कौन पूछता है! उनको एक बच्चा भी अब मुँह नहीं लगाता है। कंगरेस में भी उनकी बदनामी हो गयी है। वह तो हम लोगों के बल पर ही कूदते थे।···कोठारिन तो सत्तर चूहा खायी हुई है। बालदेवजी को उसके फेर में पड़ने तो दो। हम लोग यही चाहते हैं। हाँ···समझे?···चरखा-सेण्टर पर भी अब अपना ही कब्जा समझो। मास्टरनीजी बिना कालीचरन से पूछे पानी भी नहीं पीती हैं। कुछ दिन में वह भी कामरेड हो जायेंगी।···एक बौनदास है, सो डेढ़ बित्ते का आदमी कर ही क्या सकता है?"

चार लबनी संझा ताड़ी खतम हो रही है। सूरज डूबने के समय जो लबनी

---

१. गाँठदार हो जाना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पेड़ से उतारी जाती है, उसकी लाली तुरत ही आँखों में उतर आती है। नशा के माने हैं और भी थोड़ा पीने की ख्वाहिश ?…और एक लबनी !

"अरे, बेचारे डाक्टर के पास पैसा कहाँ ? मुफ़्त में तो इलाज करता है। एक पैसा भी तो नहीं छूता है।"

"डाक्टर के पास पैसा नहीं ? क्या कहते हो ?…लोचनपुर के डाक्टर ने पोख्ता मकान बना लिया है। जीवछगंज के डाक्टर ने तीन सौ बीघे की पतनी खरीदी है। सिझवा गरैया का डाक्टर डकैती करता है, सरदार है डकैतों का। कैसा डाक्टर है तुम्हारे गाँव का ?"

"हसलगाँव के हरखू तेली ने अलबत्त पैसा जमाया है। पैसा महँकता है।"

"महमदिया के तालुकचन्द को बन्दूक का लैसन मिल गया है और लोहा का बक्सा कलकत्ते से ले आया है।"

"अरे, कितने बन्दूक और तिजोरीवालों को देखा है !…बल्लम-बर्छा से ही तो सारे इलाके को हम मछली की तरह भूनकर खाते रहे हैं। यदि एक नाल भी बन्दूक हाथ लग जाये तो साले भूपतसिंह की कचहरी के नेपाली पहरेदारों को भी देख लें।"

जो कभी नहीं गाता है, वह भी नशा होने पर गाने लगता है और सुन्दर तो कीर्तनियाँ है, सुराजी कीर्तन भी गाता है और किरान्ती-गीत भी। नशा होने पर किरान्ती-गीत खूब जमता है !

अरे जिन्दगी है किरान्ती से, किरान्ती में बिताये जा।
दुनियाँ के पूँजीवाद को दुनियाँ से मिटाये जा !

सनिचरा लबनी को औंधा कर तबला बजाता है, और मुँह से बोल बोलता है :

चकै के चकधुम मकै के लावा…

दुनियाँ के गरीबों का पैसा जिसने चूस लिया,
अरे हाँ, पैसा जिसने चूस लिया
हाँ जी, पैसा जिसने चूस लिया,
उसकी हड्डी-हड्डी से पैसा फिर चुकाये जा !
हँस के गोली दागे जा !
हँस के गोली खाये जा !

"वाह-वाह ! क्या बात है ! इन्किलाब है, जिन्दाबाद है। ज़रा खड़ा होकर बतौना बताके[1], कमर लचका के सुन्दर भाई !"

सुन्दर खड़ा होकर नाचने लगता है—'जिन्दगी है किरान्ती से, किरान्ती में…।'

चकै के चकधुम मकै के लावा…

कालीचरन ने आज शाम को बैठक बुलायी थी। ऊपर से सबसे बड़े लीडर आ रहे हैं पुरैनियाँ। थैली के लिए चन्दा वसूलना है। सिक्रेटरीसाहेब कह रहे थे…सबसे बड़े लीडरजी पुरैनियाँ आने के लिए एकदम तैयार नहीं हो रहे थे।

---

१. भाव दिखलाकर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बहुत कहने-सुनने पर, सारे जिले से दस हजार रुपये की थैली पर राजी हुए हैं। कालीचरन को तीन सौ रुपये वसूल कर देना है।...इस बार की रसीद-बही पर सबसे बड़े लीडर की छापी है।

"लेकिन तुम लोग गये थे कहाँ ?...ओ ! आसमान-बाग ! बड़ी देर हो गयी। ऐसा करने से पार्टी का काम कैसे चलेगा ? बोलो, कौन कितना रुपैया वसूल करेगा ? तीन सौ रुपैया दस दिन में ही वसूल कर देना है।"

"बस तीन सौ ? कोई बात नहीं, हो जायेगा।"

"दस दिन क्या, पांच ही दिन में हो जायेगा।"

"तीन सौ रुपये की क्या बात है ?"

"इनकिलाब, जिन्दाबात है !"

तैंतीस

अमंगल !

"गाँव के मंगल की अब कोई उमेद नहीं।"

हरगौरी तहसीलदार दुर्गा के वाहन की तरह गुर्राता है—"साले सब ! चुपचाप दफा ४० का दर्खास देकर समझते थे कि ज़मीन नकदी हो गयी। अब समझो। बौना और बलदेवा से ज़मीन लो। सब सालों से ज़मीन छुड़ा लेने के लिए कहा है मैनेजरसाहब ने। लो ज़मीन ! राम नाम का लूट है !...अरे, कँगरेसी राज है तो क्या ज़मींदारों को घोलकर पी जायेगा ?"

सुमरितदास बेतार की जीभ थकती नहीं। सुबह से ही बक-बक करता जा रहा है। ततमाटोली में, पासवानटोली में और कोयरीटोले में घूम-घूमकर वह लोगों को सुना रहा है—"मैनेजरसाहब ने परवाना में क्या लिखा, हैमा लूम ? नया तहसीलदार तो एकदम घबड़ा गया था। मैंने कितना समझाया—तहसीलदार, आप एकदम चुपचाप रहिए। जिन लोगों को दरखास देना है, देने दीजिए। जिस दिन मुकदमे की तारीख होगी, उससे एक दिन पहले हम आपको एक नोक्स बता देंगे। वही हुआ। ज़मींदारी वकील तो सुनकर उछलने लगा। चाहे जो भी कहो, तहसीलदार विस्नाथपरसाद ने कभी कोई नोक्स हमसे छिपाकर नहीं रखा।...मैनेजरसाहेब ने क्या लिखा है, मालूम है ? सुमरितदास को एक बार सरकिल कचहरी में भेज दो। सुर्स्लिग-मुर्स्लिग क्या करेगा ?"

"सुमरितदास ! बुढ़ापे में यदि इज्जत बचानी है तो ज़रा होस-हवास दुरुस रखकर बोला करो। समझे ?" कालीचरन की आँखें लाल-लाल हैं। सुबह से ही वह सुमरितदास को खोज रहा है। सोसलिस्ट पार्टी के खिलाफ बूढ़ा कल से ही

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अटर-पटर[1] परोपगण्डा कर रहा है।

"समझे ? हाँ।...पीछे यह मत कहना कि सोसलिस्ट पाटी के लौण्डों को बड़े-छोटे का विचार नहीं।"

"हम क्या बोले हैं ? पूछो, इन्हीं लोगों से पूछो ! बोलो जी गुलचरन ! सुस्लिग पाटी...।"

"सुस्लिग मत कहिए, सोसलिस्ट कहिए।...बात तो सही मुँह से निकलती ही नहीं है और मुन्सियाती बघारते हैं।...जमींदार के तहसीलदार से और अपने मैनेजर से भी जाकर कह दो, रैयतों से जमीन छुड़ाना हँसी-ठट्ठा नहीं। पाटी के एजकूटी में परसताब पास हो गया है, संघर्ख होगा संघर्ख ! समझे ?"

कालीचरन गर्दन ऐंठता हुआ चला गया। करैत साँप को गुस्से में ऐंठते देखा है न, ठीक उसी तरह ! सुमरितदास को कँपकँपी लग जाती है। आसपास बैठे हुए लोगों की भी धुकधुकी तेज हो जाती है। अभी तो ऐसा लगता था कि जुलुम हो जायेगा।...अलबत्त देह बनाया है कलिया...कालीचरन ने। देखकर डर लगता है। सुस्लि...सुस्लि...सोसलिस्ट पाटी में जाकर तो और भी तेजी से जल-जलकर रहा है। संघर्ष क्या होगा ?...

डा डिग्गा, डा डिग्गा !

सन्थालटोली में दो दिनों से दिन-रात मादल बजता रहता है। डा डिग्गा, डा डिग्गा ! औरतें गाती हैं। नाचती हैं—झुमुर-झुमुर !...दरखास्त नामंजूर हो गयी। जमींदार जमीन छीन लेगा। कोठी के जंगल में, जामुन और गूलर में बहुत फल लगे हैं इस बार। जंगली सूअर के बच्चे भी किलबिल कर रहे हैं। हल के फाल को तोड़कर तीर बनाओ। लोहा मँहगा है। रे ! हाय रे हाय ! डा डिग्गा, डा डिग्गा...!

कालीचरन ने कहा है—संघर्ख करेंगे। संघर्ख क्या ? परसताब क्या ?

रिंग-रिंग-ता-धिन-ता !

डा डिग्गा, डा डिग्गा !

...खेत में पाट के लाल पौधों को देखकर जी ललच रहा है। धान की हरी-हरी सूई खेत में निकल आयी है। माटी का मोह नहीं टूटता। बधना पर्व[2] की रात में तूने जो जूड़े में फूल लगाया था, उसे नहीं भूला हूँ। धरती का मोह भी नहीं टूट रहा। प्यारी, हमारे दादा, परदादा पुरैनियाँ के जेल में मर-खप गये। मकई के बाल की तरह उनके बाल भूरे हो गये होंगे। हमारे बच्चों के दाँत दूधिया मकई के दानों की तरह चमकेंगे। उनसे कहना, धरती माता के प्यार की जंजीर में हम बँध गये। रे ! हाय रे हाय ! रिंग-रिंग-ता-धिन-ता ! डा डिग्गा, डा डिग्गा !...

"यदि जमीन पर कोई आवे तो गर्दन काट लो !"

तहसीलदार हरगौरीसिंह ने रैयतों के साथ जमीन बन्दोबस्ती का ऐलान कर दिया है।...बस, एक सौ रुपये बीघा सलामी देकर कोई भी रैयत जमीन की

---

१. अलूल-जलूल। २. सन्थालों का एक प्रसिद्ध पर्व।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
बन्दोबस्ती के लिए दर्खास्त दे सकता है।···अरे, तुम लोग बेकूफ़ हो। ये ज़मीन एक साल पहले ही नीलाम होकर खास हो गयी हैं। पुराने तहसीलदार ने ही सारी कार्रवाई की थी। नीलाम होकर खास हुई ज़मीन पर दफा ४० की दर्खास्त करने से नकदी कैसे होगी?···हाँ, नये बन्दोवस्त लेनेवालों को जमा बाँध देंगे। यह तो हमारे हाथ की बात है। इसके लिए कचहरी की दौड़-धूप करने की क्या ज़रूरत?···अरे सूखानूदास, मुकदमा में कितना खर्चा हुआ तुम लोगों का, ज़रा इन लोगों को बता दो।···हाँ, कँगरेसी और सोसलिस्ट पाटीवालों की खुराकी भी जोड़ना।···सुना? हरेक तारीख में चन्दा वसूलकर पैरवीकार नेताजी लोगों को देना पड़ता था—दस रुपये नकद; सिकरेट और पान की बात तो छोड़ ही दीजिए! यही पेशा है भाई, इन लोगों का।···हाँ, जिसकी ज़मीन नीलाम हो गयी है, वह यदि ज़मीन पर आवे तो उसकी गर्दन उड़ा दो। राज से मदद मिलेगी।

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट!

गाय-बैल, बाछा-बाछी और भैंस के पाड़ा की बिक्री धड़ाधड़ हो रही है। दूने सूद पर भी रुपया कर्ज़ लेकर ज़मीन मिल जाये तो फ़ायदा ही है। पाट का भाव पन्द्रह रुपया है; ऊपर पचास भी जा सकता है, सौ भी हो सकता है। धान सोने के भाव बिक रहा है। ज़मीन! जिसके पास ज़मीन नहीं, वह आदमी नहीं, जानवर है। जानवर घास खाता है, लेकिन आदमी तो घास खाकर नहीं रह सकता! अरे! छोड़ो जी कँगरेस और सुशलिट पाटी की बात को।···दरखास नामंजूर हो गयी। ज़मीन बन्दोबस्ती···

गाँव के मंगल की अब कोई उम्मीद नहीं।

हर टोले के लोग आपस में ही लड़ेंगे क्या? कोयरीटोले के भजू महतो की ज़मीन उसी का भगिना सरूप महतो बन्दोबस्ती ले रहा है। सोबरन की ज़मीन पर उसका चचा रामेसर नज़र लगाये बैठा है। सोबरन की ज़मीन सोना उगलती है। यादवटोली के सभी रैयतों को नीलाम हुई ज़मीन खेलावनसिंह यादव ले रहे हैं। सन्थालों की ज़मीन राजपूतटोले के लोग ले रहे हैं।···सुमरितदास कहते हैं, यह बात गुपुत है। किसी से कहना मत कि सन्थालों की ज़मीन खुद तहसीलदार साहब ले रहे हैं। लेकिन, अपने नाम से तो नहीं ले सकते। इसीलिए दूसरों के नाम से लिया है।

गाँव के मंगल की अब कोई उम्मीद नहीं। तहसीलदार विश्वनाथप्रसादजी बालदेव और बावनदास को पंचायत बुलाने को कहते हैं।···"पंचायत तुम्हीं लोग बुलाओ। मेरे बुलाने से ठीक नहीं होगा।"

कालीचरन की पाटी के सबसे बड़े लीडर पुरैनियाँ आ रहे हैं। कामरेडों ने पाँच ही दिनों में तीन सौ रुपये वसूल किये हैं। अकेले सोमा ने दो सौ पचास रुपये दिये हैं।···सबसे बड़े लीडर से कहना होगा। गाँव में इस तरह फूट रहने से तो संघर्ख नहीं होगा। फिर एक बार सैनिकजी और चिनगारीजी को लाना होगा। बहुत दिनों से सभा नहीं हुई है। खेत में कोड़-कमान नहीं करने से जिस तरह जंगल-झाड़ हो जाता है, उसी तरह इलाके में सभा मीटिंग नहीं करने से इलाका

Funding by IKS-MoE

भी खराब हो जाता है। सिक्रेटरीसाहब को भी इस बार लाना होगा। इस बार लौडस्पीकर भी लाना होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चरखा-सेण्टर की मास्टरनीजी और मास्टरजी लोगों में झगड़ा हो गया है।

करघा-मास्टर टुनटुनजी को मंगलादेवी का सोशलिस्ट आफिस में रहना बड़ा बुरा लगता है। जब तक बीमार थीं, वहाँ थीं, तो थीं। अब अच्छी हो गयीं तो वहाँ रहने की क्या आवश्यकता! और मंगलादेवी को पटना से ही जानते हैं टुनटुनजी। 'गाँव तरक्की सेण्टर' में जब ट्रेनिंग लेती थीं तभी से उड़ती थीं। व्यवस्थापिकाजी इनके मिलनेवालों से परीशान रहती थीं। रोज नये-नये लोग! बहुत बार मंगलादेवी को चेतावनी भी दी गयी—लेकिन इनके मिलनेवालों में कालेज के विद्यार्थी, एम० एल० ए०, साहित्य-गोष्ठी के मन्त्रीजी, चरखा-संघ के कार्यकर्ता तथा कई हिन्दी दैनिकों के सहायक सम्पादक भी थे। व्यवस्थापिकाजी हार मानकर चुप हो गयीं। मंगलादेवी की स्वतन्त्रता पर आघात करके यह एक दर्जन से ज्यादा व्यक्तियों का कोप-भाजन नहीं बनना चाहती थीं। इसीलिए व्यवस्थापिकाजी ने मंगलादेवी को इस पिछड़े हुए गाँव में भेजा था। लेकिन यहाँ भी···?

मंगलादेवी बात करने में मर्दों के भी कान काटती हैं; पाजामा और कुर्ता पहनती हैं, बाहर निकलते समय खद्दर का दुपट्टा भी डाल लेती हैं। कद नाटा, रंग साँवला और शरीर गठा हुआ है। आँखें बड़ी अच्छी, खास तिरहुत की आँखें! करघा-मास्टर को वह ताँत-मास्टर कहती हैं और चरखा-मास्टर को धुनिया-मास्टर। जोलहा-धुनिया मंगलादेवी से क्या बात करेंगे?···जब बीमार पड़ीं तो झाँकी मारकर भी देखने के लिए नहीं आते थे और आज नैतिकता पर प्रवचन दे रहे हैं! मंगलादेवी इन लोगों को खूब पहचानती हैं। व्यवस्थापिकाजी को लिखेंगे तो लिखें। क्या करेंगी व्यवस्थापिकाजी? ऐसी धमकियों से मंगलादेवी नहीं डरतीं। टुनटुनजी जो चाहते हैं, सो वह जानती हैं। पटना से आते समय समस्तीपुर में लेकर उतर गये। बोले, यहाँ गाड़ी बदलनी होगी। बाद में मालूम हुआ कि वही गाड़ी सीधे कटिहार जाती है। दूसरी गाड़ी फिर सुबह आठ बजे। रात को बारह बजे धर्मशाला में ले गये।···टुनटुनजी का परिचय और कहना नहीं होगा!

बालदेवजी को खेलावनसिंह यादव ने साफ जवाब दे दिया है। सकलदीप का गौना होनेवाला है। नयी दुलहिन ससुराल में बसने के लिए आ रही है। बाहरी आदमी का परिवार में रहना अच्छा नहीं। चम्पापुर के आसिनबाबू की बेटी है। जरा भी इधर-उधर होने से बाप को चिट्ठी लिख देगी। बड़े आदमी की बेटी है···!

बालदेवजी ने झोली-झण्डा खेलावन के यहाँ से हटा लिया है। बालदेव की मौसी गाँव में घूम-घूमकर शिकायत कर रही है। लेकिन बालदेवजी साधु आदमी हैं; मान-अपमान से परे हैं। वे चुप हैं।

लछमी उन्हें कण्ठी लेने के लिए जिद कर रही है। पुपड़ी मठ के महन्त रामसरूप गुसाईं आये हुए हैं। बालदेवजी कण्ठी ले लें तो मठ पर रहने में कोई असुविधा नहीं हो।

बावनदास का मन बड़ा अविश्वासी हो गया है। किसी पर विश्वास करने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को जी नहीं करता है। गाँधीजी को छोड़कर अब किसी पर विश्वास नहीं होता! वह गाँधीजी को एक खत लिखवाना चाहता है। गंगुलीजी जरूर लिख देंगे। बराबर लिख देते हैं! उसके मन में बहुत-सी शंकाएँ उठ रही हैं।

चौंतीस

फुलिया पुरैनिया टीसन से आयी है।

एकदम बदल गयी है फुलिया। साड़ी पहनने का ढंग, बोलने-बतियाने का ढंग, सबकुछ बदल गया है। तहसीलदारसाहब की बेटी कमली अँगिया के नीचे जैसी छोटी चोली पहनती है, वैसी वह भी पहनती है। कान में पीतर के फूल हैं। फूल नहीं, फुलिया कहती है—कनपासा। आँचल में चाबी का गुच्छा बाँधती है, पैर में शीशी का रंग लगाती है।···हाँ, खलासीजी बहुत पैसा कमाते हैं शायद। ···अरे! खलासी के मुँह पर झाड़ू मारो! वह क्या खाकर इतना सौख-मौज करावेगा? क्या पहनावेगा? फुलिया ने खलासी को छोड़ दिया है। खलासी को खोक्सीबाग की एक पतुरिया से मुहब्बत, रोज ताड़ी पीकर वहीं पड़ा रहता था। तलब मिलने के दिन वह पतुरिया खलासी का पीछा नहीं छोड़ती थी। तलब का एक पैसा इधर-उधर हुआ कि पैर की चट्टी खोलकर हाथ में ले लेती थी। आखिर फुलिया कितना बर्दास करती। टीसन के पैटमानजी नहीं रहते तो फुलिया की इज्जत भी नहीं बचती। फुलिया अब पैटमानजी के यहाँ रहती है। खलासी एक दिन पैटमान से लड़ाई करने आया। टीसनमास्टरबाबू ने कहा कि यदि खलासी टीसन के हाता में आवे तो पकड़कर पीटो। उसी दिन खलासी जो दुम दबाकर भागा तो फिर खाँसी भी नहीं करने आया कभी। पैटमानजी जात के छत्री हैं—तन्त्रिमा छत्री नहीं, असल बुँदेला छत्री: पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गये हैं; पत्थर का नकली दाँत लगाते हैं। कहने को नकली दाँत हैं, मगर असली दाँत से भी बढ़कर हैं। चना-भुट्टा और अमरूद सबकुछ चबाकर खाते हैं पैटमानजी। पचीस साल पहले हासाम[1] मुलुक में चाह पीते और पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गये हैं, उमेर तो अभी कुछ भी नहीं है। दस बरस से 'वेवा' थे, मन के लायक स्त्री मिली ही नहीं। पैटमानजी ने मँहगूदास के लिए एक पुरानी नीली कमीज भेज दी है। कमीज पहनने पर मंहगू को पहचानने में गलती हो जाती है। ठीक रेलवे का आदमी!···बुढ़िया के लिए नयी साड़ी भेज दी है। एक बित्ता काली किनारी है।···इस बार के कोटा में असली 'सन्तीपुरी साड़ी' मिलेगी तो फुलिया को भेज देगा। फुलिया कहती है, इस बार माँ को भी साथ ले जायेगी।

फुलिया का भाग! रमपियरिया की माँ कहती है—"रमिया भी अब बिहाने

---

१ आसाम।

Funding by IKS-MoE

के जोग हो गयी। बिना बाप की बेटी है! जब से तुम ससुराल गयी हो, रोज एक बार तुम्हारी जिकर करती है रमिया—'फुलिया दीदी कब आवेगी? इस बार फुलिया दीदी आवेगी तो साथ में मैं भी जाऊँगी।' यदि उधर कोई वर नजर में आये तो रमिया को भी अपने साथ ले जाओ फूलो बेटी! यहाँ कोयरीटोले के छोकड़े दिन-दिन बिगड़ते जा रहे हैं।..."

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सहदेव मिसर पर तन्त्रिमाटोली का कुत्ता भी भूँकता है! बहुत दिनों के बाद वह तन्त्रिमाटोली में आया है—फुलिया के बुलाने पर।...दस दिन रहेगी, फिर चली जायेगी। फुलिया अब जात-समाज से नहीं डरती। वह तन्त्रिमा छत्री नहीं, वह असल बुन्देला छत्री की स्त्री है। आँगन में अपने से पकाकर खाती है।... माँ का छुआ भी नहीं खाती!

वह तो मेहमान होकर आयी है। उसके जी में जो आवे, वह करेगी। कोई कुछ नहीं बोल सकता।...वह सहदेव मिसर को बैठने के लिए चटाई देती है। एक काँच की छोटी-सी थरिया में सुपारी, सौंफ और दालचीनी के टुकड़े बढ़ा देती है।...तो फुलिया भूली नहीं है उसे? वाह! सहर का पानी चढ़ने पर बाहर तो एकदम बदल गया है, पर भीतर जैसा-का-तैसा। काजलवाली आँखें और भी बड़ी मालूम होती हैं। अँगिया और नक्सा कोर की सफेद साड़ी। सहदेव मिसर डरते-डरते कहता है—

"फुलिया!"

"क्या?" फुलिया मुस्कराती है।

सहदेव मिसर का चेहरा एकदम लाल हो रहा है। कान लाल हो गये हैं। नाक के पासवाला सिरा धकधक कर रहा है—"फुलिया! जबसे तुम गयी मैंने कभी इस टोले में पैर नहीं दिया।"

"रहने दो! गहबोतटोले में नहीं जाते थे?...पनबतिया के यहाँ कौन जाता था? झूठ मत बोलो।" फुलिया हँसती है।

"नहीं फूलो!"

ढिबरी की रोशनी में सहदेव मिसर फुलिया की आँखों की नयी भाषा को पढ़ता है।...हवा के झोंके से ढिबरी बुझ जाती है। फुलिया बालों में महकौआ[1] तेल लगाती है। अँगिया के नीचेवाली छोटी चोली में रब्बड़[2] लगा रहता है शायद।...फुलिया के देह से अब घाम की गन्ध नहीं निकलती है। सौंफ, दालचीनी खाने से मुँह गमकता है।...शहर की बात निराली है। शहर की हवा लगते ही आदमी बदल जाता है। तहसीलदार की बेटी तो कभी शहर गयी भी नहीं।... जाति की बन्दिश और पंचायत के फैसले को तो सबसे पहले पंच लोगों ने ही तोड़ा है।...तन्त्रिमाटोली का छड़ीदार है नोखे और उचितदास; जिसे चाल से बेचाल देखेगा, छड़ी से पीठ की चमड़ी खींच लेगा। नोखे की स्त्री रामलगनसिंह के बेटे से फँसी हुई है और उचितदास की बेटी कोयरीटोले के सरन महतो से। पंचायत का फैसला ज्यादा-से-ज्यादा दस दिनों तक लागू रह सकता है। पुश्त-पुश्तैनी से

१. सुगन्धित। २. रबर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो रीति-रेवाज गाँव में चला आ रहा है उसको एकबारगी ही बदल देना ग्रासान नहीं। जिसके पास जगह-जमीन है, पास में पैसा है, वह भी तो अपने यहाँ का चाल-चलन नहीं सुधार सकते।···बाबूटोली के किस घर की बात छिपी हुई है।···पंच लोग पंचायत में बैठकर फैसला कर सकते हैं, उसमें कुछ लगता तो नहीं है। लेकिन पंचायत के फैसले से चूल्हा तो नहीं सुलग सकता? पंचों को क्या मालूम कि एक मन धान में कितना चावल होता है! सास्तर में कहा है, 'जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी ग्रौर का।' ग्रौर देह के जोर से ग्राजकल सबकुछ नहीं होता। जिसके पास पैसा है वही बोतल मिसर[1] पहलवान है। वही सबसे बड़ा जोरावर है।

···तहसीलदारसाहब की बेटी शाम से ही, ग्राधे पहर रात तक, डागडरबाबू के घर में बैठी रहती है; चाँदनी रात में कोठी के बगीचे में डागडर के हाथ-में-हाथ डालकर घूमती है। तहसीलदारसाहब को कोई कहने की हिम्मत कर सकता है कि उनकी बेटी का चाल-चलन बिगड़ गया है?···तहसीलदार हरगौरीसिंह ग्रपनी खास मौसेरी बहन से फँसा हुग्रा है। बालदेवजी कोठारिन से लटपटा गये हैं। कालीचरन ने चरखा स्कूल की मास्टरनीजी को ग्रपने घर में रख लिया है। उन लोगों को कोई कुछ कहे तो?···जितना कानून ग्रौर पंचायत है सब गरीबों के लिए ही? हुं!

जमीन के लिए गाँव में नयी दलबन्दी हुई है। जिन लोगों की जमीन नीलाम हुई है, दर्खास्तें खारिज हुई हैं, वे एक तरफ हैं। जिन्होंने नयी बन्दोबस्ती ली है ग्रथवा ज़मींदार से माफी माँग ली है, सुपुर्दी लिखकर दे दी है या जो ज़मीन बन्दोबस्त लेना चाहते हैं, वे सभी दूसरी तरफ़ हैं। गरीबों ग्रौर मज़दूरों के टोलों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। खेलावन के हलवाहों को कालीचरन ने हल जोतने से मना कर दिया है। तहसीलदार हरगौरीसिंह का नाई, धोबी ग्रौर मोची बन्द करने के लिए कालीचरन घर-घर घूमकर भाखन देता है। गाँव से सारे पुराने बाँध टूट गये हैं, मानो बाढ़ का नया पानी ग्राया हो।···

गरीबों ग्रौर मजदूरों की ग्राँखें कालीचरन ने खोल दी हैं। सैकड़ों बीघे जमीन-वाले किसानों के पास पैसे हैं, पैसे से ग़रीबों को खरीदकर ग़रीबों के गले पर ग़रीबों के जरिये ही छुरी चलाते हैं।···होशियार! जिन लोगों ने नयी बन्दो-बस्ती ली है, वे ग़रीबों की रोटी मारनेवाले हैं···!

कालीचरन ने चमारटोली में भात खा लिया?

जात क्या है? जात दो ही हैं, एक ग़रीब ग्रौर दूसरी ग्रमीर।···खेलावन को देखा, यादवों की ही जमीन हड़प रहा है।···देख लो ग्राँख खोलकर, गाँव में सिरिफ दो जात हैं।

ग्रमीर-गरीब!

तहसीलदार हरगौरीसिंह काली टोपीवाले नौजवानों से कहते हैं, "इस बार मोर्चे पर जाना पड़ेगा। हिन्दू राज कायम करने के लिए पहले गाँव में ही लोहा

---

१. मिथिला का एक प्रसिद्ध पहलवान।

Funding by IKS-MoE

लेना पड़ेगा···।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संयोजकजी आजकल महीने में दो बार घर मनीआर्डर भेजते हैं। संयोजक जी जो कहेंगे उसे काली टोपीवाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आग और पानी में कूद सकते हैं; इसी को कहते हैं अनुशासन !

बावनदास जिला कांग्रेस के नेताओं को ख़बर देने गया है—'गाँव में जुलुम हो रहा है।'

पैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के सामने विकट समस्या उपस्थित है। नयी बन्दोबस्तीवाले किसान रोज उनके यहाँ जाते हैं। मामला-मुकदमा उठने पर विश्वनाथप्रसाद की गवाही की ज़रूरत होगी। बेज़मीन लोग अपनी पार्टीबन्दी कर रहे हैं; ज़मीनवालों को भी भेदभाव, लड़ाई-झगड़ों को भूलकर एक हो जाना चाहिए। ···तहसीलदार हरगौरीसिंह दिन-रात विश्वनाथबाबू के घर पर ही रहते हैं !

"काका ! इस बार इज्जत बचा लीजिए ! क्या आप यही चाहते हैं कि नाई, धोबी और चमार के सामने हम हाथ जोड़कर गिड़गिड़ावें ?···कल से ही रामकिरपाल काका के गुहाल में गाय मरी पड़ी है। चमार लोगों ने उठाने से इनकार कर दिया है। जीवेसरा चमार को लीडर आपने ही बनाया है···राजपूतटोले के लोगों को देखिए, दाढ़ी कितनी बड़ी-बड़ी हो गयी है। नाइयों ने काम करना बन्द कर दिया है। आपके हाथ में सबों की चुटिया है। आप एक बार कह दें तो सबों की नानी मर जाये···"

कालीचरन आकर कहता है, "बिसनाथ मामा, आप काँगरेस के लीडर हैं। इसी बार देखना है कि काँगरेस गरीबों की पाटी है या अमीरों की।···आज तक मैंने आपको देवता की तरह माना है। लेकिन ग़रीबों के खिलाफ़ कदम बढ़ाइएगा तो हम भी मजबूर होकर···।"

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद क्या करें, क्या नहीं करें, कुछ समझ नहीं पा रहे हैं।

बावनदास पुरैनियाँ से लौट रहा है।

वह गया था, 'जुलुम हो रहा है' सुनाने। उसने पुरैनियाँ में देखा, जुलुम हो रहा है।

कचहरी में जिले-भर के किसान पेट बाँधकर पड़े हुए हैं। दफ़ा ४० की दर्खास्तें नामंजूर हो गयी हैं, 'लोअर कोट' से। अपील करनी है।···अपील ? खोलो पैसा, देखो तमाशा। क्या कहते हो ? पैसा नहीं है ! तो हो चुकी अपील। पास में नगदनारायण हो तो नगदी कराने आओ।···

कानून और कचहरी कम्पौण्ड में पलनेवाले कीट-पतंग भी पैसा माँगते हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जिला कांग्रेस ऑफिस में जुलुम हो रहा है। जिला काँग्रेस के सभापति का चुनाव होनेवाला है। चार उम्मीदवार हैं, दो असल और दो कमअसल[1]। राजपूत और भूमिहार में मुकाबिला है। जिले-भर के सेठों और ज़मींदारों की मोटर-लारियाँ दौड़ रही हैं। एक-दूसरे के गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं। कटिहार कॉटन मिलवाले सेठजी भूमिहार पार्टी में हैं और फ़ारबिसगंज जूट मिलवाले राजपूतों की ओर।···पैसे का तमाशा कोई यहाँ आकर देखे!

बावनदास सोचता है, अब लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी टोपी पर लिखवा लें—भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन!···कौन काजकर्ता किस पाटी का है, समझ में नहीं आता।

"जुलुम हो रहा है?"

"जी हाँ, जुलुम हो रहा है।"

"देखिए बावनदासजी, बात यह है कि ९५ सैकड़े लोगों ने तो गलत और झूठा दावा किया होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं। सही और वाजिब हकवाले बाकी रैयत भी इन्हीं झूठे दावे करनेवालों के कारण बेमौत मर गये। इसमें कानून का क्या दोष है? लोगों का नैतिक पतन हो गया है। देखिए, इस बार ज़िला कमिटी में, इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास होनेवाला है।"

"बेदखल किसानों से क्या कहेंगे?"

"क्या कहिएगा? कहिए कि ज़मींदारी प्रथा तो खत्म हो रही है। आज बिहार मन्त्रीमण्डल ने ऐलान कर दिया है—ज़मींदारी प्रथा को खत्म करने के लिए बिहार सरकार कटिबद्ध है!"

बावनदास किसानों से क्या कहेगा?

ज़मींदारी प्रथा खत्म हो जायेगी? तब ये कांग्रेसी ज़मींदार लोग क्या करेंगे? सब मिल खोलेंगे शायद। इसीलिए प्रायः हरेक छोटे-बड़े लीडर के साथ एक मारवाड़ी घूमता है।···बावनदास को याद आती है पाँच महीने पहले की बात! पुरैनियाँ टीसन में तीलझाड़ी के शंकरबाबू ने अपने साथ के दस काज-कर्ताओं को पूरी-मिठाई का जलपान कराया, और पैसा दिया तीलझाड़ी हाट के मारवाड़ी चोखमल जुहारचन्द के बेटे ने।···'हाँ जी, खाओ जी! तुम्हीं लोग तो देश के असल सेवक हो। जेहल में खिचड़ी खाते-खाते जिन्दगी बिता दी।' सारे इलाके के काजकर्ता को खिलाया और एक-एक सेर मिठाई भी खरीद दी।··· चोखमल ज़ुहारचन्द का बेटा आजकल अररिया सबडिविज़न काँग्रेस का खजांची है। साठ रुपये जोड़ी खादी की धोती पहनता है। चरखासंघ के बाबू कितना खातिर करते हैं!···

"जुलुम हो गया।"

"क्या हुआ?"

"जमींदारी परथा खत्तम।"

"जुलुम बात!"

---

१. डम्मी कैण्डिडेट।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यहाँ के लोग सब संथाल [illegible] भी कहते हैं—जुलुम बात! जुलुम हँसी, जुलुम खुशी ! बँगला के 'भीषण सुन्दर' की तरह ।

"जुलुम बात !"

"क्या है ?"

"बावनदास ने जमींदारी परथा खत्तम कर दिया ।" कामरेड वासुदेव दौड़ता हुआ आकर कालीचरन को खबर देता है ।

"बावनदास ने ?"

"नहीं । बावनदास खबर लेकर आया है । काँग्रस के मन्त्रीजी ने ज़मींदारी का नास कर दिया है ।"

"जब तक 'लाल पताका' अखबार में यह खबर छापी नहीं हो, इस पर बिसवास मत करो कामरेड ! यह सब काँगरेसी झाईं है । खैर, मैं कल ही सिकरेटरी-साहेब से पूछ आता हूँ । तुम लोगों ने मेम्बरी का पैसा जमा नहीं किया आफिस में । सब कामरेड को खबर दे दो । इस बार आख़िरी तारीख है, इसके बाद 'लाल पताका' में नाम निकल जायेगा ।"

"सनिचरा ने तो मेम्बरी के पैसे से सोसलिस्ट-काट कुर्ता बना लिया है । कहता है, सन-पटुआ होने पर पैसा जमा कर देंगे ।"

"जुलुम बात है । मेम्बरी के पैसे से कुर्ता ? नहीं, उससे कहो, पैसा जमा करना होगा ।"

तहसीलदार हरगौरी और तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद अब एक पान को दो टुक करके खाते हैं । सच ? सच नहीं तो क्या ? बेतार सुमरितदास सबों से कहता फिरता है…"कलम और कानून की बात जहाँ आयेगी, वहाँ लाठी-भाला चलानेवाले क्या करेंगे ? तहसीलदार विस्नाथपरसाद पुराने तहसीलदार हैं । राज पारबंगा के नीमक-पानी से ही सबकुछ हुआ है । कायस्थ नमकहरामी नहीं कर सकता कभी ।…कँगरेसी हुए हैं तो क्या अपने पैसे को भूल जायेंगे ?"

सन्थालटोली में मादल बज रहा है—

सोनो रो रूप, रूपे रो रूप
सोनो रो रूप लेका गातेञ मेलाय
गातेञ दिसोय रे सोना मुन्दोम
गातेञ उईहय जीवीदी लोकतिय ।

डा डिग्गा, डा डिग्गा ! रि-रि-ता-धिन-ता !

सोने और चाँदी के बीच मेरे प्रियतम का रूप सोने की तरह है । सोने की अँगूठी को देखकर अपने प्रियतम की याद आती है ।

सन्थाल परगना के आदिवासी सन्थालों को सोने की झलक लगी है या नहीं, कौन जाने ! लेकिन यहाँ के सन्थाल, सोने और चाँदी में क्या फ़र्क है, जानते हैं ।

…जमींदारी प्रथा खतम हो गयी । अब जमींदार ज़मीन से बेदखल नहीं कर सकता । हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया । जो जोतेगा, जमीन उसकी है । जो जितना जोत सको, जिसकी जमीन मिले जोतो, बोओ, काटो । अब बाँटने का भी झंझट नहीं ।…धरती माता का प्यार झूठा नहीं । फिर खेतों में जिन्दगी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
झूमेगी। आसाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो। नाचो! ···नाचो रे! मादल बजाओ ज़ोर-ज़ोर से। पँचाय[1] का नशा आज नहीं उतरेगा; जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाये, घने बादलों में नाचना बन्द नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट, बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है।···मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो प्रिये!

डा डिग्गा, रिं रिं ता धिन!···

छत्तीस

डाक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया। उसे लगता है, मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है। नदी-तालाब, पेड़-पौधे, जंगल-मैदान, जीव-जानवर, कीड़े-मकोड़े, सभी में वह एक विशेषता देखता है। बनारस और पटना में भी गुलमुहर की डालियाँ लाल-फूलों से लद जाती थीं। नेपाल की तराई में पहाड़ियों पर पलास और अमलतास को भी गले मिलकर फूलते देखा है, लेकिन इन फूलों के रंगों ने उस पर पहली बार जादू डाला है!

गोल्डमोहर—गुलमुहर—कृष्णचूड़ा !···गुलमुहर का कृष्णचूड़ा नाम यहाँ कितना मौजूँ लगता है! काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुन्दर लगते होंगे!

आम से लदे हुए पेड़ों को देखने के पहले उसकी आँखें इन्सान के उन टिकोलों पर पड़ती हैं, जिन्हें आमों की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी पर जिन्दा रहना है··· और ऐसे इन्सान? भूखे, अतृप्त इन्सानों की आत्मा कभी भ्रष्ट नहीं हो या कभी विद्रोह नहीं करे, ऐसी आशा करनी ही बेवकूफी है।···डाक्टर यहाँ की गरीबी और बेबसी को देखकर आश्चर्यित होता है। वह सन्तोष कितना महान् है जिसके सहारे यह वर्ग जी रहा है? आखिर वह कौन-सा कठोर विधान है, जिसने हजारों-हजार क्षुधितों को अनुशासन में बाँध रखा है?

···कफ से जकड़े हुए दोनों फेफड़े, ओढ़ने को वस्त्र नहीं, सोने को चटाई नहीं, पुआल भी नहीं! भीगी हुई धरती पर लेटा न्युमोनिया का रोगी मरता नहीं है, जी जाता है!···कैसे?

···यहाँ विटामिनों की किस्में, उनके अलग-अलग गुण और आवश्यकता पर लम्बी और चौड़ी फहरिस्त बनाकर बँटवानेवालों की बुद्धि पर तरस खाने से क्या फायदा!···मच्छरों की तस्वीरें, इससे बचने के उपायों को पोस्टरों पर

---

१. सन्थालों के घर में बनी हुई शराब।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
चित्रित करके अथवा मैजिक लालटेन से तस्वीर दिखाकर मैलेरिया की विभीषिका को रोकनेवाले किस देश के लोग थे ?···यहाँ तो उन मच्छरों की तस्वीरें देखते ही लोग कहते हैं—"पुरैनियाँ जिला को लोग मच्छर के लिए बेकार बदनाम करते हैं, देखिए पच्छिम का मच्छर कितना बड़ा है, एक हाथ लम्बा देह, चार हाथ मूँड़। बाप रे !"

डी० डी० टी० और मसहरी की बात तो बहुत बड़ी हुई, देह में कड़वा तेल लगाना भी स्वर्गीय भोग-विलास में गण्य है।···तेल-फुलेल तो ज़मींदार लोग लगाते हैं; स्वर्ग की परियाँ तेल-फुलेल लेकर पुण्य करनेवालों की सेवा करती हैं···!

खेतों में फैली हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाये रहती है। शस्य-श्यामला, सुजला-सुफला···इनकी माँ नहीं ? अब तो शायद धरती पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं रहेगा। कानून बनने के पहले ही कानून को बेकार करने के तरीके गढ़ लिये जाते हैं। सूई के छेद से हाथी निकाल लेने की बुद्धि ही आज सही बुद्धि है।···और लोग तो बकवास करते हैं, बुद्धि-विभ्रम रोग से पीड़ित हैं। जिसके पास हजारों बीघे जमीन है, वह पाँच बीघे जमीन की भूख से छटपटा रहा है।···बेज़मीन आदमी आदमी नहीं, वह तो जानवर है !

डाक्टर ममता को लिखता है—

"तुम जो भाषा बोलती हो, उसे ये नहीं समझ सकते। तुम इनकी भाषा नहीं समझ सकतीं। तुम जो खाती हो, ये नहीं खा सकते। तुम जो पहनती हो, ये नहीं पहन सकते। तुम जैसे सोती हो, बैठती हो, हँसती हो, बोलती हो, ये वैसा कुछ नहीं कर सकते। फिर तुम इन्हें आदमी कैसे कहती हो।"

···वह आदमी का डाक्टर है, जानवर का नहीं।···'टेस्ट ट्यूबों' में आदमी और जानवर के खून अलग-अलग रखे हुए हैं। दोनों के सिरम की अलग-अलग जरूरतें हैं। डाक्टर आदमी के खूनवाले ट्यूब को हाथ में लेकर, जरा और ऊपर उठाकर, ग़ौर से देखता है। वह जानना चाहता है, देखना चाहता है, कि इन इन्सानों और जानवरों की रक्तकणिका में कितना विभेद है, कितना सामंजस्य है।···

खून से भरे हुए टेस्ट-ट्यूबों में अब कोई आकर्षण नहीं !···

क्या करेगा वह संजीवनी बूटी खोजकर ? उसे नहीं चाहिए संजीवनी। भूख और बेबसी से छटपटाकर मरने से अच्छा है मैलेग्नेंट मैलेरिया से बेहोश होकर मर जाना। तिल-तिल कर घुल-घुलकर मरने के लिए उन्हें जिलाना बहुत बड़ी क्रूरता होगी···सुनते हैं, महात्मा गाँधी ने कष्ट से तड़पते हुए बछड़े को गोली से मारने की सलाह दी थी। वह नये संसार के लिए इन्सान को स्वच्छ और सुन्दर बनाना चाहता था। यहाँ इन्सान हैं कहाँ ?···अभी पहला काम है, जानवर को इन्सान बनाना !

उसने ममता को लिखा है—

"यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखों-लाख इन्सानों की जिन्दगी के सुनहरे सपनों को बटोरकर, अधूरे अरमानों को बटोरकर, यहाँ के प्राणी के जीवकोष में भर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देने की कल्पना मैंने की थी। मैंने कल्पना की थी, हजारों स्वस्थ इन्सान हिमालय की कन्दराओं में, त्रिवेणी के संगम पर, अरुण, तिमुर और सुणकोशी के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वततोड़ परिश्रम कर रहे हैं। लाखों एकड़ बन्ध्या धरती, कोशी-कवलित, मरी हुई मिट्टी शस्य-श्यामला हो उठेगी। कफ़न जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में धानी रंग की जिन्दगी के बेल लग जायेंगे। मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरतें बेवजह हँस पड़ेंगी। मोती जैसे सफेद दाँतों की चमक···!"

डाक्टर का रिसर्च पूरा हो गया; एकदम कम्पलीट। वह बड़ा डाक्टर हो गया। डाक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है···।

ग़रीबी और जहालत—इस रोग के दो कीटाणु हैं।

एनोफिलीज़ से भी ज़्यादा ख़तरनाक, सैण्डफ्लाई[1] से भी ज्यादा ज़हरीले हैं यहाँ के···

नहीं। शायद वह कालीचरन की तरह तुलनात्मक उदाहरण दे बैठेगा।··· कालीचरन किसानों के बीच भाषण दे रहा था, "ये पूंजीपति और ज़मींदार, खटमलों और मच्छरों की तरह सोसख हैं।···खटमल! इसीलिए बहुत-से मारवाड़ियों के नाम के साथ 'मल' लगा हुआ है और ज़मींदारों के बच्चे मिस्टर कहलाते हैं। मिस्टर···मच्छर!"

दरार-पड़ी दीवार! यह गिरेगी! इसे गिरने दो! यह समाज कब तक टिका रह सकेगा?

···कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं—

दुनिया फूस बटोर चुकी है,
मैं दो चिनगारी दे दूंगा।

गुलमुहर—आज का फूल! सारी कुरूपता जल रही है। लाल! लाल!

···कमल—कमला नदी के गड्ढों में कमल की अधमुंदी कलियाँ अपने कोष में नयी जिन्दगी के पराग भरकर खिलना ही चाहती हैं।

"ओ! तुम! कमला! इतनी रात में?···अकेली आयी हो?"

"डाक्टर!···बोलो। सच बोलो। मैं डेढ़ घण्टे से खड़ी देख रही हूँ। तुमको क्या हो गया है? क्या तुम्हें भी अब डर लगता है?···सिर चकराता है? देखो, कान के पास गर्मी-सी मालूम होती है? दुनिया घूमती-सी मालूम पड़ती है? ···डाक्टर!···डाक्टर!···प्यारू!"

···कमल की भीनी-भीनी ख़ुशबू! कोमल पंखुड़ियों का कमनीय स्पर्श! कमला!···ओ! मैं कमला की गोद में हूँ? मुझे नींद न लग जाये। मुझे उठकर बैठ जाना चाहिए। मेरी मंज़िल।

"कमला, चलो तुम्हें पहुंचा दूं।"

"लेटो रहो बेटा!"

---

१ कालाभाजार का मच्छर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"ओ ! मौसी ! तुम आ गयीं ?"

प्यारू कहता है, "कल सुबह से ही सिरफ चाय पीकर हैं, तो सिर नहीं चक्कर देगा ?"

सैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के दरवाजे पर पंचायत बैठी है। दोनों तहसीलदार के अगल-बगल में बालदेवजी और कालीचरनजी बैठे हैं। बाभन-राजपूत के साथ में बैठा है यादव—एक ही ऊँचे सफरे[1] पर। अरे! जीबेसर मोची भी उसी कम्बल पर बैठा है ? बस, अब रास्ते पर आ रहा है। देखो, आज तहसीलदार हरगौरी किस तरह हँस-हँसकर कालीचरन से बात कर रहा है—मानो एक प्याली का दोस्त है। हाँ, तो यादवों को अब जमाहिरलाल भी छत्री मान लिये हैं। कौन क्या बोल सकता है ?···बावनदास कौन जात है ?···कहाँ है बावनदास ? पुरैनियाँ गया है ? आज पंचायत के दिन उसको रहना चाहिए था।···अरे भाई, बाहरी आदमी फिर बाहरी आदमी है। उसको इस गाँव से कौन जरूरत है ? यहाँ नहीं, वहाँ। लेकिन कालीचरन···बाल···।···डोमन ठाकुर क्या कहता है, सुनो !

"ठाकुर (नाई) टोले से और रजकटोले से एक-एक आदमी को ऊँचे सफरे पर बैठने के लिए चुन लिया जाये।"

"ओ ! आओ डोमन भाई ! अपने टोले से किसको पंच चुनते हो ? बोलो ! तुम्हीं आओ ! और रजकटोले से तो प्यारेलाल है ही। आओ, प्यारे !" कालीचरन प्यारे को अपने ही पास बिठलाता है।

"तो बात यह है कि," तहसीलदार विश्वनाथप्रसादजी सुपारी कतरते हुए कहते हैं, "ज़माना बहुत खराब आ रहा है। जो लोग अखबार-गजट पढ़ते हैं, वही जानते हैं कि कितना खराब जमाना आ रहा है।···बंगाल की तरह अकाल फैलेगा। बंगाल के अकाल के बारे में नहीं जानते ?···अरे, चरवाहा सब गाता है, सुने नहीं हो—

बड़ जुलुम कइलक अकलवा रे
बंगाला मुलुकवा में।
चार करोड़ आदमी मरल···

···पूछो कालीचरन से, बालदेव भी कहेगा कि बंगाल के अकाल-जैसा अकाल कभी पड़ा ?···उम्र ज्यादा होने से क्या हुआ ? जो लोग अख़बार नहीं पढ़ते हैं, वे दुनिया की बातों से वाकिफ़ कैसे हो सकते हैं ? मैं ही पहले से यदि कर-कचहरी, कटिहार-पूर्णिया नहीं जाता तो कूपमण्डू रहता। कुएँ का बेंग !

---

१. बिछावन, दरी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
…देखो, सरकार सभी धानवालों से धान वसूल रही है। क्यों ? सरकार को पूरा डर है कि अकाल फैलेगा। इसलिए अपने हाथ में बर-बखत के लिए पूरा स्टोक रखना जरूरी है। अरे, तुमको तो तीन आदमी की फिक्र करनी पड़ती है तो साल-भर बाप-बाप चिल्लाते हो, कभी इन्द्र भगवान से पानी माँगते हो, सूरज भगवान से धूप उगाने के लिए कहते हो, नौकरी करते हो, कर्ज़ लेते हो ! और जिसको समूचा भारथवरश-हिन्दुस्थान की फिक्र करनी पड़ती है, उसकी क्या हालत होती होगी ? अभी तुरत ही तो सभी लीडर जेहल से निकले हैं; तुरत मिनिस्टरी लिया है। यदि अकाल पड़ गया तो जो सुराज मिलनेवाला है, वह नहीं मिलेगा। यदि मिलेगा भी तो उसकी सारी ताकत तो लोगों को खिलाने में ही लग जायेगी। इसलिए हम लोगों को धरती से ज्यादा अन्न उपजाना चाहिए।…अभी मान लो कि कर-कचहरी, फर-फौजदारी करके तुम खेत पर दफा १४४ लगा देते हो, फिर १४५ होगा, इससे जमीन में धान तो रोपा नहीं जायेगा ! खेत परती रहेगा और अन्न होगा नहीं। इसके बाद मालिक लोगों से ही यदि धन माँगोगे तो कहाँ से देंगे मालिक लोग ? अपने खर्च के लायक धान मालिकों के पास होगा नहीं और सरकार वसूल करेगी लाठी के हाथ से, कानून से। बड़े मालिकों के बखारों मे भी चमगादड़ झूलेंगे।…तो हमारा यही कहना है कि सभी भाई आपस में विचारकर, मिलकर देखो कि किस काम में भलाई है !"

…अरे ! तो यह पंचायत सिरफ बेजमीनवालों को ही सीख देने के लिए बैठायी गयी है !…चुप रहो ! तहसीलदार जो कह रहे हैं, नहीं समझ रहे हो पक्की बात कहते हैं तहसीलदार !…काबिल आदमी हैं। अरे, आज ही यह कालीचरन और बालदेव आया है न ! पहले तो हम लोगों के आँख-कान यही थे। इन्हीं के यहाँ बैठकर गजट में सुना था कि नेताजी सिंघापूर में पुसूप बिमान पर आ गये हैं।…तहसीलदार ठीक कहते हैं।

"तहसीलदारबाबू ? माये-बाप,…आप ठीक ही कहते हैं। अब आप ही कोई रास्ता बताइए।"

"हाँ, हाँ, तहसीलदार काका, आप ही जो कहिए।"

"ठीक है !…क्या कालीचरनजी ?" तहसीलदार हरगौरी हँसकर पूछता है।

कालीचरन को 'जी' कहते हैं हरगौरीबाबू भी !

"ठीक है। ठीक है। तहसीलदारसाहब ठीक कहते हैं।"

"…तो भाई, हम तो हिन्दुस्थान, भारथवरश की बात नहीं जानते। हम अपने गाँव की बात जानते हैं। आप भला तो जग भला। हम तो इसी में गाँव का कल्याण देखते हैं कि सभी भाई, क्या गरीब, क्या अमीर, सब भाई मिलकर एकता से रहें। न कोई ज़मीन छुड़ावे और न कोई गलत दावा करे। जैसे पहले जोतते-आबादते थे, आबाद करें, बाँट दें। न रसीद माँगें, न नकदी के लिए दर्खास्त दें।…दोनों को समझना होगा।…क्यों हरगौरीबाबू ! सुनते हो तो ? अपने मैनेजर से जाकर कह देना कि हुजूर अब भी होश करें। यदि इस तरह रैयतों के साथ दुश्मनी करेंगे, कम-से-कम हमारे यहाँ के रैयतों से, तो फिर बात बिगड़ जायेगी।…सभी बात तो हमारे ही हाथ में है। हम अभी गवाही दे दें, कि हाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हुजूरआली, यह सब फर्जी काम हमसे करवाया गया है, और कल कागज-पत्तर, चिट्ठी-चपाती, रुक्का-परवाना दिखला दें तो बस खोप सहित कबूतराय नमः···।"

हँ-हँ, हो-हो ! ···पंचायत के सभी लोग मुक्त अट्टहास कर उठते हैं।

"अरे तो, किस खानदान का तहसीलदार है, यह भी तो देखना चाहिए ?" सिंघजी हँसते हुए कहते हैं।

"महारानी चम्पावती···"

हो-हो-हो-हो,···हँसी का दूसरा वेग, सैकड़ों सरलहृदय इन्सानों को गुदगुदी लगाता है।

"अच्छा ! अच्छा ! अब काम की बात हो।···सुनो कालीचरन बेटा ! लीडर बने हो तो बड़ा अच्छा काम है। बाबू-गाँव का नाम तो इसी में है। कोई सोशलिस्ट का लीडर है, तो कोई काँगरेस का, तो कोई काली टोपी का। लेकिन देख लो भैया, हम गाँव के सभी लौण्डों के अकेले मालिक हैं। यदि गाँव में इधर-उधर कुछ किये तो पीठ की चमड़ी भी उधेड़ लें।···खेलावन ! जोतिखीजी ! आप ही लोग कहिए, जो लौण्डे हमको कहते हैं काका, मामा, भैया, फूफा, उन लड़कों की गलती पर यदि हम कान पकड़कर मल दें या दो कड़ी बात कह दें तो हमको कोई दोख देगा ?"

"नहीं, नहीं। आप वाजिब बात कहते हैं।"

"हम गाँव से बाहर थोड़े ही हैं, लेकिन एक बात हम भी पहले ही कह देते हैं। अभी आप जैसा करने के लिए कहते हैं, हम लोग करें। बाद में फिर हमारी गर्दन पर छुरी चले तब ?" कालीचरन कहता है।

"इसका जिम्मा हम लेते हैं। अरे, हमने कहा न कि सभी खेला मेरे हाथ में है।"

"तो ठीक है। हम गाँव से बाहर थोड़ो हैं।"

"ठीक बात ! ठीक बात !"

"लेकिन सभी भाई सुन लीजिए। यदि गाँव के बाहर का कोई बाहरी हम पर हमला करे तो इसका मुकाबला सभी को मिलकर करना होगा। हाँ, यदि बाहरवाले इस गाँव के जमीनवालों पर हमला करें तो सबों को सहायता करनी होगी।···गाँव की जमीन गाँव में रहेगी। बाहरवाले क्यों लेंगे, समझे ?"

"हाँ-हाँ, ठीक है। ठीक है। बहुत रात हो गयी। आसमान में बादल उमड़ आये हैं। बरसा होगी।···दुहाई इन्द्र महाराज ! बरसो, बरसो !"

हर साल बरसात के मौसम में यही होता है। भगवान के हाथ की बात इन्सान क्या जाने ! इन्द्र भगवान से प्रार्थना की जाती है—बरसाओ ! हे इन्द्र महाराज !···जरा भी आसमान के किसी कोने में काले बादलों का जमाव हुआ, बिजली चमकी, कि 'बरसो,' 'बरसो' की पुकार घर-घर से सुनायी पड़ती है। जमीनवालों, बेजमीनों, सबों की रोटी का प्रश्न है। और यदि लगातार पाँच दिन तक घनघोर बरसा हुई और खेतों के आल डूबे कि '···जरा एक सप्ताह सबुर करो महाराज !'

इन्द्र महाराज की खुशी ! यदि उनका मिजाज अच्छा रहा तो प्रार्थना पर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
विचारकर एक सप्ताह सत्र कर गये। मौके से बरसा होती गयी, धूप भी उगती रही तो फिर धान रखने की जगह नहीं मिलेगी। 'मूसिन पूछे मूस से कहाँ के रखबऽधान'[1]।···तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के पास डाक-वचनामृत, भविष्य-फल और खना-वचन है। पंजिका से हिसाब निकालकर बता देंगे कि यह पक्ष सूखेगा या झरेगा।···नक्षत्रों की गणना में यदि स्त्री-स्त्री का संयोग हुआ तो शून्य, यदि पुरुष-पुरुष संयोग निकला तो शून्य। एक बूंद भी बरसा नहीं होगी, चिल्लाने से क्या होगा ?···

···ततमाटोला, पासवानटोला, धानुक-कुर्मीटोला तथा कोयरीटोला की औरतें हर साल ऐसे समय में इन्द्र महाराज को रिझाने के लिए, बादल को सरसाने के लिए, 'जाट-जट्टिन' खेलती हैं।

आज भी 'जाट-जट्टिन' का आयोजन है। कल तो पिछयारीटोले की औरतों ने किया था। बादल का एक टुकड़ा थोड़ी देर के लिए आकर चाँद को ढंक गया था। आज पुरनिमाँ है। कल से यदि बरखा नहीं हुई तो सारा पख सूखा रहेगा। ···ततमाटोली की औरतों ने बाबूटोला की औरतों को निमन्त्रण दिया है—"एक साथ सब मिलकर जाट-जट्टिन खेलें, ज़रूर बरखा होगी।"

गुआरटोली और कायस्तटोली के बीच में जो पन्द्रह रस्सी मैदान खाली है, उसी में औरतें जमा हुई हैं।

···जाट के पास हज़ारों-हज़ार भैंसें हैं। वह उन्हें चराने के लिए कोशी के किनारे जाता है। जट्टिन घर में रहती है; दूध, घी और दही की बिक्री करती है, हिसाब रखती है।···सास या पति से झगड़कर, रूठकर जट्टिन नैहर चली गयी। जाट उसे ढूंढने जा रहा है। जट्टिन बड़ी सुन्दरी थी, उसकी सुन्दरता की चारों ओर चर्चा होती थी।

सुनरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
पातरि बाँस के छौंकिनियाँ हो बाबूजी,
गोरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
चाननी रात के इंजोरिया हो बाबूजी !
नान्हीं-नान्हीं दँतवा, पातर ठोरवा···
छटके जैसन बिजलिया···।

इसलिए जाट को गाँव के हरेक मालिक, नायक या मण्डल पर सन्देह।··· जट्टिन नैयर नहीं जा सकेगी, किसी ने जरूर उसे अपने घर में रख लिया होगा। ···रास्ते में कितने गाँव हैं, कितनी नदियाँ हैं, कितने घाट हैं और घटवार हैं। वह रास्ते के हर गाँव के मालिक मड़र,[2] और नायक के यहाँ जाता है :

नायकजी हो नायक हो,
खोले देहो किवड़िया हो नायकजी,
ढूंढ़े देहो जटिनियाँ हो नायकजी···

जट्टिन बनी है रमपियरिया, और जाट बनी है कोयरीटोला की मखनी।

---

१. घाघ की एक सूक्ति। २. मण्डल, प्रमुख मालिक।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
मखनी ठीक मर्दों-जैसी लगती है।

'जाट-जट्टिन' अभिनय के साथ और भी सामयिक अभिनय तथा व्यंग-नाट्य बीच-बीच में होते हैं।...फुलिया बनी है डाक्टर। उसने कमल के फूल की डण्डी को किस तरह जोड़-तोड़कर डाक्टर के गले में झूलनेवाला आला बनाया है। सनिचरा का नया पैंजामा माँग लायी है और बिहुला नाचवालों के यहाँ से साहबी टोपा और कोट माँग लायी है।

"ए मैन ! इदार आता हाए। बोलो क्या होता हाए !"

"हुजूर ! थोड़ा सिर दुखता है, थोड़ा आंख भी दुखता है, थोड़ा कान भी दरद करता है और कलेजा भी धुकधुक करता है। सर्दी भी होता है, गर्मी भी लगता है। भूख नहीं लगता है और जब भूख लगता है तो खाना नहीं मिलता है।" ...रोगी बनी है धानुकटोले की सुरती ! खूब बात जोड़ती है...हा-हँ-हँ-हं-हँ ! ...

"अरे बाप रे बाप ! ऐसा बेमारी तो कभी नाहीं देखा। तुम्मारा नेबज देखें ! (देखकर) उँहू ! तुम नेही बचेगा। तुमारा बेचारी को कीड़ा हो गया।... जकसैन लगेगा।"

दूसरी रोगिनी आती है—कुमीटोले की तराबत्ती।

"ऐ औरत ! तुमको क्या हुआ ?"

"हमरा दिल दकदक करता है।"

"अरे बाप ! यहाँ तो सबों का दिल धकधक करता हाए। अमारा भी दिल धकधक करने लगा !"

डाक्टर और रोगिनी दोनों डरते हुए एक-दूसरे को बाँहों में पकड़ लेती हैं—दिल धकधक, दिल दकदक !

...औरतों की मण्डली हंसते-हंसते लोटपोट हो जाती है। बूढ़ियों की खाँसी उभर आती है। हो-हो-हो, खों-खों, अक्खों ! ...खूब किया !

मर्दों को 'जाट-जट्टिन' देखने का एकदम हक नहीं है। यदि यह मालूम हो गया कि किसी ने छिपकर भी देखा है तो दूसरे ही दिन पंचायत में चली जायेगी बात ! ...जिसको मूँछें नहीं उगी हैं, वह देख सकता है।

अन्त में औरतें मिलकर हल जोतती हैं। हल और बैल किसी का ले आती हैं और जोतते समय गाँव के बड़े-बूढ़े किसानों को गाली देती हैं—"अरे बिस्नाथ तहसीलदरवा ! जल्दी पानी ला रे ! पियास से मर रहे हैं रे !"

"अरे ! सिवना सिपैहिया रे ! पानी लाओ रे !"

"अरे रमखेलोना रे ! ...पानी ला रे !"

...इस गाली को कोई बुरा नहीं मानते। बल्कि किसी बड़े किसान का नाम छूट जाये तो उसे तकलीफ होती है।...बहुत दुख होता है।

इस बार डाक्टर को भी गाली दी जाती है—"अरे डकटरवा रे ! ...अरे परसन्तो रे, जल्दी से बोतल में पानी लेके आ रे ! ..."

हो-हो-हा-हा...

आसमान में काले बादल घुमड़ रहे हैं।...बिजली भी चमक रही है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अड़तीस

दो दिन से वदली छायी हुई है। आसमान कभी साफ नहीं होता। दो-तीन घण्टों के लिए बरसा रुकी, बूंदा-बाँदी हुई, फिर फुहिया। एक छोटा-सा सफेद बादल का टुकड़ा भी यदि नीचे की ओर आ गया तो हरहराकर बरसा होने लगती है। आसाढ़ के बादल ··!

रात में मेंढकों की टरटराहट के साथ असंख्य कीट-पतंगों की आवाज़ शून्य में एक अटूट रागिनी बजा रही है— टर्र ! मेंक् टर्रर···मेंक् !···झि-झि-चि···किर-किर्र···सिं, किटिर-किटिर ! झि···टर्र···।

कोठारिन लछमी दासिन को नींद नहीं आ रही है; चित्त वड़ा चंचल है। रह-रहकर ऐसा लगता है कि उसके शरीर पर कोई पतंगा घुरघुरा रहा है। वह रह-रहकर उठती है, बिछावन झाड़ती है, कपड़े झाड़ती है। लेकिन वही सरसराहट···। वह लालटेन की रोशनी तेज़ कर बीजक लेकर बैठ जाती है—

जाना नहिं बूझा नहिं
समुझि किया नहीं गौन !
अन्धे को अन्धा मिला
राह बतावे कौन ?

कौन राह बतावे ? नहीं, उसने बालदेवजी को जाना है, अच्छी तरह पहचाना है।···महन्थ सेवादासजी कहते थे—'लछमी ! बालदेव साधु पुरुष है।'··· लेकिन बालदेवजी तो इतने लाजुक हैं कि कभी एकान्त में बात करना चाहो तो थरथर काँपने लगें; चेहरा लाल हो जाये। लाज से या डर से ?···लेकिन विरह-बाण से घायल लछमी का मन सिसक-सिसककर रह जाता है।

बिरह बाण जिहि लागिया
ओषध लगै न ताहि।
सुसकि-सुसकि मरि-मरि जिवै,
उठे कराहि कराहि !

किन्तु बालदेव्जी को क्या पता !···लछमी क्या करे ?

···टर्र-र-मेंक्, मेंक्, झी···ई···टिंक-टिंक—झी रिं !···

नहीं। लछमी अब नहीं सह सकेगी। वह बालदेवजी के पास जायेगी। मसहरी नहीं है बालदेवजी को ! मच्छर काटता होगा।···नहीं। वह नहीं जायेगी। वह क्यों जायेगी ?···

पानी प्यावत क्या फिरो
घर-घर सायर बारि,
तृषावन्त जो होयगा,
पीवेगा झख मारि !···

रामदास—महन्थ रामदास अब लछमी से बहुत कम बोलते हैं। वे नाम के महन्थ हैं। वे कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते। उन्हें कुछ भी नहीं मालूम। कितनी आमदनी और कितना खर्च होता है—उनको क्या पता ? बीस से ज़्यादा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
तो गिनना नहीं जानते। कौड़ी का हिसाब जानते हैं।···रामदासजी समझ गये हैं कि यदि लछमी मठ को एक दिन के लिए भी छोड़ दे तो रामदास के लिए यहाँ टिका रहना मुश्किल होगा। लछमी जादू-मन्तर जानती है। क्या कागज-पत्तर, क्या खेती-वारी और क्या हाकिम-महाजन, सभी में वह अव्वल है। महन्थ रामदासजी समझ गये हैं कि यदि इज़्ज़त के साथ बैठकर दूध-मलाई भोग करना हो तो लछमी को जरा भी अप्रसन्न नहीं किया जाये।···तन का ताप मन को चंचल तो करता है, लेकिन क्या किया जाये!···यदि एक दासिन रखने का हुकुम लछमी दे-दे तो···!

गड़गड़ाम···गड़गड़···बादल घुमड़ा। बिजली चमकी और हरहराकर बरसा होने लगी।

हाँ, अब कल से धनरोपनी शुरू होगी।···जै इन्दर महाराज, बरसो, बरसो! ···लेकिन बीचड़[1] के लिए धान कहाँ से मिलेगा? आज तो पंचायत में सभी बड़े मालिक लोग बड़ी-बड़ी बात बोलते थे, कल ही देखना कैसी बात करते हैं··· 'अपने खर्चा के जोग ही धान नहीं है', 'बीहन नहीं है' अथवा 'पहले हमको बोने दो'।

गड़गड़ाम···गुडुम!

"बीहन का धान मालिकों को देना होगा। हमेशा देते आये हैं, इस बार क्यों नहीं देंगे?" कालीचरन आफिस में सोये, अधसोये और लेटे लोगों से कहता है, "और बार दूना लेते थे, बीहन का दूना, इस बार सो सब नहीं चलेगा। यदि तहसीलदार मामा ने ऐसा प्रबन्ध नहीं किया तो फिर···संघर्ष।"

बिजली चमकती है। बादल झूम-झूमकर बरस रहे हैं।

मंगला अब कालीचरन के आँगन में रहती है। कालीचरन की माँ अन्धी है। कालीचरन की एक बेवा अधेड़ फूफू है। मंगला की मीठी बोली सुनकर कालीचरन की माँ की आँखें सजल हो उठती हैं और फूफू की आँखें लाल! जब-जब बिजली चमकती है, पछवरिया घर के ओसारे पर सोयी फूफू पुबरिया घर की ओर देखती है। आदमी की छाया? नहीं। बाँस है।···पुबरिया घर में सोयी मंगला भी जगी है। बादलों के गरजने और बिजली के चमकने से उसे बड़ा डर लगता है। बचपन से ही वह बादल, बिजली और आँधी से डरती है। और यहाँ की बरसा तो···। फिर, बिजली चमकी। "कौन···!" मंगला फुसफुसाकर पूछती है, "कौन?"

भीगे हुए पैरों के छाप बिजली की चमक में स्पष्ट दिखायी देते हैं।

सोनाये यादव अपनी झोंपड़ी में बारहमासा की तान छेड़ देता है:

> एहि प्रीति कारन सेत बाँधल,
> सिया उदेस सिरी राम हे।
> साबन हे सखी, सबद सुहाबन,
> रिमिझिमि बरसत मेघ हे!···

---

१. बीहन (बीज) धान, धान का छोटा पौधा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रिमिझिमि बरसत मेघ !···कमली को डाक्टर की याद आ रही है। कहीं 'खिड़कियाँ खुली न हों। खिड़की के पास ही डाक्टर सोता है। बिछावन भींग गया होगा। कल से बुखार है। सर्दी लग गयी है।···न जाने डाक्टर को क्या हो गया है ?···कहीं मौसी सचमुच में डायन तो नहीं ? डाक्टर को बादल बड़े अच्छे लगते हैं। कल कह रहा था—'मैं वर्षा में दौड़-दौड़कर' नहाना चाहता हूँ।'

छररर ! छररर !···बादल मानो धरती पर उतरकर दौड़ रहे हैं। छहर ···छहर···छरर !

बिरसा माँझी अब लेटा नहीं रह सकता।···परसों गाँववालों ने मिटिन किया है—बाहरी आदमी यदि चढ़ाई करे तो सब मिलकर मुकाबला करेंगे। कालीचरन भी था और बालदेव भी !···सन्थाल बाहरी लोग हैं।

तहसीलदार हरगौरी का सिपाही आज जमीन सब देख रहा था—अखता भदै धान पक गया है। काटेंगे क्या ! किस खेत में कौन धान बोयेंगे ? तो क्या सचमुच में सन्थालों की जमीन छुड़ा लेंगे तहसीलदार ? जमींदारी पर्था खतम हुई, लेकिन तहसीलदार जमीन से बेदखल कर रहा है।···बात समझ में नहीं आ रही है।···क्या होगा ? कल ही देखना है। जमीन पर हल लेकर आवेगा तहसीलदार, भदै धान काटने आवेगा, तब देखा जायेगा। पहले से क्या सोच-फिकर ?···वह अब लेटा नहीं रह सकता।···लेटे-ही-लेटे मादल पर वह हाथ फेरता है—रिं-रिं-ता-धिन-ता।

गुड़गुडुम···गुडुम···गुडुम !

बिजलियाँ चमकती हैं !

कल बीचड़ मिलेगा या नहीं ?···बालदेवजी को मच्छर क्यों नहीं काटता है, कालीचरन की फूफी सोती क्यों नहीं, और डाक्टर की खिड़की बन्द है या खुली, इसका जवाब तो कल मिलेगा। अभी जो यह सोनाय यादव बारहमासा अलाप रहा है, इसको क्या कहा जाये ?···गाँव-घर में गाने की चीज नहीं बारहमासा। अजीब है यह सोनाय भी। कुमर बिजैभान या लोरिक नहीं, बारहमासा ! खेत में रोपनी करते समय गानेवाला गीत बारहमासा ! धान के खेतों में पाँवों की छप-छप आवाज के साथ वह गीत इतना मनोहर लगता है कि आदमी सब-कुछ भूल जाये।···यह सन्थालटोली में माँदर क्यों बजा रहा है, बेवजह, और जब यह सोनाय बारहमासा गा ही रहा है तो चार कड़ी सुनने दो बाबा ! बेताल का ताल बजा रहे हो ! बरसा की छपछपाहट और बादलों की घुमड़न में माँदर की आवाज स्पष्ट नहीं सुनायी पड़ती है, गनीमत है। ओ ! सोनाय ने अब झूमर बारहमासा शुरू किया है—

अरे फागुन मास रे गवना मोरा होइत
कि पहिरू बसन्ती रंग हे,
बाट चलैत-आ केशिया सँभारि बान्हू,
अँचरा हे पवन झरे हे ए ए ए !

डाक्टर अब गाँव की भाषा समझता ही नहीं, बोलता भी है। ग्राम्य गीतों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को सुनकर वह [illegible] भी भूल जाता है। गीतों का अर्थ शायद वह ज्यादा समझता है। सोनाय से भी ज्यादा ?···अँचरा हे पवन झरे हे ! ··· आँचल उड़ि-उड़ि जाये !

···गाँव के और लोग कहेंगे कि रात में रह-रहकर वर्षा होती थी। आधा घण्टा बन्द, फिर झर-झर ! लेकिन डाक्टर कहेगा, सारी रात बरसा होती रही, कभी बूँद रुकी नहीं। विशाल बड़ के तले, 'करकट टीन' के छप्परवाले घर पर जो बूँदें पड़ती थीं ! कोठी के बाग में झरझराहट कभी बन्द नहीं हुई ! ···

तो सुबह हो गयी।···सोनाय अब खेत में गीत गा रहा है। सोनाय अकेला नहीं है, सैकड़ों कण्ठों में एक-एक विरहिन मैथिली बैठी हुई कूक रही है—

आम जे कटहल, तूत जे बड़हल
नेबुआ अधिक सूरेब !
मास असाढ़ हो रामा ! पन्थ जनि चढ़िहऽ,
दूरहि से गरजत मेघ रे मोर !

बाग में आम-कटहल, तूत और बड़हल के अलावा कागजी नीबू की डाली भी झुकी हुई है और दूर से मेघ भी गरजकर कह रहा है—आ पन्थी ! अभी राह मत चलना !···लोग दूर के साथी को अपने पास बुलाते हैं, बिरह में तड़पते हैं, मेघों के द्वारा सन्देश भेजते हैं और घर आया हुआ परदेशी बाहर लौट जाना चाहता है ? नहीं, नहीं !···बिजली की हर चमक पर मैं चौंक-चौंककर रह जाऊँगी। बादल जब गरजते हैं तो कलेजे की धड़कन बढ़ जाती है।

अऽरे मास आ सा ढ़ हे ! गरजे घन
बिजूरी-ई चमके सखि हे ए ए !
मोहे तजी कन्ता जाये पर-देसा आ···आ
कि उमड़ू कमला माई हे !
···हँऽ रे ! हँऽ रे ! ···

कमला में बाढ़ आ जाये तो कन्त रुक जायें। इसलिए कमला नदी को उमड़ने के लिए आमन्त्रित किया जाता है।···जिनके कन्त परदेश से लौट आए हैं, उनकी खुशी का क्या पूछना ! झूलनी रागिनी उन्हीं सौभाग्यवतियों के हृदय के मिलनोच्छ्वास से झूम रही है खेतों में !

मास असाढ़ चढ़ल बरसाती
घर-घर सखी सब झूलनी लगाती
झूली गावे,
झूली गावति मंगलबानी
सावन सखि अलि हे मस्त जवानी···
देखो, देखो !
देखो-देखो सखि री बृजवाला
कहाँ गये जशोवाकुमार, नन्दलाला
···देखो, देखो।

घर का कन्त कहीं गाँव में ही राह न भूल जाये !···देखो, देखो, कहाँ गये ?

Funding by IKS-MoE

किसी की फूलकी पर भूल तो नहीं रहे ?
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"चाय !"

"कौन ? कमला !" डाक्टर अकचका जाता है।

"हाँ, चमकते हो क्यों ? तुमको भी सूई का डर लगता है ! यह मीठी दवा नहीं, मीठी चाय है डाक्टरसाहब ! जब चाय पीकर ही जीना है तो आँख खुलते ही गर्म चाय की प्याली सामने रखने की जरूरत है।" कमला पास की कुर्सी पर बैठकर चाय बनाती है। प्यारू खड़ा-खड़ा मुस्करा रहा है।···प्यारू को इतना खुश बहुत कम बार देखा गया है।···'अब समझें ! यह प्यारू नहीं कि हर बात में 'नहीं' कर टाल दिया।···चाय बनावें ? तो नहीं। अण्डा बनावें ? तो नहीं। खाना परोसें ? तो नहीं।···अब समझें !'

उनतालीस

सन्थाल लोग वहाँ के नहीं, बाहरी आदमी हैं ?

"···जरा विचारकर देखो। यही तन्त्रिमा का सरदार है···अच्छा, तुम्हीं बताओ जगरू, तुब लोग कौन ततमा हो ? मगहिया हो न ? अच्छा कहो, तुम्हारे दादा ही पच्छिम से आये और तुम्हारी बेटी तिरहुतिया तन्त्रिमा के यहाँ ब्याही गयी है। मगहिया चाल-चलन भूल गये, अब तिरहुतिया और मगहिया एक हो गये हो। लेकिन सन्थालों में भी कमार हैं, माँझी हैं ! वे लोग अपने को यहाँ के कमार और माँझी में कभी खपा सके ? नहीं। वे तो हमेशा हम लोगों को ही छोटा कहते हैं। गाँव से बाहर रहते हैं।···कहो तो गाने किसी सन्थाल को, बिदेशिया का गाना या एक कड़ी चैती ! कभी नहीं गावेगा। इसका दारू हरगिज नहीं पियेगा। जब पियेगा तो 'पँचाय' ही। समझो ! सोचो !" तहसीलदारसाहब दरवाजे पर बैठे हुए बीहन लेनेवालों से कहते हैं।···डेढ़ सौ से ज़्यादा लोग हैं। कालीचरनजी भी हैं, बासुदेवजी और बालदेवजी भी हैं।

तहसीलदारसाहेब एकदम ठीक कह रहे हैं।···नहीं भाई, जो भी कहो, तहसीलदारसाहेब ही एक आदमी हैं जो कि गाँव की भलाई-बुराई की बात समझते हैं।···ठीक कहते हैं तहसीलदारसाहेब। एकदम से 'फाटक खोल' हुकुम दे दिये हैं, "कोई बात नहीं। इस बार तुम लोगों को सन्देह क्यों हुआ ? अधियादार लोग तो बीहन के वाजिब हकदार हैं। और जो लोग मेरे अधिया नहीं हैं, उन्हीं से पूछो कि किसी साल हमने लौटाया है किसी को ? तब बात यह है कि पिछले साल जैसी उपज हुई थी सो तो देखा ही हुआ है। तिस पर पेडीलाभी[1] कानून का देना अभी बाकी है। बहुत कोशिश-पैरवी करके किसी तरह एक सौ मन कराया

---

१. पैडी लेवी कानून।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है । हरगौरी बाबू का किया से तो पाँच सौ मन लग गया था । इनसे शायद दरोगासाहेब ने पूछा और इन्होंने बता दिया कि पाँच हजार मन धान होता है । वह तो थाना कांग्रेस के सिकरेटरी ने कितनी कोशिश करके इसको एक सौ मन बनाया है ।"…कल हरगौरी बाबू से पूछ रहे थे कि कहिए बाबू हरगौरीजी ! यदि पाँच सौ मन धान अभी दे देते तो गाँववालों को बीहन और खर्चा कहाँ से मिलता ? तहसीलदार होने से ही नहीं होता है…।

ठीक बात ! ठीक बात ! …वाजिब कहते हैं तहसीलदारसाहेब ।

…कालीचरन के मन में बहुत-से सवाल आते हैं, पर वह नहीं पूछेगा । उस दिन सेकरेटरीसाहेब ने साफ कह दिया कि 'कामरेड, अभी संघर्ष मत छेड़ो । सबसे पहले अभी किसी एक इलाके में, एक एरिया लेकर इसको इसपारमिन[1] करेंगे, तब इसके बाद और इलाके में इसके लिए हुकुम देंगे । सो भी संघर्ष से एक महीना पहले दरखास्त लेना होगा लोगों से, फिर इनकुआएरी, फिर ऐजकूटी मिटिंग, तब जाकर राय निकलेगी कि संघर्ष करना चाहिए कि नहीं । मेल-माफत और पंचायत से अभी जो काम चले, चलाइए । कुछ दिनों के बाद तो पार्टी एकदम धावा बोल देगी ।'

"हाँ, तहसीलदारसाहेब ठीक कहते हैं ।" कालीचरन भी कहता है । बालदेवजी भी कहते हैं ।…बौनदास कहाँ है ? पुरैनियाँ से लौटकर नहीं आया है ?

हरगौरीबाबू भी अच्छी तरह समझ गये हैं कि काली टोपीवाले नौजवानों की लाठियों से ज्यादा खतरनाक हथियार है—कानूनी नुक्स ! तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद इसके माहिर हैं । उनसे अभी बैर मोल लेना ठीक नहीं ।

सिंघजी को हरगौरी की तहसीलदारी पर पूरा भरोसा था, काली टोपीवाले संयोजकजी पर पूरा विश्वास था ।…लेकिन तहसीलदार विश्वनाथ ने तो कानून की ऐसी लकड़ी लगायी है कि भूमिहार भी मात ! राजपूत का बल्लम-बर्छा उसके आगे क्या करेगा ?…ऊपर से कितना हँसमुख और कितना मीठबोलिया है तहसीलदार बिसनाथ, लेकिन पेट में जिलेबी का चक्कर है । राज का नया सरकिलमैनेजर दाँतों तले उँगली दबाता है । ऐसा कानूनची आदमी !…कहा, इस्तीफ़ा दे दो । इसीलिए तड़ाक् से दे दिया । काँगरेस का लीडर हो गया । हद है ! इससे पार पाना मुश्किल है !

हरगौरी ने सिंघजी के नाम सन्थालटोली की पचीस एकड़ जमीन बेनामी करवायी है, जिसमें से दो एकड़ सिंघजी को मिलेगी ।…

खेलावन ने भी पाँच बीघा सन्थालटोली की बन्दोबस्त ली है ।

बेतार का खबर सुमरितदास कोयरीटोलावालों से कहता है, 'यदि हरगौरी तहसीलदार ने तहसीलदार बिसनाथपरसाद के नाम दो सौ बीघे और मेरे नाम से पचास बीघे की लिखा-पढ़ी नहीं की तो फिर देख लेना ! हाँ कायस्त है, खेल नहीं ।"

सुमरितलाल बेतार अब फिर तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के साथ है । अब

---

१. एक्सपेरिमेंट ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
तो जैसे हरगौरी तहसीलदार, वैसे विश्वनाथ तहसीलदार। लेकिन शर्त यही है···।

सन्थालों को सब मालूम है।

अभी बालदेवजी, बावनदासजी और कालीचरनजी सब एक हो गये। सन्थाल लोग अच्छी तरह जानते हैं, कोई साथ देनेवाला नहीं। धरमपुर में देखा नहीं ? ऐसा ही हुआ। इसीलिए बड़े-बूढ़े ठीक कह गये हैं—यहाँ के लोगों का विश्वास मत करना। जब जिससे जो फायदा हो ले लेना, मगर किसी के साथ मत होना। सन्थाल सन्थाल है और दिक्कू दिक्कू[1]। पँचाय देह को पत्थल की तरह मजबूत बनाता है और पीकर देखो यहाँ का दारू, पत्थल को गला देगा। हरगिज नहीं। दिक्कू आदमी, भट्ठी का दारू, इसका बिसवास नहीं।···अरे, तीर तो है ! यही सबसे बड़ा साथी है। साथी साथ छोड़ सकता है, तीर कभी चूकता नहीं···

चुनका माँझी क्या बोलता है ?···डाक्टर से क्या पूछने गया था ? पूछना चाहिए था कालीचरन से, बालदेवजी से, तहसीलदारसाहब से।

बालदेव और कालीचरन लोगों को धान दिला रहे हैं, तहसीलदार से।

"डाक्टर ने कहा कि तुम लोग ही जमीन के असल मालिक हो। कानून है, जिसने तीन साल तक ज़मीन को जोता-बोया है, जमीन उसी की होगी।"

"डाक्टर ने कहा है ?"

डाक्टर ने ?···सीनियाँ मुरमु हँसती है—हँ हँ हँ हँ ! "डाक्टर हम लोगों का नाच देखना चाहता है। रोज टोकता है। हँ हँ हँ !"

जवान जोगिया माँझी तीर के पूंछ पर जंगली हंस के परों को बाँधते हुए कहता है, "डाक्टर ने खरगोस का दाम दिया था दस रुपैया। बारह रुपैया दर्जन चूहा।···दो सियार के बच्चों का दाम पचास रुपैया। दे सकता है कोई बड़ा आदमी इतना दाम ?···सरकारी आदमी है, मगर घूसखोर नहीं।"

कालीचरन को एकान्त में कहती है मंगलादेवी। एकदम अनुनय करके कहती है, "काली, तुम मत जाना। सन्थाल लोग नहीं मानेंगे; जरूर तीर चलावेंगे। मैं जानती हूँ। तुम नहीं जानते काली बाबू, ये लोग कैसे होते हैं। उनकी सूरतें भ्रम में डालनेवाली है। देखने से पता चलेगा कि बहुत सीधे हैं, मगर···। तुम मत जाना काली, तुम्हें मेरे सिर की कसम !"

ठीक ही तो है, जो लोग सरगना मेम्बर हैं, वे क्यों जायेंगे !

···वासुदेव, सुनरा और सनिचर भी नहीं जायेगा !

···हाँ, प्यारे भी नहीं जायेंगे।

···सोमा जट जायेगा ?···जाने दो, वह मेम्बर नहीं है।

बालदेवजी तो ऐसी जगह जायेंगे ही नहीं। वहाँ हिंसा का भय है; वे नहीं जा सकते।···तहसीलदारसाहेब लीडर हुए हैं, खुद जायें या लठैतों को भेजें। हिंसा करें या अहिंसा करें। बालदेवजी तो सिर्फ चवन्निया मेम्बर हैं। बावनदास यदि रहता तो अभी अकेले सबको, मय तहसीलदार बिसनाथ के कानून के, मात कर देता। लेकिन उसका दिमाग खराब हो गया है। सात दिन हुए चिट्ठी लिखाने

---

१. सन्थाल लोग गैर-सन्थाल को दिक्कू कहते हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया है सो लौटा नहीं है। गाँधीजी को चिट्ठी देगा।···गाँधीजी को इतनी फुर्सत कहाँ है बाबा, जो तुमको जवाब देंगे ?···लेकिन नहीं, बावन ने बहुत बार चिट्ठी लिखवायी है और हर बार जवाब आया है—'भाई बावनदासजी, आपका खत मिला।' उस बार ससांकजी सबको पढ़कर सुना रहे थे—महात्माजी ने बावनदास को परनाम लिखा है।···बावनदास को महात्मा भी 'भगवान' कहते थे।···बावन जरूर अवतारी आदमी है। वह ठीक कहता था—भारथमाता और भी जार-बेजार रो रही है!

"मैया रे मैया ! बाबा हो बाबा !···"

कौन रोती है ?···रमपियरिया रोती है, उसके भाई गनोरी को तीर लग गया ? कहाँ लगा। किसने मारा ?···सन्थालों ने ? कहाँ ? लोग भागे क्यों आ रहे हैं ?···

गाँव में कुत्ते भूँक रहे हैं। कौए काँव-काँव कर रहे हैं।···जोतखी काका ठीक कहते थे—गाँव में चील-काग उड़ेगा।···

"हँसेरी ! बलवा ! लाठी निकाल रे !"

"कहाँ हँसेरी ?"

"भाला निकालो रे !"

"कहाँ हँसेरी ? कैसा बलवा ? क्या बात है ?"

"सन्थाल लोग तहसीलदार बिसनाथपरसाद के चालीस बीघावाले बीहन के खेत में बीहन लूट रहे हैं।"

"नयी बन्दोवस्तीवाली जमीन में ?"

"नहीं भाई, अपनी खास जमीन में, कोठी के पासवाली जमीन में,···लाठी निकालो।"

"गनोरी ने हल्ला किया; तीर छोड़ दिया। जाँघ में लगा है तीर। लहू की नदी बह रही है। बेहोस है। इसपिताल में डाक्टर लाया गया है।···सन्थाल लोग बेखौफ धान का बीचड़ उखाड़ रहे हैं।"

चलो ! चलो ! मारो !···साला सन्थाल ! बाहरी आदमी !···जान जाये तो जाये। तहसीलदार बिसनाथपरसाद की ही जमीन पर धावा किया है !···चलो रे !···

···भौं-भौं भूँ ऊँ-ऊँ ! कुत्ते परेशान हैं भूँकते-भूँकते।

···रिंग-रिंग-रिंग-रिंग !

···डा-डा-डा-डा-डा-डा···

सन्थालों के डिग्गा और मादल एक स्वर में बोल उठे—रिंग-रिंग-रिंग-रिंग-रिंग ! डा-डा-डा-डा !

आज रिंग-रिंग-ता-धिन-ता अथवा डा-डिग्गा-डा-डिग्गा नहीं, सिर्फ रिंग-रिंग-रिंग-रिंग···, डा-डा-डा-डा !···यह खेत में बजा रहा है, सन्थालिनों को सचेत कर रहा है, तुम लोग भी तैयार रहो···डा-डा-डा-डा !···सन्थालिनें जवाब देतीं—रिं-रिं-रिं-रिं ! अर्थात्, तैयार हैं, जूड़े में फूल खोंसने में बस जितनी देर लगे ! तैयार हैं !···

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"जै, काली माई की जै !" दो सौ गलों की आवाज़ सुनकर कालीथान के बड़गाछ पर बैठे हुए कौए एक ही साथ काँव-काँव कर उड़ते हैं । कुत्ते और भी जोर से भूँकने लगते हैं ।

"जै ! काली माई की जै !"

"महात्मा गाँधी की जै !"

"इनकिलाब जिन्दाबाद !"

"भारथमाता की जै !"

"सोशलिस्ट पाटी जिन्दाबाद !"

"झण्डा हिन्दू राज का !"

"हिन्दू राज की जै !"

"तहसीलदार बिस्नाथपरसाद की जै !"

"बालदेवजी की जै !"

"घेर लो चारों ओर से ! भागने न पावें !"···हो-हो-हो-हो-हो !···

अब नारा नहीं । सिर्फ हो-हो-हो-हो !···

"घेर । घेर ।···मारो । हो-हो-हो !"

"तीर चला रहा है । लेट जाओ ।···तीर चलाओ !"

"मारो ? गुलेटा चलाओ ।"

"बिरसा माँझी भागा जा रहा है, मारो भाला !"

···बिरसा पानी में गिर पड़ा—छप् ! भाला लग गया ।

···सुखानू को क्या हुआ । तीर लग गया, कलेजे में ?

सन्थालिनें भी तीर चलाती हैं ?

बच्चे भी ?

"बिरसा माँझी गिर पड़ल रे !" ड़ा-डा-डा-डा-डा !

···रिं-रिं-रिं-रिं ! "गिरने दो । तुम भी गिरो !"

"बैठके तीर चला सोनिया !"

'सुखी मुरमू गिरल रे !" डा-डा-डा-डा !

"गिरने दो !···तुम भी गिरो ।"···रिं-रिं !

"जगारी बेटा, ठीक निसाना लगा बेटा । हरगौरी तहसीलदार के कलेजे पर ! हाँ ! वाह बेटा !"

···डा-डा-डा-डा !"···हरगौरी तहसीलदार गिरल रे !"

"गिरने दो !"···रिं-रिं-रिं-रिं !

···तहसीलदार ? हरगौरी तहसीलदार गिर पड़ा ?···भागो मत । ऐ ! सुनो ! तुम लोगों को अपना माँ-बहन की कसम, गुरु-देवता की कसम, काली किरियां !···जो भागे वह दोगला !···सन्थालों के तीर खतम हो रहे हैं । अब घेरके मारो ।···मंगलदास को सँभालो । चलो ! जै, काली माई की जै !

"मारो भाला ! अरे बच्चा नहीं है, इसी ने तहसीलदार को मारा है ।"

"वाह बहादुर ! ठीक है ।···अब लगाओ गुलेटा उस बूढ़े को, साला डिग्गा बजा रहा है !"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"भाग रहा है। साले सब भाग रहे हैं। घेरो ! भागने न पावे ! सन्थालिनें पाट के खेत में छिपी हुई हैं। घेर लो।"

···"एकदम 'फिरी' ! आजादी है, जो जी में आवे करो ! बूढ़ी, जवान, बच्ची जो मिले : आजादी है। पाट का खेत है। कोई परवाह नहीं है।···फाँसी हो या कालापानी, छोड़ो मत।"

सन्थालिनें भी रोती हैं, दर्द से छटपटाती हैं ?···चिल्ला-चिल्लाकर रोती हैं या गाती हैं ?

···कुहराम मचा हुआ है पाट के खेतों में, कोठी के जंगल में।···कहाँ दो सौ आदमी और कहाँ दो दर्जन सन्थाल, डेढ़ दर्जन सन्थालिनें ! सब ठण्डा।··· सब ठण्डा ?

सन्थालटोली के चार आदमी ठण्डे हुए, सात घायल हुए और एक लड़के की हालत खराब है। सन्थालिनें दुहरे दर्द से कराह रही हैं।···

तहसीलदार की हँसेरी में दस ठण्डे हुए, बारह बुरी तरह जख्मी हुए और तीस आदमी को मामूली घाव लगा है।

सन्थालटोली को लूट लिया गया। तहसीलदार हरगौरी की हालत बहुत खराब है, शायद नहीं बचेंगे।

चालीस

जोतखी ठीक कहते थे—गाव में चील-काग उड़ेंगे और पुलिस-दरोगा गली-गली में घूमेगा।

पुलिस-दरोगा, हवलदार और मलेटरी, चार हवागाड़ी में भरकर आये हैं। ···दुहाई माँ काली !

इसपी, कलक्टर, हाकिम अभी आनेवाला है।

लहास !···लहास !···बाप रे—कौन कहता था कि अँगरेजबहादुर का अब राज नहीं रहेगा ?

"तहसीलदार हरगौरी भी मर गये ?···ऐं ! कोई घर से मत निकलो ! पाखाना-पेशाब सब घर के ही अन्दर करो। घर से निकले कि गिरिफ्फ कर लेगा। ···दुहाई काली माई !"

"बलदेवजी को दरोगासाहेब ने बुलाया है ? कलिया···कालीचरनजी को भी ?···देखें, ये दोनों तो किसी से डरनेवाले नहीं हैं, क्या होता है ?···दो लीडर तो हैं।"

"ओ ! आप ही यहाँ के लीडर हैं ?" दारोगासाहब बालदेवजी से पूछते हैं। इसपिताल के फालतू घर में दारोगासाहब कचहरी लगाकर बैठे हैं, मलेटरी ने सन्थालों को गिरिफ्फ कर लिया है। जखमी, घायल, और बूढ़े-बच्चों को भी !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
…सबको गिरफ्तार किया है ? नहीं, जखमी लोगों की मरहम-पट्टी तो कल ही डाक्टरसाहब ने कर दी है। दो सन्थाल और चौदह गैर-सन्थाल घायलों को पुरैनियाँ के बड़े इसपिताल भेजा गया है। सबों की लहास भी चली गयी है। सिंघजी, शिवशंकरसिंह और हरेक टोला से दो-चार आदमी लहास के साथ गये हैं। न जाने कब लहास मिले ? उँह, चीर-फाड़कर मिलेगी ! हे भगवान ! …

बालदेवजी क्या जवाब दें ?…लीडर हैं। किसके लीडर ? सन्थालों के या गैर-सन्थालों के ?…खखारकर गले को साफ करते हुए बालदेवजी के मुँह से बस वही पुराना जवाब निकलता है, जो उसने हरगौरी को दिया था जिस दिन कलिया पगला गया था।

"नहीं हुजूर ! हम तो मूरख और गरीब ठहरे। मूरख आदमी, चाहे गरीब आदमी, कभी लीडर हुआ है हुजूर ?"

दारोगासाहब बालदेवजी को पास की कुर्सी पर बैठने को कहते हैं, "अरे, हम आपको जानते हैं बालदेवजी, बैठिए ?"

वासुदेव और सुन्दर एक-दूसरे का मुँह देखते हैं।…कालीचरनजी को कुछ पूछा भी नहीं ?…लो, तहसीलदारसाहब सँभाल लेते हैं।

"दारोगासाहब यही हैं, कालीचरनबाबू, यहाँ के सोशलिस्टों के लीडर ! बहादुर हैं ! लेकिन सिर्फ बहादुर ही नहीं, मगज भी है !"

"ओ हो ! कालीचरनजी हैं ? आइए साहब, आप लोग तो साहब, क्या कहते हैं, जो न करवाइए।" दारोगासाहब मुँह में पान-जर्दा डालते हुए कहते हैं, "लेकिन यहाँ तो सुना कि आप लोगों ने बड़े दिमाग से काम लिया है। हमको तो सुबह आते ही सारी बातों का पता चल गया। तारीफ करने के काबिल ! वाह ! …बैठिए।"

कालीचरन बैठते हुए कहता है, "देखिए दारोगासाहेब, यदि आपस की पंचायत से सारी बात का फैसला हो जाये तो हम लोगों को पागल कुत्ते ने नहीं काटा है जो…"

"आपस की पंचायत से ? यह खूनी केस…?" दारोगासाहब का पान-भरा मुँह एकदम गोल हो जाता है।

"नहीं, यह नहीं, यही आधी बट्टेदारी का सवाल !"

"ओ !" दारोगासाहब ने पीक की कुल्ली फेंकते हुए कहा, "ओ ! सो तो ठीक है ! अरे आप ही हैं, सोशलिस्ट पार्टीवाले हैं। कहिए तो, जो काम पंचायत से या चार आदमी की राय से नहीं होगा, वह क्या कहते हैं, तूल-फजूल से हो सकता है ?"

"हिंसा के रास्ते पर तो हरगिज जाना ही नहीं चाहिए।" बालदेवजी बहुत गम्भीर होकर कहते हैं।

"क्या कहते हैं !" दारोगासाहब बालदेवजी की बात में टीप का बन्द लगा देते हैं, "क्या कहते हैं !" दारोगासाहब बात करते समय हाथ खूब चमकाते हैं और कनखी भी मारते हैं।

वासुदेव और सुनहरा एक-दूसरे को देखते हैं—बालदेवजी जानते ही क्या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जो बोलेंगे। देखा, कालीचरनजी ने कैसा गटगटाकर जवाब दे दिया !

"हिंसा अहिंसा का सवाल नहीं है बालदेवजी, असल है बुद्धि ! यहीं पर हमारी पार्टी के कोई और कामरेड रहते तो हो सकता है, दूसरी बात होती। बुद्धि की बात है।" कालीचरन बालदेवजी को जवाब देता है।

कालीचरन और बालदेवजी ने दारोगाजी को दिखला दिया कि बुद्धि है ! उमेर देखकर मत भूलिए दारोगासाहेब, अब वह बात नहीं है !

"अच्छा तो बालदेव बाबू, जब यह वकूआ हुआ तो, क्या कहते हैं, आप कहाँ थे ?" दारोगासाहब पूछते हैं।

बालदेवजी फिर खखारते हैं—"ह ख् जी ! हुजूर !...हम तो मठ पर थे।...जी, बात यह है कि हम वैष्णव हैं। उस दिन हमको गुरुजी कण्ठी देनेवाले थे। सुबह तो धान दिलाने में ही कट गयी। पिछले पहर को हम जैसे ही कण्ठी लेकर उठे कि...ततमाटोली की रमपियरिया रोती हुई गयी।"

"ओ ! आपको पहले से कुछ पता नहीं था ?" दारोगासाहब गम्भीर होकर पूछते हैं।

"जी ! इनको क्या, किसी को पता नहीं।" खेलावनसिंह यादव हिम्मत से काम लेते हैं। आखिर दारोगासाहब के लिए इतना खाने का इन्तजाम भी तो वही कर रहे हैं। यह दारोगासाहब से क्यों नहीं बोलेंगे ? तहसीलदारसाहब कुछ नहीं बोलते हैं।

"ओ ! खेलावनजी ! आइए, बैठिए !"

"ठीक है। हम यहीं हैं।...जरा हुजूर, जल्दी किया जाये ! उधर ठण्डा हो जायेगा।" खेलावनजी कहते हैं।

सिर्फ यहाँ के दोनों लीडर ही बुद्धिवाले नहीं। और लोग भी बुद्धि रखते हैं !...

"हुजूर ! हमारा लड़का अभी रहता तो हुजूर से अभी अंग्रेजी में बतिया लेता। रमैन जैसी एक किताब है, लाल, मोटी...उसी में देखकर वह आपसे अंग्रेजी में बतिया लेता।" खेलावनसिंह यादव कहते हैं।

"अच्छा ? आपका लड़का अंग्रेजी बोल लेता है ?"

"हाँ, डागडरबाबू से बराबर अंग्रेजी में ही बोल लेता है।"

"मोकदमा का राय भी पढ़ लेता है।" बालदेवजी कहते हैं।

"एड किलास में पढ़ता है।" कालीचरनजी कहते हैं।

"अच्छा, आप कहाँ तक पढ़े हैं कालीचरनजी ?...कोई स्कूल में नहीं ?...वाह साहब, क्या कहते हैं, आपकी बोली सुनकर तो कोई नहीं कह सकता कि आप जाहिल...ओ ! पढ़-लिख लेते हैं, अखबार भी पढ़ लेते हैं ? वाह ! रमैन भी पढ़ते हैं ? महाभारत भी ? ओ, क्या कहते हैं कि...।"

"बालदेव भी 'अकबार' पढ़ता है," खेलावनसिंह यादव कहते हैं, "अकबार तो हम लोग भी पढ़ लेते हैं।...लेकिन बहुत झूठ बात लिखता है अकबार में। उस बार लिखा था कि एक औरत थी, सो कुछ दिनों के बाद मर्द हो गयी। कहिए भला !"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"अच्छा तो कालीचरनजी, आप कहाँ थे, जब यह वकूआ हुआ ?" दारोगा-साहब कमर के बेल्ट को खोलते हुए कहते हैं।

अगमू चौकीदार को डर होता है, कहीं दारोगाजी पेटी खोलकर मारना न शुरू कर दें बालदेव और कालीचरनजी को।...जहाँ दारोगाजी पेटी खोलते हैं कि अगमू का चेहरा फक् हो जाता है।...नहीं, ऐसा नहीं कर सकते हैं दारोगाजी !

"जी, मैं तो उसी दिन सुबह को धान दिलाकर, ठीक बारह बजे दिन में ही पुरैनियाँ चला गया था। तहसीलदार हरगौ...तहसीलदार बिस्नाथपरसादजी जानते हैं।"

"ओ ! आप पुरैनियाँ गये थे।" दारोगासाहब एक लम्बी सांस छोड़ते हैं।

"अच्छा, तो अब उस पहर को काम कीजिएगा दारोगासाहब !" तहसील-दार साहब कहते हैं।

"नहीं तहसीलदारसाहब ! एस० पी० आनेवाले हैं। हमको अभी सब काम खत्म कर रखना है। गवाहों का इजहार..."

"जी, कुछ असल गवाही, दो-तीन लीजिए। और सब बाद में।...अरे कालीबाबू, बालदेवबाबू, तुम लोग तो जो सच्ची बात है, वही कहोगे। कोई झूठी गवाही तो नहीं।...लिख लीजिए इन दोनों के बयान, दस्तखत करना दोनों जानते हैं।"

"आप लोगों का क्या खयाल है?" दारोगासाहब धीरे से पूछते हैं।

"हाँ, दसखत करने में क्या है ?" कालीचरन कहता है।

...कालीचरनजी हाथ झाड़कर दस्तखत करते हैं और बालदेवजी बड़े 'प रे म' से, आस्ते-आस्ते लिखते हैं।...भाई बालदेवजी सचमुच में साधु हैं।

"बलदेव ?" दारोगासाहब कहते हैं, "बालदेवजी, जरा 'ब' में एक लाठी लगा दीजिए और 'द' के ऊपर, क्या कहते हैं, एक तलवार-सी।...और बाकलम खुद !"

"दारोगासाहब, बालदेवजी नाम में भी लाठी-तलवार नहीं लगाते हैं। हिंसाबाद...।" कालीचरन मुस्कराकर खड़ा हो जाता है।

दारोगासाहब ठठाकर हँस पड़ते हैं। इसके बाद सभी लोग हँस पड़ते हैं।

अलबत्ता जवाब दिया कालीचरनजी ने।...दारोगासाहेब पानी-पानी हो गये।

...देखो ! बुद्धि है या नहीं ?

इकतालीस

नौ आसामी का चालान कर दिया।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नौ सन्थालों के अलावा जो लोग घायल होकर इसपिताल में पड़े हैं वे लोग भी गिरफ्फ़ हैं। पुरैनियाँ इसपिताल में बन्दूकवाले मलेटरी का पहरा है।

ग़ैर-सन्थालों में कोई गिरिफ्फ़ नहीं हुआ।···लेकिन, यह मत समझो कि मुफ्त में यह काम हुआ है।···दारोगासाहब कहने लगे कि खेलावनजी, आपके बारे में एस० पी० साहब को सन्देह हो गया है कि आपने सभी यादवों को हँसेरी में जाने के लिए जरूर हुकुम दिया होगा।···खेलावनजी की हालत खराब हो गयी। वह तो तहसीलदार भाई थे, तो पाँच हजार पर बात टूट गयी। नहीं तो···नहीं तो अभी बड़े घर की हवा खाते रहते खेलावनजी! सिंघजी घर में नहीं थे; शिवशङ्करसिंह भी नहीं। अब सिंघजी लोगों के मन में क्या है सो कौन जाने?···दरोगा भी तो राजपूत ही है। आदमी के मन का कुछ ठिकाना नहीं, कब क्या करे।···मुफ्त में सबकी गर्दन नहीं छूटी है। पाँच हज़ार!

तहसीलदार बिस्नाथ को कुछ लगा कि नहीं?···सुमरितदास बेतार को आज तीन दिनों से पेट में सूल हो गया है, नहीं तो सब बात कह जाता।··· अरे! बहुत दिनों जियेंगे सुमरितदासजी! बहुत उमेर है!

"तो हमारा उमेर तुम लोग क्या लगाते हो?"

"यही चालीस।"

"चालीस नहीं, पैंतीस।···जामुन का सिरका बिना पानी के पी गये थे, इसीलिए दाँत सब झड़ गये।"

"अच्छा सुमरितदासजी, कुछ पता है कि···?"

"अरे! यह मत समझो कि सुमरितदास सूल से घर में पड़ा हुआ था। रामझरोखे बैठके सबका मोजरा लें···। पूछो, क्या जानना चाहते हो?"

"क्या तहसीलदारसाहेब को भी रुपैया लगा है?"

"तहसीलदार बिस्नाथपरसाद को इतना बेकूफ़ नहीं समझना। वह दारोगा तो यह तहसीलदार। 'तुम कौआ तो हम कैथ' वाली कहानी नहीं सुने हो?"

"तहसीलदार हरगौरी बेचारा···"

"अति संघर्ष करे जो कोउ, अनल प्रगट चन्दन ते होहिं! सियावर रामचन्द्र की जै!"

"लेकिन राजपूतटोले को तो इसपीसाहेब भी नहीं छोड़ सकते हैं। जानते हो इसपीसाहेब क्या कहते थे?'···यह समझ में नहीं आता है कि तहसीलदार बिस्नाथपरसाद की जमीन से बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरगौरीसिंह क्यों गये! जरूर कोई बात है!'···सिंघजी को एक चरन लगेगा।"

"गवाही में किन लोगों का नाम है?"

"अरे, गवाही क्या? बोलो तुम्हीं, ईमान-धरम से कि सन्थाल लोग ने जोर जबर्दस्ती किया है या नहीं?"

"इसमें क्या सन्देह!"

"तो गवाही के लिए कोई बात नहीं।···लेकिन गाँव की तकदीर चमकी है। इतना बड़ा केस कभी हाथ नहीं लगेगा। इसमें जो गवाही देने जायेगा, उसको तो तीन-तीन खिलानेवाले रहेंगे। तीनों एक ही केस में नत्थी हैं। समझे?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
···खबरदार ! मेरा नाम नहीं लेना। हाँ !···और मेरा भी तो फैसला नहीं हुआ है। हमको क्या देते हैं लोग ? जितना कागज-पत्तर, लिखा-पढ़ी होगी, सब तो सुमरितदास के मत्थे पड़ेगा। लेकिन इस बार नहीं। पहले फैसला कर लें।"

"सन्थालों में किस-किसकी गवाही हुई ?"

"अरे, सन्थालटोली में गवाह आवेगा कहाँ से, सभी तो आसामी हैं। बड़का माँझी का बारह साल का बेटा भी।···दरोगाजी ने जब पूछा कि बताओ क्यों बीचड़ लूट रहे थे, तो बिरसा ने जवाब दिया कि हम लगाया है। इसके बाद, दरोगाजी ने झाड़-झपटके पूछा तो बिरसा के बाद सबों ने तुरन्त कबूल कर लिया कि बीचड़ तहसीलदार बिस्नाथपरसाद का है। औरतों और बच्चों ने भी कहा —तहसीलदार का बीचड़ है। तब ? उखाड़ता था जबर्दस्ती क्यों तुम लोग ? तो जवाब दिया कि जमींदारी परथा खत्तम हो गयी, लेकिन हमारे गाँव के जमींदारों ने मिलकर हमारी जमीन छुड़ा ली है।···इसीलिए लूट लिया।"

"हा-हा-हा-हा ! साफ जवाब ? जमीन छुड़ा लिया तो बीहन लूट लिया ! हा-हा-हा ! सच ? काली किरिया ! ऐसा ही जवाब दिया ?"

"नहीं तो तुम समझते हो कि सुमरितदास झूठ कहता है ? अरे, यदि सन्थालों ने ऐसा बयान नहीं दिया होता तो क्या समझते हो, तुम लोग अभी घर में बैठकर हा-हा-ही-ही करते ? अभी जेहलखाना में कोल्हू पेड़ते रहते। समझे ! दरोगाजी ने भी सोचा कि आग लगते झोंपड़ा, जो मिले सो लाभ !··· इसीलिए न कहा कि तहसीलदार इतना बेकूफ नहीं। तब, दरोगाजी का इलाका है, जो ऊपरी झाड़-झपड़, पान-सुपाड़ी वसूल सकें। इसमें तहसीलदारसाहेब क्या कर सकते हैं ?···सिंघजी को पाँच हजार और शिवशक्करसिंह को भी उतना ही लगेगा।···डागडर से भी कुछ पूछा है दरोगासाहेब ने। पता नहीं, अंग्रेजी में क्या डिमडाम बात हुई। इसपीसाहेब से भी डागडरसाहेब अंग्रेजी में ही बोल रहे थे। आदमी काबिल है यह डागडर !···हरेक लहास के बारे में क्या लिखा है, जानते हो ? लिखा है कि सन्थालों की मार से मालूम होता है और घाव के मुँह देखकर मालूम होता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए ही इस पर हमला किया है।···और, इधरवालों के लहास को लिखा···।"

"लहास ?"

···लहास ! लाश ! पुलिस-दारोगा, मलेटरी ! मार ! जेहल !··· काला-पानी ! नहीं, फाँसी !···सचमुच ! यदि तहसीलदार बिस्नाथपरसाद नहीं होते तो आज फाँसी !···कालीचरन के आफिस में जाने से और बातों का पता लग जायेगा।

सोशलिस्ट पार्टी के आफिस में भीड़ लगी हुई है।···कालीचरन ने कहा है, आज सुराजी, सोशलिस्ट और भगवान कीर्तन एक साथ गाये जायेंगे। सबसे पहले पुराने जमाने का कीर्तन नारदी-भठियाली कीर्तन होगा।···बूढ़े लोगों के गले में अब भी जादू है !

आजु से बिराजू श्याम कदली के छैयाँ,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आवत मोहनलाल बंशी बजैयाँ !
पीतबसन मकराकृत कुण्डल···!

यही नारदी है ! मृदंग कैसा बजता है—धिधनक-तिधनक ! धिधनक-तिधनक !···

"अब किरान्ती कीर्तन। '···गंगा रे जमुनवाँ' बहुत पुराना हो गया। वह रुलानेवाला कीर्तन मत गवाइए कालीचरनजी !···"

बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह !

···हैं ! वाह से सुनरा ! क्या सँभाला है ! वाह ! भारत का वीर लड़ाका था, मस्ताना भगतसिंह !···सिंह ? भगतसिंह कौन जात था ?

मस्ताना भगतसिंह जानते हो ?···कालीचरनजी कहते थे, पाँच बार फाँसी की रस्सी खींचा। दस-दस आदमी एक-एक ओर लटक गये। खींचने लगे, खींचते रहे और उधर भगतसिंह के मुँह से निकलता जाता था—इनकिलाब, जिन्दाबाघ।

"इनकिलाब, जिन्दावाद ?"

जै ! जै !···

···हाँ, आज कौन इतने जोरों से नारा लगा रहा है ? सोमा जट ?···अरे बाप ! तीन दिन से एकदम लापता था ! एकदम लापता ! लेकिन जानते हो, हँसेरी में सबसे ज्यादा मार किसने किया था ? चार को सोमा ने अकेले गिराया है।···हाँ, खबरदार ! तहसीलदारसाहेब ने मना किया है, सोमा का नाम कोई नहीं ले।···दाग़ी है ! लेकिन, देखते हैं, इधर सुधर रहा है। कालीचरनजी सुधार देंगे।···

अब एक सुराजी कीर्तन होना चाहिए। हाँ, भाई ! सब सन्तन की जै बोलो ! गाँव के देवताओं के परताप से, काली माय की कृपा से, महात्माजी की दया से और किरान्ती···इनकिलास जिन्दाबाघ से, गाँव के लोग बाल-बाल बच गये। सभी कीर्तन होना चाहिए।

भारत का डंका लंका में
बजवाया वीर जमाहिर ने !

राजबल्ली महतो भी हरमुनिया बजाता है। कहाँ सीखा ?···सिरिफ दाँत बड़े हैं सामनेवाले। गाने के समय मुँह कुदाली की तरह हो जाता है।···भारथ का डंका लंका में···

···बालदेवजी कहाँ हैं ? सुना कि बालदेवजी साधु हो रहे हैं। कण्ठी ले ली है। कण्ठी पर किसका नाम जाप करेंगे ? महतमाजी का या सतगुरु का ?

चर्खा स्कूल की मास्टरनीजी कितना मुटा गयी हैं ! अरे बाप !···सिरिफ कालीचरनजी से ही हँसकर बोलती हैं। कालीचरनजी आज कुर्ता में गोल-गोल क्या लगाये हुए हैं ? सुसलिट पाटी का मोहर है ?···देखा, कालीचरनजी मोहरवाले लीडर हो गये हैं। बालदेवजी को, बावनदास को या तहसीलदार साहब को मोहर है ? मास्टरनीजी उसमें क्या लगा रही हैं ? फूल ? वाह ! अब और बना ! फूलमोहर छाप सिकरेट ! ···डाकडरसाहब का नौकर कहाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आया है ! ...ए ! चुप रहो ! चुप रहो ! शान्ती, शान्ती ! ...

"कालीचरनजी को डाक्टरबाबू बुलाते हैं," प्यारू मंगलादेवी से कहता है।"

"अ...ज्जा ! काली ! डाक्टरबाबू को निमन्त्रण नहीं दिया ? तहसीलदारसाहेब, खेलावनजी वगैरह तो कचहरी गये हैं। डाक्टरसाहेब तो थे। ... जाओ, बुला रहे हैं।"

क्या बात है ? ...जरूर कोई बात है। ...सुमरितदास बेतार कहाँ है ? एक बार बोलिए प्रेम से...

कालीं माई की जै !
महात्मा गांधी की जै !
सोसलिट पाटी की जै !
इनकिलास ...

"कालीचरनजी !"

"जी !"

"एक बात कहूँ ! बुरा मत मानिएगा।...हरगौरीबाबू की माँ रो रही है और दूसरे टोले में भी औरतें रो रही हैं। आप लोग कीर्तन कर रहे हैं, यह अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे लगता है कि आज के कीर्तन से आपके भगवान भी दुखी होंगे।"

"हम लोग भगवान को नहीं मानते," कामरेड बासुदेव ने बीच में ही टोक दिया।

"तुम चुप रहो !" कालीचरन कहता है, "हर जगह मत टपका करो।"

सब चुप हैं। हरगौरी की माँ अब भी रो रही है—राजा बेटा रे ! ...गौरी बेटा रे !

कालीचरन की आँखें भी सजल हो जाती हैं। बचपन से ही वह हरगौरी के साथ खेला-कूदा था। पूँजीवादी हो या बूर्जुआ, आखिर वह बचपन का साथी था। वह आज नहीं है। उसकी माँ रो रही है। यह हरगौरी की माँ नहीं रो रही है—सिर्फ 'माँ' रो रही है !

"बासुदेव !"

"..."

"सबों से जाकर कहो—कीर्तन बन्द करें। ...और कोठी के बगीचे में कल सोक-सभा होगी। ऐलान कर दो। समझे ?"

बासुदेव सोचता है, सब बात तो समझे, मगर सोक-सभा का क्या मतलब ? उसमें गीत नहीं गावेगा, भाखन नहीं होगा ? ... बस, पाँच मिनट चुपचाप खड़ा रहना होगा ? ...वाह रे सभा !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बयालीस

हरगौरी की मां रो रही है—"राजा बेटा रे ! ···गौरी बेटा रे !"

हरगौरी की सोलह साल की स्त्री बिना गौना के ही आयी है। वह बहुत धीरे-धीरे रोती है। घूंघट के नीचे उसकी आँखें हमेशा बरसती रहती हैं।

शिवशक्करसिंह पूर्णिया से लौट आये हैं। पुत्र का दाह-कर्म करके लौटे हुए पिता को देखकर डर लगता है। झुकी कमर पर हाथ रख शिवशक्करसिंह बैलों की ओर देख रहे हैं। दो दिनों से घास-पानी छोड़े बैठे हैं दोनों बैल। आँखों में आँसू भर-भरकर, दोनों कभी-कभी चौकन्ना होकर इधर-उधर देखते हैं। फिर एक लम्बी सांस लेकर एक-दूसरे को देखते हैं। एक-दूसरे को जीभ से चाटते हैं, मानो ढाढ़स बँधा रहे हों।···हरगौरी इन्हें कितना प्यार करता था ! जब ये दो साल के बाछे थे, तभी से हरगौरी इनके साथ खेलता था। उसकी बोली सुनते ही दोनों खुशी से नाचने लगते थे। जान से भी बढ़कर प्यार करता था वह ···।

शिवशक्करसिंह की आंखें आंसू से धुंधली हो रही हैं।···जब तक हरगौरी की लाश नहीं मिली थी, उन्हें अपने गिरफ्तार होने का डर लगा हुआ था। दाह-क्रिया समाप्त करके वोकीलसाहेब ने रामकिरपालसिंह को रोका, तो शिवशक्कर-सिंह को लगा कि पुल नीचे धँस रहा है, धरती हिल रही है।

दारोगासाहब रामकिरपालसिंह को गिरिफ्फ करके उधर ले गये और शिव-शक्करसिंह अपने साथियों के साथ वहीं से लौट गये। टीसन तक दौड़ते ही आये थे। न जाने दारोगासाहब के मन में कब क्या हो ?···भाग की बात हुई कि बिरजूसिंह फिसलकर गिर गये और गाड़ी खड़ी हो गयी, नहीं तो शिवशक्करसिंह वहीं लाटफारम पर ही खड़े रह जाते। सबने तो कूद-कूदकर हत्था पकड़ लिया, सिंघजी ने ज्यों ही एक हत्था में हाथ लगाया कि एक काले कोटवाले ने पकड़कर खींच लिया। सिकन्नर के पास जाते-जाते बिरजूसिंघ गिर गये तो गाड़ी खड़ी हो गयी। बेचारे बिरजूसिंघ का एक हाथ कट गया है ! गाटबाबू[1] उसको कटिहार इसपिताल ले गये। जब तक घर नहीं पहुंच गये थे, शिवशक्करसिंह को भरोसा नहीं था। क्या जाने किधर से लाल पगड़ीवाला निकल पड़े ! हसलगाँव हाट के पास एक लाल चादरवाले को देखकर उनका कलेजा धुकधुका उठा था।···भले आदमी ने लाल चादर की पगड़ी क्यों बाँध ली थी ?

घर आते ही हरगौरी की मां को छाती पीटते और जमीन पर लोटकर रोते देखा तो वे भी बच्चों की तरह बिलख-बिलख रोने लगे। 'पुबरिया घर' के ओसारे पर हरगौरी की विधवा बहु घूंघट काढ़े रो रही थी। सामने दीवार पर हरगौरी का फोटो टँगा हुआ है। रौतहट मेला में छपाया था—पगड़ी बाँधकर, हाथ में तलवार लेकर !

"बेटा रे ! ···गौरी बेटा रे !"

---

१. गार्डबाबू।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिवशक्करसिंह बैल की गर्दन पकड़कर रो रहे हैं—"बेटा रे! गौरी बेटा रे!"

सुमरितदास के कान में सबसे पहले आवाज़ पहुँचती है—ओ! शिवशक्करसिंह आ गये सायद!

"शिवशक्करबाबू! रोइए मत! देखिए, कलेजा पोख्ता कीजिए।...... आप ही इतना जी छोटा कीजिएगा तो औरतों का क्या हाल होगा? हे...! हरगौरी की माँ मर जायेगी। उसको समझाइए सिंहजी! रोइए मत!" सुमरितदास शिवशक्करसिंह को अकवार[1] में पकड़कर ले आते हैं, समझाते हैं तथा आस-पास खड़े लोगों से कहते हैं—"भाई! क्या समझाया जाये, किसको समझाया जाये! पुत्रसोक से बढ़कर और कोई सोक क्या हो सकता है? हम क्या समझायेंगे! हमको तो...खुद भोगा हुआ है। एक-एक कर चार लाल को कमला किनारे अपने हाथ से जला आये हैं। कलेजा पत्थल हो गया है। पुत्रसोक! हे भगवान! किसी को न हो।"

शिवशक्करसिंह और जोर-जोर से रोने लगते हैं। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जाती है। सभी आकर यही जानना चाहते हैं कि और आगे क्या हुआ?...हरगौरी की मृत्यु से ज्यादा दिल दहलानेवाली बात थी रामकिरपालसिंह की गिरफ्तारी! क्यों गिरफ्तार किया? कैसे गिरफ्तार हुआ? और किन लोगों पर...उवारंट है? तहसीलदार बिस्नाथ पर भी?

"तहसीलदारसाहेब आ रहे हैं। मोढ़ा दो रे!"

तहसीलदार को देखते ही शिवशक्करसिंह फिर धरती पर लोट गये और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे—"बिस्नाथ भैया! कलेजा टूक-टूक हो रहा है। भैया हो! कलेजा..."

तहसीलदारसाहब समझाते हैं—"शिवशक्करसिंह, रोइए मत! यह रोना तो जिन्दगी-भर के लिए मिला है। एक दिन रोने से दिल ठण्डा नहीं होगा। लेकिन, अभी रोने का समय नहीं। मालूम होता है, मुकदमा खराब हो गया। सिंहजी के गिरफ्तार होने का मतलब ही है कि मुकदमा खराब हो गया। अब किसके सिर पर कौन आफत है, कौन जाने! खूनी केस है! उठिए, आपसे प्राइविट में एक बात करना है।"

शिवशक्करसिंह तुरत उठकर खड़े हो गये और तहसीलदार साहब के साथ दरवाजे से जरा दूर चले गये। सुमरितदास भी प्राइविट सुनेगा? ...तब ठीक है, असल बात का पता अभी तुरत लग जायेगा।

दरवाजे पर खड़े सभी एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं—अब किसके सिर पर क्या आफत है, कौन जाने! हे भगवान!

"परनाम जोतखी काका!"

जोतखी काका के साथ खेलावन भी आया है। जोतखीजी पास के खाली मोढ़े पर बैठ जाते हैं। खेलावन भी तहसीलदारसाहब के प्राइविट में जाकर शरीक

---

१. बाँहों भरकर, अंकवार।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो जाता है। जोतखीजी धीमी आवाज में लोगों से कहते हैं—"तुम लोग यहाँ खड़े होकर क्या कर रहे हो ?" उनके कहने का ढंग ही ऐसा था, जिसके माने निकलते थे—'तुम लोगों की जान बलाई हुई है क्या ? यहाँ से जितना जल्दी हो सके, खिसक जाओ ! वर्ना क्या ठिकाना ···!'

सब जल्दी से मौका देखकर उठ खड़े होते हैं। जोतखीजी कहते हैं—"यहीं चले आइए तहसीलदार ! सभी चले गये।"

"···लेकिन बात यह है कि एसपी ने तो यह नोक्स पकड़ा है—तहसीलदार विश्वनाथ की जमीन का बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरगौरी क्यों गया था ?" तहसीलदारसाहब कहते हैं।

"रामकिरपाल भैया तो हैं नहीं। हम आपको क्या कहें ?···लेकिन मोकदमा तो आपका ही है। वाजिबन खर्चा तो···आपको ही देना चाहिए।" शिवशक्कर-सिंह गिड़गिड़ाकर कहते हैं।

जोतखीजी कुछ कहने के लिए खखारते हैं, लेकिन सुमरितदास बेतार बीच में ही जवाब देता है—"शिवशक्करसिंह, मोकदमा तहसीलदार बिस्नाथ का नहीं, तहसीलदार हरगौरी का है। पूछिए कैसे ? तो बात यह है कि असल में यह सब 'खुरखार,' बेदखली-नीलामी तो हरगौरीबाबू ने ही सुरू किया था। हमसे ज्यादे कौन जानेगा ?···तहसीलदारी कारबार को आप क्या समझिएगा ? यदि बेदखली और नयी बन्दोबस्ती की बात नहीं उठती तो गाँव में यह लंकाकाण्ड नहीं होता। पहले तो तहसीलदार हरगौरी ने ही सुरू किया। तहसीलदार बिस्नाथ उनके मदतगार हुए तो इन्हीं की जमीन पर सन्थालों ने धावा कर दिया। अब बताइए कि असल में यह मोकदमा किसका हुआ ? असल बात हम जानते हैं ···दारोगा को दस हजार देना ही होगा।"

खेलावन कहता है—"तहसीदार, अब जैसे भी हो, सब कोई सलाह करके गाँव के इस गरह को टालिए।"

"रामकिरपाल भैया हैं नहीं, हम क्या कहेंगे ?" शिवशक्करसिंह बस यही एक जवाब देते हैं।

बहुत देर के बाद जोतखीजी कहते हैं, "जो भी हो, न्याय बात तो यही है कि विश्वनाथबाबू इस मुकदमे में अभी पूरी पैरवी करें।"

अन्त में यही तय हुआ कि सबसे पहले रामकिरपालसिंहजी को जमानत पर छुड़ाया जाये। इसके बाद सब मिलकर, जो वाजिब हो, सोचें। जो खर्चा होगा, सिंहजी लोगों को देना होगा।

जोतखीजी ने मुस्कराते हुए कहा, "आज 'शोशलिष्ट' लोग शोक-शभा करने गये। एक भी आदमी शभा में नहीं गया। अब लोग शभा का अर्थ समझ रहे हैं ! ···हुँ, कोई बात हो तो फुच्च से शभा ! हम कहते थे न, गाँव में एक दिन चील-काग उड़ेगा !"

"जोतखी काका, सभा-जुलूस को दोख मत दीजिए।" कालीचरन बगल में, अँधेरे में खड़ा था।

"आओ काली !" तहसीलदारसाहब हँसते हुए कहते हैं, "तुम लोगों को

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गवाही देनी होगी, सो जानते हो न ? बालदेवजी को भी। तुम्हीं दोनों लीडरों की गवाही पर सारी बात है ।"

कालीचरन ने मोढ़े पर बैठते हुए कहा, 'गवाही देनी होगी तो देंगे। जो बात जानते हैं वह कहने में क्या है ! दरोगा हो, इसपी हो, चाहे मजिस्टर-कलक्टर हो। सच्ची बात कहने में किसका डर है !"

"वाजिब बात ! वाजिब बात !" जोतखीजी को छोड़कर बाकी सभी कहते हैं—"वाजिब बात !"

तहसीलदारसाहब का नौकर रनजीत दौड़ता-हाँफता आता है, "कमली दैया ···फिर !"

"तो यहाँ क्या है ? डाक्टर के यहाँ जाओ !" तहसीलदारसाहब झुंझलाते हुए उठते हैं, "भगवान जाने क्या दवा करते हैं डाक्टर लोग ! इतने दिन हो गये, बीमारी सोलह आना से बारह आना भी नहीं हुई !"

···तो असल बात खुल गयी ! मामले-मुकदमे की सोलहो आने बात जो है सो, कालीचरन और बालदेव के हाथ में है !

"शिव हो ! शिव हो !" जोतखी काका उठते हुए कहते हैं, "कालीबाबू, कल जरा अपना हाथ दिखाना तो ! देखें, तुम्हारे हाथ की रेखा क्या कहती है। जन्म-दिन और महीना याद है ?"

जोतखीजी के पेट में डर समा गया है—कालीचरन और बालदेव के ही हाथ में जब सबकुछ है तो वे जिसका नाम बतला दें, वह गिरिफ्फ हो जायेगा—तुरत। और कालीचरन, कालीचरन ही क्यों, बालदेव भी उन पर मन-ही-मन नाराज है। ···बालदेव का तो उतना डर नहीं, मगर कलिया···शिव हो ! शिव हो !

तेंतालीस

लछमी दासिन आज मन के सभी दुआर खोल देगी। एक लक्ष दुआर !

"बालदेवजी !"

"जी !"

"रामदास फिर बौरा गया है। कल भण्डारी से कह रहा था, लछमी से कहो, एक दासी रखने की आज्ञा दे।···कहिए तो भला !"

बालदेवजी क्या जवाब दें ? दासी रखना धरम के खिलाफ है, यह उनको नहीं मालूम।···दो-तीन महीने ही हुए, उन्होंने कण्ठी ली है। मठ के नियम-धरम, नेम-टेम के बारे में वे क्या कह सकते हैं ! लेकिन महन्थ सेवादास ने भी तो···।

लछमी कहती है—"आप उसे समझाइए बालदेवजी ! वह बौरा गया है। आजकल ततमाटोली में आना-जाना शुरू कर दिया है। भगवान भगत ने कल हिसाब किया है, रमपियरिया की माँ को चार सेर चावल दिलवा दिया है रामदास

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने। मैंने पूछा तो बोला—मठ का पुराना नौकर है, भूख से मरेंगे वे लोग ? जब दिन-भर बैठकर सिरिफ बीजक बाँचनेवाला दूध-मलाई खाता है तो'…।" लछमी कहते-कहते रुक जाती है।

बालदेवजी आजकल कुछ 'मतिसून्न' हो गये हैं। सीधी बात भी समझ में नहीं आती।…कुछ नहीं समझते हैं। कितने सीधे-सूधे हैं !

"आपका मठ पर रहना उसको पसन्द नहीं।" लछमी बालदेव की ओर देखती है।

"तो हम चले जाते हैं। यदि हमारे रहने से मठ का नियम भंग होता है तो हम चले जाते हैं।"

"कहाँ जाइएगा ?"

"चन्ननपट्टी।"

लछमी का कलेजा धड़क उठता है—धक्…! इधर कई दिनों से बालदेवजी बहुत उदास रहते हैं। खाना-पीना भी बहुत कम हो गया है। कहीं घूमने-फिरने भी नहीं जाते। आसन पर पड़े बीजक पाठ करते रहते हैं। तहसीलदारसाहब कह गये हैं—'बालदेवजी की गवाही पर ही मुकदमे की सारी बात है।' बालदेवजी सुनकर बोले, गवाही के लिए हम कठघरा में नहीं चढ़ सकते। महतमाजी कहिन हैं—झगड़ू न जाहू कचहरिया, बेइमनवाँ के ठाठ जहाँ।…आज मठ सूना है, आज ही लछमी सबकुछ कह देगी बालदेवजी से।

"आप चन्ननपट्टी चले जाइएगा…और मैं ?"

"आप ?"

लछमी बालदेवजी की आँखों में आँखें डालकर देखती है। लछमी जब-जब इस तरह देखती है, बालदेव न जाने कहाँ खो जाता है !…एक मनोहर सुगन्ध हवा में फैल जाती है। पवित्र सुगन्ध ! बीजक से जैसी सुगन्धी निकलती है।

"हाँ ! मैं कहाँ जाऊंगी ? मेरा क्या होगा ? महन्थ की दासी बनकर ही मैं मठ पर रह सकती हूँ।" लछमी की आँखें भर आती हैं।

"नहीं लछमी, तुम…रामदास की दासी नहीं। मैं…तुम…आप…।"

"बालदेवजी !" लछमी पगली की तरह बालदेवजी से लिपट जाती है, "रच्छा करो बालदेव ! तुम कह दो एक बार—तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूँगा ! तुम बोलो—चन्ननपट्टी नहीं जाऊँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ बालदेव ! दुहाई !"

"लछमी !" बालदेवजी लछमी को सँभालते हुए कहते हैं, "कोई देख लेगा।"

लछमी बालदेवजी के गले से हाथ छुड़ाकर अलग बैठ जाती है। सिर नीचा करके सिसकती है।

बालदेव की सारी देह झन्न-झन्न कर रही है। कनपट्टी के पास, लगता है, तपाये हुए नमक की पोटली है।…एक बार आसरम में उसके कान में दर्द हुआ था। गांगुलीजी ने नमक की पोटली से सेंकने के लिए कहा था।…कलेजा धड़-धड़ कर रहा है। लछमी की बाँह ठीक बालदेव के नाक से सट गयी थी। लछमी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के रोम-रोम से पवित्र सुगन्धी निकलती है। चन्दन की तरह मनोहर शीतल गन्ध निकल रही है। बालदेव का मन इस सुगन्ध में हेलडूब[1] कर रहा है। वह लछमी को छोड़कर चन्ननपट्टी में कैसे रह सकेगा ?···रूपमती, मायजी, लछमी !

"महतमाजी के पन्थ को मत छोड़िए बालदेवजी ! महतमाजी अवतारी पुरुख हैं। आजकल उदास क्यों रहते हैं ? महतमाजी पर भरोस रखिए। जिस नैन से महतमाजी का दरसन किया है उसमें पाप को मत पैसने दीजिए। जिस कान से महतमाजी के उपदेस को सरवन किया है, उसमें माया की मीठी बोली को मत जाने दीजिए। महतमाजी सतगुरु के भगत हैं।" लछमी आँखें मूंदकर ध्यान की आसनी पर बैठी है। सफेद मलमल की साड़ी पर बिखरे हुए लम्बे-लम्बे, काले बाल !···और गोरा मुख-मण्डल ! ध्यान-आसन पर इस तरह बैठकर उपदेश देनेवाली यह लछमी कोई और है !···बालदेवजी के हाथ स्वयं ही जुड़ जाते हैं।

लछमी की पवित्र आत्मा की वाणी फिर मुखरित होती है—"दुनिया के दोख-गुन को देखने के पहले अपनी काया की ओर निहारो ! मन मैला तन सूथरो, उलटी जग की रीत !···पहले मन को साफ करो। मन पवित्र नहीं, इसलिए वह दुखी होता है, निरास होता है। तुम पन्थ पर उदास होकर क्यों बैठ रहे हो ?···डरते क्यों हो ?···"

चलते-चलते पगु थका
नगर रहा नौ कोस,
बीचहि में डेरा पराँ
कहहु कौन का दोख !

बालदेव को लगता है, खुद भारथमाता बोल रही है। यही रूप है ! ठीक यही रूप है जिनके पैर खून से लथपथ हैं। जिनके बाल बिखरे हुए हैं।···बावनदास कहता था, भारथमाता जार-बेजार रो रही हैं। नहीं, माँ रो नहीं रही। अब पन्थ बता रही है। उचित पन्थ पर अनुचित करम करनेवालों को चेता रही है। बावनदास 'भरम' गया है।···और खुद बालदेव, महतमाजी के पन्थ पर निरास और उदास होकर चल रहा है।

"···भारथमाता की जै ! महतमाजी की जै ! भारथमाता, भारथमाता !"

महन्थ रामदास बहुत देर से कनैल गाछ की आड़ में खड़े होकर देख-सुन रहे थे।···ध्यान-आसन पर बैठी हुई लछमी उपदेश दे रही है और बालदेवजी हाथ जोड़े एक टक से लछमी को देख रहे हैं। अचानक बालदेवजी लछमी के चरन पकड़कर हल्ला करने लगे—भारथमाता की जै !

"भण्डारी ! भण्डारी !" महन्थ रामदास पिछवाड़े की ओर भागते हुए चिल्लाते हैं, "भण्डारी ! बालदेव पगला गया ! दौड़ो !"

मठ पर तुरत भीड़ लग गयी। डाक्टरसाहब, तहसीलदारसाहब, कालीचरन और खेलावनसिंह यादव भी आये हैं। बालदेव की बूढ़ी मौसी बीच-बीच में गा-गाकर रोने-रोने की सुरखुर[2] करती है, किन्तु एक ही साथ इतने लोग डाँट देते हैं

---

१. डूबना-उतराना। २. तैयारी।

Funding by IKS-MoE

कि वह चुप हो जाती है और बारी-बारी से सबके मुँह की ओर देखती है। कुछ देर के बाद ही वह फिर शुरू करती है—"बाबू रे !"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"ऐ बूढ़ी ! ठहर !···चुप !"

डाक्टरसाहब बालदेव के बाँह में रबर की पट्टी बाँधकर, मुठ्ठी से एक छोटे से गेंद को दबाते हैं।···ओ ! इसी मीसीन से तो तहसीलदार की बेटी कमली का भी जाँच होता है ! ओ !

बालदेवजी रह-रहकर बाँहें ऐंठकर, हाथ छुड़ाकर उठ खड़े होते हैं, "आप लोग क्या समझते हैं मैं पागल हो गया हूँ ? कभी नहीं, हरगिस नहीं।·· हमको पागल कहते हैं ? इस गाँव में क्या था ? कोई जानता भी था इस गाँव का नाम ? इसको होल इण्डिया में मशहूर कौन किया ? हमको छोड़ दीजिए ! हम महत्माजी के पन्थ से नहीं हट सकते।"

भीड़ में कोई कहता है—"मठ पर रहने से गाँजा पीने की आदत लग ही जाती है।"

"कौन कहता है हम गाँजा पीते हैं ? दारू-गाँजा-भाँग की दुकान में पिकेटिन किया है हम, और हम गाँजा पीयेंगे ? छिः छिः ! हम महतमाजी के पन्थ को कभी छोड़ नहीं सकते। साच्छी हैं महतमाजी !"

बालदेव की बुढ़िया मौसी अब नहीं मानती। वह गा-गाकर रोती है—"डागडर ने तहसीलदार की बेटी कमला की बेमारी को उतारकर बालदेव पर चढ़ा दिया है। यह भले आदमी का काम नहीं। तहसीलदार की बेटी अभी तक कुमारी है। हे भगवान ! अब बालदेव का बिहा नहीं होगा ! दैबा रे दैबा !"

"बालदेवजी !" लछमी कहती है, "चित्त को सान्त कीजिए।"

"ओ ! लछमी !···लछमी दासिन ! साहेब बन्दगी !···ठीक है, कोई बात नहीं। हम पर कभी-कभी महतमाजी का भर[1] होता है। चुन्नी गुसाईं को तो रोज भोर को होता है।" बालदेवजी चुपचाप बैठ जाते हैं।

"डाकडरसाहेब ! बालदेवजी इधर कई दिनों से बहुत उदास रहा करते थे। रात में नींद, पता नहीं, आती थी या नहीं। एक सप्ताह पहले, एक दिन बोखार लगा था। बोखार की पीली गोली एक ही साथ सात ठो खा गये।"

"पीली गोली ? सातों एक ही बार ?" डाक्टर आश्चर्य से पूछता है।

"जी ! बोखार की पीली गोली बाँटने के लिए मिली थी न ! उसी में से सात ठो एक ही बार खा गये। बोले कि रोज कौन खाये ! एक ही साथ सात दिनों का खोराक ले लेते हैं !"

डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है, "कितना बढ़िया हिसाब है। बालदेवजी, दस दिनों तक घोल का शर्बत पीजिए। ठीक हो जायेगा। कुछ नहीं है, दवा की गर्मी ही है।"

रामकिरपालसिंह कहते हैं, "बिहदाना, अनार, सन्तोला का रस तो ठण्डा होता है, गरमी को सान्ती करेगा।···जेहल में हम सिरिफ बिहदाना-सन्तोला

---

१. देवी-देवता का सवार होना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खाकर रहते थे। दो विहदाना मेरे पास ग्रभी भी है।"

बालदेव ग्रौर कालीचरन के बयान पर ही सबकुछ है—जिसको चाहे फँसा दें, चाहें बचा दें। खुद दरोगासाहेब कहते थे कि बालदेव की गवाही की बहुत कीमत है!

खेलावनसिंह यादव ग्राजकल कालीचरन का ग्रागा-पीछा खूब करते हैं। पाटी ग्राफिस के बगल में एक चौखड़ा घर बनवा देंगे, सुनते हैं, 'साथी निवास' घर! जैसा घर जिला पाटी ग्राफिस में है। मीटिंग के दिन जितने साथी ग्राते हैं, उसी घर में रहते हैं। जो सिक्रेटरी होगा, वह ग्राफिस घर में रहेगा।··· कालीचरन ने खेलावनसिंह से कहा तो वे तुरन्त तैयार हो गये।

जोतखी काका ने कालीचरन का हाथ देखा है—"खूब नक्छत्तरबली है कालीचरन! राजसभा में जश है। बेटा-बेटी भी है। धन भी है। मगर एक गरह बड़ा 'जब्बड़' है···।"

सिंहजी बालदेवजी को विहदाना-सन्तोला खाने के लिए मना रहे हैं—"खा लो बालदेवजी! बड़ा पूस्टीकारी चीज है। दवा ही गरमी दूर को जायेगी।"

गवाही ने बालदेवजी की खोयी हुई कीमत को फिर बहुत तेजदर कर दिया है।

बालदेवजी कहते हैं, "महतमाजी का रस्ता हम कभी छोड़ नहीं सकते। झगड़ू न जाहू कचहरिया, दललवा के ठाठ जहाँ।"

लेकिन बालदेवजी को तो कुछ भी नहीं कहना पड़ेगा। उनसे पूछा जायेगा कि यह दसखत ग्रापका ही है? ये कहेंगे कि—हाँ। बस, ग्रौर कुछ कहना ही नहीं है। दसखत तो बालदेवजी ने किया था। यह तो झूठ बात नहीं। कालीचरन ने भी किया था।

···चाहे जैसे भी हो, बालदेवजी को गवाही के लिए राजी करना ही होगा, नहीं तो सारे गाँव पर ग्राफत है।···कोठारिन लछमी दासिन को तहसीलदार-साहेब समझाकर कह दें तो बात बैठ जायेगी।

चवालीस

इधर कुछ दिनों से डाक्टर मौसी के यहाँ ज्यादा देर तक बैठने लगा है। मौसी के यहाँ जब तक रहता है, ऐसा लगता है मानो वह शीतल छाया के नीचे हो। काम में जी नहीं लगता है। ऐसा लगता है, उसका सारा उत्साह स्पिरिट की तरह उड़ गया। क्या होगा मानव-कल्याण करके? मान लिया कि उसने काला-ग्राजार की एक रामबाण ग्रौषधि का ग्रनुसन्धान कर लिया; ग्रमृत की एक छोटी शीशी उसे हाथ लग गयी। किन्तु इसके बाद? इसके बाद जो होता ग्राया है, होगा। ग्राखिर, पाँच ग्राने का एक ऐम्पुल पचास रुपये तक बिकेगा। यहाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तक उसकी पहुंच नहीं होगी !···और यहाँ का आदमी जीकर करेगा क्या ? ऐसी जिन्दगी ? पशु से भी सीधे हैं ये इन्सान। पशु से भी ज्यादा खूँखार हैं ये। ···पेट ! यही इनकी बड़ी कमजोरी है। मौजूदा सामाजिक न्याय-विधान ने इन्हें अपने सैकड़ों बाजुओं में जकड़कर ऐसा लाचार कर रखा है कि ये चूं तक नहीं कर सकते।···फिर भी ये जीना चाहते हैं। वह इन्हें बचाना चाहता है। क्या होगा ?

मौसी कहती हैं, "बेटा, तुम भागवत गीता नहीं पढ़ते ?"

डाक्टर मौसी की ओर अकचकाकर देखता है। जेल में उसने 'गीता-रहस्य' पढ़ने की चेष्टा की थी। ममता भी हमेशा 'गीता' तथा 'राम-कृष्ण कथामृत' झोली में लिये फिरती है। शायद समझती भी हो। ममता ने कई बार कहा है—'फुरसत के समय गीता ज़रूर पढ़ो, नहीं···समझो, कुछ ढूंढ़ो। कुछ-न-कुछ ज़रूर मिलेगा।'···वह गीता पढ़ेगा !"

"डाक्टरसाहेब ! जय हिन्द !"

"आओ कालीचरन ! क्या हाल है ? तुम भी पूर्णिया गये थे न ?"

"जी। अभी तुरत आ ही रहा हूँ। उम्मीद है, गाँव के सभी लोग छूट जायेंगे। हम लोगों को तो सत्तो बाबू वोकील ने जिरह में बहुत तोड़ना चाहा, मगर उनको भी मालूम हो गया। बालदेवजी की बात हम नहीं जानते, लेकिन सुना है वह भी खूब डटकर जवाब दीहिन हैं।···हमसे कहा कि आप पढ़ना-लिखना नहीं जानते, आप दसखत करना नहीं जानते। मैंने कहा, मैं पढ़ना-लिखना भी जानता हूँ और दसखत करना भी जानता हूँ। दरोगासाहेब के सामने भी दसखत किया था। आप कहिए तो आपको भी दिखा दूं।···हाकिम ने कहा कि आप अपना दसखत चीन्हिए। हमको भी क्या चसमा की जरूरत है ? फाटक से चिन्हिये तो दिया !"

"लेकिन जिस कागज पर तुम लोगों ने दस्तखत किया था उसमें क्या लिखा हुआ था ?" डाक्टर पूछता है।

"क्या लिखा हुआ था ? सो तो···सो···तो नहीं पढ़ा। दरोगासाहेब ने तो अँगरेज़ी में लिखा था।···सरकारी कागज पर कोई खिलाफ बात थोड़ो लिखेगा !"

"हो-हो-हो-हो !" डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है, "और बालदेवजी ने भी वही कहा होगा !"

"हाँ, लेकिन इसमें हँसने की क्या बात है ?" कालीचरन ज़रा रूखा होकर कहता है।

"हाँ भाई, हँसने की बात नहीं।···बात रोने की है कालीचरन ! मुझे तो कुछ बोलना नहीं चाहिए लेकिन···! मत समझना कि सन्थालों की ज़मीन छुड़ाकर ही जमींदार सन्तोष कर लेगा। अब गाँव के किसानों की बारी आयेगी। और तुमको तथा बालदेवजी को ही उन्होंने अपना पहला हथियार बनाकर इस्तेमाल किया है। यह रोने की बात नहीं ?" डाक्टर एक ही साँस में सब कह गया।

"लेकिन···लेकिन, आपने भी तो लिख दिया है कि सन्थालों की मार को

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
देखकर पता चलता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए इन पर हमला किया है ?" कालीचरन तमतमा गया है।

"यह किसने कहा तुमसे ?" डाक्टर आश्चर्य से मुँह फाड़ते हुए कहता है, "ऐसा कहीं लिखा जाता है ? मैंने तो सिर्फ़ ज़ख्म के बारे में लिखा है। सन्थाल अथवा गैर-सन्थाल मैं नहीं जानता। मैं तो रोग और घावों की जाति के बारे में ही जानता हूँ।" डाक्टर उत्तेजित होकर कहता ही जाता है, "काली, तुम लोगों ने अच्छा नहीं किया। लेकिन तुम लोगों को दोष भी तो नहीं दे सकता हूँ।"

"तहसीलदारसाहेब तो आपको खूब मानते हैं।" कालीचरन सीधी बात करना जानता है, "कमली दीदी···कमली दीऽदी···"

"क्या मतलब ?" डाक्टर बीच में ही टोक देता है।

"···क्या कहना चाहता है ? मौसी कहती हैं, कमली दीदी खूब मानती हैं। उसकी माँ भी इज्जत-खातिर करती हैं। यही न ?"

"हाँ।" कालीचरन को मानो सहारा मिलता है।

"तो क्या हुआ ? तहसीलदारसाहब गाँव के रईस हैं। मुझसे उम्र में बड़े हैं। कमला की बीमारी के चलते मुझे कुछ ज्यादा आना-जाना पड़ता है। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन लोगों की इज्जत करता हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं तहसीलदारसाहब के अन्याय का भी समर्थन करूँगा अथवा पक्ष लूँगा !"

कमली बहुत देर तक मौसी के आँगन में खड़ी होकर सुन रही थी। डाक्टर की अन्तिम बातों को सुनकर उसका कलेजा धक्-धक् करने लगता है। वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। उस पर घटनाओं की प्रतिक्रिया बड़ी तीव्र गति से होती है। नाटकीय ढंग से वह प्रवेश करती है।

"इसीलिए आप आजकल मेरे यहाँ नहीं आते। इसीलिए आपने उस दिन कहला भेजा था कि तहसीलदारसाहब कमली को पटना ले जायें, यहाँ इलाज नहीं होगा। क्यों ?"

सभी एक ही साथ चमक उठते हैं। मौसी हँसकर कहती है, "तू आज लड़ने के लिए कमर कसकर आयी है ? पगली !···बैठ !"

डाक्टर कमली की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है—चेहरा लाल हो गया है कमला का। आँखें डबडबायी हुई हैं। गले के पास की रग तीव्र गति से फड़क रही है।···डाक्टर ने बहुत बड़ा अन्याय किया है। रक्त का दबाव जरूर बढ़ गया होगा। कमला के ओठ फड़क रहे हैं, थरथरा रहे हैं।···वह रो पड़ती है—"मौसी !"

"कमला !" डाक्टर ज़ोर से कहता है, "तुमने तो कुछ समझा-बूझा नहीं और लगीं आकर बरसने। मैं तो कालीचरन को समझा रहा था कि यदि मैं किसी राजनीतिक पार्टी में होता तो ऐसा नहीं करता···।"

डाक्टर ने वातावरण को हलका बनाने की पूरी कोशिश की। लेकिन अच्छा होता यदि कमला उससे रूठी रहती। इसी दिन के इन्तज़ार में वह था। आज कमला को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता था। लेकिन अब वह चूक गया।···अब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
परिणाम के लिए तैयार रहना है।

जब तक डाक्टर बोलता रहा, कमली चुपचाप सुनती रही। अचानक उसके मुख-मण्डल पर छाये बादल फट गये। एक हल्की मुस्कराहट उसके ओठों पर धीरे-धीरे जगने लगी, नाक के बगल की नीली रेखा धीरे-धीरे खिल रही है, मानो कमल की पखुड़ियाँ धीरे-धीरे खुल रही हों!

मौसी चुपचाप कभी कमली की ओर, कभी डाक्टर की ओर देखती है। उसके ओठों पर भी मन्द मुस्कराहट खिंची हुई है।

"प्यारू मेरे यहाँ दो बार खोज गया है। शायद आज भी कोई खरगोश भाग गया है।" कमली मौन भंग करती गयी। उसकी बोली सहज हो गयी है।

कालीचरन कमली के चेहरे पर कुछ देखकर चमक उठता है। उससे बातें करते-करते, कभी-कभी मंगला के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव आ जाते हैं। इसी तरह तुनुक-तुनुककर बोलती है। वह डाक्टर की ओर देखता है, फिर उठ खड़ा होता है, "अच्छा तो बैठिए डाक्टरसाहब! हम अभी चलते हैं।...फिर कल भेंट करेंगे।"

मौसी भी उठकर जाते हुए कहती है, "तुम लोग चाय तो ज़रूर पीयोगे!"

कुछ देर तक दोनों चुप रहते हैं।...कमली पास में पड़ी सीकी की बनी हुई एक फूलडलिया को उठाकर उसकी बुनावट देखने लगती है। डाक्टर मुस्कराते हुए पूछता है, "एक बात पूछूँ कमला, बुरा तो न मानोगी? अपने बाप की शिकायत कोई नहीं बरदाश्त कर सकता है, क्यों?"

"कैसे बरदाश्त कर सकता है कोई?"

"मुझे क्या मालूम? मुझे...मुझको अपने बाप की याद नहीं।"

कमली मुस्कराती जाती है। कहती है, "विवाह के गीत में...एक जगह शिवजी पार्वती के पिता की टोकरी-भर शिकायत करते हैं—

एक बेर गेलीं गौरा तोहरो नैहरवा से,
बइठे ले देलक पुआर,
कोदो के खिचुड़ी रँधाओल मैना सासू...!"

"हा-हा-हा-हा!"

"हा-हा-हा-हा!" दोनों एक ही साथ हँस पड़ते हैं। मानो पंछी का एक जोड़ा एक ही साथ दिल खोलकर किलक पड़ा हो। नर और नारी के पवित्र आकर्षण की रुपहली डोरी लकपक कर रही है। नर आगे बढ़ता है...नारी को खींच लेता है...।

बड़ी-बड़ी, मद-भरी आँखों की जोड़ी ने मुस्कराकर पूछा, "आप...मेरी शिकायत बरदाश्त कर सकते हैं?"

"रोज़ तो कर रहा हूँ।" दो लापरवाह आँखों ने मानो चुटकी ली, "कमली दवा नहीं पीती है। कमली रात में देर तक बैठकर पढ़ती है।...कमली पगली है।...पगली है कमली।...तू पगली है! तू मेरी पगली है! पागल-पगली..."

...अधरक मधु जब चाखल कान्ह,
तोहर शपथ हम किछु यदि जानि!

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरा खण्ड

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक

सुराज मिल गया ?

"अभी मिला नहीं है, पन्द्रह तारीख को मिलेगा। ज़्यादा दिनों की देर नहीं, अगले हफ़्ता में ही मिल जायेगा। दिल्ली में बातचीत हो गयी।…हिन्दू लोग हिन्दुस्थान में, मुसलमान लोग पाखिस्थान में चले जायेंगे।" बावनदासजी फिर एक खबर ले आये हैं। ताजा खबर !

…दफा ४० की लोटस की तरह झूठ-मूठ कोई फाहरम तो नहीं लाया है बावनदास ?…झूठ नहीं सच बात है ! डागडरबाबू के बेतार में भी बोला है, सुनते हैं।

"तहसीलदारसाहेब भोज खिलायेंगे उस दिन," सुमरितदास बेतार घर-घर खबर फैला रहा है। "सब इसमिट[1] अभी-अभी हम पक्का करके आ रहे हैं। पूड़ी, जिलेबी, हलुआ, दही और चीनी !"

"जै हो ! जै हो !"

"महतमा गाँधी की जै !"

महन्थसाहेब के भण्डारा से भी बड़ा भोज होगा। तीन मेर[2] नाच होगा—बलवाही, बिदेसिया, कमला और महमदिया की नौटंगी कम्पनी। कालीचरन का सुशील कीरतन भी होगा। पुरैनियाँ से अंग्रेजी बाजा आयेगा।…अरे ! अंग्रेजी बाजा नहीं जानते ? रौतहट मेला में सरकल के नाच में बजते नहीं सुना है—भेकर-भेकर में-में !…धमदाहा-संकरपुर का बिदापद। बँसगड़ा की बलवाही, औराही-हिंगना का भठियाली भकतँ[3]। सुब नारदी[4] गाते हैं औराहीवाले। कोयलू खोलवाहा और सीतानाथबाबू मुलगैन ! सीतानाथबाबू का गला बुढ़ारी में भी कितना तेज है !

"मुसलमानों का हिस्सा सुराज पाखिस्थान में चला जावेगा ?…एकदम काटकर हिस्सा लेगा ?"

"हाँ, जब हिन्दू मुसलमान भाई-भाई हैं तो भैयारी हिस्सा तो रकम आठ आना के हिसाब से ही मिलेगा।"

"बावनदास ने सुराज को काटते देखा है या अन्दाज से ही बोल रहा है। चलो, पूछें।"

बावनदास कहता है—"अरे सुराज क्या कद्दू-कोंहड़ा है जो काटकर

---

१. एस्टिमेट। २. दल। ३. भठियाली कीर्तन। ४. नारदी सुर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बँटेगा ?"

"...तब सुराजी कीरतन में जो कहा है कि 'जब तक फल सुराज नहीं पावें, गाँधीजी चरखा चलावें, मोहन हो ! गाँधीजी चरखा चलावें..."

"कीर्तन की बात छोड़ो। सुराज माने..." बावनदासजी समझाते हैं "सुराज माने अपना राज, भारथवासी का राज। अब अँगरेज़ लोग यहाँ राज नहीं कर सकते।...'ए अँगरेजो। भारथ छोड़ो' क्यों कहा था गाँधीजी ने ? इसीलिए।"

"अपने गाँव का तो राज तहसीलदारसाहेब को ही मिलेगा। राज पारबंगा के तहसीलदार हरगौरी तो अब हैं नहीं।"

बालदेवजी का दिमाग बहुत शान्त हो गया है। जिस दिन उन्होंने परसाद उठाया,[1] उसी दिन से माथा ठण्डा हो गया। लछमी तीन-चार दिन तक सतसंग करती रही। आखिर बालदेवजी हार गये। बालदेवजी अब गृहस्थ नहीं रहे, साधू हो गये।...मोछभदरा[2] करवाकर बालदेवजी का मुँह ठीक सोलह पटनियाँ आलू की तरह हो गया है।

"...साहेव बन्दगी बालदेवजी !"

"साहेब बन्दगी ! जाय हिन्दू !" बालदेवजी आजकल साहेब बन्दगी और जाय हिन्द को एक साथ नत्थी करके बोलते हैं।

"जय हिंद कौमरेड बालदेवजी !" कालीचरन मुट्ठी बाँधकर कहता है—कौमरेड !

"नहीं। हम कौमरेड नहीं हैं।" बालदेवजी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "हमको कौमरेड क्यों कहते हो ?"

"कौमरेड कोई गाली नहीं बालदेवजी ! कौमरेड माने साथी। जो भी देस का काम करे, पब्लिक का काम करे, वह कौमरेड है।" कालीचरन हँसते हुए कहता है।

"तुम नहीं जानते," बालदेवजी चिढ़कर कहते हैं, "तुम तो आज आये हो, हम सन् तीस से ही जानते हैं। टीक-मोंछ काटकर, मुर्गी का अण्डा खिलाकर कौमरेड बनाया जाता है। कम्फ-जेहल में कितने लोगों को कौमरेड होते देखा है।...मोजफ़्फ़रपुर के एक सोसलिस्ट नेता थे। उनका नाम यही था—लोगों की टीक-मोंछ काटना। जेब में कैंची रखे रहते थे। जाति के बामन थे।...और हमको कौमरेड का माने सिखाते हो तुम ?"

लगता है बालदेवजी फिर सनकेंगे।

सबों ने एकमत होकर कहा, "हाँ कालीचरनबाबू, यह गलती तुमसे हो गयी। आज तुम लीडर हो गये हो, खुशी की बात है, लेकिन हो तो तुम बालदेवजी के ही चेला ! तुम मानो या नहीं मानो, बात वाजिब है !"

कालीचरन लजा जाता है।...तब उस दिन सिकरेटरीसाहेब जो कह रहे थे, बाप-बेटा दोनों कौमरेड हो सकता है ?...शायद सुनने में ही गलती हो गयी। ...वह अपनी गलती मान लेता है—"हाँ, अभिमन्नू-वध नाटक में अरजुन ने

---

१. बैरागी धर्म स्वीकार करना। २. क्षौर कर्म।

Funding by IKS-MoE

दुरनाचारज के पैर पर फूल का तीर मारा था।"
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाह रे कालीचरन ! अब बात समझता है ! पहले तो बात समझने के पहले ही लड़ाई कर लेता था।

बालदेवजी भी हँसते हैं। कहते हैं, "सुराज उतसव के लिए तुम लोगों की पाटी की ओर से क्या हुकुम आया है ?"

"ठीक है। सुराज क्या अकेले काँगरेस को ही मिला है ?"

"सुराज उतसव के दिन रहोगे या नहीं ?" बालदेवजी पूछते हैं।

"ज़रूर! उस दिन हाथी पर भारथमाता की मुरती बैठाकर जुलूस निकलेगा," कालीचरन गर्व से छाती फुलाकर कहता है, "अपने गाँव का जुलूस, कटहा थाना में क्या, हौल इण्डिया में फस्ट होगा। मुरती का औडर दे दिया है।"

बालदेवजी की आँखों के सामने भारतमाता के विभिन्न रूप आ रहे हैं——माँ, रूपमती, मायजी और लछमी।

···लछमी को हाथी पर नहीं बैठाया जा सकता है ?···भारतमाता का रूप ? आजकल लछमी भी खद्धड़ पहनती है, चरखा कातती है।···महीन सूत कातना तो वह पहले से ही जानती है।

जै ! भारथमाता की जै !

दो

मुकदमा में भी सुराज मिल गया।

सभी सन्थालों को दामुल हौज[1] हो गया। धूमधाम से सेसन केस चला। सन्थालों की ओर से भी पटना से बालिस्टर आया था। बालिस्टर का खर्चा सन्थालिनों ने गहना बेचकर दिया था। बालिस्टर पर भी बालिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदारसाहेब जैसे कानूनची आदमी नहीं लगते तो इस खूनी केस से शिवशक्करसिंह, रामकिरपालसिंह और खेलावनसिंह तो हरगिस नहीं छूटते।···खर्चा ? अरे भाई ! जान है तो जहान है ! जब फाँसी ही हो जाती तो जगह-जमीन, रुपैया-पैसा क्या काम देता ?

रामकिरपालसिंह ने सन्थालटोली की नयी बन्दोबस्ती जमीन में से दस एकड़ तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद को लिख दी है···हाँ, सुमरितदास बेतार को भी चार कट्ठा ज़मीन मिली है।···खेलावनसिंह यादव को भी देन हो गया है।··· देन कैसे नहीं होगा भाई, पास में जितना कच्चा रुपया था वह तो दरोगासाहब के पान-सुपाड़ी में चला गया। पुराना पटुआ हाथ से पहले ही निकल गया था। इसीलिए करीब डेढ़ हजार हथफेर-पैंचा हो गया है। तहसीलदारसाहेब ने कहा, कागज़ बनाने की क्या ज़रूरत है, जब सन-पटुआ बिके तो दे देना।

---

१. आजीवन कारावास।

Funding by IKS-MoE

मुकदमा उतसब भी सुराज उतसब के दिन होगा ?…हाँ, सुराज उतसब दिन में, मुकदमा उतसब रात में।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तहसीलदारसाहब ने कहा है, महमदिया की नौटंगी कम्पनी जितना में हो, एक सौ, दो सौ, जा ले, मगर सट्टा करा लेना। सुमरितदास कहते हैं—"इसमें कनकसन है, पीछे बतावेंगे।"

…महमदियावाले भी पूरी तैयारी कर रहे हैं। नखलौ से बाईजी मँगाया है, चन्दा करके। नौटंगी के कम्पनी[1] हैं नितलरैनबाबू। लछमी महारानी ने उनको खूब निहारा है, अपनी आँखों से ही निहारा है।…

इस इलाके के मँझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गयी, तम्बाकू, धान, पाट और मिर्चा का भाव एक साल चढ़ गया, घर में शादी-गमी नहीं हुई तो वह तुरन्त टनमना[2] जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरन्त औन-पौन करने लगता है। हरमुनियाँ, फर्श, शतरंजी, शामियाना, जाजिम, लैट, पंच-लैट, पहाड़िया घोड़ा, शम्पनी, टेबल-कुर्सी, बेंच खरीदकर ढेर लगा देता है। इससे भी जब गरमी कम नहीं होती है तब बन्नूक के लैसन के लिए आफिसरों को डाली देना शुरू करता है।…लालबाग मेला के समय रात-रात-भर मुजरा सुनता है और दिन-भर आफिसरों के साथ कचहरी में घूमता है। बन्नूक के लैसन के बाद नौटंगी कम्पनी खोलता है। इससे भी मगज ठण्डा नहीं होता तो कोई खूनी केस होकर समापत्तन[3]।…महमदिया के नितलरैनबाबू नौटंगी के कम्पनी हैं। तहसीलदारसाहब ने कहा है, महमदिया की नौटंगी कम्पनी का सट्टा लिखा जाना चाहिए।

"बड़ा भारी कनकशन है जी इसमें!" सुमरितदास बेतार कब तक पेट में बात रखे, "एकदम प्राइबिट गप है। महमदियावालों को क्यों बुलाया जा रहा है, समझे नहीं? नौटंगी की बाईजी के बिलौज पर टका साटा जायेगा। अब समझे कुछ?"

सन्थाल लोग इस सुराज उतसब में नाचेंगे।…कहीं नाचने के समय तीर चला दें, तब? नहीं, नहीं, डागडरसाहेब बोलते थे कि सन्थालिनें खुद आकर कह गयी हैं—नाचबौ। तहसीलदारसाहेब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिए। …भाई, जो भी कहो, सन्थाली नाच देखते समय होस गुम हो जाता है। जूड़े में सादे फूलों के गुच्छे, कसमकस देह, उजले दाँत की पाँती की चमक! सफेद आँचल! जब झुमुर-झुमुर कर नाचने लगती हैं तो मन करता है, नाच में उतर पड़ें।

डा-डिग्गा डा-डिग्गा!
रिं-रिं-ता धिन-ता!

आज से ही वे परारटिस कर रहे हैं।…लेकिन माँदर और डिग्गा की बोली सुनकर डर लगता है। हँसेरी के दिन तो ऐसा लगता था कि जमराज नगाड़ा बजा रहा है और जमदूत सब उसी ताल पर नाचकर तीर चला रहे हैं।

१. मालिक। २. खुशहाल हो जाना। ३. समाप्त।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीन

"खबरदार! गरम जिलेबी मत खाना!"

आजकल सुमरितदास बेतार का बोलबाला है। हमेशा एक नयी खबर! आजकल किसी भी टोले के नौजवान से भेंट होते ही वह फिक् से हँसकर एक दिल्लगी कर लेता है, "खबरदार! गरम जिलेबी मत खाना!"

"माने?"

"माने सुनोगे? गरम जिलेबी का तासीर बड़ा गरम होता है। सर्दी से नाक बन्द हो, सिर दुख रहा हो, गरम जिलेबी खा ली! भक से नाक खुल जायेगी। इतना जल्दी असर करता है!···आज हम डागडरी में ज़रा दिनाय[1] की दवा लाने के लिए गये थे। जानते हो? डागडरबाबू ने फुलिया—अरे वही महँगूदास की बेटी फुलिया—को क्या कहा है?···फुलिया को गरमी की बेमारी हो गयी है। चेहरे पर फुसरी-फुसरी[2]-सा हो गया है। डागडर ने कहा कि पुरैनियाँ जाओ।···इसीलिए लौजमान लोगों से कहते हैं कि खबरदार! गरम जिलेबी मत खाना।"

"लेकिन दासजी! लौजमानों से पहले बूढ़ों को सँभालिए।"

"चुप, चुप! सभी बेपर्दे हो जायेंगे।"

सुमरितदास बेतार जब फिक् से हँसता है तो उसके लाल मसूड़े दिखायी पड़ते हैं। लाल हँसी हँसता है बेतार!···बेतार फिर फिक् से हँसकर कहता है, "और कुछ मालूम है? महन्थ रामदासजी रमपियरिया को दासिन रखेंगे। कोठारिन ने हुकुम दे दिया है।···बालदेव तो कोठारिन के पीछे बैरागी ही हो गया।"

कालीचरन का चेहरा अचानक उतर जाता है।···अब मंगला के बारे में ता कुछ नहीं बोलेगा बेतार? लेकिन बेतार जानता है कि कहाँ कैसी बात करनी चाहिए। बात में उससे जीतना मुश्किल है।

चरखा सेण्टर के मास्टरों और मास्टरानी में लड़ाई-झगड़े हो गये हैं। टुन-टुनजी इस्तीफा देकर चले गये। दूसरे मास्टरसाहब को सूल उखड़ गया, देस चले गये। अब अकेली मंगलादेवी वहाँ चरखा सेण्टर के नाम पर गाँव-घर में घूमती है, बातें करती है गाँधीजी की, जमाहिरलाल की और सुराज की··· कालीचरन कहता है, "हाथी पर भारतमाता की मुरती के पास बैठकर मुरछल[3] डुलाने के लिए मंगलादेवी को ही कहना चाहिए।"

बालदेवजी तहसीलदारसाहब से कहते हैं, "लेकिन यदि अपने गाँव में औरत नहीं रहे तब बाहरी औरत से कहना चाहिए। यदि गाँव में ही मिल जाय! कमली दीदी ही क्यों न बैठेंगी?"

"नहीं, कमली की बीमारी का बड़ा डर है। कब क्या हो जाये!"

---

१. दाद। २. दाने-फुंसी। ३. चँवर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"तब कोठारिनीजी से कहा जाये। अब तो खद्धड़ पहनती हैं। खूब नेम-टेम भी करती हैं। रोज़ नहाने के बाद महतमाजी की छापी पर फूल चढ़ाती हैं।"

···लो मजा ! मंगलादेवी को हाथी का बड़ा डर ! हाथी को देखते ही उसका सब सरीर केले की भालर[1] की तरह थर-थर काँपने लगता है। कालीचरन ने कितना समझाया-बुझाया, 'बूध-भरोसा' दिया, मगर तैयार नहीं हुई। आखिर में कहने लगी, कालीचरन यदि साथ में रहे तब तो वह हाथी पर चढ़ सकती है। लेकिन कालीचरन को लाज हो गयी, सायद। बोला, "धत् !"

दुलरिया भी अलबत्त बात जोड़ता है। इधर-उधर देखकर, मटकी[2] मारकर, देह-हाथ फैलाकर कहता है—"मंगलादेवीजी जब लीला सिलवार पहनकर निकलती हैं तो लगता है कि मोकनी हथिनी[3] झूमती चली जा रही है।"

"हो-हो-हो-हो ! हा-हा खी-खी !"

भौग्रोथ ! ···ग्रो ग्रो !

डाक्टरसाहब की घड़ी में ठीक दोपहर रात का 'टैम' देखकर टीन के करनाल में मुँह सटाकर कालीचरन ने हल्का किया, "भौ ग्रौ थ···ग्रौ ग्रौ !"

इसके बाद लौजवानों ने दुहराया—"भारथ ग्रा जा द !"

मठ पर खँजड़ी डिमक उठी—डिम-डिम-डिम-डिमिक ! बालदेवजी ने भावावेश में चौकीदार की तरह हाँक लगायी—"ह-ह-ह-ह-ह-ह ! भारथ ग्राजाद हो गया। ह-ह-ह-ह-ह-हो-य ! महतमा गाँधी की जै !"

रिं-रिं-ता-धिन-ता !

डा-डिग्गा !

सन्थालटोली में माँदर ग्रौर डिग्गा घनगना उठते हैं।

तू-ऊ-ऊ-ऊ ! मौसी शंख फूँकती हैं—तू-ऊ-ऊ-ऊ !

सात माइल दक्खिन, कटिहार की पाँचों बड़ी-बड़ी मिलों के भौंपे एक साथ बज रहे हैं—"भौं ग्रौं ग्रों···धू ऊ ऊ !" ग्रावाज एकदम साफ सुनायी पड़ती है।

···'डिल्ली' में बाँटबखरा करके सुराज मिल गया। जै ! जै ! इसलाम-पुर पाखिस्थान में रहेगा या हिन्दुस्थान में ? पाखिस्थान में ? ग्रभी पाखिस्थान में मारे खुशी के खचाखच गोरू काट रहा होगा।···धत्, गोरू ने क्या बिगाड़ा है ? ···बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाखिस्थान लेकर ही छोड़ता !"

---

१. पत्ता। २. कनखी। ३. जवान हथिनी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चार

भौ ओ थ ! ओ ओ !

कालीचरन का गला बैठ गया। नारा लगाते समय भाथी की तरह गले से आवाज निकलती है—फोयें-फोयें सोयें-सोयें ! ···सुबह से कामरेड बासुदेव और कामरेड सोमा जट बारी-बारी से नारा लगा रहे हैं।···नारा बन्द नहीं हो, जारी रहे—'अष्ठजाम कीरतन' की तरह ! सुराज-उतसव जब तक खतम नहीं हो, नारा बन्द नहीं हो !

टन-टनाक्, टन-टनाक् ! सजायी हुई मोकनी हथिनी जा रही है।

ढन-ढन, ढनाँग-ढनाँग ! कीर्तनियों का घड़ीघण्ट बोल रहा है।

धू-ऊ-ऊ-तू-तू-तू ! शंखनाद।

भों-भों-पों ! ···भों-पों-पों ! अँगरेजी बाजा।

तक-तक तक-तक धिनाग-धिनाग ! अमहरा का चानखोल[1] बजा।

पीं पीं पीं ई ई ई पीं पीं पीं···! चानखोलवालों की पीपही गा रही है :

चाँदो बनियाँ साजिलो बरात ओ हो
एक लाख हाथी साजिलो, दुई लाख घोड़ा
चार लाख पैदल, दुलहा बाला लखिन्दर !

पीपही पर बिहला[2] नाच का बरातवाला गीत बजा रहा है।

धू-धू-धू-धू-धू-तु-धुतु-धुतु ! करनाल[3] बोलता है।

हिं-हिं-हिं-हिं हिं हिं हिं ! पहड़िया घोड़ा हिनहिनाया। किसका घोड़ा है ? धरमनाथबाबू का या हरिबाबू का ?

भारत में आयल सुराज
चलु सखी देखन को···

वह नया सुराजी कीर्तन किसने जोड़ा है ? वाह ! एकदम ताजा माल है। सुनो, सुनो !

कथि जे चढ़िये आयेल
भारथमाता
कथि जे चढ़ल सुराज
चलु सखी देखन को !
कथि जे चढ़िये आयेल
वीर जमाहिर
कथि पर गन्धी महराज ! चलु सखी···
हाथी चढ़ल आवे भारथमाता
डोली में बैठल सुराज ! चलु सखी देखन को
घोड़ा चढ़िये आये वीर जमाहिर

---

१. एक तरह का बाजा। २. सती बेहला। ३. सिंघा बाजा।

Funding by IKS-MoE

पँ द ल गन्धी महराज ! चलु सखी देखन को !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाह ! खूब कीर्तन जोड़ा है उजाड़ू दास ने ! उजाड़ू दास को नहीं चीन्हते हो ? बारा-मानकिपुर में घर है। वह भी सन् तीस से ही सुराजी में है।

कू-कू ! मोकनी हाथी ठीक ताल पर कैसा कूकती है ! वाह !

अलबत्त सजाया है हाथी को फिलवान ने ! ठीक कपाल पर पुरैन[1] का फूल बनाया है—फुलखल्ली से। कितना रंग-टीप किया है ! भारथमाता की मुरती तो ठीक दुरगा माई की मुरती जैसी लगती है ! लछमी, सरस्वती, पारबती-गौरा और भारथमाता सब सगी बहन हैं। ओ।···इसलिए ! बालदेवजी देखते हैं—सदा खद्धड़ की साड़ी ! गले में फूल की माला ! लम्बे-लम्बे काले बाल बिखरे हुए पीठ पर ! ठीक भारथमाता के ठोर[2] पर जैसी हँसी है, कोठारिन वैसी ही हँसी हँस रही है और धीरे-धीरे मुरछल डुला रही है।

धिन, तक-तक-तक, ताक-धिनाधिन ! भठियाली कीर्तन का खोल बोल रहा है—ताक-धिनाधिन, तिन्नक-तिन्नक !

हाँ रे मोरी रे ए ए ए ! हाँ आँ आँ
आँ आँ आँ आरो हे !
बहु कस्टे सू रा ज पैलो रे
भारऽऽथऽऽ सन्तान ओ रे
कोटि कोटि छइला पोयेला
दिलो बो लि दान आ रे
हाँ रे मोरी रे ए ए ए ! हाँ आँ आँ !

ओराही-हिंगना का भकतिया है बाबू। खेल नहीं ! सीतानाथबाबू ने पूबा बोली[3] में कैसा भठियाली कीर्तन जोड़ा है, देखो।···सीतानाथबाबू ने जोड़ा है कि उनका छोटका बेटा महेन्दर ने ?···महेन्दरबाबू भी गीत खूब जोड़ते हैं, सुना है।

झरक-झरक झर-झर्र र र र ! एकपुरिया ढोल तो सब बाजा को मात कर देता है। सभी बाजा को 'झाँप' लिया है।

डमाक्-डिमाक्-डिम ! एकपूरिया ढोल के साथ एक छोटी ढोलकी बोलती है।

भौ औ थ ! औ औ !
"महतमा गाँधी की जै !"
"जमाहिरलाल नेहरू की जै !"
"रजिन्नर बाबू की जै !"
"जयपरगास जिन्दाबाघ !"
"यह आजादी झूठी है !"
"देस की जनता भूखी है।"···यह नया लारा कौन लगाता है ?
"ऐ ! ऐ !···नहीं हुआ।"

---

१. कमल। २. ओठ। ३. बँगला बोली, पूरब की बोली।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"सुन लो पहले !"

"आजादी झूठी। मारो साले को ! कौन बोला ?"

"ज़रूर गाँव का नहीं, बाहरी आदमी है।"

"ऐ ऐ ! बाजा बन्द करो !"

"हटो ! हटो !"

"ऐ कालीचरन ! ऐ बासुदे···!"

"बालदेव !···सान्ती करो !"

"अरे ! बात क्या हुई ?"

"हर बात में ऐसे ही कोई 'लेकिन' लगायेगा ये लोग ?"

"सुनिए तहसीलदारसाहेब ! बात यह हुई कि" ···बालदेवजी आज फिर सनके हैं, "बात यह हुई कि बाबू कालीचरन के पेट में रहता है कुछ और, और कहता है कुछ और ! हम इससे पहले ही पूछ लिये थे कि तुम्हारी पार्टी की ओर से क्या हुकुम हुआ है सुराज उतसब के बारे में। तो बोला कि सुराज क्या सिरिफ कँगरेसी को मिला है !···अभी देखिए, सुभ-लाभ करके जब हम लोग जुलूस निकाला है तो बाहरी आदमी को मँगा करके हम लोगों के उतसब को भंग कर रहा है। यह कैसी बात ! अरे भाई, हिंगना-औराही का सोसलिट है तो हिंगना-औराही में जाकर अपने गाँव का लारा लगावे। यहाँ काबिलयती छाँटने का क्या जरूरत था ? अपना मुँह है—बस, लगा दिया लारा—यह आजादी झूठी है !"

"ठीक बात ! वाजिब बात !" जनता एक ही साथ कहती है।

"ओंयें सोंयें सोंयें···" कालीचरन क्या कहता है, समझा भी नहीं जाता है।

"अरे हाँ-हाँ, गलती हो गयी !" कामरेड बासुदेव समझा रहा है। यानी कालीचरनजी की बात को जोर-जोर से सुना रहा है—"अरे गलती हो गयी। वह नहीं जानता था। चमड़े की जीभ है, लटपटा गयी ! कालीचरनजी का इसमें कोई दोख नहीं !"

यहाँ के सोसलिट पाटीवालों को भी यह बात अच्छी नहीं लगती है।···दूसरे गाँव से आकर यहाँ लारा लगाने की क्या जरूरत थी ? कालीचरनजी का गला बझ गया था तो बासुदेव और सोमा तो लारा लगा ही रहे थे। बीच में फुटानी छाँटकर सब गड़बड़ा दिया।

"अच्छा ! अच्छा ! माफ कर दो !"

"हाँ-हाँ, छोड़ो ! आज सुराज का दिन है।"

टन्-टनाक् टन-टनाक् ! मोकनी हथिनी फिर चली। जुलूस आगे बढ़ा ! सभी ढोल-बाजे एक ही साथ बजने लगे। डिम्-डिम् झर्र-झर्र···पी-ओ-धू-ऊ-तक-तक-धिन।

भों-ओं-धू-तू—ताक-धिनाधिन !

कूई-कू ! कूई-कू ! मोकनी हथिनी ताल पर कूकती है।

बालदेवजी फिर सनके हैं क्या ? हाथ में झण्डा लेकर अब हाथी के आगे-आगे नाच रहे हैं। झण्डे को इस तरह भाँजते हैं मानो गाटसाहेब रेलगाड़ी को झण्डी दिखला रहे हों ! हाँ भाई, सुराज का असल हथियार है तेरंगा झण्डा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहले के जमाने में तलवार से लड़ाई होती थी, इसलिए लोग हाथ में तलवार लेकर नाचते थे। सुराज की लड़ाई का हथियार झण्डा है। इसलिए झण्डा नचा रहे हैं बालदेवजी। सनके हैं नहीं। जिसका जो हथियार···!

किर्र र र घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा! नौटंकी का नगाड़ा बोल रहा है।

···भोज तो दिन से ही खाते-खाते मन अघ गया है।···इधर देरी तो आगे में जगह नहीं मिलेगी। चलो, जल्दी!

कि-र्र-र-र-घन-घन धड़ाम-धा, धड़ाम-धा!

अरे खिस्सा होता सुरु अब सुनहु पंच भगवानों की,
गाँधी महतमा बीर जमाहिर करे सदा कलियानों की!

किर्र-र-घन-घन-घड़ाम-धा, धड़ाम-धा!

···कौन खेला होगा? क्या कहा? मस्ताना भगतसिंह! वाह! अभी जाकर रंग औट किया। दिन से पूछते थे तो बोलता था कि सुलताना डाकू का पाठ होगा।

जिसका जो हथियार!···भगतसिंह का पाठ खुद नितलरैनबाबू लिये हैं। दाहिने हाथ में पिस्तौल है और बायें हाथ में बेल के बराबर गोल क्या है? बम! ···अरे बाप! हाँ, जिसका जो हथियार! भगतसिंह का हथियार तो बम-पिस्तौल ही था।

किर्र-र-घन-घन-घड़ाम-धा!

अजी बेटा हम मादरे वतन भारथ का
हमें डर नहीं फाँसी सूली का···!

किर्र-र्र-किर-किर-घड़ाम-धड़ाम-घड़ाम!

भगतसिंह नाच रहा है। एक हाथ में बम और दूसरे में पिस्तौल। नाचकर स्टेट[1] के एक कोने से दूसरे कोने पर जाता है। खूब नगाड़ा बजाता है नगड़ची! ठीक पन्नालाल कम्पनी के तरह! इटहरा का नकछेदी है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा! ···सिरिफ ताल काटने के समय जरा डर लगता है। ताल काटने के समय धड़ाम-धा, धड़ाम-धा ताल पर भगतसिंह बम वाले हाथ को दो बार पवलि की ओर चमकाता है, मानो बम फेंक रहा हो। और जब-जब वह ऐसा करता है आगे में बैठे सभी लोग जरा करवट होकर एक-दूसरे की पीठ के पीछे मुँह छिपा लेते हैं।···कौन ठिकाना, कहीं इधर ही फेंक दे तब?···कभी नकली तलवार से देह नहीं कटता है क्या? तब नकली बम हो चाहे असली, हाथ से छूट जाने पर कुछ-न-कुछ घवैल तो जरूर करेगा!···अरे, नखलौ की बाईजी कहाँ है? उसको सामने लाओ! डोली में क्या छिपाकर रखा है?···ताली बजाओ तब निकलेगी।

"आ गयी! ऐ, देखो नखलौ की बाईजी को!"

"आकर चुपचाप खड़ी काहे हो गयी?"

"गला से तो जरूर पकड़ी जायेगी। गाने तो दो जरा!"

---

१. स्टेज।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"रोगन-पौडर लगाकर खपसूरत लगती है। दिन में देखना, खपरी की पेंदी की तरह···।"

"हो-हो-हो ! साला दुलरिया बात बनाने जानता है।"

बाईजी शुरू करती है :

खादी के चुनरिया रँग दे छापेदार रे रँगरेजवा
बहुत दिनन से लागल बा मन हमार रे रँगरेजवा !

धम-धड़ाम, धड़-धड़ाम !

"नाचती है तो नाचती है, दाँत बिचकाकर हँसती क्यों है ?"

"ए राम ! दाँत और ठोर तो एकदम काला भुजुंग है !"

"अजी दाँत नहीं, काबली अनार के दाने हैं दाने !"

···हो-हो ! हो-हो ! वाह, ठीक कहा दुलरिया ने !

बाईजी गा रही है :

कहीं पे छापो गन्धी महतमा
चर्खा मस्त चलाते हैं,
कहीं पे छापो वीर जमाहिर
जेल के भीतर जाते हैं।
अँचरा पे छापो झण्डा तेरंगा
बाँका लहरदार रे रँगरेजवा !···

क्रिर्र-रि-रि-रि-रि-धड़क-धड़क, घड़क-घड़म-धा-घड़म-धा !

अजी अँगिया पर छापो···।

···ऐ ! ऐ ! वाह ! हो—हो ! ···वाह-वाह !

"साटो इसके बिलोज पर टका !" एक आवाज आती है।

"जरूर साटो ?"

"अरे टका मत बोलो, मिडिल बोलो मिडिल। देहाती की तरह काहे बात करते हो ! चाँदी की चकती को 'मिडिल' कहते हैं।"

"सुनो···भगतसिंह फिर काहे स्टेट पर आया ?"

"प्यारे भाइयो, आप लोग हल्ला मत कीजिए···। अब एक गाना होगा—'मोरा बाँका सिपैहिया टट्टू से गिरा जाय' !"

"अरे लचकर काहे झाड़ता है ? बजाओ नगाड़ा।···रात-भर का सट्टा है। तेरी सिपैहिया की ऐसी-तैसी ! खेला सुरु करो !"

"हाँ, ये लोग तो यही चाहते हैं कि इसी तरह 'रिब-रिब' में ही रात काट दें।···नाचो !"

"ए ! पंचलैट में हवा दो ! भुकभुका रहा है !"

"हवा क्या देगा, आँधी आ रही है। पानी भी बरसेगा।"

क्रिर्र-घन-घन-धड़ाम-धा, धड़ाम धा ! नगाड़ा घनघनाया।

गुड़-गुड़म ! आसमान में बादल घुमड़े।

फटाक् ! पटाखा फूटा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अजी [illegible] है नामी इसमें सरदार
अजी करना है उसको गिरिफदार !

…किर्र-किर्र-घन-घन-घड़ाम-घा !

"मारो साले को ! यही साला सब असल देशदुरोहित है, पहचान रखो।"

"मारो ! मारो ! …रे मार साले को !"

"हो-हो ! हो-हो !" आँधी आ रही है सायद…। गाय-बैलों को घर से निकालकर बाहर करना होगा। चूल्हों में आग छोड़कर ही जलाना[1] लोग सो जाती है। बहुत खराब आदत है। आग रखती है हुक्का पीने के लिए। रे चलो…। बाँस-फूस के घर का क्या ठिकाना ! आँधी आयी, उड़ा ले गयी। बरसा हुई तो टपकने लगी और चिनगी भी कभी उड़ी तो सोहा ! …चलो। क्या देखेंगे अब नाच ! कटिहार की चवनियाँ माल को उठा लाया है और कहता है कि नखली की है। चलो !

गुड़गुड़ुम ! गुड़गुड़ुम !

कमला को डाक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया है ! …तीन बजे दिन में ही सन्थाली नाच देखने अस्पताल आयी थी कमली ! नाच खत्म हो गया, शाम हो गयी, उधर नौटंगी कब शुरू हुई, कब खत्म हुई, शायद दोनों में से कोई नहीं बता सकेगा।…जब बादल गरजे, बिजलियाँ चमकीं और हरहराकर वर्षा होने लगी तो कमली को डाक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

कमली ने बाँहें छुड़ाने की एक हल्की चेष्टा की।…

बिजली चमकी।

गुड़गुड़ुम ! गुड़गुड़ुम !

रिं-रिं-ता-धिन-ता !

डिग्गा-डा-डिग्गा !

सन्थाली नाच के माँदर और डिग्गा के ताल पर दोनों की धुकधुकी चल रही है। छम्म-छम्…आज कमली इस इलाक़े में पहने जानेवाले सभी क़िस्म के गहनों से लदी है।…बाँक, हँसुली, बाजू, कँगना, अनन्त, चूर, झँझनी, अर्थात् झुनुक-झुनुक बजनेवाली बेड़ियाँ जिसे 'झँझनी-कड़ा' कहते हैं ! …और चूर तो देह के सिहरन पर भी खनकते हैं—टुन-टुन !

टुन-टुन !

छम्-छम् !

गुड़गुड़ुम !

छम्म, छम् ! छम्म, छम् !

टुन-टुन !

डाक्टर ! डा क ट् र् ! ओ ! …प्र शा न्त म हा सा ग र !

रा ज क म ल…!

---

1. जनाना।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाँच

बावनदास को अब अपने पर भी परतीत नहीं होता है।...बालदेवजी कहते हैं—चित्त चंचल हो गया है बौनदास का और थोड़ा 'भरम' भी गया है। बस, सिरिफ गाँधीजी पर भरोसा है बावन को।...बापू सब पार लगावेंगे! बहुत-बहुत कठिन परीच्छा में बापू अकेले सबको सँभाल लेंगे। जै! बाबा! बापू!

...लेकिन उसके दिल में न जाने क्या समा गया है कि हर बात का खराब रूप ही पहले देखता है। सन्देहात्मक दृष्टिकोण से ही वह सारी दुनिया को परखता है। बापू ने चिट्ठी का जवाब दिया है:

"भगवान बावनदासजी। आप ही धीरज छोड़ दोगे तो भक्तजनों का क्या होगा?...बापू के प्रणाम!"

बावन कठहँसी हँसते हुए कहता है, "गंगुलीजी! बापू को देखिए।...अब हम क्या करें? मन में सन्देह होता है, दिल उदास हो जाता है। फिर आदमी को अपने काम पर भी विसवास कैसे हो? बापू से पूछते हैं तो दिल्लगी में ही टाल देते हैं। लिखते हैं कि आप धीरज छोड़ दीजिएगा...। अरे! छलिया रे! जनम-जनम छल करके ठगा, कभी रामओतार तो कभी क्रिसना ओतार और..."

"कभी बावन अवतार!" गांगुलीजी चट से कह देते हैं।

"धत्! आप भी तो...हो-हो-हो!" बहुत दिनों के बाद आज ही बावन ऐसा दिल खोलकर हँसा है।

बावनदास जब दिल खोलकर हँसता है तो उसकी आँखें खुद-ब-खुद बन्द हो जाती हैं, और तब ऐसा लगता है मानो एक बड़ा-सा सेलुलाइड का खिलौना हिल रहा हो। बावन अवतार!

रावन अवतार! यह चलित्तर रावन का ओतार बनकर आया है भाई, सुने हो या नहीं, हसलगंज के हरखू तेली के घर में डकैती हो गयी!

...आँयें! कब?...सुराज उतसब की रात में ही? बन्दूकवाले थे? घवैल तो नहीं हुआ कोई?...दो खून? एँ?

सुमरितदास बेतार अभी तुरत कटिहार से आया है।

"बात यह है कि हसलगंज के हरखू तेली की कंजूसी के बारे में तो सभी जानते हौ हौ!...चलित्तर करमकार, या भगवान जाने कौन था सो, एक दिन ठीक दोपहर को उसके दरवाजे पर आया। पानी पीने के लिए माँगा तो, सुनते हैं कि पैसा माँगा। लेकिन सहुआइन कहती हैं, दूकान पर जलपान करके, हाथ-मुँह पोंछके जाने लगा तो हम पैसा माँगा। बोला कि तुम्हारे यहाँ एक गिलास पानी पियेंगे तो पैसा माँगोगी? भाई, हम भी सुनती-उड़ती बात कहते हैं, खाँटी हाल एक-दो दिन में खुद ओट हो जायगा।...सुनते हैं कि सुराज उतसब की रात में एक दर्जन लोगों को लेकर, पहड़िया घोड़ा पर सवार होकर आ गया। आते ही बोला—कहाँ सहुआइन! पूड़ी बनाओ!...नहीं बनायेगी कैसे? हाथ में रैफल-बन्नूक लेकर दो-दो आदमी सहुआइन के अगल-बगल में एकदम तैयार। हरखू साह को चारों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ओर से घेरकर चौकी पर बैठाया और कहा कि रमैन पढ़ो। गाँव में दो आदमी चले गये, लोगों से कहा कि हम लोग हरखू साह की लड़की को देखने आये हैं।... सुबह होते-होते सब काम फिनिस! जहाँ-जहाँ मिट्टी के नीचे घड़ा गाड़कर रखा था, सब खोद लिया। एक जगह खोदकर गिनता था और हिसाब करके कहता था—'नहीं, और है। बताओ बुड्ढे! नहीं तो चढ़ाओ इसको चूल्हे पर, ढालो ऊपर से किरासन तेल।' सहुआइन तो रात-भर पूड़ी छानती रही और मिठाई बनाती रही। सुनते हैं, सहुआइन बीच-बीच में कहती थी—'ऐ बेटा! तीरथ करे खातिर कुछ रखली है, कुछ छोड़ दिहऽऽ...।' उसको एक हजार रुपैया दे दिया।... हरखू साह को कहा कि तुम आठ साल से एक ही धोती पहन रहे हो, तुमको रुपये की क्या ज़रूरत है...? जनाना लोगों को देह पर हाथ भी नहीं दिया, सुनते हैं! मगर जाते-जाते दो खून कर दिया।"

सुमरितदास बात करते-करते चारों ओर देखते हैं। क्यों?...कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं? आज फिक् से हँसते भी नहीं हैं। मुँह बड़ा चटपटाया हुआ देखते हैं। क्या बात है? ऐसा तो कभी नहीं देखा?...'सुनते हैं, सुनते हैं' की झड़ी लगाये हुए हैं। आखिर असल बात क्या है?

"अरे दासजी! कोई प्राइविट बात?"

"नहीं, प्राइबिट बात कुछ नहीं है!...दंगा हो रहा है। सुनते हैं कि डिल्ली, कलकत्ता, नखलौ, पटना सब जगह हिन्दू-मुसलमान में लड़ाई हो रही है। गाँव-के-गाँव साफ!...आग लगा देते हैं।" सुमरितदास हाथ में लोटा लेकर दिसा-मैदान की ओर चले जाते हैं।

...बालदेव अनसन करेंगे। क्यों, क्या बात हुई इस बार? बालदेवजी कहते हैं, "पियारे भाइयो! हम अभी डाक्टरसाहेब के बेतार में खबर सुनकर आ रहे हैं। अँधेर हो गया। एकदम सब पगला गये हैं, मालूम होता है। गांधीजी खिलाफत के जमाना से ही कह रहे हैं—हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं। तँवारीजी भी गीत में, आज से पन्द्रह-बीस साल पहले कहिन हैं:

अरे, चमके मन्दिरवा में चाँद
मसजिदवा में बंसी बजे!
मिली रहू हिन्दू-मुसलमान
मान-अपमान तजो!

"...सो, गाँधीजी की बात काटकर जो लोग यह सब अन्धेर कर रहे हैं, वे भी एक दिन अपनी गलती मान लेंगे।...गाँधीजी अनसन करेंगे सायद।...आजकल नूवाँखाली गये हैं। अभी बावनदास आया है पुरैनियाँ से। बोलता है कि गाँधीजी ने रामलालबाबू को नूवाँखाली बुलाया है। गाँधीजी ने सिवनाथ चौधरीजी को चिट्ठी दिया कि सन् तीस में गाँधी आसरम में जो आदमी पुरैनियाँ से आया था, उसको नूवाँखाली भेज दो। रमैन पढ़ेगा।...रामलालबाबू जब गा-गाकर रमैन पढ़ने लगते हैं तो सुननेवालों की आँखों से वह खुद ही लोर ढरने लगता है।..."

जोतखी काका आजकल बहुत चुप रहते हैं। फिर भी इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर वह कुछ नहीं बोलें, यह कैसे हो सकता है? उनकी राय है कि यह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब सिर्फ सुराज का नतीजा है।···जिस बालक के जन्म लेते ही माँ को पक्षाघात हो गया और दूसरे दिन घर में आग लग गयी, वह आगे चलकर और क्या-क्या करेगा, देख लेना। कलियुग तो अब समाप्ति पर है। ऐसे-ऐसे ही लड़-झगड़कर सब शेष हो जायेंगे।

अब लोग सोशलिस्ट पार्टी आफ़िस में भी दरखास-फरियाद लेकर आते हैं। जुमराती मियाँ रोता हुआ आया है। सुमरितदास ने उससे पाँच रुपैया छीन लिया है। "कालीबाबू! जुलुम···अब गरीब लोग कैसे रहेंगे?"

"अच्छा-अच्छा! आज साम को यहीं पाटी आफिस में रहिए। रात में हम आपकी पंचैती कर देंगे।" कालीचरन विश्वास दिलाता है।

"कामरेड बासुदेव! ···सुमरितदास को बुला लाओ तो।" शाम को कालीचरन गम्भीर मुद्रा बनाये हुए हैं।

मच्, मच्, मच्! बासुदेव कल पुरैनियाँ से लौटा है। भाटा कम्पनी का जूता खरीदा है चौबीस रुपये में। चलने के समय मच्-मच् बोलता है। रात में भी, आँख पर धूप-छाँहा काला चसमा लगाकर, पैजामा-कुर्ता पहनकर, जूता मचमचाकर चलने के समय थोड़ा नसा जैसा लगता है। परेड करते हुए चलने का मजा आ जाता है।···बासुदेव स्टेशन पर पान-बीड़ी-सिकरेटवालों की तरह बात को ऐंठकर आवाज़ गहरी करके पुकारता है—"सो म रे ट डै स!"

सुमरितदास की पिल्ही चमक गयी होगी। वासुदेव मन-ही-मन हँसता है—"स् यो म रे ट डैस!"

एक छोटी-सी छपरी में किधर छिपेंगे दासजी! बासुदेव ने पहले ही देख लिया है। वह उसे हाथ पकड़कर घसीट लाता है। सुमरितदास थर-थर काँप रहे हैं। "ह जी र, दुहाई···!"

"बेतार, बुलाहट है!" बासुदेव हँसते हुए कहता है।

"की···कौन, बा···बासुदेव? हेत्! हम समझे कि···दारोगासाहेब हैं। वाह! खूब डराया! अलबत्त बोली सीखे हो बाबू! होनी ही चाहिए। देस-बिदेस घूमते हो तुम लोग। किसने बुलाया है?···कालीचरन ने? अच्छा एक बात, बहुत दिन से पूछते-पूछते भूल जाते हैं। कहो तो, तुम्हारी पाटी में भी दो पाटी है क्या···?"

"काहे?"

"पहले बताओ तो," सुमरितदास फिक् से हँसता है।

"नहीं, पहले आप बताइए," बासुदेव कम जिद्दी नहीं।

"यही···कालीचरन एक दिन बोल रहा था कि सिकरेटरीसाहेब बासुदेव पर बिसवास नहीं करते हैं। हम बोले कि बासुदेव में तो कोई डिफेट नहीं तो बोला कि दासजी आप क्या जानिएगा भीतरी बात।···इसीलिए पूछते हैं कि···"

"अरे हाँ-हाँ दासजी, हम समझ गये। असल में कालीचरन है धरमपुरीजी की पाटी का। धरमपुरीजी भी सोशलिट पाटी में ही हैं, मगर हमारा सकरेटरी-साहब के सामने वह कुछ नहीं हैं। एकदम ठण्डा खेयाल के आदमी हैं। सभी से हँस-हँसकर बोलेंगे, काँगरेसियों के साथ बैठकर दुकान में दही-चूड़ा खाते हैं। अब

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोचिए कि···यह फलहार करनेवाला आदमी, इस किरान्ती पाटी में कैसे···? आप ही सोचिए दासजी !"

"ओ ! ओ···ओ ! यह बात है ?" सुमरितदास गम्भीर होकर कहता है, "वाजिब बात है।"

"हाँ, और यह कालीचरनजी उन्हीं की पाटी में है।" फिर फिस-फिसाकर कहा, "मंगलादेवी के साथ आजकल ऐसा रसलीला होता है कि क्या कहेंगे।··· यही सब बात हम सिकरेटरीसाहब से बोले। कालीचरन को सिकरेटरीसाहेब ने डाँटा है। इसीलिए ऐसा बोलता होगा।···देखिए न ! इसी बार मजा लगेगा, सम्मेलन में जाने के समय।"

"ओ-ओ-ओ।···हाँ भाई ! हर जगह यह पाटीबन्दी ठीक नहीं।··· लेकिन आखिर एक हद है। घरमपुरीजी के बारे में तुमने जैसा कहा, वैसा आदमी किरान्ती पाटी में कैसे रह सकता है ? वाजिब बात !···अलबत्त···बोलता है तुम्हारा सिकरेटरी किसनकान्तजी—गरमागरम ! बोलने के समय बाँह जब मरोड़ता है तो लगता है कि···। अच्छा, हाकिम का परवाना क्यों जारी हुआ है ? क्यों बुलाहट है ?"

"अरे, वही जुमराती मियाँ ने न जाने क्या-क्या कहा है जाकर। बोलता था कि रुपैया छीन लिया है।" बासुदेव आँख पर काला चश्मा चढ़ाते हुए कहता है, "मुसलमानों का क्या बिस्वास ?"

"समझो ज़रा !" सुमरितदास फिक् से हँसकर कहता है, "समझने की बात है !"

"मैं जाकर कह दूंगा कि घर पर नहीं हैं। कोई लाटसाहेब थोड़ी हैं जो लोग हाथ बाँधे खड़ रहेंगे। हम किसी का परवाह नहीं करते।" बासुदेव पैकेट से सिगरेट निकालकर दियासलाई के डब्बे पर ठोंकता है—"दिन-भर हम लेक्चर झाड़ते रहे हैं, सिगरेट मत पियो, अण्डा मत खाओ। और भीतरे-भीतरे···।" बासुदेव माचिस जलाकर सुलगाने लगता है।

···दियासलाई की रोशनी चश्मे के दोनों शीशों पर चमक उठती है। काले चश्मे पर जलती हुई माचिस ! सुमरितदास के सारे देह में एक सिहरन दौड़ जाती है, रोयें खड़े हो जाते हैं।···लेकिन वह हँसते हुए कहता है, "डूबकर पानी पियो, एकादसी का बाप भी न जाने।"

"हूँ !" बासुदेव धुएँ का गुबारा छोड़ते हुए खाँसता है।

···दारू की महक ! सुमरितदास की आँखें चमक उठती हैं, "बासुदेवबाबू, कुछ नेपलिया माल आया है क्या ? ज़रा हमको भी तो चखाओ !"

"औल रैट ! कल चखावेगा। लाल सलाम !"

मच्, मच्, मच्, मच्।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छह

तन्त्रिमाटोली में आज घमाघम[1] पंचायत हो रही है।

बहुत दिनों की बन्दिस है कि पंचायत में कोई भी घर की बोली नहीं बोले। काहे-कूहे, याने कचराही मोगलाही[2] जितना बोल सको, अच्छा है। पंचायत में कोई हटा नहीं सकता। लौजमानों के दल ने रमपियरिया के दासिन होने का घोर विरोध किया है।

"खेल बात है? जात है कि ठट्ठा है? जब जिसका मन हुआ किसी की रखेलिन बन गयी, दासिन बन गयी, रण्डी बन गयी?" आज गरभू भी गरम होकर बोलता है।

पंचायत में सबों को बोलने का हक है, इसीलिए घमाघम पंचायत हो रही है।

"कहाँ है रमपियरिया की माये?"

सबों की निगाह टट्टी की आड़ में खड़ी औरतों पर जाती है। रमजूदास की स्त्री खखारकर गला साफ़ करती है, "रमपियरिया की माये को क्या कहते हैं?"

"तुम मत बोलो!"

"धान न बोले, बोले भूसा टन!"

"हम बोलेंगे ही!" रमजूदास की स्त्री उठ खड़ी होती है।...लगता है आज मारपीट भी होगी।

"कहाँ, उचित और नोखे! छड़ीदार काहे बने हो?"

"हाँ, मारने कहो छड़ी।...जो न छड़ी से पीटे वह दोगला का बेटा!... रमपियरिया की माये के मुँह में बोली नहीं है तो आज घोंघी का भी मुँह खुला है!...रमपियरिया जवान है, उसके जो जी में आवे कर सकती है।...पंचायत में तो बड़ा फड़फड़ करते हो गरभू, रमपियरिया तो तुम्हारी भतीजी लगेगी न? बोल, खोल दें बात?...सात बेटे का बाप है छीत्तन, इससे पूछिए कि रमपियरिया के माये के मचान पर दिन-रात, भूख-पियास भूलकर पेट के बल क्यों पड़ा रहता है? यही निसाफ है...? अरे, जवान-जहान की बात हो तो कहा जा सकता है कि एक दिन पैर भँस[3] गया। इस घुर-घुर बूढ़े की यह चाल!"

"चुप रहो।...ऐ! चुप!...कहाँ छीत्तन?"

"सिर में तो अब एक भी काला बाल खोजने पर मिलेगा नहीं और यह तेजी?...काहे जी छीत्तन, क्या कहती है रमपियरिया की माये?"

छीत्तन का तोतरहवा[4] बेटा गरम हो जाता है, "मूँ ससँभाय कय बोओ!"

"मारो! पकड़ो!"

"ऐ! ऐ!"

"ः गाओ गले में कपड़ा! मारो झाड़ू ऊपर से!...सान दिखाता है!"

नोखे और उचितदास छड़ीदार हैं। पंचायत जब घमाघम होने लगती हैं, तब

---

१. गरम। २. कचहरी में बोली जानेवाली उर्दू। ३. बहक जाना। ४. तोतला।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
चे दोनों छड़ी हाथ में लेकर नचाते रहते हैं। नोखे और उचितदास छीत्तन को पकड़कर गले में कपड़ा लगा देते हैं। मंहगूदास, चेथरू, मुसहरू, अनपू और घोतन बीच-बिचाव करते हैं—"मारो मत !"

"सभी बूढ़े एक तरफ हैं।" एक आवाज आती है।

अब रमपियरिया की माये के बदले छीत्तनदास की पंचैती होती है। छि: छि: ! लाज से डूब मरने की बात है ! इस बार पाँच ही रुपैया जरिमाना हुआ। सस्ते छूट गये !

छीत्तनदास को पाँच रुपैया जुर्माना हुआ है और उसके तोतरहवा बेटा को पाँच बार कान पकड़कर उठने-बैठने की सजा। नोखे गिनता है—"एक, दो, तीन, चार, पाँच ··बस !"

रमपियरिया की माये को एक साम भोज देना होगा। महन्थसाहेब जात ले रहे हैं तो भात दें।···क्या कहती है रमपियरिया की माये ?···देगी ?···तब ठीक है। बोलिए पंच-परमेश्वर, क्या बिचार ?···जो दस का विचार !

दस का विचार हो गया—रमपियरिया दासिन बन सकती है। जाति की बन्दिस में जरा ढील देने से सब गड़बड़ा जाता है। इसी तरह बराबर पंचायत होती रहे तब तो ? अभी यह भोज तो फोकट में चला जाता हाथ से।

रमजू की स्त्री रमपियरिया की माये के आँगन में बैठी समझा रही है रमपियरिया को—"जब दूध की छाली और मालभोग केला खाकर आँख पर चरबी चढ़ जायगी, तब मौसी को पहचानोगी भी नहीं। महन्थ से कह देना, जोड़ा साड़ी से काम नहीं चलेगा। दही खिलाने से बाकी मोजर नहीं होगा।···कठसर[1] लेकर छोड़ेंगे।"

रमपियरिया हँसती है—"उनको तो जो कहेंगे, करेंगे। मगर कोठारिन···"

"कैसी पगली है रे ! कोठारिन वह कैसी ? अब तो कोठारिन तूं है। इसी मुंह से मठ पर रहेगी रे ?···लछमिनियाँ को कम मत समझो। उसका जहर-चौआ[2] यदि नहीं उखाड़ सकी तब तो तुम्हारा महन्थ सब दिन खँजड़ी बजाकर फटकनाथ गिरधारी गाता रहेगा। पगली ! इसी लूरमुंह से···"

"सुनती है रे ! रमपियरिया ! कहाँ गयी उठकर ?··सायद महन्थ आया है···।" उसकी माँ पुकारती है।

"साहेब वन्दगी हो महन्थ ! पिछवाड़े में अब काहे छिपे हो ? अब तो तुम अपने आदमी हुए···इधर आओ !" रमजू की स्त्री आँख टीपकर मुस्कराती है।

महन्थसाहेब रमपियरिया के साथ केलावाड़ी से निकलकर आँगन में आते हैं।

"पीढ़ी दो रे ! ···बैठिए।"

"जातवाले तो भात माँग रहे हैं। हमने तो कबूल लिया है।" रमपियरिया का माये चिलम फूंकते हुए कहती है।

"लछमी से पूछेंगे," महन्थसाहेब आँखें नीची करके कहते हैं। रमपियरिया की माये अब उनकी सास है। सास के सामने जरा लिहाज से बातें करनी

---

१. कण्ठसर, एक गहना। २. बिषदन्त।

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
चाहिए।

"क्या बोले ?" रमजू की स्त्री फटे कनस्तर की तरह झनझना उठती है, "लछमी से पूछेंगे ? रमपियरिया की माये ! सुनती हो ? हम कहा था न, उसने तो इनको भेंड़ा बना लिया है। अरे, महन्थसाहेब। लछमी कौन होती है जो आप उससे पूछिएगा ?"

"नहीं, वह बोली है···!"

"महन्थसाहेब, बुरा मत मानिएगा, आप हिजड़ा हैं।" रमजू की स्त्री जाने के लिए उठकर खड़ी होती है, "रमपियरिया को लछमिनियाँ की लौण्डी बनावेंगे महन्थसाहेब, हम सब समझ गये।"

"नहीं, नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता। ड़मपियाड़ी जो कहेगी···वही होगा।" रामदासजी के दोनों हाथ जुड़ जाते हैं।

"···ड़मपियाड़ी जो कहेगी !" महन्थसाहेब हर बात में अब कहते हैं—"जाने ड़मपियाड़ी।"

"रमपियरिया क्या जानती है ?" लछमी कुढ़ जाती है, "सालभर तो उसे मठ के नेम-टेम सीखने में ही लग जायेगा। हाथ की सभी अंगुलियों को सही-सही गिन भी नहीं सकती है और उसके पास जन-मजूरी का हिसाब है। सतगुरु हो, सतगुरु हो !"

जिस दिन से रमपियरिया मठ पर दासिन होकर आयी है, लछमी का मुँह हाँड़ी की तरह लटका रहता है।···महन्थ रामदास सबकुछ समझते हैं। रमपियरिया को मजूरों की मजूरी का धान नापने को कहते हैं महन्थसाहेब। "नहीं जानती है हिसाब-किताब, तो समझा दो। सिखावेगी-पढ़ावेगी तो कुछ नहीं, बस खाली लचकर झाड़ती रहेगी !"

"मैं लचकर झाड़ती हूँ ? सतगुरु हो ! मुझे अपने पास बुला लो प्रभू ! अरे, अभी उसकी देह में एक मन साबून घँसो तब कहीं उसके सरीर में प्याज-लहसुन की गन्ध कम होगी। भोर को उठना सिखाओ। मुँह तो कभी धोती भी नहीं है। बीड़ी पीती है। डोलडाल से आकर नहाती भी नहीं है। जूठे हाथ से बीजक उठाती है। मैं क्या सिखाऊँ-पढ़ाऊँगी ? तुम क्या कहते हो ? आँचल में चाबी लटकाये बिना कुछ नहीं सीख सकती, तो लो न चाबी अपने भण्डार की। मुझे चाबी लटकाने का सौख नहीं है। जानते हैं सतगुरु !" लछमी झन् से चाबी का गुच्छा फेंक देती हैं।

···महन्थ रामदास देखते हैं, यह तो सिर्फ गोदाम-घर की चाबी है। सन्दूक की चाबी कहाँ है ?···"चाबी काहे फेंकती हो ? बात-बात में इतना गुस्सा होने से कैसे काम चलेगा ?" महन्थसाहेब गम्भीर होकर कहते हैं, "तुम मेरी गुरुमाई हो ! ···ड़मपियाड़ी को रास्ते पर लाना तुम्हारा काम है।"

"देह का मैल भी मैं ही छुड़ा दूंगी ? कपड़ा मैं ही साफ कर दूंगी ?···दस दिन भी नहीं हुए हैं, गद्दीघर[1] की दीवाल पर थूक-खखार की ढेरी लग गयी।

---

१. बीजक और महन्थ के रहने का कमरा।

Funding by IKS-MoE

अधजली बीड़ी के टुकड़ों से घर भरा हुआ है। वह भी मैं ही साफ करूँगी ?…अब यह मठ नहीं, सूअर का खुहार है खुहार।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"तुमको ड़मपियाड़ी के देह का मैल छुड़ाने के लिए कहेंगे ? हम पागल नहीं हैं। तुम बाबू बालदेव की गर्दन की मैल छुड़ाओ…।" महन्थ रामदास क्यों छोड़ देंगे ?सच्ची बात तो लोग अपने बाप के मुँह पर भी कह देते हैं।"

"बालदेवजी का नाम मत लो।"

"क्यों नहीं लेंगे ?…मठ को सूअर का खुहार बनाया कौन ?"

"मैंने बनाया है ?"

"हाँ, तुमने बनाया है। मेरा भीतर जल रहा है। बात मत बढ़ाओ !"

"भीतर जलता है तो मारकर ठण्डा कर लो।"

मारपीट का नाम सुनकर बालदेवजी कैसे चुप रहें ! हिंसाबात का डर है ! "महन्थसाहेब !…कोठारिनजी ! सान्ती ! सान्ती से सब बात कीजिए !"

"अहा-हा ! कोठारिन रे कोठारिन !" रमपियरिया को बचपन से ही झगड़ने की तालीम मिली है। वह किवाड़ की आड़ से निकल आती है और हाथ चमका-चमकाकर कहती है—"रोज आध पहर रात को कोठारिन की कोठरी खुलती है।…सन्दूक की चाबी कहाँ है ?…गुदामघर में है क्या ? सब तो बेंच-बाँचकर छुट्टी कर दिया।"

लछमी के नथने फड़कने लगते हैं। लगता है किसी ने बाँस की पतली छड़ से उसकी पीठ पर शपाक् से मार दिया।…बारह बजे रात को कोठरी खुलती है !…सब बेंच-बाँचकर छुट्टी कर दिया !…सतगुरु हो, किस पाप का दण्ड दे रहे हो प्रभू ?

"रामदास ! अपनी फेकसियारी[1] का मुँह बन्द करो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। क्या चाहते हो तुम लोग ?…सन्दूक की चाबी के लिए कलेजा ऐंठ रहा है तो ले लो।" लछमी सन्दूक की चाबी भी फेंक देती है।

रमपियरिया अब गद्दी से बकर-बकर कर रही है।…अलबत्त बोल सकती है रमपियरिया ! लौंगी-मिरचा की तरह वह तेज है। उसकी बातें सुनकर देह लहरने लगता है। बात में भी ऐसा…झाल ?

"लड़ि मरे बरदा, बैठल खाये तुरंग। दिन-भर बैठकर महतमाजी-महतमाजी कहता है बालदेव, कभी एक लोटा पानी भी किसी पेड़ में दे तो समझें कि हाँ ! सुबह से साम तक ऐना-ककही लेकर महरानी सिंगार-पटार करेगी ! यहाँ कोई किसी का नौकर नहीं।…मेरे देह में मैल है, मन में नहीं। ऊपर से तो गमकौआ साबुन और चम्पा-चमेली का तेल लगाती हो—भीतर ? राम-राम ! रात-भर मुँह में मुँह सटाकर सोनेवाली, भोर में मुँह धोकर सुध तो नहीं हो सकती।…नट्टिन ! कसबिन !" रमपियरिया बड़बड़ा रही है।

"ड़मपियाड़ी ! बेसी मत बोलो, सिर में दरद हो जायगा।" रामदासजी कहते हैं, "ऐसा जानता तो…।"

---

१. लोमड़ी की एक जाति।

Funding by IKS-MoE

लछमी दासिन कुछ नहीं बोलती है । चुपचाप, टकटकी लगाकर तीवू के पेड़ की ओर देखती है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रमपियरिया की एक-एक बात तीर की तरह उसके मर्मस्थल में गुँथ गयी हैं ।···गमकौआ साबून और चमेली का तेल ?···महन्थ सेवादास ने उसे यही एक बहुत खराब आदत लगा दी है, बिना साबून के वह नहा ही नहीं सकती है । मन पवित्र ही नहीं होता है बिना साबून के ! केशरंजन तेल तो सिर-दर्द के दिन ही अब लगाती है वह ।···महन्थसाहेब जब पुरैनियाँ कचहरी से लौटते तो झोरी में तेल, साबुन, किसमिस-अखरोट और तरह-तरह का फल-मेवा ले आते थे । कोई भी नयी चीज़ बिकते देखा, बस खरीद लिया ।

···महन्थ सेवादास के साथ सभी तीरथ कर चुका है लछमी···क्या इसी नरक-भोग के लिए ? उसकी तकदीर ही खराब है । अब मठ में रहना नरकवास है ! छि:-छि:, दस दिन हुए, परसाद जरा भी नहीं रुचता है, पानी में मछली की गन्ध पहले ही रोज़ लग गयी, सो अब पानी पीते ही कै हो जाती है ।···मठ पर आने के समय रमपियरिया की माये ने ठूंस-ठूंसकर मछली खिला दिया था । सत-गुरु हो !···सबकुछ करो, पन्थ मत भरस्ट करना गुरु···! वह कल ही अलग हो जायगी मठ से । महन्थसाहेब उसके नाम से तीस बीघा ज़मीन और कलमी आमों का एक बाग लिख गये हैं । उस पर मठ का कोई अधिकार नहीं ।···सब एक सप्ताह में ही, सतगुरु की कृपा से, ठीक हो जायेगा ।

लछमी की आँखों के आगे सपनों जैसी एक दुनिया बस रही है ।···कलमी आम के बाग में, ठीक बम्बई आम के पेड़ के पास, दो खूबसूरत झोंपड़ियाँ हैं । वह चरखा चला रही है, बालदेवजी बीजक बाँच रहे हैं !···

"बालदेवजी ! अब आसन तोड़िए !"

बालदेवजी लछमी के चेहरे की ओर भकर-भकर[1] देखते हैं । जब-जब वह लछमी की आँखों में खोते हैं, उनका चेहरा ठीक ऐसा ही अर्थ-भावहीन हो जाता है ।···आसन तोड़ना होगा ?

"हाँ, आसन तोड़ना होगा । यहाँ धरम नहीं बचेगा ।" लछमी की आँखें डबडबा आती हैं ।

आ रे ! जोगिया के नग्र बसे मति कोई
आहो सन्तो···जो रे बसे सो जोगिया···होई !

···डिम डिमिक-डिमिक्, डिम डिमिक-डिमिक् !

१. अर्थ-भावहीन दृष्टि से देखना ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कमली दिन-दिन खूबसूरत होती जा रही है।

गले में अब दो रेखाएँ ऐसी उभरती हैं जो उसके मुख-मण्डल को और भी आकर्षक बना देती हैं। आँखों में चंचलता नहीं, एक मद है।···अचानक देखने पर लगता है कि आँखों में काजल पड़ा है।

"माँ! अब तुम्हारा डाक्टर···खुद बेहोश होने लगा। आध घण्टे से दीवार की ओर एकटक देख रहा है।" कमला अपने कमरे में बाल झाड़ रही है।

माँ डाँटती है, "कमली, डाक्टरसाहेब गोल कमरे में बैठे हैं।"

"तो क्या हुआ?"

कई दिनों से माँ चाहती है कि कमली को कहे, इतना हेल-मेल अच्छा नहीं। लेकिन, अभी उसकी ओर देखते ही माँ ने जाने क्या देखा कि मोम की तरह गल गयी।···दूधिया और वर्ण, सुडौल बाँहें, लम्बे-लम्बे बाल, सुगठित मांसपेशियाँ और आँखों में यह क्या?···काँप जाती है माँ। यह क्या रे अभागी? हत-भागिन! आँचल को मैला मत करना बेटी, दुहाई! नहीं, नहीं···वह भी कैसी है? उसकी बेटी तो 'माँ कमला' है···वह जो चाहे, करे! माँ के ओठों पर स्वाभाविक मुस्कराहट लौट आती है, "मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतारकर डाक्टर ने अपने ऊपर ले लिया है।"

"हो-हो!" डाक्टर अब हँसी जब्त नहीं कर सकता है, "हो-हो!" कमली पर्दे की आड़ से गला निकालकर इशारे से कहती है, "चुप! आप बीमार हैं। मालूम?"

तहसीलदारसाहब की खड़ाऊँ खटखटाती है। हँसी सुनकर वे भला कोई और काम कर सकते हैं!

डाक्टर को तहसीलदारसाहब के दोनों रूपों के दर्शन हो चुके हैं। जब वह घर-गृहस्थी, मामले-मुकदमे, लेन-देन, नफा-घटी वगैरह की बातें करते रहें तो उनका कोई और रूप देखिएगा। घर में, आराम से बैठकर दीन-दुनिया की बातें करते समय अथवा रामायण-महाभारत, देश-विदेश से लेकर घरेलू चीजों पर टीका करने के समय, किसी और तहसीलदारसाहब को आप देखिएगा।···हास्य-प्रिय, रसिक और कुशल गृहस्थ! भोला-भाला इन्सान!

डाक्टर को उनके प्रथम रूप से बेहद घृणा है, किन्तु दूसरे रूप के इन्द्रजाल में तो वह फँस ही चुका है।

"क्या बात थी?" तहसीलदारसाहब हँसी का टटका स्वाद लेने के लिए तुरत पूछ बैठते हैं—"कमली की माँ! क्या बात थी? ये दोनों नहीं बतावेंगे!"

"अरे, तुम्हारी पगली बेटी के मुँह में जो आता है बक देती है। तुम्हारी बहकायी हुई बेटी अभी कह रही थी कि डाक्टरसाहेब अब खुद बेहोस हो जाते हैं।"

"अच्छा,···तब?" तहसीलदारसाहब मुस्कराहट को रोकने की मुद्रा बना-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कर, चाय के प्याले में चुस्की लेते हुए पूछते हैं, "तब फिर ?"

माँ हँसी को रोकते हुए कहती है, "तो मैंने कहा कि मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतारकर उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है। डाक्टरसाहेब भी सुन रहे थे···।"

"हा-हा-हा-हा !" तहसीलदारसाहब की ऐसी हँसी को कमली कहती है, 'बाबा पछतिया[1] हँसी हँसते हैं।'

तहसीलदारसाहब भी देखते हैं, कमली के स्वभाव में बहुत परिवर्तन हुए हैं। ऐसी बेटी का बाप चुपचाप बैठा है; लाचार है। भगवान ! शंकर भगवान ! कमली पर कृपा-दृष्टि फेरो !

डाक्टर तहसीलदारसाहब की बुझती हुई हँसी को गौर से देखता है।··· यह शायद एक तीसरा रूप है जिसे देखकर पत्थर भी पिघल जाये ! कितना करुण !

"डाक्टरसाहेब !" माँ दो प्लेटों में जलपान ले आती है, "कमली रेडियो की दीदी से मटर-पोलाव सीखकर आयी है उस दिन !"

"तो यह आॅल-इण्डिया रेडियोवाला मामला है ! शुरू कीजिए डाक्टर-साहब ! देखिए कि मटर की घुघनी को किस सफ़ाई से मटर-पुलाव बना दिया है।"

"कुछ भी हो, खयाली पुलाव से तो अच्छा है।" डाक्टर कमली की ओर हँसते हुए देखता है।

"हो-हो-हो-हो !"

हँसी-खुशी के इन्द्रजाल में फँसकर डाक्टर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना तो नहीं कर रहा है ? वह कभी-कभी रुककर सोचता है—वह जो कुछ भी कर रहा है, उसके विरोध में हृदय के किसी कोने का तार बेसुरा तो नहीं बज उठता है ? ···नहीं, वह जो भी कर रहा है, सही हो या गलत, अच्छा लगता है उसे !

प्यारू ने कई बार कहा है, आँगन की ओर खुलनेवाली खिड़की पर भी पर्दा रहना चाहिए। नंगी-सी लगती है यह खिड़की ! डाक्टर प्यारू को इसीलिए इतना प्यार करता है।···कमली अब रोज़ डाक्टर के यहाँ आती है।

"मौसी कहती थी···कहती थी कि···तू गलत कर रही है। तुम दोनों गलत कर रहे हो ! ···इसके बाद क्या होगा, सोचा है कभी ? क्या होगा इसके बाद डाक्टर ? कहो तो !" कमली आम के फाँकों-जैसी आँखों से मधु ढालते हुए पूछती है।

"कहो तो डाक्टर, क्या होगा ?"

"क्या होगा ? जो भी हो, बुरा न होगा।"

"तुम हमेशा मेरे पास नहीं रह सकते ?"

"फिर पागलपन ?"

"डाक्टर, तुम जिन तो नहीं ?"

---

१. देर से फलने-फूलने वाली।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"जिन ? क्या जिन ?"

"जिन एक पीर का नाम है। वह कभी-कभी मन मोहनेवाला रूप धरकर कुमारी और बेवा लड़कियों को भरमाता है। गरीब-से-गरीब को धनी बना देना उसकी चुटकी बजाने-भर की बात है। जिस पर बिगड़े, बरबाद कर दे, जिस पर ढरे उसे निहाल कर दे।" कमली के गले की दोनों नयी रेखाएँ जल्दी-जल्दी बनती-बिगड़ती हैं···। वह डर तो नहीं रही ?···वह डाक्टर को पकड़ लेती है।

"क्यों झूठ-मूठ डरने लगीं ? फिजूल की बातें भरे रहती हो दिमाग में !"

"नहीं, मुझे डर नहीं लगता है। यदि तुम जिन भी रहो तो···मैंने तुमको जीत लिया है।"

"इतना भरोसा ?" डाक्टर कमली की आँखों में चमकते विश्वास का स्पष्ट रूप देख लेता है !···कमला नीरोग है ! स्वस्थ है कमला !

"तुम बाँहों पर उस दिन कौन-सा जेवर पहनकर आयी थीं ? अब क्यों नहीं पहनतीं ?"

"बाजू।···क्यों, ग्वालिन-जैसी लगती थी न ? गोकुल की ग्वालिन !" कमला ठठाकर हँस पड़ती है।

इसी को रासलीला कहते हैं।···देखते हो ? अभी दोपहर रात को डाकडर का नेंगड़ा नौकर लैट भुकभुकाता हुआ, तहसीलदार की बेटी को घर पहुँचाने जाता है।···सादी ही क्यों न करा देते हैं ? एकदम साहेब-मेम ! डाकडरसाहेब भी कैसे आदमी हैं !

"डाक्टरसाहेब कैसा आदमी है ?" अगमू चौकीदार से कटहा थाना के नये दारोगासाहब पूछते हैं।

"हुजूर ! अच्छा आदमी है, मगर···"

"मगर क्या रे ? साला आधा बात बोलता है, बटच्···आधा बात पेट में रखता है। साले, हमको चीन्ह लो। हम दूसरे जिला के नहीं, हमारा घर इसी जिला में है। जानते हो न ? हमसे साले बात छिपाते हो ? क्या मगर ?" नये दारोगासाहब जलजल करते हैं। हवा को भी गाली देते हैं, "साला ! रात में बटच्· ऐसा हवा बहता था हवलदारसाहब, कि नींद तो बुझिए कि बोझ दिया। हवलदारसाहब, जरा वह फाइल दीजिए तो ! देखें, क्या-क्या सब पूछा है ? नया-नया पार्टी होता है, साला हम लोगों का जान जाता है !"

दारोगासाहब नयी उम्र के हैं। कहते हैं कि इस जिले के पहले पाँच दारोगों में से एक हैं। बातें करते समय वह यह कहना नहीं भूलते—"साहब ! मैं बाहरी आदमी नहीं, इसी जिले का हूँ।" हर मौके पर इसका बढ़िया इस्तेमाल करते हैं—"मैं यदि एक पैसा खा भी लूंगा तो इसी जिले में रहेगा।" दारोगासाहब जबर्दस्त ग़लतफ़हमी से परेशान रहते हैं कि बाहर के जितने भी लोग यहाँ आये हैं, उन्हीं के हिस्से का सुख-मौज लूट रहे हैं।···फारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटनबाबू जिला कांग्रेस के सिक्रेटरी हुए हैं।···लिखा है···यह डाक्टर कौमनिस्ट पार्टी का है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
दारोगासाहब ने अस्पताल को चारों ओर से एक दर्जन सिपाहियों से घिरवा रखा है।

"आपका घर···असल में कहाँ है?" दारोगासाहब हैरान होकर पूछते हैं।

"विराटनगर।"

"विराटनगर तो नेपाल में है। आप नेपाली हैं?"

"नहीं।"

"तब?"

"आप इतना हैरान क्यों हो रहे हैं, दारोगासाहब? मैं जो कुछ भी कहता हूँ, लिखते जाइए।"

"सो···लिखते जाइए। वाह! आखिर क्या लिखें?"

"मैं जो कुछ भी जवाब देता हूँ।"

तहसीलदारसाहब पसीने से तरबतर हो रहे हैं। प्यारू का मुँह सूख गया है। क्या बात है, कुछ पता नहीं चलता।···मौसी का कलेजा धड़क रहा है।···लेकिन आश्चर्य! कमली पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती।···'डाक्टर को कुछ नहीं हो सकता। कोई बात नहीं है।' कमली को दृढ़ विश्वास है।

दारोगासाहब डाक्टर को दो बात में ही पहचान गये हैं—"अजीब किस्म का आदमी है यह डाक्टर!"

सुमरितदास बेतार से आज बच्चा-बच्चा पूछता है—"सुमरितदास, डागडर-साहेब ने क्या किया है जो दारोगासाहेब पकड़ने आये हैं?···घूस लेने की शिकायत तो नहीं किया है किसी ने?"

"देखो न जी! बड़ा खराब है यह दुनिया। किसी का बिसवास नहीं।··· रमैन में कहा है न—विस रस भरे कनक घट जैसे! यह डाकडर तो सुनते हैं कि ···जरमनवाला का आदमी है! जोतखीजी ठीक ही कहते थे···जरमनवाला का सी-आई-डी है यह डाकडर! यहाँ के लोगों सुई भोंककर कमज़ोर करने का काम करता था। कुआँ में दवा डालकर सचमुच में हैजा फैलाया है। जरमनवाला का एक पाटी है यहाँ, कमसीन···कौम-नीस पाटी सुनते हैं, उसी पाटी का आदमी है।"

इस दारोगा की हरकतों पर डाक्टर को ताज्जुब होता है। बार-बार कहता है, हम इसी जिले के हैं। बेवकूफों की तरह सवाल करता है, "आपको···बहुत लड़कियों से ताल्लुक रहा है?"

"रहा है। कम-से-कम चार सौ लड़कियों के साथ मैं दिन-रात रह चुका हूँ।" डाक्टर मुस्कराता है।

"चार सौ?" दारोगासाहब को जब किसी बात पर अचरज होता है तो उनकी आँखें उल्लू की आँखों की तरह गोल हो जाती हैं, "चार···चार सौ? बटच् ···इतनी लड़कियाँ कहाँ से मिलीं!"

"मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में।"

"ओ!···नहीं, मेरे पूछने का मतलब है कि भले घर की लड़कियाँ···!"

"क्यों, हॉस्पिटल में भले घर की लड़कियाँ नहीं जातीं?"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"मेरा मतलब···। खैर, छोड़िए इन बातों को। 'कोमनिस्ट पाटी' वालों से आपका कैसा रिस्ता है ?"

"मेरे बहुत-से दोस्त कम्यूनिस्ट हैं।"

"आपने सन्थालों को भड़काया···समझाया था कि जमीन पर जबर्दस्ती हमला कर दो ? सन्थालों ने अपने बयान में कहा है।"

"सन्थाल लोग समय-समय पर मुझसे पुराने कागजात पढ़वाने आया करते थे—जजमेंट वगैरह···।"

"आप अपनी किताबें दिखला सकते हैं ?" दारोगासाहब उठकर किताबों की अलमारी के पास जाते हैं।

···साला, सब डाक्टरी किताबें हैं ! ···चिल्ड्रेन ऑफ़ यू०एस०एस०आर०। लाल रूस, लेखक : बेनीपुरी।···लाल चीन, लेखक : बेनीपुरी।

"ये सब तो रूस की किताब है !"

"रूस की नहीं, रूस के बारे में !"

"दोनों एक ही बात है।" दारोगासाहब उस किताब को निकालकर उलटते हैं—मानो किताब के पन्ने में बम छिपा हो। बहुत सतर्क होकर पृष्ठ उलटते हैं।

···डागडरसाहेब गिरिफ्फ़।···जुलुम बात ! सन्थालों को डागडरसाहेब ने ही भड़काया था। गाँव में हैजा भी उन्होंने फैलाया था।···गाँव के लोगों को कमजोर कर दिया।···हाँ, हैजा की सूई लेने के बाद···आज भी जब काम-धन्धा करने लगते हैं तो आँखों के आगे भगजोगनी उड़ने लगती है।···देखने में कैसा बम-भोला था ! मालूम होता था, देवता है। भीतर-ही-भीतर इतना बड़ा मारखू[1] आदमी था सो कौन जाने ! जोतखी काका ठीक ही कहते थे।

···गोनौरी के यहाँ फारबिसगंज का एक मेहमान आया है। कहता है, उसके गाँव के पास, सिझवा-गरैया में एक डागडर है जो डकैती कराता है। डागडर तो घर-घर में जाता है, अगवार-पछवार सब देखता है, रुपैया का बक्सा भी वह देखता है।···वह अपने दलवालों को पूरा नकसा बता देता है। घरवाले को सोने की दवा दे देता है, उधर चोरी-डकैती करवा देता है। गाँव के आस-पास के लोगों को सूई भोंककर डरपोक बना दिया है।···जो उसकी बात से बाहर हुआ, उसका बैल-गाय कटवा देता है, भैंस चोरी करवा देता है या घर में आग लगवा देता है। कई बार बेल-केस[2] उस पर चला, लेकिन रुपैया खर्च करके जीत जाता है। नाम भी अजीब है—डागडर नटखटपरसाद !

"हाँ भाई, किसी का बिसवास नहीं !"

"सोमा जट कल तामगंज मेला में गिरफ्फ हो गया।" सोमन मोची कहता है—"अभी मेला से जो लोग आये हैं, बोल रहे हैं।···अब हम अखाड़ा में ढोल नहीं बजायेंगे।"

१. बदमाश। २. बी० एल० केस०।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आठ

जोतखी काका आजकल बहुत खुश रहते हैं।

गाँव के लोग आजकल दिन में पाँच बार परनाम करते हैं।···अलबत्त बरमगियानी हैं जोतखी काका! कलजुग में भी यदि कुछ तेज बाकी है तो बाभन में ही।···जोतिस बिद्दा हँसी-खेल नहीं।···बरमतेज अभी भी है। सोना यदि कीचड़ में रहे तो उस पर काई नहीं लग सकती।···परनाम जोतखी काका!

"जीयो, आओ बैठो! क्या बात है?"

"जोतखी काका, हम लुट गये। मेरा तोता कल उड़ गया। हँसते-खेलते चला गया जोतखी काका!" पोलियाटोली का हीरू जोतखी काका के पांव पर लोटकर रोता है।

"ऐ हीरू क्या हुआ?" जोतखीजी पूछते हैं।

"मेरा बेटा! मेरा बच्चा जीबानन, कल ही···एक दिन के बुखार में···कलेजा तोड़कर चला गया। मेरा सिखाया-पढ़ाया तोता उड़ गया जोतखी काका!" हीरू अब सिर पर हाथ रखकर झुककर बैठा हुआ रो रहा है।

"इतना जल्दी? कल कौन दिन था—सोमवार? हुँ! सोम को मरा है न?"

"हाँ, ठीक सूरज डूबने के समय!"

"करसामाँ[1] है। डाइन का करसामाँ है। समझे हीरू? शुक्रवार को अमावस्या है। जिस पर तुमको सन्देह हो, उसके पिछवाड़े में बैठ रहना। ठीक दो पहर रात को वह निकलेगी। उसका पीछा करना। वह तुम्हारे बच्चे को जिलाकर, तेल-फुलेल लगाकर, गोदी में लेकर जब नाचने लगेगी तो···उस समय यदि उससे बच्चा छीन लो तो फिर उस बच्चे को कोई मार ही नहीं सकता।···इन्द्र का वज्र भी फूल हो जायेगा।"

"इसमें और सन्देह की क्या बात है जोतखी काका!···सफासफी ऐना की तरह बात झलकती है।···पाँच महीना पहले, दफा चालीस के समय, जब सभी लोग दरखास देने लगे तो हमने भी दे दिया। मेरा साला कचेहरी में मोहर्रिल है। उसके पैरवी से जमीन हमको नगदी हो गयी। सभी की दरखास नामंजूर हो गयी और हमको जमा बाँध दिया। एक दिन पारबती की माँ गेहूँ हिस्सा माँगने लगी तो हम कह दिया कि अब बाँटकर नहीं देंगे। हमको नगदी हो गया है जमीन—दफा ४० में। बस, तुरत आसीखसराप देने लगी। उसकी दसों बीघा जमीन हम जोतते थे। बस, वही गोस्सा मन में पालती रही और कल हमको लूट लिया राच्छसनी ने।"

"ऐ हीरू, रोओ मत! हल्ला मत करो! चुपचाप! अमावस्या की रात को, दो पहर रात को···। याद रखना!"

---

१. करिश्मा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अमावस्या की रात !

पारबती की माँ के पिछवाड़े में मरद भर-भर भाँग की झाड़ी है। हीरू उसी झाड़ी में बैठकर खैनी चुनता और खाता है।···मोरंगिया गाँजे का नशा बड़ा तेज होता है। कातिक महीने से ही रात में सीत गिरने लगती है। हीरू का देह एकदम ठण्डा हो गया है। खैनी खाकर गर्म हो लेता है; कहता है—"साली घर में गुटुर-गुटुर कर बोलती है, बाहर नहीं निकलती है। निकलो आज !··· कहीं घर में ही तो नहीं नाचेगी ? यदि बाहर नहीं हो···तब ? जोतखी काका ने भी नहीं बताया।"

मौसी को शाम से परेशान कर रखा है गणेश ने ! आज उसकी आँखों से नींद गायब हो गयी है। रह-रहकर वह ऐसी-ऐसी बात पूछ बैठता है कि मौसी को अच्छी तरह समझ-बूझकर जवाब देना पड़ता है।

"मामा को जेहल में मारता होगा ?"

"नहीं रे ! तुम्हारा मामा चोर-डकैत नहीं।"

"तो फिर, पकड़ा क्यों ? जेहल काहे ले गया ?"

"सरकार की जो मरजी !"

"सरकार की जो मरजी ! सरकार से तुम क्यों नहीं पूछतीं ?"

"चुप रहो ! सो जाओ बेटा !"

"नानी ?"

"बाबू !"

"हमको बाहर ले चलो।···पेसाब करेंगे।"

"चलो !"

···खट् ! किवाड़ खोलती है मौसी। पिछवाड़े से भाँग की झाड़ी हिलती है। हीरू बोतल में दारू ले आया है, जल्दी-जल्दी बोतल में मुँह लगाकर पीता है।···हाँ, निकली तो है राच्छसनी ! ठीक दो पहर रात है। रमडण्डी सिर पर आ गया है। सियार बोल रहे हैं। ठीक दो पहर रात है।···कपड़ा क्यों सँभालती है ? नंगी हो रही है···?

—सटाक् !···!

"आ···ह···! बेटा ग ने स !"

"ना···नी !"

—सटाक् ! सटाक् !···फट सटाक् !

"गि-गि-गि-गि···गि-गि···"

"नानी !···कमली···दीदी ! नानी !"

"सब शान्ति ! मगर जीवानन्द···हीरू का बेटा कहाँ है ? हीरू का नशा अचानक टूट गया। छर-छर बहती हुई खून की धारा को देखकर वह थर-थर काँपने लगता है। लाठी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। खून ?

पुलिस-दारोगा···जेहल···फाँसी-सुल्ली ! हीरू भागता है।

सबसे पहले तहसीलदारसाहब हल्ला करते हुए, बन्दूक का दो-तीन फैर करते हैं। ठायँ-ठायँ !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सारा गाँव जग गया है। कुत्तों के मारे कुछ सुना भी नहीं जाता है कि हल्ला किधर हुआ, क्यों हुआ। क्या है? क्या है? सभी अपने आँगन से ही पूछते हैं। क्या है रामदेव? अरे नागेसर, क्या है?...पता नहीं?

तहसीलदारसाहब चिल्लाते हैं, "अरे कालीचरन! आवाज़ पारवती की माँ-जैसी लगी। तुम लोग घर से निकलते क्यों नहीं?...लगता है सारे गाँव के लोग मुर्दा हो गये हैं।"

पारवती की माँ...अरे बाप! खून से नहा गयी है। साँस देखो। मरी है या...। हुक-हुक करती है? तब अभी जान है। और...यह गनेस है?...दाँती लगी हुई है। पानी लाओ!...किसका काम है यह? हे भगवान!...लाठी है? तहसीलदारसाहेब के जिम्मे लगा दो लाठी! इसी से पता चल जायेगा।

"अगमू!" तहसीलदारसाहब कहते हैं, "तुम अभी दौड़ जाओ थाना।...कल पूर्णिया अस्पताल यदि ठीक समय पर पहुँच जाय..."

"नानी...नानी! मामा! डाक्टर मामा!...दीदी, दीदी!" गणेश रोता जाता है। कमली आँखों को पोंछते हुए गणेश को अपने घर ले आती है। बुद्धि यदि कम होती गणेश को तो अच्छा था!...कमली के साथ वह आता है।...बातें भी करता है। कमली कहती है, "भगवान हम सबों के बाप हैं... उन्होंने नानी को अपने पास बुला लिया।"

"हाँ...यें..." लम्बी हिचकी पर गणेश कब्जा नहीं पा सकता है, "नानी! ...कमली दीदी! नानी!"

... हाय रे अभागा! तेरी कमली दीदी किसके पास रोने जाये? "बाबू! गनेस...तुम्हारे मामा आवेंगे! रोओ मत!"

हीरू पकड़ा गया है। ...पकड़ावेगा कैसे नहीं भाई! गाँव में किसकी लाठी को कौन नहीं पहचानता! हीरू की ठुट्ठी लाठी तो मसहूर है—हरहँसेरी में उसकी ठुट्ठी लाठी कमाल कर दिखाती थी न! रात में ही लोगों ने पहचान लिया, मगर डर से नहीं बोला कोई! ...इसके अलावे उसके दोनों पैर खून में लथपथ! धोया भी नहीं था। ... लगता है, मारने के बाद लहास को थोड़ी दूर घसीटने की कोशिश की थी हीरू ने!...सुबह को तो एकदम बघौछ[1] लगे हुए पागलों की तरह! उसे देखकर डर लगता था।...

उसकी आँखें बताती थीं, वह अभी और भी कई खून कर सकता है!...मुँह से लार भी गिरता था! दारोगा ने गिरिफ्फ़ कर लिया, मगर वैसा ही। दारोगा ने दो लात मारी, हवलदार ने दो-तीन हण्टर गर्म किये और सिपाही ने तीन-चार तमाचे जड़े, "साला! बोलता काहे नहीं...नाम गिनाव ऽऽअपन बाप के जे साथ रहल न! हीने मुँह का देखऽऽताड़ऽऽ—चच्चा के तरफ देखके बोलऽ! साला हतियारा कहीं का!...नरक में भी जगहा ना मिली ससुरे!"

मगर वह बकता रहा—"हम अकेले मारा।"

"ससुरे! ई नीलगाय जैसन औरत के तूँ अकेले मारा? बन्नूक-उन्नुक..."

---

१. मतिशून्य।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ऐ सिपाहीजी ! छोड़ दीजिए !" छोटे दारोगासाहब बड़े भले आदमी हैं। कहते हैं, "साले ! यदि फाँसी से बचने के लिए पागल हुए हो तो दो ही दिन की मार में मर जाओगे।"

लहास को एकदम ढँककर पालकी में ले जाने का बन्दोबस्त करते हैं दारोगासाहब। एक उँगली भी नहीं दिखायी पड़े।···अतर-गुलाब भी डलवा दिया। अरे ! लहास के साथ गनेस भी जायेगा ? साथ में प्यारू जा रहा है। पुरैनियाँ खजांचीधरमसाला के पास ही गनेस की एक चाची रहती है।···वह जब नहीं रखेगी तो अनाथालय में···

मौसी चली गयी, हमेशा के लिए।···

कमली फूटकर रो पड़ती है।

जोतखीजी को लकवा मार गया—अरधांग ! मुँह टेढ़ा हो गया है। एक आँख एकदम पथरा गयी है। पैखाना-पेशाब सब बिछावन पर ही होता है। रामनारायण उनके पास अकेले बैठने में डरता है। रामनारायण जानता है सारी बातें।···पारबती की माँ की हत्या की रात से ही उनकी हालत खराब हो गयी थी। पेट खूब चला ! खून का पैखाना होने लगा—एकदम टटका खून। लाल-लाल···इसके बाद गाँव से लाश जैसे ही निकली, लकवा मार गया। भगवान के इस टटका इन्साफ को देखकर रामनारायण डर गया था। इतनी जल्दी पाप को फलते बहुत कम देखा है।···पैखाने में इतना दुर्गन्ध है कि चार बीघा आसपास के लोगों को कै हो जाये ! नरकभोग और किसको कहते हैं ?

···लेकिन, जोतखीजी ने कहा था ठीक।···सुनते हैं जिस दिन पारबती की माँ के केस में दारोगासाहेब आये, उस दिन भी बोले हैं, "अभी क्या हुआ है··· और भी बाकी है !"

भगवान जाने और क्या-क्या होगा !

जै बाबा 'जिन-पीर', गाँव की रच्छा करो महतमा !

नौ

कोठारिन लछमी दासिन बालदेवजी के साथ मठ से अलग हो गयी।

कलम-बाग में बाँस-फूस के तीन सुन्दर बँगले खड़े हो गये हैं। इस इलाके की यह भी एक बड़ी कारीगरी है—बाँस-फूस का चौखड़ा। एक ही डर होता है—आग का ! लेकिन होता है खूब ! मेहराब और जाफरी गूँथकर लगा दिया है। फूल तो पहले से ही लगे हुए हैं ! बाग की खपसूरती तो अठारह गुना बढ़ गयी है। वाह रे कोठारिन ! चार सौ रुपये में एक जोड़ा बाछा खरीदकर मँगवायी है—मोतीचूर हाट से। बड़ा तेज है। हल्की-सी बाछा-गाड़ी बनवायी है। बाँस के पोर-पोर को छीलकर उसमें तरह-तरह के रंग लगाये गये हैं। हर बन्धन को और खास-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर बल्ली की डोरी को सतरंगे लड़ों में गूँथा है। छोटे-छोटे लटकन-फुदने — लाल, हरे, पीले, नीले। बाँछों के सर पर पीतल के पान हैं, गले में कौड़ी की लड़ियाँ और घण्टी है। एक छोर मीढ़ी झुनकी भी है। झुन-झुन टुन-टुन, झुन-झुन टुन-टुन !···सुनो,···वही ! बालदेवजी गोसाईं साहेब की बग्घी-सम्पनी निकली ! झुन-झुन टुन-टुन !

···बालदेवजी अब कितने साफ-सूथरे रहते हैं ! बगुला के पाँखों की तरह खादी की लुंगी और मिर्जई दप-दप करती है। देह भी थोड़ा साफ हो गया है। लछमी अपने हाथों से सेवा करती है।···मठ पर तो अब कौआ-मैंना के 'गू' के साथ आदमी के बच्चों के भी पैखाने भिनकते रहते हैं। रमपियरिया की माये दिन-भर पड़ी रहती है; साथ में छोटे-छोटे तीन-चार बच्चे रहते हैं। भण्डारी उस दिन आकर कलप रहा था—"दासिन, परसाद चित्त से उतर गया है। रोज रात को सपना देखते हैं कि पीने के पानी में मछली छलमला रही है···सतगुरु हो !"

एक महीने में 'ड़मपियाड़ी' ने माया के जाल में महन्थ रामदास के अंग-अंग को फाँस लिया है।

महन्थसाहब इस जाल से निकल भागने के लिए छटपटा रहे हैं, मगर जाल की गिरहें और उलझती जा रही हैं।···कल गाली-गलौज और मार-पीट हो गयी। महन्थसाहब ने रौतहट हटिया से सुबह को एक भरी गाँजा मँगवाया था; रात में सोने के समय ड़मपियाड़ी ने कहा—"महन्थसाहेब, गाँजा फुरा गया।" ···सुनते ही महन्थसाहब चिढ़ गये, "एँ, सुबह को ही न एक भर ला दिया है भण्डारी ने !"

रमपियरिया महन्थसाहब की मर्दानगी देख चुकी है ! वह चुप क्यों रहे ? दम लगाने के समय होस रहता है कि नहीं ? "दिन-भर घोड़ा के दुम की तरह चिलिम मुँह में तो लगा ही रहता है···!"

"चुप चमारिन ! अखाड़ा को भरस्ट कर दिया। सतगुरु हो···लछमी ठीक कहती थी !"

इसके बाद रमपियरिया की माये और बच्चों ने मिलकर ऐसा हल्ला मचाया कि बात कुछ समझ में ही न आयी।···महन्थ रामदास चिल्ला रहे हैं, चिमटा खनखना रहे हैं, और रमपियरिया गा-गाकर सर चढ़ाकर रो रही है, "अरे ! तोऽऽरा हाथ में कोढ़ फूटे रे कोढ़िया ! अरे लछमिनियाँ के खातिर···"

···सतगुरु हो ! सतगुरु हो ! बन्द करो ! बन्द करो !···

बालदेवजी को पारबती की माँ के खून के बाद से रात को बड़ा डर लगता है। रात-भर···कलेजा धड़-धड़ करता रहता है। जरा भी कुछ आवाज हुई कि बिछावन पर तड़क उठते हैं। लछमी कहती है—निरमल चित्त पर खराब छाप पड़ने से ऐसा ही होता है !···बालदेवजी की आँखें ही बता रही हैं।

डिम डिमिक-डिमिक्, रुन झुनुक-झुनुक् ! लछमी आज खुद खँजड़ी बजा रही है। बालदेवजी आसनी पर बैठे हुए हैं। खिड़की के कमरे में चाँदनी का एक टुकड़ा उतर पड़ा है। दीवारगीर की हल्की रोशनी में लछमी की आँखें स्पष्ट नहीं दिखायी पड़ती हैं।···

Funding by IKS-MoE

ज्वाला बिरह वियोग की, रही कलेजे छा-य।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
प्रेमी मन मानं नहीं, दरसन से अकुला-य !

बालदेवजी टकटकी लगाकर लछमी की ओर देख रहे हैं। खँजड़ी बजाकर गाने के समय लगता है कि लछमी की बोटी-बोटी नाच रही है। घुटने के बल बैठी है···! 'इन्दर सभा' नाटक में 'हूर परी, मसहूर परी, सबुज परी' झँझनी बजाकर जैसे गाती थी, उसी तरह।···रह-रहकर पारबती की माँ की खून से लथपथ लाश की याद आ जाती है, एक पलक के लिए।···बालदेवजी आँख मूँद लेते हैं।··· लछमी के देह से जो सुगन्धी निकलती है, वह आज और तेज हो गयी है।···लछमी की आवाज काँप रही है। ···रो रही है लछमी ? ऐ ? गाल पर लोर ढुलक रहे हैं ?···लछमी !

"लछमी ! लछमी ! रोओ मत लछमी !" बालदेवजी की बाँहों में भी इतना बल है ?···लछमी को बाँहों में कसे हुए हैं। लछमी गाती ही जाती है :

गृह आँगन बन गये पराये
कि आहो सन्तो हो !
तुम बिनु कन्त बहुत दुख पाये···!

डिम डिमिक-डिमिक् !
रुन झुनुक-झुनुक् !

एके गृह, एक संग में, हौं बिरहिण संग कन्त
कब प्रीतम हँसि बोलिहैं जोह रही मैं पन्थ !

ढन-ढन रुनुक-झुनुक ! झन-न···खँजड़ी हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। बालदेवजी के ओठों पर आज पहली बार ऐसी मुस्कराहट देखती है लछमी। गेहुआँ मुख-मण्डल, छोटी-छोटी दाढ़ी-मूँछ···

···बालदेवजी के पाँव के अँगूठों से आँखें छुलाते हुए लछमी नजर मिलाती है, "सा···हे···व ब न्द गी !"

दस

कामरेड बासुदेव और सुन्दरलाल भी गिरिफ्फ।···कैसे नहीं गिरिफ्फ होगा भाई ! एक साल पहले तक किसी ने कभी गंजी भी पहनते नहीं देखा सुनरा को, सो इस गरमी के मौसम में कोट, पैंट, गुलबन, मोजा, जूता और चस्मा लगाकर कटिहार जक्सन के मुसाफिरखाना में बैठने से, लोग सन्देह नहीं करेगा ? एक डिब्बा सिगरेट खरीदकर दसटकिया लोट तोड़ाते थे दोनों। सुनते हैं, आधा घण्टा में ही दोनों ने करीब-करीब सभी फेरीवालों को बुलाया और सौदा किया, "ए चाहवाला, सुनता है नहीं ! देहाती समझ लिया है क्या ?···चाह लाओ। बिस्कुट खाओगे जी सुन्नर ? अरे, थड़किलासी बिस्कुट क्या खाओगे जी !" कटि-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हार के फेरीवाले कैसा चाहिए होते हैं सो सबों को मालूम है। उन लोगों ने बहुत बड़े-बड़े लोगों को देखा है, पर ऐसा नहीं। भिखमंगे को चौअन्नी दे दिया, "जाओ, नास्ता कर लो!"···लड़ाई के जमाना में अमरीकन साहेब लोग इसी तरह सिगरेट और बिस्कुट लुटाते थे। बस, सी-आई-डी कहाँ नहीं है! तुरन्त दोनों को गिरफ्फ कर लिया। भगवान जाने अब और किसका-किसका नाम गिनाता है!

जोतखीजी ठीक कहते थे—अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है!

"वासुदेव ने कालीचरन का भी नाम बताया है, सुनते हैं।"

"ऐ···! कालीचरन है कहाँ?"

"मंगलादेवी को कटिहार रखने गया है।"

मंगलादेवी कटिहार चली गयी। गाँव का चरखा सेण्टर टूट गया।···कटि-हार में मंगला के दूर के रिश्ते के बहनोई रहते हैं। कालीचरन पहुँचाने गया है। पाटी आफिस में सुमेरनजी बोले, "सुनते हैं तुम पर भी वारण्ट है।"

"वारण्ट?"

"हाँ, वासुदेव और सुनरा ने तुम्हारा भी नाम बताया है···ज़रा होशियारी से घर लौटना।"

"वासुदेव! सुनरा!···बेईमान, झूठा!"

कालीचरन अँधेरे में कोठी के बाग के पास छिपा हुआ है। जरा रात हो जाये तब घर जायेगा। वासुदेव और सुनरा को सोमा ने इतना आगे बढ़ा दिया। उसको ताज्जुब होता है। डकैती के तीन दिन बाद ही कालीचरन को सब पता लग गया था। सिकरेटरीसाहब को चुपचाप कहने के लिए पुरैनियाँ गया वह, लेकिन सिकरेटरी साहब पटना चले गये थे। सिकरेटरीसाहेब से सारी बातें कहनी होंगी। चलित्तर कर्मकार से हेलमेल बढ़ाने का यही फल है। हम पर बिसवास नहीं हुआ उनको तो···वासुदेव को चारिज दिये कि चलित्तर से मिलते रहो।··· बन्दूक-पेस्तौल चलित्तर देता है। काली को जेहल का डर नहीं, पाटी की कितनी बड़ी बदनामी हुई!···अरे बाप, पटना के बड़े लीडर लोग को कैसे मुँह दिखलावेंगे? सब चौपट कर दिया। कोई आ रहा है सायद!

कोठी-बाग के पास ही अँधेरे में चेथरू से मुलाकात हुई। जड़ी उखाड़ने आया था। उसने बतलाया, "गाँव में पुलिस-दरोगा कम्फु लेकर आये हैं।" काली-चरन ने चेथरू को दो रुपया दिया, "माँ को दे देना!···और यह तुम लो एक रुपया!"

जड़ी उखाड़ने के बदले चेथरू गाँव की ओर भागा।···फिरारी किरान्ती को पकड़ा देनेवालों को बहुत रुपैया इनाम मिलता है। तुरत ही उसने दारोगासाहब को चुपचाप खबर दी, "हम कालीचरन को कोठी के बगीचे में देखा है।"

···दारोगासाहब मलेटरी लेकर जब तक आवें, कालीचरन पवन[2] हो गया।

चेथरू कहता है, "यहीं से पश्चिम की ओर हनहनाता हुआ चला गया, घोड़पाड़ा की तरह।"

---

१. चालाक। २. हवा।

Funding by IKS-MoE

खेलावनसिंह यादव बेचारे को फिर एक चरन लग गया। इधर खेलावन जरा जादे हेलमेल रखता था कालीचरन से। दारोगासाहब ने कहा, "जरूर डकैती का माल आपके यहाँ रहता है। आपने उन लोगों को चौखड़ा घर बनवा दिया है। क्यों?"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

...लगता है, खेलावनसिंह यादव का दिन अब घटती पर है।...जब चढ़न्ती पर रहता है किसी का दिन, तब वह माटी भी छू देगा तो सोना हो जायेगा। दिन बिगड़ने पर चारों ओर से खराब खबरें ही आती हैं।...तहसीलदारसाहेब का डेढ़ हजार मुँहजुबानी बाकी था।...कमला किनारे की बन्दोबस्तीवाली जमीन में से दस बीघा सूद-रेहन रखकर और भी एक हजार रुपैया तहसीलदार से लिया है खेलावन ने। कल अररिया-बैरगाछी से खबर आयी है, सकलदीप नानी का दस भर सोना चुराकर न जाने कहाँ भाग गया है।...सुनते हैं, मदनपुर मेला में एक ठेठर कम्पनी आयी थी कलकत्ता से। उसमें एक लैला थी। उसी ने सकलदीप को फँसा लिया है। जवान तड़-तड़ बहू घर में है। सकलदीप के ससुर आसिनबाबू तो बड़े आदमी हैं, खोज निकाल लेंगे! ...खेलावन की स्त्री कहती है, "जिन पीर बाबा के दरघा पर घर नहीं है, वहाँ एक झोंपड़ी बनाने के लिए तीन साल से कह रही थी, आखिर नहीं बनाये। कालीचरन की बात पर फुच्च हो गये, चौखड़ा घर बनवा दिया।...दुहाई बाबा जिन पीर! भूल-चूक माफ करो। मेरे बच्चा का मति फेर दो महतमा! सिरनी और बद्धी चढ़ाऊँगी, एक भर गाँजा दूँगी।"

महँथूदास के यहाँ खलासीजी आये हैं!...फुलिया के सारे देह में घाव हो गया है। पैंटमानजी के पास कई बार संवाद भेजा फुलिया ने। एतबारी बूढ़ा को उस दिन भेजा तो मालूम हुआ पैंटमानजी की बदली हो गयी बथनाहा, नेपाल सीमा के पास। चौकी-खाट वगैरह सब बेच दिया है पैंटमानजी ने। सरकारी नौकरीवाले की जब बदली होती है तो वह सभी चीज़ें बेच देता है। नयी जगह में जाकर नयी चीज़ें मिलती हैं।...इसलिए क्या जनाना को भी छोड़ देगा कोई? खलासीजी ने सुना तो दौड़े आये हैं!...कोई कुछ कहे, खलासी का कोई दोख नहीं। सारा दोख फुलिया का है!...जो बेचारा इतना खरच करके तुमसे चुमौना किया, वह तुमको अगोरकर बैठा रहेगा तो चूल्हा कैसे जलेगा? खलासी बेचारा दिन-भर रेलवी लैन पर काम करता था और इधर पैंटमानजी लैन किलियर देकर, गाड़ी पास करने के बाद फुलिया के यहाँ आकर बैठे रहते थे। आखिर एक दिन लड़ाई-झगड़ा, मार-पीट करके फुलिया उनके यहाँ भाग गयी। खलासीजी का इसमें क्या कसूर है? पाप भला छिपे?...सारा देह गल गया है, मगर अभी भी होस नहीं हुआ है फुलिया को।...रमपियरिया उसके यहाँ रोज आती है और फुलिया फुसुर-फुसुर करके उसको सिखाती है—महन्थ से कोई चीज माँगने का कौन समय है...कैसे क्या कहना चाहिए।

खलासीजी कहते हैं, "दुनियाँ-भर के लोगों की गरमी की बेमारी आराम करें हम, और हमारी घरवाली इस रोग से भोगे?...तीन गोली में ही ठीक हो जायेगी। एक बात है, गरमी निकलेगी तो एक अंग को लेकर—आँख, नाक, दाँत,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अँगुली, इसमें कोई एक अंग झूठा हो जायेगा !"

गाँव के बारे में खलासीजी कहते हैं, "गाँव में बनरमुत्ता लगा है। बन्दर का भूत ! गाँव-के-गाँव इसी तरह साफ हो जाते हैं। कोई बन्दर मरा था इस गाँव में ?"

"ठीक बात ! एकदम ठीक ! डागडरबाबू तो तीन बन्दर पालते थे। न जाने कौन सूई दिहिन कि दोनों बेचारा केंकाते-केंकाते मर गया।…रात-भर किकियाया था, याद नहीं ?"

"ठीक बात ! ठीक बात ! एह, यह डागडर ऐसा जुल्मी आदमी था ! सारे गाँव को चौपट कर दिया।

"कोई पर्वाह नहीं।" खलासीजी कहते हैं, "हम रात में चक्कर पूजकर, इस टोला को बाँध देंगे। कुछ नहीं होगा।"

रमजूदास के गुहाल में चक्कर पूजा है खलासी ने…चावल, दूध और अड़हुल के फूल से चक्कर बनाया है। बीच में माटी का एक बड़ा-सा दीया है और उसमें एक बड़ी-सी बत्ती जल रही है। एक बोतल दारू पीकर खलासीजी बैठे हैं, रह-रहकर दीया की जलती बाती को मुँह में ले लेते हैं।…अरे बाप ! अलबत्त ओझा है खलासीजी। अरे ! रे ! रे !…जीभ में सूई गड़ा लिये, इस पार से उस पार !

अरे आजु के रैनिगे मैया
बड़ा अन्हकाल लागे
दाहिने डाकिन, बामे पिचास बोले।

हुँ…हुँ…हुँ…हुँ…हुँ !

दोहाय गौरा पारबती इसर महादेव
नैना जोगिन, जो सत से बेसत जाय
…अंग अंग फूट बहराय !

—फूत्…फूत !

हिं-हिं-हिं-हि…!

"अब गाइए आप लोग 'गोचर'।"

गाँव के 'भकतिया' लोग शुरू करते हैं—मृदंग पर देवी का गीत 'गोचर' !

धि-धिनक् ति-धिनक् !

कँहवाँ के जे आ गे भैया आ आ…

खलासीजी दीया की बाती को नचा रहे हैं और मुँह में लेकर बत्ती बुझाते हैं, फूंक मारकर भक् से फिर दीया जलाते हैं…कबूतर को कच्चा ही चबाकर खा रहे हैं।…असल ओझा हैं खलासीजी !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ग्यारह

"कमली के बाबू ! कमली के बाबू !…"

नींद में तहसीलदारसाहब की नाक बहुत बोलती है—खुर्र खुर-र…कमला की माँ पलँग के पास खड़ी है। उसके चेहरे पर भय की काली रेखा छायी हुई है—"कमली के बाबू ?"

"ऊँ यें !…क्या है ?"

माँ धीरे-से पलँग पर बैठ जाती है।…तहसीलदारसाहब और भी अचकचा जाते हैं, "क्या है ?"

"कुछ नहीं," माँ फिसफिसाकर कहती है, "कमली ने…कमली ने तो आँचल में दाग लगवा लिया…।"

"आँ यें ?…आँचल में ?" तहसीलदारसाहब को लगा कि कमली के कपड़े में आग लग गयी है। कमली जल रही है।

"हाँ, चार महीना…!"

तहसीलदारसाहब और माँ दोनों एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"हे भगवान !"

"अब क्या होगा ?"

"समझो !"

"कैसे पता चला ?"

"मुझे तो पिछले महीने में ही थोड़ा सन्देह हुआ था। आज पूछने लगी तो चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगी।…डाक्टर ने तो खूब इलाज किया ! अब मुँह पर कालिख जो लगी है, इसको कौन छुड़ावेगा ?"

तहसीलदारसाहब का मुँह सूख जाता है। आँखों के आगे भयावने दृश्य एक-एक कर आते-जाते हैं—उनके मुँह में कालिख पुती हुई है, और सभी लोग ताली बजाकर हंस रहे हैं, पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

"मैं पहले ही कहती थी, इतना हेलमेल अच्छा नहीं। आग और फूस एक साथ कब तक रहें ?…और तुम्हारी दुलारी पर तो मानो जादू कर दिया है डाक्टर ने। अभी भी कह रही है, डाक्टर ने कहा है…।"

"क्या कहा है डाक्टर ने ?" तहसीलदारसाहब तिनके का सहारा ढूँढ़ रहे हैं।

"साफ-साफ कहाँ कहती है कुछ ! कहती है कि डाक्टर ने कहा है—जो होगा, मंगल होगा।"

"मंगल ! हुँह ! मंगल !…पाजी, सूअर, नमकहराम, कुत्ते का बच्चा, साला ! अब गले में रस्सी का फन्दा लगाकर मरो कमली की माँ !…क्या करोगी ?"

"लेकिन मैं सपथ खाकर कह सकती हूँ, मेरी बेटी का इसमें कोई दोख नहीं…।" माँ रो पड़ती है, "कमली का कोई कसूर नहीं। डाक्टर ने फुसलाकर उसका सत्यानास किया है।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कमली भी अपने बिछावन पर जगी हुई है। आज उसे बार-बार डाक्टर की याद आती है। डाक्टर का हँसना, बोलना, रूठना-झगड़ना, मीठी-मीठी बातें करना और बाँहों में जकड़कर···। उसकी आँखें भर-भर आती हैं। लेकिन डाक्टर ने कहा है, जो होगा, मंगलमय होगा!···यदि डाक्टर को दामुल हौज[1] हो जाये तब?···माँ रोती क्यों थी? महाभारत में कुन्ती, देवयानी, अहल्या, द्रौपदी, कौन ऐसी है जिसको···? डाक्टर ने कहा है, हम दोनों को कोई अलग नहीं कर सकता।

"डाक्टर ने क्या कहा है?" तहसीलदारसाहब, सुबह-सुबह चाय पीते समय पूछते हैं, "पूछो कमली से साफ-साफ, डाक्टर ने क्या कहा है?"

"कहती है, डाक्टर कहता था, हम लोगों को कोई अलग नहीं कर सकता!" माँ धीरे-धीरे इधर-उधर देखकर कहती है।

"सो तो समझा!" तहसीलदारसाहब का चेहरा फिर बुझ-सा जाता है, "लेकिन सवाल है कि वह तो जेल में है, अब क्या सजा होती है, सो कौन जाने? ···फिर मरद की बात का क्या ठिकाना?···कमली के पास उसकी कोई चिट्ठी-पत्तरी है?"

तहसीलदारसाहब कानूनची आदमी हैं। कागज पर आपके हाथ का 'क' भी लिखा रहे तो उससे वह सारी दस्तावेज ऐसी बना दें कि पटना का इस्पाट[2] भी नहीं पहचान पाये कि असली है या जाली!

"चिट्ठी-पत्तरी यदि होगी भी तो वह देगी नहीं। वह कह रही थी कि हमको गुदाम-घर में बन्द रखो। लोग तो जानते ही हैं कि कमली बीमार है। तब तक डाक्टर आ जायेगा।···लड़की की बातें सुनकर कलेजा थिर नहीं रहता है। कहती थी, माँ, अपराध के लिए आखिर कोई सजा तो मिलनी ही चाहिए। हमको घर में ही जेहल दे दो!"

"इस्-इस्!" तहसीलदारसाहब का भी दिल कसक उठता है, "कमली की माँ! मेरी बेटी अब मेरे सामने नहीं आवेगी? क्यों? एक बार उससे बात करना चाहता हूँ। तुम क्या कहती हो?"

उफ्! कमली के चेहरे पर दिनों-दिन तेज आता जा रहा है। मुख-मण्डल चमक रहा है, लेकिन आज उसकी निगाहें नीची हैं। चुपचाप आकर पर्दे की आड़ में खड़ी हो जाती है।

"दीदी!"

"......"

"इधर आओ दीदी! तुम्हारा कोई कुसूर नहीं बेटा!"

"बाबूजी, मेरी सूरत मत देखिए।···मुझे गुदाम-घर में बन्द कर दीजिए।" कमली रो पड़ती है, फफक्-फफक्!

और कोई उपाय भी तो नहीं।

कमली कहती है—"लगता है कि यह डाक्टर नहीं जिन है···एक बार गोरी

---

१. कालापानी, आजीवन क़ैद। २. विशेषज्ञ, एक्सपर्ट।

Funding by IKS-MoE

मौसी ने जिन-पीर की कहानी सुनायी थी।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"डर तो नहीं लगता ?"

"नहीं माँ ! डाक्टर अब मेरे पास हमेशा रहता है। मुझे डर नहीं लगता है। इसलिए मैं एकान्त में, अँधेरे में रहना चाहती हूँ। माँ, डाक्टर का कोई कुसूर नहीं, वह सचमुच जिन है।"

सुनते हैं कि जिन जिस पर प्रसन्न हो उसको तुरत कुछ-से-कुछ बना देता है। रुपया-पैसा, जगह-जमीन, तुरत ढेर लगा देता है। और जिन जब लेने लगे तो धान के बखार-के-बखार में चूहे लग जायेंगे···तम्बाकू पर पत्थल गिर पड़ेगा··· किसी बड़े सेशन-केस में फंसना होगा।···तहसीलदारसाहब हिसाब करके देखते हैं, डाक्टर जब से उसके परिवार में घुला-मिला है, रोज अलाये-बलाये की आमदनी होती ही रहती है। जिस बात से सारे गाँव का नुकसान हुआ, उसमें भी नफा ही रहा तहसीलदार को। मुकदमे में मुल्ले फँस गये और इतना बड़ा सेशन केस दूसरों के सिर पर ही खेप लिया। अपने घर से तो एक पैसा गया ही नहीं, ऊपर से पाँच हजार के करीब फायदा ही हुआ। खेलावन, रामकिरपालसिंह वगैरह की जमीन मिली सो मुफ़्त में ही। कमला ठीक कहती है—डाक्टर जिन है।

कमली ने एक सप्ताह बहुत मजे में काट दिया। कुछ किताबें पढ़ने को माँगी हैं—"विषवृक्ष, इन्दिरा, राजसिंह, आनन्दमठ, देवदास, श्रीकान्त, रंगभूमि, गोदान और···हरिमोहन बाबू की कन्यादान। बस, अभी इतना ही ! डाक्टर साहब की अलमारी में हैं किताबें।···हाँ, हाँ, निकलवाइए।···प्यारू से कहिएगा !"

गुदाम-घर की ऊपरवाली खिड़कियों से चाँद झाँकता है।···शरत् की चाँदनी ! चाँद बादलों में छिप जाता है।···माँ दुर्गा के आने की सूचना मिल गयी है। इस बार देवी किस चीज़ पर चढ़कर आवेंगी, बाबा से लिखकर पूछना होगा ! ज़रूर हाथी पर आयी होंगी ! जिस बार हाथी पर आती हैं माँ···

बारह

जै ! दुर्गा माता की जै !

चम्पापुर के कुमारसाहब ने इस बार फिर बड़े-बड़े पहलवानों को बुलाया है। कुश्ती, शिकार, संगीत और साहित्य, सबका एक सम्मिलित पीठस्थल रही है चम्पापुर की ड्योढ़ी।

बूढ़े राजा के समय की बात जाने दीजिए। अभी भी कुछ कम नहीं—विश्वकवि रवीन्द्र ने जिस ड्योढ़ी की साहित्य-गोष्ठी में अपनी प्रसिद्ध रचना 'राजा-रानी' की आवृत्ति की है, जहाँ की संगीत-मण्डली में पूरे एक सप्ताह तक फैयाज

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खाँ की [illegible] चुकी है। बूढ़े राजा ने शिकार पर कई किताबें लिखी हैं···।

···पंजाबी पहलवान मुश्ताक का चेला 'चाँद' आया है इस बार। जमेगा! ···कालीचरन बनमंखी के पास एक गाँव में है। दूर के रिश्तेदार बहुत चालाक आदमी हैं। उसका नाम बदल दिया है—रुस्तम खाँ! लोगों से कहता है, रुस्तम खाँ तम्बाकू का दल्लाल है, पूबा[1] है। कल चाँद अखाड़े में जाँघिया लगाकर उतरा, मगर सुनते हैं कि कोई जोड़ा ही नहीं मिला।···कालीचरन ऐंठ जाता है। वह जायेगा, ज़रूर-ज़रूर!

···चम्पापुर मेले का दंगल है बाबू! ···देखनेवालों पर कभी-कभी ऐसा जोस सवार होता है कि आसपास के लोगों में धक्कममुक्की शुरू हो जाती है। सिपाहीजी लोग छड़ी नहीं चमकाते रहें तो हर साल एक-दो आदमी दबकर मर जायें!

आज भी चाँद जाँघिया लगाकर घूम रहा है। कालीचरन भीड़ में से देखता है, "वाह! बलिहारी दोस्त! शरीर को खूब बनाया है! बलिहारी है दोस्त!"

···ऐं! आज भी चाँद का जोड़ा नहीं मिला?···जै-जै! दुरगा माई की जै! जोड़ा नहीं मिला! जै!

भेंपों-भेंपों-में-में···! पों-पों-पों!

चटाक् चट-धा! चट-धा गिड़-धा!

"अ···ज-ज-जा। आ-आली!" हाफ कमीज और पाजामा फाड़कर चित्थी-चित्थी करते हुए कालीचरन मैदान में उतर पड़ता है।

"ऐ! ऐ! पागल है, मारो, मारो!"

"नहीं जी! ···जाँघिया है अन्दर में!"

···अरे! वाह! यह तो असल जोड़ा है।···कौन है? अखाड़े में उतरने का ढंग ही कुछ ऐसा है कि सबकी आँखें चमक उठती हैं।···सभी की निगाहें आपस में मिलती हैं—हाँ, यही है चाँद की जोड़ी!

मण्डलजी नाम-धाम पूछकर जल्दी से कुस्ती सुरू करवाने का हुकुम दे रहे हैं सरकार!

सभी बाजे-गाजे अचानक थम गये हैं।···क्या हुआ? कुस्ती होगी या नहीं? पहलवान मुस्ताक अली हाथ जोड़कर क्या कह रहा है बड़े कुमारसाहेब से? क्या नाम कहा?···रुस्तम अली? जोगबनी का? मोरंगिया है? नहीं-नहीं, देसिया ही है।···वाह, अलबत्त जोड़ा है!

चटाक् चटधा! चटधा गिड़धा!

"अरे वाह रे उस्ताद! ले-ले-ले···बच गया।···अरे, यह तो बिजली है—बिजली!" चाँद नाच रहा है। यह पंजाबी पैंतरा है। रुस्तम चुपचाप मुस्करा रहा है···'मंगला···उस्ताद! आज की बाजी यदि हार गये तो समझेंगे कि मंगला को छूना पाप हुआ।···यदि जीत गये तो···यही परीच्छा है मेरी!'···चाँद को क्या ऐब लगा दिया है उसके गुरु ने? इतना पागल होकर टूटता क्यों है? काली···

---

१. पूरब का।

रुस्तम मुस्कराकर एक छोटी दुलकी लेता है; चाँद ने अचानक ही फिर हमला किया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"अ-जा-जा !"...भैया, यह रुस्तमखाँ भी तो कमाल है ! कोई जादू जानता है क्या ? हाँ, चाँद को मालूम हो गया होगा।

"नहीं जी, कहाँ पंजावी और कहाँ देसिया !"

...कहीं दारोगासाहेब तो देख नहीं रहे हैं ?...क्या ठिकाना ! खेल दिखाने का समय नहीं। जल्दी फैसला हो जाना चाहिए...।

"अरे, ला-ला-रा-जा-हा-हा...हा, हो-हो, जै-जै !"

पीछेवाले उचक-उचककर देखते हैं। पास के पेड़ की एक डाली टूट गयी। क्या हुआ ?...साफ ?...कौन ? डेढ़ गज के एक छोटे-से चक्कर में रुस्तम घूमा और चाँद को आसमान दिखा दिया।

"कहाँ गया ? रुस्तम कहाँ गया ?" बड़े कुमारसाहब भाव-विह्वल होकर पुकार रहे हैं। शक्ति का पुजारी खोज रहा है—"रुस्तम !...भीड़ को हटाइए। रुस्तम कहाँ गया ?"

...लगता है, जौहरी को कीमती पत्थर हाथ लग गया है। नहीं, नहीं, हाथ में आते-आते खो गया। कहाँ गया।...

रुस्तम लापता हो गया।

बहुतों ने कहा—चलित्तर कर्मकार ही नाम बदलकर अखाड़े में उतरा था। चलित्तर को, सुनते हैं, लाल-धूजा, हनुमानी झण्डा का महातम मिला है—वह कहीं हार नहीं सकता है।

मेला में लाल फाहरम बाँट हुआ है। लिखा है—'कम्यूनिस्ट पार्टी के लाल झण्डा को बुलन्दी से ढोनेवाले चलित्तर कर्मकार के ऊपर से वारण्ट हटाओ।'

कालीचरन वनमंखी के रिश्तेदार के यहाँ से फारबिसगंज की ओर चला जाता है। सिकरेटरीसाहब उससे नहीं मिलना चाहते हैं। लेकिन वह मिलेगा। सुनते हैं, सिकरेटरीसाहब ने कहा है, कालीचरन वगैरह पार्टी के मेम्बर नहीं, किसान सभा के दुअन्निया मेम्बर हैं। मिलकर वह सारी बातें समझावेगा। उस रात वह पार्टी आफिस में था।...धरमपुरीजी से भी भेंट नहीं हुई, वम्बे गये हैं। कालीचरन अपनी पूरी सफाई देकर ही हाजिर होगा।

"अरे। तुम !...काली !" मंगला डरते-डरते सँभल गयी, "क्या डफाली मियाँ की तरह सूरत बनायी है ! अन्दर आ जाओ। कोई डर नहीं। अकेली हूँ।"

कालीचरन मंगला से मिलने आया है—अचानक।

कालीचरन को एक पुराने रेलवे क्वार्टर के अन्दरवाले कमरे में बिठाकर मंगला लोटा-गिलास लेकर पानी के कल पर चली जाती है। कालीचरन देखता है—चरखा है; धुनकी भी है, खाट पर कम्बल के ऊपर सफेद खादी की चादर है।...उसकी आँखों में खुमारी है। रात-भर बैलगाड़ी पर जगा ही रह गया है। रेल पर भी ऊपरवाली तखती पर लेटा आया है।...लोटा-गिलास चकमक करता है। ठण्डा पानी ! नीबू का शरबत !

मंगला गिलास बढ़ाते हुए मुस्कराती है, "मैं तो डफाली मियाँ ही कहूँगी।

Funding by IKS-MoE

रुस्तम अली तो जोगबनी मिल का बूढ़ा सरदार है।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालीचरन हाथ में गिलास लेकर मंगला की ओर टकटकी लगाकर देखता है। मंगला कितनी दुबली हो गयी है! रंग भी जरा चरका हो गया है!

"खबरदार! हैण्डसप्!"

खट-खट-खट-खट!

···दारोगासाहब पिस्तौल ताने खड़े हैं। आठ-दस सिपाही बन्दूक की नली को इस तरह ताने हुए हैं मानो फैर कर देंगे।

"दारोगासाहेब! पानी पी लेने दीजिए!" मंगला को थाना-पुलिस का क्या डर!

"आप···तुम···कौन हो इसकी? तुम क्या करती हो, तुमको भी गिरफ्तार किया जाता है।"

"दारोगासाहब, इनको पानी पी लेने दीजिए।"

मंगला अपना सर्टिफिकेट देखने के लिए देती है।

"ओ! आप चरखा सेण्टर की महिला हैं···" दारोगासाहब मंगला के सर्टिफिकेट को देखकर वापिस देते हैं।

"हाँ, मेरीगंज में काम करती थी। जान-पहचान थी, एक साथ काम किया था। इसीलिए···!"

"नोच लो इस साले की दाढ़ी! तेरी माँ को···!"

"आह!" मंगला झट से दरवाजा बन्द कर लेती है।

ऊपर से बन्दूक के कुन्दे जड़ रहे हैं काली के कन्धे पर! वह शरबत का डकार लेता हुआ पुलिस-लारी पर जा बैठता है। कातिक महीने के कागजी नीबू में कितना सुगन्ध होता है! ···सर से झर-झर खून गिर रहा है। लेकिन, उसका सारा शरीर सन्तुष्ट है, शून्य है।

दारोगासाहब उसके मुँह में हण्टर डालते हुए कहते हैं—"साला! मर जायेगा, मगर नहीं कबूलेगा। सोमा साला भी ठीक ऐसा ही है। अरे! ···चलित्तर करमकार तेरी माँ का भतार है, है न?"

कालीचरन के हाथों की हथकड़ी एक बार झनक उठी। घायल पुट्ठों में एक नया दर्द उभर आया, आँखों में खून उतर आया।···लेकिन नहीं। उसकी पार्टी बदनाम हो रही है। वह सबकुछ सहेगा।

"भेज दो साले को! ···बासुदेवा और सुनरा तो दो ही थप्पड़ में बक-बक उगलने लगा। उन दोनों को क्या है? सरकारी गवाह हो गये हैं। रिहा हो जायेंगे दोनों।···मरेगा यही दोनों।···डकैती विद मर्डर!"

नीबू का शरबत! ···डकार अभी भी आ रहा है कालीचरन को!

—मंगला, मुझे माफ़ करना!

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बालदेवजी रामकिसुन आसरम बहुत दिनों बाद आये हैं।···एकदम बदल गया है आसरम ! लोग भी बदल गये हैं। थोड़ा चालचलन भी बिगड़ गया है आसरम का। अब तो लोग मछली और अण्डा भी चौका ही में बैठकर खाते हैं। अमीनबाबू सिकरेटरी हुए हैं। कहते हैं, "मछली-मांस आश्रम में न तो बनाया-धोया जाता है और न चूल्हे पर पकता ही है। लोग शहर से पकापकाया ले आते हैं, खाते हैं। इसमें हर्ज ही क्या है ?"

"हरज क्या है ?" बालदेवजी हक्का-बक्का होकर अमीनबाबू का मुँह देखते हैं, "लेकिन···पहले तो आसरम के हाता में भी नहीं आता था।"

"यह जो नया रसोई-घर बना है, वह आश्रम की जमीन में नहीं, कुबेर साह की जमीन में है। अब तो आप जगह-जमीनवाले आदमी हो गये, खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखना तो जरूर सीखे होंगे।···जाइए, जाकर कचहरी में नकल निकास करवाकर देख लीजिए। समझे !" फारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटन-बाबू कहते हैं।

बालदेवजी कटमटाकर उनकी ओर देखते हैं। छोटन, फारबिसगंज का यह लुच्चा लौण्डा हर बात में फुच-फुच करता है। अमीनबाबू के साथ दिन-रात रहता है न, इसलिए मुँहजोर भी हो गया है।···झूठा तो नम्बर एक का ! फारबिसगंज का नाम फरेबगंज करेगा यह, इसमें कोई सन्देह नहीं।

"छोटनबाबू ! खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखकर हम क्या करेंगे। रामकिसूनबाबू के जमाने में···।"

"रामकिसूनबाबू का जमाना रामकिसूनबाबू के साथ चला गया।" छोटनबाबू का टण्डेल-भोलटियर[1] मटरा भी बोलता है, "यह कांग्रेस आफिस है, बाबाजी का मठ नहीं।"

बालदेवजी की अकिल गुम हो रही है।

खैनी से सड़े हुए दाँतों को निकालकर मटरा हँसता है। फिर मटकी मारकर कहता है, "कबिराहा में तो 'सब धन साहेब का' ही होता है।···खँजड़ी बजाना सीखे हैं या नहीं ?"

"हा-हा-हा-हा !" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं।

चन्ननपट्टी का गुदरू कहता है—"बालदेव ! अब अपने गाँव में आओगे तो जतियारी भोज से पकड़कर उठा दिये जाओगे।"

"बालदेव मेरीगंज का एकान्ती मजा छोड़कर गाँव क्यों जायेगा ?···अन्धों में काना बनकर मौज कर रहा है।"

"हा-हा-हा-हा-हा-हा !"

बालदेवजी की आँखों में आँसू आ जाते हैं। यदि दोरिक सरमा नहीं आ जाते

---

१. किसी नेता का व्यक्तिगत नौकर।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो वह फूटकर रो पड़ता। सरमा ने आते ही कहा—"क्या है, क्या है ? बालदेवजी को तुम लोग क्यों चिढ़ाते हो ?"

"चिढ़ाते कहाँ हैं ? हम लोग सतसंग करते हैं।" छोटनबाबू हँसकर बोले।

सरमा ने पास की खाली कुर्सी पर बालदेवजी को बैठाते हुए कहा, "बालदेवजी ! यहाँ बैठिए, हम जवाब देते हैं।···सतसंग की बात कहते हैं छोटनजी ! यह बालदेव, दोरिक शर्मा, नेवालाल, फगुआ, सहदेवा, बौनदास, उजाड़ू, चुन्नीदास, पिरथी, जगरनथिया, छेदी, गंगाराम वगैरह के सतसंग का ही फल है कि आपके जैसे लाल पैदा हुए हैं।···अभी चेभर-लेट गाड़ी पर लीडरी सीख रहे हैं आप ! आप क्या जानिएगा कि सात-सात भूजा फाँककर, सौ-सौ माइल पैदल चलकर, गाँव-गाँव में कांग्रेस का झण्डा किसने फहराया ? मोमेंट में आपने अपने स्कूल में पंचम जारज का फोटो तोड़ दिया, हेडमास्टर को आॅफिस में ताला लगाकर कैद कर दिया, बस आज आप लीडर हो गये। यह भेद हम लोगों को मालूम रहता तो हम लोग भी खाली फोटो तोड़ते।···गाँव के जमींदार से लेकर थाना के चौकीदार-दफादार जिनके बैरी ! कहीं-कहीं गाँववाले दल बाँध-कर हमें हड़काते थे, जैसे मुड़बलिया[1] को लोग सूप और खपरी बजाकर हड़काते हैं।···आप नहीं जानिएगा छोटनबाबू ! आपका जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय आपके बाबूजी दारू की दूकानों की ठेकेदारी करते थे।···हम लोग उनकी गाली सुन चुके हैं।···क्या बालदेव ! याद है ?···वही कटफर भट्ठी की बात ?"

गूदर तुरन्त रंग बदलना जानता है···वह भी तो नीमक कानून के समय से ही झोला टाँग रहा है—"सरमाजी ! गिधवास हाट पर···।"

"चुप चोट्टा कहीं का !" शर्माजी डाँटते हैं, "जिधर चाँद उधर सलाम !··· बालदेवजी को सभी मिलकर चिढ़ाता था, क्यों रे !···बालदेवजी जरा साफ कपड़ा पहनने लगे हैं; यरवदा चक्र खरीदे हैं, चेहरा-मोहरा पहले से जरा चिकना लगता है, पास में पैसा है, इसीलिए तुम लोगों का कलेजा जल रहा है।···चलिए बालदेवजी, गांगुलीजी के यहाँ हम भी बहुत दिनों से नहीं गये हैं।"

"अभी मिटिन जो है।" बालदेवजी कहते हैं।

"अरे, आप भी तो बालदेवजी सब दिन एक ही समान रह गये !···मिटिंग में रहकर क्या कीजिएगा। फारबिसगंजवालों का कजिया फैसला होनेवाला है। खुशायबाबू एक घोड़ा-गाड़ी में भरकर कागज-पत्तर, फाइल-रजिस्टर, भौचर, डिबलूकट[2] और मुकदमों के कागज ले आये हैं। उधर फगुनीसिंघ भी एक सौ आदमी को भँजाकर ले आये हैं। आज रात-भर खूब धमाधम होगा। चलिए, क्या देखिएगा राँड़ी-बेटखौकी का झगड़ा !"

बालदेवजी दोरिक शर्मा के साथ चले गये तो गूदर ने आँख टीपकर फिस-फिसा के कहा, "अरे ! गांगुलीजी के यहाँ जाता है थोड़ो ! जा रहा है तिरपित भण्डार में, अभी बालदेवजी को चोट पर चढ़ायेगा। रसगुल्ला झाड़ेगा।"

---

१. बिना सिरवाला प्रेत। २. डुप्लिकेट।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छोटनबाबू कहते हैं, "अमीनबाबू से कहना होगा। मेरीगंज में अब बालदेव से काम नहीं चलेगा। चरखा सेण्टर को चौपट कर दिया। घर-घर में सोशलिस्ट घरघराने लगे। अभी तो सब डकैती केस में ऐरेस्ट हैं। उस गाँव का डाक्टर कौमनिस्ट था, वह भी ऐरेस्ट हैं।...उसको तो हम्हीं ने ऐरेस्ट कराया है। कटहा का नया दारोगा हमारा क्लास फ्रेण्ड है।"

"लीजिए! एक बरमगियानी गये तो दूसरे कठपिंगलजी आ रहे हैं।...यह तो आजकल और भी काबिल हो गया है।"

बावनदासजी आ रहे हैं।...आश्रम के बूढ़े कुत्ते बिलेकपी (ब्लैक प्रिंस) ने बावनदास को दूर से ही पहचान लिया है। अशोक गाछ के नीचे वह इसी तरह लेटा रहता है और हर आने-जानेवाले को देखता है। बावनदास को देखके कान खड़ा कर गर्दन उठाकर देखता है। दुम भी हिला रहा है।...ससांकजी ने इस कुत्ते का नाम रखा था—ब्लैक प्रिंस। सोशलिस्ट पार्टी के चिनगारीजी ने 'लाल पताका' में, जिला के एक मारवाड़ी को ब्लैक प्रिंस लिखा था, अर्थात् जो ब्लैक करने में मशहूर हो। चूंकि मारवाड़ी एकदम नौजवान था इसलिए प्रिंस लिखा था। मारवाड़ी ने मुकदमा ठोंक दिया था कि 'लाल पताका' के सम्पादक ने उसे कुत्ता कहा है।...बिलेकपी ने ठीक पहचाना है।...बावनदासजी भी अशोक की छाया में बिलेकपी के पास आकर बैठ गये। अहा...हा! ...प्यार का भूखा बिलेकपी! खुशी से उछल-कूदकर, दौड़कर कभी बावनदासजी की झोली दाँत से पकड़कर खींचता है, कभी लाठी लेकर भागता है! अ-हा-हा!

"अ-हा-हा! बिलेकपी रे!...बाल झड़ रहे हैं। पहले तो रविवार को निरजला-अनसन करते थे। तुम दूध-हलुवा भी नहीं सूँघते थे। सुनते हैं, आजकल मुर्गी की हड्डी चबाते हो। तुम्हारा क्या कसूर भैया! घाव भी हो गया है।... बदमासी मत करो। झोली में क्या है जो देंगे! जाओ, झोली में कुछ नहीं है!"

"काऊँ-काऊँ-क्यूँ!" बिलेकपी धरती पर चित्त होकर लेटा हुआ काऊँ-माऊँ कर रहा है और बावनदास की झोली को दाँत से खींचता है।

बावनदासजी धीरे से एक कागज की पुड़िया निकालते हैं। बिलेकपी और भी जोर-जोर से काऊँ-माऊँ करने लगता है। उसकी यही आदत है। बावनदास जब आता है, उसके लिए एक आने का मण्डा खरीदता आता है। दस साल से मण्डा खा रहा है बिलेकपी! अब एकदम बूढ़ा हो गया। बावनदास एक टुकड़ा मण्डा उसे देता है। बिलेकपी चट से खाकर मुँह देखता है बावनदास का।

"अब क्या लेगा, अण्डा?"

चौदह

तहसीलदारसाहब अपने नये दोमंजिले की छत पर बैठकर देखते हैं—धान के खेतों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
में अब धानी रंग उतर आया है। बालियाँ झुक गयी हैं। पचीस दिन कातिक के बीत गये हैं। अखता धान की अब कटनी शुरू हो जायगी।···चारों ओर तहसीलदारसाहब की जमीन! पूरब, वह जो ताड़ का पेड़ दिखायी पड़ता है कमला के उस पार···वहाँ तक और उत्तर, बूढ़े बरगद तक। दक्खिन में, सन्थालों की जमीन दखल करने के बाद, पिपरा गाँव तक तहसीलदार के पेट में चला आया है। घर के पच्छिम ततमाटोला के पास पचास एकड़ जमीन की एक ही जमा है। खजाना लगता है सिर्फ दस रुपया। तहसीलदारसाहब के बाप ने भी इस जमा को दखल करने की हरचन्द कोशिश की थी, मगर गोटी नहीं बैंठी। तहसीलदारसाहब ने भी अपनी तहसीलदारी के समय बहुत कलम चलायी, लेकिन तुम कैथ तो वह भूमिहार! वह जमीन धरमपुर के भैंरोबाबू की है। तहसीलदारसाहब की आँख की किरकिरी वह जमीन! इस दोमंजिले की छत पर बैंठने से जमीन की भूख और तेज हो जाती है। लिखा-पढ़ी, दलील-दस्तावेज मरम्मत से लेकर, अकेले में बैंठकर, तरह-तरह के पैंट[1] भी यहीं सोचते हैं वह।···नीचे उतरते ही उनका चेहरा बदल जाता है। तब पोखर में स्नान करने से लेकर भोजन पर बैंठने तक वह न जाने कौन शास्तर का मन्तर बुदबुदाते रहते हैं, ओं-ग-मिरिंग···शिवा···आ··· य। ओं-ग-मिरिंग···!

रोज खाने के समय तहसीलदारसाहब धीरे से पूछते हैं, "दीदी कैसी है?"

"आज बहुत खुश है तुम्हारी बेटी!"

"सच? कमली की माँ, रात तो मुझे नींद ही नहीं आयी।" तहसीलदार-साहब जिस दिन खाने के समय खुश हुए, उस दिन जो भी सामने जला-पका, मीठा-नमकीन रहा, सब खा जाते हैं।

"अभी कहती थी कि 'इन्दिरा' को उसका स्वामी मिल गया।···बहुत खुश है।"

"पगली!" तहसीलदारसाहब हँसते हैं।

रात को अचानक कमली के कमरे से रोने की आवाज आयी!···कमली हिचकियाँ लेकर रो रही थी। माँ को तो जड़ैया-बुखार की तरह कँपकँपी लग गयी। तहसीलदारसाहब की आँखों से आँसू की झड़ी लग गयी। माँ ने अपने को बहुत सँभालके पूछा, "क्या है बेटी, क्या हुआ? बोल कमल! कमली! बेटी! बोल बेटा! मैना मोरी!"

"माँ! मैं अपने लिए नहीं रोती हूँ।···यह···देखो न! इन्दिरा के लिए···।" कमला कहते-कहते फिर हिचकियाँ लेती है।

"कौन इन्दिरा?···कौन है वह?"

"कौन इन्दिरा?···हाँ, तुम क्या जानो! माँ, इस किताब की इन्दिरा के लिए रो रही हूँ।···बेचारी पहले-पहल ससुराल जा रही थी, डोली पर चढ़के। मन में कितने मनसूबे बाँधकर दुलहिन इन्दिरा ससुराल जा रही थी। एक पुराने तालाब के किनारे डोली रुकी। वह पोखर बिजूवन-बिजूखण्ड जैसे एक जंगल के

---

१. प्वायंट।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पास ही [illegible] जगह थी । इसीलिए साथ में सिपाही लोग थे । लेकिन, इन्दिरा को डकैत लोग डोली सहित उठाकर ले गये । दिन-दहाड़े डकैती हो गयी । लेकिन माँ, उसकी सबसे बड़ी चीज बच गयी है, उसकी इज्ज़त ! अभी वह उसी बिजूवन-बिजूखण्ड जैसे घोर जंगल में है माँ ! बेचारी इन्दिरा !"

कमला बंकिमबाबू की पुस्तक 'इन्दिरा' पढ़कर रो रही थी।···आज वह खुश है । इन्दिरा को उसका स्वामी फिर मिल गया ।

तहसीलदारसाहब कहते हैं—"यह पागलपन नहीं कमला की माँ ! बेटी मेरी बड़ी समझदार है। मोम का कलेजा है ! बाबा विश्वनाथ ! मंगल करना !"

"कल डाक्टर से भेंट किये या नहीं ?" माँ पूछती है ।

"हाँ, रात में तो सुना ही नहीं सका । बड़ा झंझट का काम है । दर्खास्त दिया तो पूछा कि डाक्टर आपके कौन हैं । मैं क्या जवाब दूँ ? कहा, कोई नहीं । बस, नामंजूर कर दिया दर्खास्त । किरानीबाबू बड़े भले आदमी थे । वे बोले कि डाक्टरसाहब नजरबन्द हैं, इसलिए वे सिर्फ माँ, बाप, स्त्री और बहन से ही खत-किताबत कर सकते या मिल सकते हैं । क्या कानून है ! बहन को चिट्ठी दे सकते हैं, बहनोई को नहीं । स्त्री से भेंट कर सकते हैं, लेकिन साथ में ससुर रहे तो वह बचारा अपने जमाई का मुँह भी नहीं देख सकता !" तहसीलदारसाहब मुँह धोकर, बगल की कोठरी में जाते-जाते कहते हैं, "प्यारू वहीं पूर्णिया में ही रहता है । एक होटल में खाता पीता है । जेल के अन्दर से ही डाक्टर ने गनेश का इन्तिजाम कर दिया है, बरमो-समाज मन्दिर में । हर महीने दस्तखत करके चिक भेज देता है डाक्टर । प्यारू और गनेश के नाम से अलग-अलग चिक देता है । जो भी कहो, आदमी बहुत अच्छा है यह डाक्टर ! प्यारू कहता था, एक दिन वह दूध के ठेकेदार के साथ अन्दर चला गया । अन्दर जाकर, फाटक के पास ही, डाक्टरसाहब से भेंट हो गयी । डाक्टरसाहब जेल आफिस में आ रहे थे । प्यारू को देखकर अचकचा गये डाक्टरसाहब । फिर कहा, क्यों आये ? प्यारू ने कुछ जवाब नहीं दिया तो पूछा, मेरीगंज से कब आये हो ?···कमला कैसी है ?"

"ऐं ? पूछा ? डाक्टर ने पूछा था ? प्यारू ने क्या जवाब दिया ?" कमली की माँ एक ही साँस में उतावली होकर पूछती है, "न जाने क्या बता दिया उसने ?"

"नहीं, प्यारू बेवकूफ़ नहीं है । जवाब दिया, अच्छी है । आपका फोटो ले गयी है, रोज सुबह उठकर देखती है ।"

"अच्छा ? कहा उसने ? कितना होशियार है प्यारू ! आ-हा-हा ! भगवान भी कैसे हैं ? कोई नहीं है बेचारे को ।···तब डाक्टर ने क्या कहा ?"

"कहता था, हँसते-हँसते चले गये ।" तहसीलदारसाहब ने मुँह में पान डाल लिया ।···अब बात फुरा गयी ।

मारे खुशी के कमली की माँ भरपेट खा भी नहीं सकती है । माँ-बेटी साथ ही खाती हैं रोज । आज कमली बार-बार टोकती है, "माँ, खाओ भी, पुरैनियाँ की कथा पीछे होगी ।···बलैया मेरी किसी का फोटो देखेगी !"

आज से माँ बैठकर उपनियास सुनेगी । कमली फिर शुरू से इन्दिरा पढ़कर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुना रही है। कमली कहती है, "माँ शकुन्तला, सावित्री आदि की कथा पढ़ने में मन लगता है, लेकिन उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगता है कि यह देवी-देवता, ऋषी-मुनि की कहानी नहीं, जैसे यह हम लोगों के गाँव-घर की बात हो।"

आज दो दिनों से खाने-पीने के बाद कमली के गर्भ में पलता हुआ शिशु हाथ-पाँव फड़काता है। लाज से वह कुछ कहती नहीं है माँ को। लेकिन जब से उसे आनेवाले की आहट मिली है, कमली का मन किसी दूर में खो-सा गया है। एक ही साथ बहुत-से बच्चों के मुखड़े खिलखिला उठते हैं उसकी आँखों के आगे! बच्चे उसके साथ आँखमिचौनी खेल रहे हैं? कौन है वह? सभी प्यारे! ताजे कमल की तरह खिले हुए। वह किसका हाथ पकड़े? वह एक चंचल बालक को उठाकर गोद में ले लेती है। कितने कोमल हैं उसके हाथ-पैर, कैसी मीठी मुस्कराहट! कितना चंचल! मेरा···चुलबुला राजा रे! ···कमली की छाती से दूध झरने लगता है।

"कमली की माँ!" तहसीलदारसाहब दोमंजिले की कोठरी से पुकारते हैं।

"ज़रा इधर तो आना कमली की माँ!"

दोमंजिले पर पैर रहते ही तहसीलदारसाहब की बुद्धि, उनके विचार, उनकी बोली-बानी सब बदल जाती है। जबड़े की हड्डियाँ खुद-ब-खुद चलती रहती हैं, मानो कोई चीज़ चबा रहे हों।

"कमली की माँ! मैं अब फाँसी लगाकर मर जाऊँगा। मुझे नींद नहीं आती है। क्या होगा? कुछ सोचती हो?···कोई उपाय? दुश्मन को भी ये दिन कभी देखने न पड़ें! तुम तो अब दिन-रात बेटी के पास रहती हो, मेरा जी अकेले में घबराता है। तुम्हारी नागिन बेटी ने ऐसा डँसा है कि···" तहसीलदारसाहब आवेश में आकर खड़े हो जाते हैं।

"छिः! कमली के बाबू! कैसी बातें करते हो?"

"चुप रहो तुम! तुम दोनों ने मुझे···। हट जाओ!"

"कमली के बाबू, बैठ जाओ! चिल्लाओ मत, लड़की सुन लेगी।"

"सुन लेगी! हुँ, बड़ी लाटसाहब की बेटी आयी है!"

"कमली के बाबू!"

"चौप!"

बूढ़ी नौकरानी आकर कहती है, "चाह पीयै ले बजबै छथिन दाय··· नीचाँ!"

"चलो!"

कमली अब भी रोज दोनों वक्त अपने हाथों से चाय बनाकर भेजती है अपने बाप को। कमली कहती है, "बाबा एक सौ प्यालियों के बीच, सिर्फ रंग देखकर मेरी बनायी हुई चाय पहचान लेंगे।"

नीचे के कमरे में बैठकर, चाय की प्याली में चुस्की लेते ही तहसीलदारसाहब की तनी हुई रगें ढीली पड़ जाती हैं, चेहरा स्वाभाविक हो जाता है।

"सेबिया को रजाई भरवा दो इस बार, नहीं तो बूढ़ी इस जाड़े में गठिया से नहीं उबर सकेगी।" तहसीलदारसाहब कहते हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"तुम्हारी बेटी तुम्हारे लिए ऊनी गंजी बिन रही है।···किताब खोलकर सामने रख लेती है, दोनों हाथों में सलाई लेकर किताब में देख-देखकर जब बिनने लगती है कमली, तो लगता है हाथ नहीं मिसीन है।"

"सच ? अहा ! बेचारी···! मेरे-जैसे अभागे के घर में जन्म लेकर बचपन से दुख-ही-दुख भोगती आ रही है दीदी मेरी ! कमली की माँ, तुमको याद है, जब सिर्फ एक साल की थी कमली, उसी समय मैंने कहा था कि मेरी बेटी सन्तोख की पुतली बनकर आयी है।"

सेबिया हँसती हुई अधूरा स्वेटर ले आती है।

"यही देखो !" माँ हाथ में लेकर दिखलाती है, "अपनी बेटी की कारीगरी देखो !"

तहसीलदारसाहब मुस्कराते हुए देखते हैं, फिर सेबिया को इशारा करते हुए कहते हैं, "यह तो बहुत बड़ा होगा मेरी देह में। मेरे लिए तो इतना छोटा (···एक बच्चे के बराबर)···चाहिए ! इ त ना छोटा !"

"ऊँ !" सेबिया गाल पर हाथ रखकर हँसते हुए कहती है, "बतहा !"[1]

माँ कहती है, "दे आओ ! कहना, बहुत बढ़िया है।"

बहुत पुरानी नौकरानी है सेबिया। कमली की माँ के बचपन की सहेली है वह ! साथ-साथ खेली है। बचपन में ही बेवा हुई, चुमौना की बात सुनते ही हफ्तों रोती रहती और नदी में डूबने जाती। कमली की माँ के साथ यहाँ आयी और अब तक है। गठिया के कारण शरीर बहुत कमजोर हो गया है और एक कान से कम सुनती है।

कमली कहती है—सेबिया माई !

"ए ! सेबिया माई !"

बूढ़ी रोज चुराकर चूल्हे की लाल मिट्टी के टुकड़े दे आती है कमली को। कितनी सोंधी लगती हैं चूल्हे की मिट्टी !

"माँ, सेबिया माई पूछती थी, जमाई कब आवेगा ?"

तहसीलदारसाहब दोमंजिले की छत पर खड़े होकर देख रहे हैं। पच्छिम की ओर डूबते हुए सूरज की लाल रोशनी 'धरमपुर-मिलिक' के खेतों पर फैली हुई है। रंग धीरे-धीरे बदल रहा है। लाल, धुँधला लाल, मटमैला···! अब अँधियारी बढ़ी आ रही है।···तहसीलदारसाहब की ड्योढ़ी, चहारदीवारी भी अब अँधेरे में डूब गयी।

---

१. पागल।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पन्द्रह

बालदेवजी घोड़ागाड़ीवाले से कहते हैं—"देखो जी, आज यदि 'टैन' पकड़ा दो तो आठ आना बकसीस देंगे !"

"देखिए, अपने जानते कोसिस तो हम खूब करेंगे !···चल बेटा ! कदम-कदम बढ़ाके ।" घोड़ेवाला छोकरा घोड़े को चाबुक लगाते हुए गाता है, "झगड़ा सुरू हुआ है सारे हिन्दुस्तान में, हिन्दू-मुसलमान में ना···"

बालदेवजी को आज मालूम हुआ कि महतमाजी दो महीने से लगातार पटना में थे। रोज प्रार्थना-सभा में 'भाखन' देते थे महतमाजी !···आजकल 'डिल्ली' में हैं।

"···एँ ! कौन गाड़ी बिगुल दिया जी ?"

"अभी सिगल डौन भी नहीं हुआ है। देरी है।"

"देरी है ? वाह बहादुर !"

स्टेशन पर बालदेवजी ने भाड़ा के अलावा एक अठन्नी बकसीस में दिया तो घोड़ागाड़ीवाले छोकरे ने बड़े 'कैंदा' से हाथ चमकाके सलाम किया, "सलाम हजौर !"

किसी जवान स्त्री को देखते ही बालदेवजी को झट से लछमी की याद आ जाती है। मन-ही-मन सोचते हैं, यदि थोड़ी देर गंगुलीजी के यहाँ और हो जाती तो आज सरमाजी आने नहीं देते। चलते-चलते सरमाजी ने आखिर दिल्लगी कर ही लिया, "अच्छा तो बालदेव, जाओ ! हम बेकूफ हैं जो तुमको रोकेंगे ? तुमको यहाँ रोक लें और उधर तुम्हारी कोठारिन किसी से 'सतसंग' करने लगे तो हुआ !···हा-हा-हा ! माफ़ करना, अच्छा तो जै हिन्द !"

"जै हिन्न बालदेवजी !"

"कौन ? खलासीजी ! कहिए क्या हाल है ?"

"हम तो अभी आ रहे हैं मेरीगंज से।···जाइए रौतहट टीसन में आपको बैलगाड़ी लगी हुई है। गये थे रोकसती[1] कराने के लिए। आज दस दिन के बाद लौटे हैं। हमारे जलाना को गरम हवा[2] लग गया था। झाड़-फूंककर साथ लेते आये हैं !···अ हा ! आज दस बजे हम आपके आसरम के तरफ गये थे, एक जड़ी खोजने के लिए। आसरम देखकर मन होता था कि यहाँ से कहीं नहीं जायें। आप तो थे नहीं, कोठारिनजी थीं। साहेब बनगी किया, सुपाड़ी-कसैली खाया। एक नवतुरिया साधूजी इतना बढ़िया गा-गाकर बीजक पढ़ रहे थे कि जी होता था बैठे रहें।···अच्छा तो जै हिन्न !"

नवतुरिया साधू ?···काशीजी का बिदियारथीजी है। महन्थ सेवादास के समय से ही मठ पर आता है, साल-दो साल के बाद। महन्थसाहब जाने के समय धोती, चादर, किताब का दाम और राह-खर्चा देते थे।···मोती के जैसा अक्षर

---

१. रुखसत। २. भूत-प्रेत की हवा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिखता है।…लछमी ने जो बीजक दिया था बालदेवजी को, इसी बिदियारथीजी का लिखा हुआ था। इस बार आये हैं तो कहते हैं कि मठ पर जी नहीं लगता है। लेकिन लछमी तो अब मठ की कोठारिन नहीं! एक भले घर की 'इसतिरी' है।

…जब मैं घर में नहीं था तो वह क्यों गया? आखिर लोग क्या सोचते होंगे? नहीं, यह अच्छी बात नहीं? लछमी को समझा देना होगा।

बालदेवजी की मौसी रोज सुबह ही उनके आसरम के सामने आकर बैठ जाती है और गिन-गिनकर गालियाँ सुना जाती है, "अरे भकुआ रे!…एही दिन के लिए पाल-पोसके इतना बड़ा किया था रे!…मुड़िकटौना रे! लछमिनियाँ ने तो तुमको धोखा की माटी[1] खिलाकर बस कर लिया है। भेंडा बनाकर रख लिया है। रे वेलज्जा, मोटकी-घुमसी की सूरत पर कैसे भूल गया रे!" और लछमी कभी सेर-भर चावल, पाव-भर दाल अथवा गेहूँ, आलू वगैरह देकर उसे विदा करती है।

एक पहर साँझ हो गयी है। सर्दी काफी पड़ने लगी है अब। बालदेवजी चादर से कान को ढंक लेते हैं लेकिन, कान तो गर्म है।…विदियारथीजी…

"अरे हाँ, हाँ! ठहर! साला! आदमी देखकर भी भड़कता है?" गाड़ीवान ने बैलों को रोकते हुए पुकारा, "गोसाईंजी!…उठिए, आ गये घर।"

बालदेवजी जगे ही हुए हैं। उठते ही दूर पेड़ की छाया में किसी को जाते देखते हैं।…ओ! विदियारथीजी अभी जा रहे हैं। इसीलिए बैल भड़के थे!

"साहेब बन्दगी!" लछमी पैर छूकर साहेब बन्दगी करती है।

बालदेवजी मिनमिनाकर कुछ कहते हैं और सीधे अपनी आसनी पर चले जाते हैं।

"मेरा कम्बल कौन ओढ़ा था?" बालदेवजी बिछावन पर पड़े हुए कम्बल को नाक सिकोड़कर देखते हुए पूछते हैं, "मेरा कम्बल क्यों ओढ़ा था वह?"

"कौन?"

"और कौन? मालूम होता है सपना देखती हो!" बालदेवजी का माथा गर्म है।

"रामफल!…तुम लोग खा लो! हमको भूख नहीं। हम नहीं खायेंगे।" बालदेवजी जोर-जोर से कम्बल झाड़ते हुए कहते हैं, "दुनियाँ-भर का आदमी आकर आसन पर सोयेगा!"

लछमी कई दिनों से देखती है, बालदेवजी बात-बात पर बिगड़ जाते हैं। वह आकर दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है, "आसन झाड़ा हुआ है।…बिदियारथीजी तो ओसारे पर बैठे थे।"

"क्यों? ओसारे पर क्यों थे? घर में क्यों नहीं बैठते हैं विदियारथीजी? सूने घर में जैसा घर, वैसा ओसारा।" बालदेवजी के ओठ फड़क उठते हैं।

"विदियारथीजी आते हैं सतसंग करने के लिए…!"

१, बस में करने का एक टोना।

Funding by IKS-MoE

"हाँ, हाँ ! खूब समझते हैं। सतसंग···! हुँ···सतरंग !" बालदेवजी घृणा से मुँह सिकोड़ लेते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

न जाने क्यों, आज सतसंग सुनते ही उनके देह में झरक-सी लगती है। छोटनबाबू ने कहा था—'सतसंग कर रहे हैं।'···दोरिक सरमा ने आखिर कह दिया, 'कोठारिन किसी के साथ सतसंग···!'

"सतसंग ही करना है तो उनकी आसनी यहीं लगा दो। दिन-रात खूब सतसंग करती रहना।" बालदेवजी ओठ टेढ़ा करके एक अजीब मुद्रा बनाकर, हाथ चमकाकर कहते हैं, "सतसंग !"

"गुसाईंसाहब !" लछमी के भी नथने फड़क उठते हैं, "ऐसा क्यों बकते हैं !"

"तुम हमको टिरिकबाजी दिखाती हो ?···हम सब समझते हैं।"

"क्या समझते हैं ?"

बाँहें क्यों मरोड़ती है लछमी ?···मारपीट करेगी क्या ? गुस्सा से थरथर काँपती है, "बोलिए ! क्या समझते हैं···रण्डी समझ लिया है क्या ? ठीक ही कहा है, जानवर की मूँड़ी को पोसने से गले की फाँसी छुड़ाता है, मगर आदमी की मूँड़ी···।"

"हम तुम्हारे पालतू कुत्ता नहीं। हम अभी चन्ननपट्टी चले जायेंगे, अभी !" बालदेवजी उठकर खड़े होते हैं।

"गोस्सा मत होइए गोसाईंसाहेब ! करोध पाप को मूल ! जाते-जाते देह में अकलंग[1] लगाकर मत जाइए।"

बालदेवजी कुछ सोचकर बैठ जाते हैं।···लछमी की देह से गन्ध निकलती है। चुपचाप लछमी की ओर देखते हैं वह। लछमी चुपचाप किवाड़ के सहारे खड़ी आँसू पोंछते हुए सिसकती है, "मेरी तकदीर ही खराब है !"

लछमी रो रही है ?···बालदेवजी का गुस्सा धीरे-धीरे उतर जाता है। वह उठते हैं, लछमी के सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, "रोओ मत ! तुम पर भला सन्देह करेंगे ? रोओ मत ! लेकिन तुमको अब खुद समझना चाहिए कि तुम अब मठ की कोठारिन नहीं, मेरी इसतरी हो। लोग क्या कहेंगे···।"

लछमी बालदेवजी के पाँव पर गिर पड़ती है, "छमा प्रभू ! दासी का अपराध···।"

"छिः छिः ! लछमी, उठो; चलो भूख लगी है।"

---

१. कलंक ।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डाक्टर नजरबन्द है।

जेल अस्पताल के एक सेल में उसे रखा गया है। हर सप्ताह कोई-न-कोई ऑफिसर आकर उसे घण्टों परेशान करता है, तरह-तरह के प्रश्न पूछता है।··· चलित्तर कर्मकार के दल से डाक्टर का कोई सम्बन्ध प्रमाणित करने के लिए पुलिस जी-तोड़ परिश्रम कर रही है।

"आप जानते हैं चलित्तर कर्मकार किस पार्टी का मेम्बर है?"

"जी नहीं। मैंने चलित्तर कर्मकार का नाम भी नहीं सुना।"

"नहीं सुना? जिले-भर के बच्चे तक जानते हैं।"

चलित्तर को कोई नहीं जानता! बिहार सरकार की ओर से पन्द्रह हजार इनाम का एलान किया गया है। हर स्टेशन के मुसाफिरखाने में उसकी बड़ी-सी तस्वीर लटका दी गयी है। पुलिस, सी० आई० डी० और मिलिटरी का एक स्पेशल जत्था उसे गिरफ्तार करने के लिए साल-भर से जिले के कोने-कोने में घूम रहा है। नये एस० पी० साहब ने प्रतिज्ञा की है, या तो चलित्तर को गिरफ्तार ही करेंगे अथवा नौकरी छोड़ देंगे।···घर-घर में चलित्तर की कहानियाँ होती हैं। नेताजी के सिंगापुर में आने के समय गाँव-घर, घाट-बाट, नाच-तमाशा में लोग जैसी चर्चा करते थे, वैसी ही चर्चा चलित्तर की भी होती है।···कटहा के बड़े दारोगा से थाने पर जाकर, भेंट करके, बातचीत करके, पान खाकर और नमस्ते करके जब उठा तो हँसकर कहा, हम ही चलित्तर कर्मकार है। दारोगा-साहब को दाँती लग गयी।···कलक्टरसाहेब दार्जिलिंग रोड से कहीं जा रहे थे, डंगरा घाट की नाव बह गयी थी। कलक्टरसाहब लौटे आ रहे थे कि एक आदमी ने आकर सलाम किया और कहा कि 'चलिए, उस पार पहुँचा देते हैं।' कलक्टर-साहेब तो मोटर में बैठे ही रहे, उस आदमी ने मोटर-सहित कलक्टरसाहेब को नदी तैरकर पार कर दिया। सिरिफ मोटर का एक पहिया एक हाथ से पकड़े रहा। उस पार जाकर कलक्टरसाहेब ने खुश होकर इनाम देने के लिए नाम-गाम पूछा तो बताया—चलित्तर कर्मकार।···कलक्टरसाहेब के हाथ से कलम छूटकर गिर गयी।···रोते हुए बच्चे को रात में माँ डराती है—आ रे! चलित्तर, घोड़ा चढ़ी!

और डाक्टर कहता है कि उसने चलित्तर का नाम भी नहीं सुना! कैसे विश्वास किया जाये? ···विराटनगर के बड़े हाकिम ने लिखा है, डाक्टर नेपाल की प्रजा नहीं।···बंगालवालों का जवाब आया है, बंगाल से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। तो आखिर कहाँ का आदमी है? पुरानी फाइलों को उलटने से बातें और भी उलझ जाती हैं। अजब झंझट है! उधर विधान सभा में सवाल पूछा गया है—डाक्टर को क्यों नजरबन्द किया गया है? बड़ी मुश्किल है! एस० पी० साहब बहुत कड़े आदमी हैं। कटहा के छोटे दारोगा को गलियाकर ठीक कर दिया है।

जेल में दाखिल होने के बाद डाक्टर को लगा, इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता

Funding by IKS-MoE

थी। जेल ! अस्पताल का यह सेल ! ऑफिसरों का आना-जाना और पूछताछ पन्द्रह-बीस दिनों के बाद ही बन्द हो गयी।···गाँधीजी पटना की प्रार्थना सभा में रोज प्रवचन देते हैं। दैनिक पत्रों के ये पृष्ठ कभी पुराने नहीं होंगे। इन प्रवचनों पर बहस नहीं की जा सकती है, किसी सेल में बैठकर इसका अध्ययन किया जा सकता है।···अभी कल कुछ सम्प्रदायवादियों के एक बड़े जलसे का उद्घाटन किया है प्रान्त के एक बड़े जग-जाहिर नेता ने।···मालूम होता है चालबाजी बहुत दूर तक चली गयी है। महात्मा गाँधी से भी काली-टोपी स्वयं-सेवक दल के लिए प्रशंसा के शब्द वसूलना हँसी-खेल की बात नहीं ! मन में किसी ने कहा था, उन्हें धोखा दिया गया है। और तीसरे ही दिन बात स्पष्ट हो गयी। गाँधीजी ने बयान में कहा, 'इस संस्था के संचालकों ने मेरे पास अपनी संस्था का उद्देश्य छिपाया, इसका मतलब हुआ, उनकी आत्मा कहती है कि वे असत्य मार्ग पर हैं। फिर कोई सही दिमागवाला आदमी उन्हें कैसे कहेगा कि वे सही रास्ते पर हैं !' ···मेरीगंज की याद आती है !···कमला की बड़ी चिन्ता थी, मगर सुना है, वह ठीक है। कमला की याद आते ही जेल की सारी कुरूपताएँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। कालीचरन, बासुदेव वगैरह डकैती-केस में फँसकर आये हैं। बासुदेव, सुन्दर और सोमा की बात नहीं जानता, लेकिन कालीचरन ? विश्वास नहीं होता। कुछ कहा भी नहीं जा सकता है !···तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद की अब पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी। लेकिन यह अन्याय कितने दिनों तक चलेगा ?···तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद ने एक दिन हँसकर कहा था, 'जिस दिन धनी, जमींदार, सेठ और मिलवालों को लोग राह चलते कोढ़ी और पागल समझने लगेंगे उसी दिन, उसी दिन असल सुराज हो जायेगा। आप कहते हैं कि ऐसा जमाना आवेगा। जब जमाना आवेगा तो हमारी सम्पत्ति छीनी जायेगी ही। और, अभी सम्पत्ति बटोरने पर तो कोई प्रतिबन्ध नहीं। तो फिर बैठा क्यों रहूँ ?' तहसीलदारसाहब भी अजीब आदमी हैं। लेकिन वह जेल से छूटकर मेरीगंज ही जायेगा। और कहाँ जायेगा वह ?···नेपाल ? नेपाल के लोगों ने 'नेपाल राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की है। नहीं, राजनीति में वह नहीं जायेगा। वह राजनीति के काबिल नहीं। एक बार ममता ने बातें करते हुए राजनीति की तुलना डाइन से की थी।···डाइन !···मौसी को लोगों ने मार ही डाला ! मौसी···गणेश ! कमला ! लाख चेष्टा करने पर भी उसकी सूरत आँखों के आगे आ जाती है !

"डाक्टरसाहब।" असिस्टेन्ट जेलरसाहब आये हैं, "ब्रह्मसमाज मन्दिर के सेक्रेटरी आये हैं। आपका भांजा बीमार है। आपसे उसके इलाज के बारे में कुछ सलाह लेने आये हैं। जेलरसाहब आपको बुला रहे हैं।"

"ओ···चलिए !"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डेढ़ महीने से कालीचरन जेल में है। वासुदेव, सुनरा, जगदेवा, सोमा और सोनमा, सब एक ही केस में नत्थी है। इस बीच एक तारीख को कचहरी के मजिस्टरी-इजलास में हाजिरी हुई है। एक गाड़ी मिलिटरी आगे और एक गाड़ी पीछे! सभी को हथकड़ी और बेड़ी डालकर कचहरी लाया गया था। उस दिन काली-चरन की निगाह, पुलिस की लोरी से जितनी दूर जा सकती थी, चारदीवारी पर थी।···कचहरी की हाजत में पेशाब की गन्ध इतनी तेज क्यों होती है? काली-चरन की निगाह सेक्रेटरीसाहब पर पड़ी, उनसे आँखें भी मिलीं। कालीचरन का चेहरा खिल गया। तीन महीनों से जिनकी सूरत आँखों के आगे नाच रही थी। "सेक्रेटरीसाहब!···कृष्णकान्त मिश्रजी!" कालीचरन ने चिल्लाकर कहा, "जय हिन्द कामरेड!" सेक्रेटरीसाहब ने तुरन्त कनपट्टी इस तरह फेर ली मानो कान के पास मधुमक्खी ने अचानक काट लिया। फिर उसी तरह गर्दन टेढ़ी किये आगे बढ़ते गये। कालीचरन को सिपाही ने डाँट दिया, "का हो ससुरे! बिना हण्टर के बात ना मनबऽ!" उधर सेक्रेटरीसाहब काँटेवाले तार के घेरे में फँसते-फँसते बचे।···एकमुँहा होकर जो चलेगा वह काँटे में तो जरूर फँसेगा। तिस पर इधर सिपाहीजी ने कालीचरन को डाँटा···सुनरा तो खिलखिलाकर हँस पड़ा। लेकिन इसमें सिकरेटरीसाहेब का क्या कसूर! चोर-डकैतों से सभी भले लोगों को दूर रहना चाहिए। वासुदेव, सुनरा, सोमा, सनिचरा वगैरह आखिर डकैत ही तो हैं!···और सिकरेटरीसाहेब उसे भी डकैत समझ रहे हैं। कोई उपाय नहीं।

···कोई उपाय नहीं? लेकिन आज मांस का दिन है। जाड़े के समय सप्ताह में एक साम, कैदियों को मांस मिलता है। साम को वैस्नव और साकट को खिलाते-खिलाते काफी अँधेरा हो जाता है। अस्पताल के पिछवाड़े के वाडर-साहेब मांस जोगाड़ करने के लिए चले जाते हैं। आज कोसिम करके देखना चाहिए!···

कालीचरन ने फैसला कर लिया है। यदि मौका मिला तो वह जरूर कोसिस करेगा। हाँ, वह भागेगा। और कोई उपाय नहीं। उसने सब पता लगा लिया है। जेल से भागने की सजा सिरिफ छः महीना है। डण्डा-बेड़ी और लाल टोपी पहननी पड़ेगी।···लोग कहेंगे ललटोपिया, और क्या? लाल रंग खराब तो नहीं।···सिकरेटरीसाहेब और धरमपुरीजी से मिलकर वह बात करना चाहता है। उसके बाद उसे फाँसी-सूल्ली जो भी मिले, वह खुशी-खुशी झेल लेगा। पार्टी की इतनी बड़ी बदनामी कराके वह जीकर ही क्या करेगा!

···बासुदेव, सुनरा और सनिचरा तो चोर-डकैतों के साथ इस तरह हिलमिल गये हैं कि उन्हें देखकर लाज आती है कालीचरन को। वासुदेव ने डाक्टर नटखट-प्रसाद से दोस्ती कर ली है। डाक्टर नटखट!···नामी सिकचिल्ली[1] आदमी है यह

---

१. शेखचिल्ली।

Funding by IKS-MoE

डाक्टर। फारबिसगंज की तरफ का है। डकैती केस में आया है। अचरज की बात है! उस डाक्टर को देखकर किसी को विश्वास ही नहीं होगा कि उसने आदमी को मारने के सिवा कभी जिलाने का भी काम किया है। चेहरा ठीक कसाई की तरह है। बासुदेव का उसके साथ भी खूब हेलमेल देखते हैं। रात में जूआ भी खेलता है। बासुदेव कालीचरन से नहीं बोलता है। वह दूसरे खटाल में रहता है। उस दिन दाल-कमान में थोड़ी देर के लिए भेंट हुई। कालीचरन ने सिरिफ इतना ही पूछा, "बासुदेव, तुमको यही करना था ?"···बासुदेव के साथ एक कलकतिया पाकिटमार था। दोनों एक साथ खिलखिलाकर हँस पड़े। जाते समय बासुदेव ने कहा, "जिस समय सात सौ रुपैया का पुलिन्दा बाँधकर सिकरेटरीसाहब को देने गये थे, उस दिन क्यों नहीं पूछा था कि चार दिन के भीतर कहाँ से इतना रुपैया वसूल हुआ ?···" उसी शाम को पानी-टंकी के पास डाक्टर नटखट ने उसको रोककर कहा था, "कालीचरन, कोई रास्ता नहीं। तुम यदि चाहो तो तुम्हारा जमानतदार भी होगा और मुकदमा में बेदाग छूट भी जाओगे। सोचना! सोचकर देखना! पाटी-वाटी कोई काम नहीं देगी।"

···थू! थू! जेल में आकर काली को खैनी की आदत पड़ गयी है। डाक्टर-साहेब···अपने गाँव के डाक्टर ने जमादार से उस दिन जेल-गेट पर हँसकर कहा था, "सिपाहीजी! कालीचरन का जरा ख्याल रखिएगा।"···देवता है डाक्टर-साहेब! जरूर देवता है!··· सिरिफ खैनी ही नहीं, कभी-कभी बीड़ी भी जमादारसाहेब दे देते हैं।···थू! थू! थूक है ऐसे पैसे पर! डाक्टर नटखटप्रसाद की बात वह नहीं मानेगा। सोमा ने भी एक बार दबी जबान कहने की कोसिस की थी, "उस्ताद···!" "चुप उस्ताद का बच्चा!" कालीचरन ने डाँट बता दी थी।

उस्ताद! जेल से बाहर, फिरारी हालत में चलित्तर करमकार से उसकी भेंट हुई थी।···कौन कहता है कि वह बड़ा भारी कलेजावाला आदमी है! कुसियारगाँ टीसन के पास बड़का-धत्ता के बीच दोगछिया की छाया में भेंट हुई थी। कालीचरन को देखते ही वह अपने साथियों के साथ हाल-हथियार लेकर खड़ा हो गया था।···हेन्सप्! दारोगासाहेब जिस तरह चिल्लाये थे, उसी तरह चिल्ला उठा था चलित्तर।···कालीचरन को हँसी आ गयी थी। उसके मुँह से अनजाने ही निकल पड़ा था, "अरे! हम हैं उस्ताद! खाली-हाथ पाटीवाला कालीचरन!" चलित्तर ने एक बार कहा था, "इस खाली हाथवाली पाटी में रहकर सब दिन खाली हाथ ही रहोगे!" पीछे तो बहुत बहस किया। आखिर में चलित्तर ने कहा था, "तुमने हमको उस्ताद कहा है। गाँढ़े बिपत में कभी जरूरत पड़ने पर याद करना।" कालीचरन ने हँसकर कहा था, "उसकी जरूरत नहीं होगी···" दुबारा उस्ताद कहते-कहते वह रुक गया था।···आज भी चलित्तर की वह बात कान में गूँज रही है, "देखना है तुम्हारी उस्तादी!"

···लेकिन, आज बासुदेव और सोमा की मदद लेनी ही होगी। एक बार मिल तो जाये, वह पटिया लेगा।

गोटी बैठ गयी।···सोमा और बासुदेव को कालीचरन ने पटिया लिया है।

Funding by IKS-MoE

अस्पताल के पिछवाड़े में…!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ठीक है, अस्पताल के पिछवाड़े में, दीवाल की छाया में बासुदेव और सोमा ही हैं। ठीक है! दोनों ने कन्धे की ओर इशारा किया।

…सब ठीक! हत्तेरे की! कालीचरन गिर पड़ा। तब बासुदेव और सोमा कन्धा-से-कन्धा भिड़ाकर खड़े हुए।…ठीक है!…जरा-सा, जरा-सा और! बस, चार अंगुल! बासुदेव और सोमा के कन्धों पर कालीचरन जरा उचकता है। दोनों के कन्धों का भार जरा हल्का मालूम होता है। "ऐ, ठीक है।…भागो!"

"भागा! भागा!"

टु-टू-ऊ-ऊ…टु-टू-ऊ-ऊ! जेल-अस्पताल के पिछवाड़े से सिपाही सीटी फूंकता है।

टु-टू-टू-टू! बहुत-सी सीटियों की मिली हुई आवाज।

ढन-ढन, ढनांग-ढनांग…! जेल-फाटक का बड़ा घण्टा घनघना उठा।

…कालीचरन पांच मिनट तक जेल के बाहर, दीवार के पास जमीन पर बेसुध पड़ा रहा।…सीटी और घण्टे की आवाज ने उसे सजीव कर दिया।…नहीं, ज्यादा चोट नहीं आयी है। सिरिफ कमर में मोच आ गयी है।…ढनांग-ढनांग!…जेल का घण्टा घनघना रहा है…वह भागता है।

फ़ड़-र्र-र्र-र! एक साथ कई बन्दूकें गरज उठीं।

…अंधेरे में कुछ सूझता भी तो नहीं।…एक घड़ी रात भी नहीं हुई है। ओस से धरती पच-पच करती है, पैर फिसल जाते हैं।…

भर्र-भर्र-र-र-र, सामने दार्जिलिंग रोड पर पाँच-सात मिलिटरी-लौरियाँ दौड़ रही हैं।

कालीचरन, पाँचूबाबू वकील के घर के पिछवाड़े की एक झाड़ी में छिपकर हाँफता है।…सड़क कैसे टपा जाये?…किधर से जाना ठीक होगा? दाहिने ओर भी लोग हल्ला करने लगे हैं। पास की गली होकर घुड़सवार लोग जा रहे हैं।…

कालीचरन तय करता है, सामने बाँसवाड़ी पार करके मोबरलीसाहेब की पुरानी कोठी की बगल से जाना ही अच्छा होगा। अब देर नहीं करनी चाहिए।

…ऐं? मोबरलीसाहेब की कोठी के पास कालीचरन को ऐसा लगा कि पीछे से कोई टार्च मार रहा है…हाँ, यह तो टार्च की ही रोशनी है।…वह जंगल में घुस जाता है। बस, थोड़ी देर यहाँ सुस्ताकर, टार्चवाले को देखकर, फिर एक दुलकी! एक जूम[1] खैनी दिन में ही उसने चुनाकर, कपड़े के खूंट में बाँध ली थी। बहुत मौके पर अभी उस पर हाथ पड़ गया। खैनी खाकर वह झड़बेरी की झाड़ी से निकलकर साफ मैदान की ओर आता है!…कहाँ है टार्च की रोशनी? बाप! एकदम पास ही!…कालीचरन भागता है। टार्च की तेज रोशनी उसका पीछा कर रही है और फिर जंगल की निःस्तब्धता को भंग करके

---

१. खुराक।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राइफल की आवाज गूँज उठती है—फ़ड़-र-र-र !

जंगल-झाड़, कांट-कुस और अड्डा-खाई को टापता हुआ कालीचरन भाग रहा है। जंगल की लत्ती पैर छान्द लेती है, मगर वह झाड़ देता है ! ···जांघ में, लगता है, खोंच लग गयी है।

···पार्टी ऑफिस के पिछवाड़े में जो घना जंगल है, वहाँ पहुँचकर उसे लगा, वह निरापद है।···अरे ! यह तो खोंच नहीं ! अरे बाप ! इतना खून ! आधा बित्ता मांस उधेड़ दिया है। खलरा लटक गया है। ओ ! गोली लगी है शायद ! ···खून बन्द नहीं हो रहा है। ··

"को ओऽन ?···काली च र न ?" ऑफिस सेक्रेटरी राजबल्लीजी किवाड़ खोलकर सचमुच अवाक् हो गये। जीभ की नोक पर बोली चढ़ी ही नहीं।···

"एं ? कौन ? कालीचरन ?" सेक्रेटरीसाहब भी फड़फड़ाकर कमरे से बाहर आते हैं—"ओ कालीचरन ! तुम हो ?···इसीलिए शहर में इतना हल्ला हो रहा है ? जेल से भाग आये हो ?"

"जी ! लगता है, जाँघ में गोली लग गयी है···।"

"तुम्हारे कलेजे पर गोली दागी जानी चाहिए। डकैत ! बदमाश !"

"सिकरेटरीसाहेब ! इसीलिए तो···। इसीलिए तो···आपके पास आये हैं। सुन लीजिए ! ···माँ कसम, गुरु कसम, देवता किरिया ! जिस रात···उस रात को हम···यहाँ जिला पार्टी ऑफिस में था।"

"राजबल्लीजी ! आपको बघोछ लग गया है ? किवाड़ बन्द कीजिए, हटाइए इसे।···बाबू, मिहरबानी करो, चले जाओ। नहीं तो···।"

"आ आ आ प हल्ला काहे करते हैं ! आ आ प अन्दर जाइए।" राजबल्लीजी मौन भंग करते हैं।

कालीचरन पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है।

मोबरलीसाहेब की कोठी की ओर धड़ाधड़ फायर हो रहे हैं···फ़ड़-र्र-र्र !

"साथी राजबल्लीजी ! सिकरेटरी···साहेब···को समझा दीजियेगा। मेरा कोई···कसूर···नहीं।"

कालीचरन हिलता है। थोड़ी देर तक खड़े रहने के बाद, अब तो चला भी नहीं जा रहा है। वह दोनों पाँवों को बारी-बारी झाड़ता है। सामने कच्चू के पत्तों पर कुछ झरझराकर गिरा।···वह धीरे-धीरे फिर बगल के जंगल में चला जाता है।···अब ?···वह पुरानी धोती के एक खूंट को चीरकर घाव को बांधते हुए सोचता है—अब ?

···चलित्तर कर्मकार ने कहा था—'गाढ़े बिपद में खबर करना, याद करना ! ···'

चलित्तर कर्मकार।

Funding by IKS-MoE

अठारह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"भाग ! भाग ! मलेटरी, मलेटरी…!"

अरे बाप ! लाल पगड़ीवाला पुलिस नहीं है, एकदम…गोरखा मलेटरी ! सुनते हैं, गोरा मलेटरी से भी ज्यादा चांसवाला होता है गोरखा। मारने लगता तो मारते-मारते जान से ही मार देगा।…हसलगंज हाट पर कटिहारवाले बाबूसाहेब की कचेहरी पर सुबह से ही आकर खड़ी है—दो मोटरगाड़ी—ठसमठस ! मोहरिलजी बोले कि गाँव में रौन[1] देने आया है।…रात में कौन देगा ?…गोरखा मलेटरी ?

"अरे, क्या बात है ?…कौन झूठमूठ खबर लाया ?"

"झूठ नहीं ! ततमाटोली का बबुअन अभी दौड़ता-हाँफता आया है। उसको इमान-धरम सौर माय का किरिया खिलाकर पूछिए तो !"

"ऐ !…सुनो ! मोटरगाड़ी की आवाज हुई न ?"

"हाँ !…पछियारीटोला के पास आ रही हैं मोटरगाड़ी।"

"…भागो ! एकदम लाल अड़हुल रंग की मोटरगाड़ी आ रही है।"

"भागो किधर ? मोटरगाड़ी तो आ गयी !"

भर्र-र्र कॅंक्-कॅंक् भर्र-र…! मिलिटरी लारी लीक छोड़कर बेलीक ही अड्डा-खाई आल-गोड़ा टपते, तहसीलदारसाहब के दरवाजे की ओर जाती है।

"कौन ? सुमरितदास बेता…?"

"सिस् ! चुप…!" सुमरितदास फिसफिसाकर कहता, है "कलिया जेहल से भाग गया है। इसीलिए मलेटरी आया है।…खबरदार ? सुसलिट पाटी का नाम भी नहीं लेना। पूछे तो कहना, हम लोग काँगरेस में हैं। कालीचरन से कोई रिस्ता मत बताना।…समझे ? लाल झण्डा जिसके घर से निकलेगा तुरत गिरिफ्फ हो जायेगा।"

सुमरितदास बेतार की देह में इस 'बुढ़ारी' में भी कितना तेज है ! पुराना पानी पीया हुआ बुड्ढा है।…कलिया तो अपने साथ अपने गर-गरामत, पर-परोसिया और गाँव-समाज सबको ले डूबना चाहता है।…क्या है, लाल सालू ? खबरदार ! झण्डा और सालू में क्या फरक है ! फाहरम-परचा सब जलाओ ! …सब फँसेगा !

'खबरदार ! कलिया 'घसकन्तोबाचः' हो गया है। सुसलिट पाटी और कालीचरन का नाम…हरगिस नहीं।…लच्छन लगता है समूचे गाँव को 'कुरुक' करेगा।"

"ऐ !…कौन ?" कालीचरन की अन्धी माँ हुक्का पीना बन्द कर पूछती है, "कौन भाग गया ?…सरसतिया, परमेसरी,…तराबत्ती…अरे, कौन भाग गया बेटी ?"

"अरे कौन ?…तुम्हारे कुलबोरन बेटा कालीचरन के चलते आज सारा गाँव बन्हा रहा है।"

---

१. राउण्ड।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"भाग ! भाग !...मलेटरी !"

गुरखा सिपाहियों ने कालीचरन के घर को चारों ओर से घर लिया है। एस० पी० साहब कालीचरन की बूढ़ी माँ से पूछते हैं, "हुं...अन्धी है या ढंग करती है ? सुन बुड्ढी ! तेरा कलिया जेल से भाग आया है। अब रोना-गाना छोड़कर सीधे-सीधे बता कि वह यहाँ आया है या नहीं ?"

"मेरा बेटा !...वह डकैत नहीं दरोगाबाबू !...दुसमन लगा हुआ है उसके पीछे हजूर ! जाने सूरुज भगवान।"

"ठीक-ठीक बताओ ! उसके साथ और कौन-कौन...उसके साथी-संगी का नाम बताओ।"

"हजूर !...हमरा कुछ नैं मालूम।"

"अच्छा, सब मालूम हो जायेगा।...ले चलो बुढ़िया को !"

कालीचरन की माँ को जड़ैया बुखार आ गया।...जैसे ही नेपाली सिपाही ने उसकी कलाई पकड़ी, वह जोर-जोर से डिकरने लगी—लोहे से दागने के समय बैल-गाय वगैरह जैसे डिकरते हैं, उसी तरह।

"अ् य बाँ-बाँ-बाँ-आँ...!"

माघ की सन्ध्या ठिठुरते हुए गाँव को धीरे-धीरे अपने आँचल में छिपा रही है। भयार्त पशु की आँखों की तरह किसी-किसी घर में ढिबरी भुक-भुका रही है। ...घूर के पास आज कौन बैठेगा ! सभी अपने-अपने घर के कोने में छुपे हुए हैं। ...सन्नाटा ! और इस सन्नाटे को चीरकर कालीचरन की माँ की यह दर्द-भरी पुकार गाँव के कोने-कोने में फैली !...

"एह ! अरे बाप ! मालूम होता है बुढ़िया को कीरिच से जबेह कर रहा है।...हे भगवान !"

कालीचरन की माँ की डिकराहट में कुछ ऐसी बात थी कि एस० पी० साहब का दिल पसीज गया। उन्होंने कहा, "छोड़ दो !...छोड़ दो बुढ़िया को !"

बुढ़िया अचानक चुप हो गयी।

गाँव-घर, बगीचा-बाड़ी और अगवारे-पिछवारे में दम साधकर छिपे लोगों ने समझा—बुढ़िया को सचमुच जबेह कर दिया।

"किसकी बोली है, पहले पहचान लो।...टट्टी में कान लगाकर सुनो।"

"अगमू चौकीदार है।...सुमरितदास भी है।"

"जै भगमान ! जै भगमान !"

"ऐ भगमान भगत ! भगमान भगत...दरवाजा खोलो जी !" सुमरितदास खखारते हैं, "अह-ख्-ख् !...भगमान भगत ! डरने की बात नहीं।...सिकरेट है, सिकरेट ? मलेटरीसाहेब हैं...पैसा देते हैं।"

पछियारी घर में सन्दूक के पीछे भगवान भगत दम साधकर घुसके हुए हैं। "आहि रे दादा रे दादा ! ई त हमरे नाम लेके...।" भगताइन फिसफिसाकर कहती है, "अरे जा न !...कौनो बाघ थोड़ो बा !" भगत डाँटता है—"अरे, चुप !"

"अहँख् !...के ? दासजी ?" भगताइन खखारकर अन्दर से पूछती है,

Funding by IKS-MoE

“का लेंब हो ?”

“अरे खोलो भगताइन ! …भगतजी कहाँ हैं ?”

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगताइन टीन की टट्टी खोलते हुए देखती है, “बाप रे बाप ! …ई कौन देस के आदमी वा रे देबा ! हुँड़ार जैसन मुँह बा ।…”

“दासजी ! अन्दर आके जे लेब से ले जा ।…बुढ़वा के बुखार बा, हमरो सिर बथता…।”

सुमरितदास टीन की टट्टी को ठेलकर अन्दर जाता है, “इस्… ! तुम लोगों को लगता है कि कलेजा है ही नहीं । झूठ नहीं कहा है, बनियाँ का कलेजा घनियाँ ! ‘इसपी’ साहेब अभी तुरत सबों को बुला रहे हैं तहसीलदारसाहेब के दरवाजे पर ।…मिटिन है । इसमें जो नहीं जायेगा अभी, उसको कालीचरन की पाटी का आदमी समझा जायेगा ।…लाओ पाँच पाकिट असली कैंचीमार सिकरेट ! …कलिया जेहल से भाग गया ।”

“हँ-हँ-ख् ! …के ? सुमरित भाई ?’ भगमान भगत काँखते हुए आता है, “अरे ! ई बुखार त जान लेके छोड़ी ! का बात बा ?”

“बात का बा !” सुमरितदास हाथ चमका-चमकाकर कहते हैं, “…चीनी पाँच सेर, गरम मसाला आठ आने का, चार पाकिट सिकरेट लेकर अभी तुरत तहसीलदारसाहेब बुलाये हैं । …इसपीसाहेब मिटिन बुला रहे हैं, सबों को ।…हाँ, सिपाहीजी को पाँच पाकिट दिया, उसका भी पैसा लोगे ?”

“अरे ! हम का हुकुम से बाहर बानी ! …चलीं, हम आवतानी ।” भगत बात चबाते हुए कान खुजलाता है ।

‘गोरखा मलेटरी’ कहता है, “ऊँह ! नहीं ! …हम मुफ्त में नहीं लेगा । काहे लेगा ? हम पैसा तीरकर[1] चुरुट लेगा…काहे लेगा ? हम बायेर का मलेटरी नहीं, हम इसी देस का है । मुफ़्त में काहे लेगा ?”

तहसीलदारसाहब के दरवाजे पर लोग जमा हो रहे हैं । अगमू चौकीदार और अब्दुल्ला बक्सी सबों को हाँकते आ रहे हैं, “डेग बढ़ाओ ! …घसर-फसर काहे करते हो ! …लगता है धान की दबनी करने के लिए बैलों को हाँककर लाया जा रहा है ।…बालदेवजी भी हैं, रामकिरपाल सिंह भी हैं । बहुत दिनों से रामकिरपालसिंह, पर-पंचायत या सभा-मिटिन में नहीं जाते हैं । एकदम गुमसुम रहते हैं ।…पचास बीघा जमीन धनहर, एक लाटबन्दी,[2] एक ही जमा, और खजाना सिर्फ पाँच रुपये ! ऐसी जमीन जिसकी बिक जाये, या महाजन के यहाँ सूद-रेहन लग जाये तो दिल चकनाचूर होगा नहीं ? …खेलावनसिंह यादव का कलेजा धकधक कर रहा है—जगह-जमीन, रुपैया-पैसा तो पहले ही मुकदमा में सोहा हो गया, अब एक कोरी भैंस है । तहसीलदार की नजर लगी हुई है ।

एस० पी० साहब चाय पीकर खड़े हो जाते हैं । जै भगवान ! दुहाई काली माई !

“प्यारे भाइयो ! मैंने आप लोगों को एक बहुत बड़े काम में मदद के लिए

---

१. पैसा चुराकर । २. होल्डिंग ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बुलाया है। आप लोग डरिए नहीं। मैं बदमाशों के लिए महा-बदमाश हूँ, और सीधे लोगों का सेवक !...हाँ, हम तो आप लोगों के नौकर हैं।"

"जै हो ! जै हो !...धन्न हैं, धन्न हैं !" लोगों के देह में अब थोड़ी गर्मी आती है।

एस० पी० साहेब कहते हैं, "अभी इस जिले में एक बड़ा भारी डकैत उत्पात मचा रहा है। उसका नाम आप लोगों ने ज़रूर सुना होगा...!"

"जी नहीं।...हम लोग तो कूपमण्डूक हैं।"

"देखिए ! झूठ मत बोलिए ! डगरिन से पेट छुपाते हैं ?...चलित्तर कर्मकार इस गाँव में कभी नहीं आया है ?"

"हाँ, हाँ, चलित्तर !"

"नहीं, नहीं...नहीं आया है।"

"...देखिए ! जरा रोशनी और करीब लाइए।...देखिए, यही है उसका फोटो।"

"हाँ, ठीक है। यही है। यही है।"

"तब देखिए। आप लोग झूठ काहे कहते थे ! जानते हैं, डकैत से बढ़कर होता है डकैत का झँपैत, आप लोगों ने झँपैत का काम किया है।"

"नहीं हजूर, माये-बाप ! मालूम नहीं था।"

"...खैर ! सुन लीजिए। चलित्तर कर्मकार को न तो देश से मतलब है, न गाँव से और न समाज से। उसका पेशा है डकैती करना, लूटना। वह समाज का दुश्मन है, देश का दुश्मन है।...अभी देखिए, हाल ही में कम्यूनिस्ट पार्टी-वालों ने एक पर्चा निकाला है। लिखा है, कामरेड चलित्तर पर से वारण्ट हटाओ ! चलित्तर कर्मकार किसानों और मजदूरों का प्यारा नेता है।...अब आप ही बताइए कि कोई हत्यारा और डकैत कैसे किसी का प्यारा नेता हो सकता है !...खैर, मेरा भी नाम बजरंगीसिंह है। मैंने ऐसे-ऐसे बहुत-से हत्यारों को ठीक किया है, फाँसी पर लटकवाया है।...ऐसा आदमी किसी की भी हत्या कर सकता है।..."

"बाबा !...गाँधीजी मारे गये !" कमली अन्दरहवेली से ही पगली की तरह चिल्लाती है—"गाँधीजी...!"

"क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?"

तहसीलदारसाहब अन्दरहवेली की ओर दौड़ते हैं।...सुमरितदास कहता है, "हुजूर, तहसीलदारसाहेब की बेटी का मगज जरा खराब है।"

"अनर्थ हो गया हुजूर !" तहसीलदारसाहब दौड़ते हुए आते हैं, "गाँधीजी मारे गये।"

"एँ ?...कहाँ ? कैसे ?"

"रेडियो में खबर आयी है।"

"कहाँ है रेडियो। अन्दरहवेली में ? मेहरबानी करके यहाँ ले आइए।" एस० पी० गिड़गिड़ाते हैं।

Funding by IKS-MoE

"अरे-रे-रे ! बालदेवजी को सँभालो !...बेहोश हो गये ।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तहसीलदारसाहब 'पोर्टेबल रेडियो सेट' ले आते हैं, "हुजूर, इसके कल-काँटे का भेद हमको मालूम नहीं।...डाक्टरसाहब का है।"

"इधर लाइए।" एस० पी० साहब जल्दी-जल्दी मीटर ठीक करते हैं।

"खड़-र-ड़...हम सबके पिता, राष्ट्र के पिता, की हत्या कर दी गयी। ...चारों ओर एक...एक मनहूस अँधेरा छाया हुआ है...हमारी आँखों के आगे अँधेरा है, दिल में अँधेरा है।...ऐसे मौके पर हम किन लफ्ज़ों में, कै...से, किन शब्दों में आपको ढाढ़स बँधायें ! गम के बादल में सारा मुल्क गर्क है।... एक पागल ने बापू की हत्या कर डाली। ज़ाहिर है, पागल के सिवा कोई ऐसा काम नहीं कर सकता। अब हमें अपने गम और गुस्से को दबाकर सोचना है...।"

"नेहरूजी बोल रहे थे सायद !"

नेहरूजी !...जमाहिरलाल बोल रहे थे ! बीच में एक जगह गला एकदम भर गया था; लगा—रो रहे हैं।

"सुनिए ! अब पटेलसाहब, सरदार पटेल बोल रहे हैं।" एस० पी० साहब का चेहरा एकदम काला हो गया है।

बेतार के खबर में क्या बोला ? गाँधीजी का हत्यारा पकड़ा जा चुका है ? ...अरे ! कैसे नहीं पकड़ावेगा भाई ! हाय रे पापी ! साला...जरूर जंगली देश का आदमी होगा। हत्यारा !...मराठा ? यह कौन जात है भाई ! मारा ढा ! अरे, बाभन कभी ऐसा काम नहीं कर सकता, जरूर वह साला चण्डाल होगा।

एस० पी० साहब हाथ जोड़कर कहते हैं, "भाइयो ! कहा-सुना माफ करेंगे। आप लोग जैसा समझें करें...लेकिन देखते हैं न ! अरे जिसने एक गरीब बनिया को बाल-बच्चा सहित मार डाला...वही हत्यारा गाँधी, जवाहर, पटेल की सबकी हत्या कर सकता है।...हत्यारा !...हम अभी जाते हैं : आप लोग कल शाम को, नदी के किनारे जल-प्रवाह कीजिएगा।...और खबर सब तो रेडियो में आती ही रहेगी; तहसीलदारसाहब हैं, सबों को सुना देंगे ! अच्छा तो चलते हैं। जय हिन्द !"

भर्र-र-र-र-र-र !

"रघुपति राघव राजाराम, पतीत पामन सीतारा...।" बालदेवजी आँखें मूँदकर गाना शुरू करते हैं।

आज आखर धरनेवाला भी कोई नहीं—काली, बासुदेव, सुनरा, सनिचरा, कोई नहीं। जाड़े से दलक रहे हैं बालदेवजी।...जरा, यहाँ एक धूनी लगा दी जाती, तो अच्छा होता।

"अरे कोठारिन, लछमी दासिन !"

लछमी आयी है। साथ में है रामफल पहलवान, लालटेन लेकर !... बालदेवजी आँखें मूँदकर गा रहे हैं—"इसवर अल्ला तेरो नाम, सबको सम्पत दो भगमान।"

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकीवल्लभ सीताराम !" लछमी दासिन अगला आखर उठाती है ।

इस बार भीड़ के आधे लोगों ने साथ दिया ।···

"रघुपति राघव राजा राम···!"

बावन ठीक ही कहता था, भारथमाता और भी जार-बेजार रो रही है ! ···बालदेवजी का सारा शरीर सुन्न हो गया है । रास्ते में नाचते-नाचते गिर पड़ते हैं ।

"सीताराम···सीताराम···जै रघुनन्दन···!"

···३१ जनवरी, ४८ की रात ! कमली सोचती है—सारा संसार अभी बस एक ही महा-मानव के लिए रो रहा है ।···रेडियो पर गीतापाठ हो रहा है । लगता है, गीता के एक-एक श्लोक की सीढ़ी महात्माजी को ऊपर उठाये लिये जा रही है—ऊपर—ऊपर—और ऊपर !

> अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिणः ।
> अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥

अँधेरे में एक महाप्रकाश !···आँखें चौंधिया जाती हैं कमली की ! महात्माजी खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं—रोती है क्यों माँ ! ···माँ ! रोती क्यों है ?"

"मत रोओ बेटी !" माँ समझाती है, "बेटी, रोओ मत !" अचानक डाक्टर की याद आती है—डाक्टर ! ···डाक्टर को कौन ढाढ़स बँधाता होगा । मत रोओ डाक्टर ! मत रोओ !

कमली रेडियो की आवाज को और तेज कर देती है :

> वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि ।
> तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।
> नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः !···

उन्नीस

जोतखी काका के दरवाजे पर भीड़ लग गयी है ।

···ठीक कहते थे जोतखी काका । अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है । अच्छर-अच्छर सब बात फल गयी । ···ऐसे अगरजानी आदमी की बात काटने का नतीजा सारा गाँव भोग रहा है !

जंगली जड़ी-बूटी से ही जोतखी काका टनमना गये हैं । खुद उठ नहीं सकते, बोली साफ नहीं हुई है; घिघियाकर, मुंह टेढ़ा करके बोलते हैं, "छयअआंछ ! ···छयअआंछ ! ···आं, आं !"

अर्थात् सर्वनाश ! सर्वनाश ! हां, सर्वनाश होगा ।

Funding by IKS-MoE

"जोतखी काका, आज हुकुम हुआ कि सारा दिन बासी-मुँह रहकर साम को कमला के किनारे जलपरवाह करना होगा।" खेलावन यादव अब जोतखीजी की बात कभी नहीं काट सकता।…जोतखीजी ने कहा था, अट्ठारह साल की उमेर में सकलदीप को माता-पिता-बिओग लिखा हुआ है।…एकदम फल गयी बात। सकलदीप दो महीने तक बिलल्ला की तरह कलकत्ते में भटकता रहा।…ससुर पकड़ लाया है। उसका भी पराच्छित करना होगा।…होटल में बर्तन मांजता था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जोतखीजी इशारे से कहते हैं, 'नहीं, हरगिज नहीं! ऐसा काम मत करो!'

जोतखी काका ने क्या कहा? गाँधीजी काहे मारे गये।…क्या कहते थे, अच्छा हुआ! धेत्त! उनका मगज अब सही नहीं है।

दूसरे पहर को जुलूस निकला। बाँस की एक रन्थी बनाकर सजायी गयी है—लाल, हरे, पीले, कागजों से। एक ओर बालदेवजी ने कन्धा दिया है, दूसरी ओर सुमरितदास, जिबेसर मोची और सकलदीप ने।…खेलावन यादव नहीं आया है। सकलदीप को बहुत समझाया, गाली दिया—मगर सकलदीप ने तो आकर रन्थी में कन्धा ही लगा दिया।

टन-टनांग! घड़ीघण्ट बजता है।

तिन्न तिरकिट-तिन्ना! धिन्ना धा-धा-धिन्ना!

आँ रे! काँ च हि बाँस के खाट रे खटोलना…

गाँव के भकतिया लोगों ने समदाउन शुरू किया। समदाउन की पहली कड़ी ने सबके रोयें को कलपा दिया, सबके दिल गम्हड़ उठे और आँखें छलछला आयीं।

आँ रे काँचहि बाँस के खाट रे खटोलना
आखेर मूंज के र हे डोर!
हाँ रे मोरी रे ए ए ए हाँ आँ आँ रामा रामा!
चार समाजी मिली डोलिया उठाओल
लई चलल जमूना के ओ र!
हाँ रे मोरी रे ए…!

अब कोई अपने को नहीं सँभाल सकता है। सब फफक-फफककर रो पड़ते हैं। जुलूस आगे बढ़ रहा है। धीरे-धीरे सभी जुलूस में आकर मिल जाते हैं, रोते हुए चलते हैं। बूढ़े रोते हैं, बच्चे रोते हैं; जवान रो रहे हैं, औरतें रो रही हैं।…सकलदीप की जवान बहू दहलीज से देखती है। उसके ओठ काँप रहे हैं। रह-रहकर ओठ थरथराते हैं और अन्त में वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। वह दौड़ती है जुलूस के पीछे। खेलावनसिंह चिल्लाते हैं, 'कनियाँ, कनियाँ! …ऐ कनियाँ!"

हाँ आँ रे गोड़ तोरा लागों हम भैया रे कहरिवा से
घड़ी भर डोली बिलमाव!
माई जे रोवय…

…माँ रो रही है। भारथमाता रो रही है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामदास हाथ में खँजड़ी लिये चुपचाप रो रहा है। ···उसी के पाप से महात्माजी मारे गये हैं। उसने साधू के अखाड़े को भरस्ट किया है। ···परसों रमपियरिया की माये गाँव से मछली का सालन माँगकर लायी थी। रमपियरिया रात में उठकर चुराकर खा रही थी। महन्थ रामदास ने रँगे हाथ पकड़ लिया था—बुआरी मछली की कुट्टा !

रमजूदास की स्त्री छाती-पीट पीटकर रो रही है। ···ठिठरा चमार की बारह साल की बेटी रो रही है—बाबा हो ! ···बाबू हो !

बापू !

···कमली रेडियो अगोरकर बैठी हुई है। उसकी आँखों से आँसू टप-टप कर गिर रहे हैं। माँ आँचल से बेटी के आँसू पोंछती है और खुद रोती है, "वे तो नररूप धारन कर आये थे···लीला दिखाकर चले गये।"

रेडियो से आँखों देखा हाल प्रसारित हो रहा है। "अब···अब चन्दन की चिता तैयार है। बस, अब कुछ ही क्षणों में···देखिए, पण्डित नेहरू देवदास गाँधीजी से···महात्माजी के सुपुत्र से कुछ कह रहे हैं। ···नरमुण्ड···नरमुण्ड, कहीं भी एक तिल रखने की जगह नहीं···(कोलाहल की आवाज़ क्रमशः तेज हो रही है। ···जय···जय !) अपार जन-समुद्र में मानो लहरें आ गयी हैं; सभी एक बार, अन्तिम बार महामानव की पवित्र चिता को अन्तिम बार देखना चाहते हैं। ···एम्बुलेंस गाड़ियाँ बेहोश लोगों को ढो रही हैं ! और···और···आह ! अब··· पश्चिम आकाश में सूर्य अपनी लाली बिखेरकर अस्त हो रहा है और इधर··· महामानव की चिता में अग्निशिखा···धरती का सूरज अस्त हो रहा है। क्षिति-जल-पावक···पाँच तत्त्वों का पुतला···(गीता-वाणी सुनायी पड़ती है)—जन्मबन्धविनिर्मुक्तताः पदं गच्छन्त्यानामयम्···।

"माँ, माँ !"

"माँ, माँ···" कमली स्पष्ट सुनती है, कोई पुकार रहा है। कौन पुकारता है उसे माँ !

"क्या हुआ बेटी ?" माँ बाहर से दौड़ी आती है।

"मेरा बच्चा···मेरा···मेरा बेटा···!"

ओं शान्ति ! शा···न्ति···!

बीस

"सेत्ताराम ! सेत्ताराम !"

"ओ बावनदासजी ! आइए !" लछमी मोढ़ा देती है।

"बालदेवजी कहाँ हैं ?"

"आइए, साहेब बन्दगी, जै हिन्द !" बालदेवजी आ गये।

Funding by IKS-MoE

"जै हिन्द !"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बावनदास को देखकर डर लगता है—एकदम सूखकर काँटा हो गये हैं।···बाल इतना ज्यादा कैसे पक गया ?···ओ ! आज टोपी नहीं पहने हैं, इसीलिए। आवाज भी बदल गयी है। बालदेवजी कहते हैं, "आप तो अब यहाँ रहते ही नहीं हैं। ···उस दिन हम अकेले जिस समय से रेडियो में सुने, उसी समय से लेकर दूसरे दिन जलपरवाह तक, सबकुछ किये। किसी तरह सँभाल लिया। सराध के दिन तहसीलदारसाहब भोज देनेवाले हैं; बाभन, राजपूत, यादव और हरिजन सभी एक पंगत में बैठकर खायेंगे। अच्छा हुआ, आप भी आ गये। अकेले हम···।"

"नहीं बालदेवजी, हम रहेंगे नहीं। हम जरूरी काम से जा रहे हैं। सोचा, एक बार आप लोगों से भेंट करते चलें। हम तुरत···अभी चले जायेंगे।"

"अच्छा, उधर का हाल-समाचार क्या है, सुनाइए !"

"हाल क्या सुनिएगा ! अब सुनना-सुनाना क्या है ! रामकिसुन आसरम में भी हरिजन-भोजन होगा। ···बिलेकपी कल मर गया। ···सिवनाथबाबू आये हैं पटना से। ···ससांकजी परान्ती[1] सभापति हो गये हैं, वह भी पटना में ही रहेंगे। ···सब आदमी अब पटना में ही रहेंगे। मेले[2] लोग तो हमेसा वहीं रहते हैं। ···सुराज मिल गया, अब क्या है ! ···छोटनबाबू का राज है। एक कोरी बेमान, बिलेक मारकेटी के साथ कचेहरी में घूमते रहते हैं। हाकिमों के यहाँ दाँत खिटकाते फिरते हैं। सब चौपट हो गया।" बावनदास कहते-कहते रुक जाता है।

"छोटनबाबू की बात मत पूछिए ···अब तो घर-घराना सहित कांगरेसी हो गये हैं।"

"नहीं बालदेव, छोटनबाबू-जैसे छोटे लोगों की बात जाने दो। यह बेमारी ऊपर से आयी है। यह पटनियाँ रोग है। ···अब तो और धूमधाम से फैलेगा। भूमिहार, रजपूत, कैथ, जादव, हरिजन, सब लड़ रहे हैं। ···अगले चुनाव में तिगुना मेले चुने जायेंगे। किसका आदमी ज्यादे चुना जाये, इसी की लड़ाई है। यदि रजपूत पाटी के लोग ज्यादा आये तो सबसे बड़ा मन्तरी भी रजपूत होगा। ···परसों बात हो रही थी आसरम में। छोटनबाबू और अमीनबाबू बतिया रहे थे—गांधीजी का भसम लेकर ससांकजी आवेंगे। छोटनबाबू बोले, जिला का कोटाभसम जिला सभापति को ही लाना चाहिए। ···ससांकजी क्यों ला रहे हैं। इसमें बहुत बड़ा रहस[3]। ···हा-हा-हा-हा !" बावनदास विचित्र हँसी हँसता है। ऐसी हँसी तो कभी नहीं देखी—बालदेवजी ने भी नहीं।

"काहे ? हँसते काहे हैं दासजी ?"

"हा-हा-हा-हा ! ···अरे, वही अमीनबाबू तुरत उठकर बैठ गये; बोले, आप ठीक कहते हैं छोटनबाबू। गाड़ी तो चली गयी। कटिहार जाने से गाड़ी मिल सकती है। ···तुरत मोटर इस्टाट करके दोनों रभाना हो गये। सभापति-

---

१. प्रान्तीय। २. एम० एल० ए०। ३. रहस्य।

Funding by IKS-MoE

मन्तरी···हो राम ! राम मिलाये जोड़ी···। हा-हा ! चले दोनों···हा-हा ! भसम लाने···हा-हा ! देस को भसम कर देंगे ये लोग ! भसमासुर !"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"दासजी, मालूम होता है कोई सोसलिट ने आपको···"

"सोसलिस ? सोसलिस ? क्या कहेगा सोसलिस हमको ? ···सब पाटी समान। उस पाटी में भी जितने बड़े लोग हैं, मन्तरी बनने के लिए मार कर रहे हैं। सब मेले-मन्तरी होना चाहते हैं बालदेव ! देस का काम, गरीबों का काम, चाहे मजूरों का काम, जो भी करते हैं, एक ही लोभ से। ···उस पाटी में बस एक जैपरगासबाबू हैं। हा-हा-हा ! ···उनको भी कोई गोली मार देगा।···फिर भसम लेने के लिए सभापति-मन्तरी साथे-साथ···!"

नया चूड़ा और नया गुड़ एक थरिया में ले आती है लछमी—"जरा बाल-भोग कर लीजिए।···थोड़ा-सा है। दूध-दही तो भोज के लिए जमाया जा रहा है।"

बावनदास बगल की झोली का मुँह फैलाते हैं। लछमी कहती है, "यह क्या ?···जलपान कीजिए ! झोली में क्यों लेते हैं ?"

लछमी की आँखें न जाने क्यों सजल हो जाती हैं।···इतने दिनों के बाद एक वैष्णव आया और बिना पत्तल जुठाये चला जायेगा ?···नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगी।

"नहीं। बालभोग तो आपको करना ही होगा," लछमी जिद्द करती है, "दासजी, बिनती करती हूँ···।"

बालदेवजी देखते हैं, बावनदास को कुछ हो गया है···बड़ा अटर-पटर बोलते हैं ! चेहरा भी एकदम बदल गया है, आँखें लाल हैं, कपड़ा कितना मैला हो गया है !···डेढ़ बित्ता कपड़ा कमर में लपेटते हैं, सो भी तार-तार हो गया है। ···हँसते हैं कैसा ! वह सोलह-सत्रह साल से बावनदास के साथ हैं, कभी तो ऐसा हँसते नहीं देखा।···अलमुनियाँ का लोटा और बाटी नहीं छोड़ते हैं कभी।

जलपान करके हाथ धोते हुए बावनदासजी कहते हैं, "बालदेवजी, अब हम चलेंगे। पुवरिया-लैन की गाड़ी कोदलिया टीसन में जाकर पकड़ेंगे।···आपसे एक काम है।"

बावनदास झोली से लाल रंग का एक बस्ता निकालते हैं। बस्ता खोलकर कागज का छोटा-सा पुलिन्दा निकालते हैं। "बालदेवजी !···सब महतमाजी के खत हैं। गंगुलीजी ने एक बार कहा था—जरूरत पड़ने पर हमको दीजिएगा ···आने के समय याद ही नहीं रहा। आप पुरैनियाँ कब तक जाइएगा ?···चार-पाँच दिन के बाद ? तब ठीक है, आप रख लीजिए। गंगुलीजी को दे दीजिएगा ···जरूर !"

परम श्रद्धा-भक्ति से सहेजी हुई पवित्र चिट्ठियों को बावनदास एकटक देख रहा है।···फिर एक-एक कर अलग-अलग छाँटता है। हवा से एक चिट्ठी उड़कर बिछावन के नीचे चली गयी, बावनदास ने चट से उठाकर सर से छुला लिया। ···उसे एक अक्षर का भी बोध नहीं, लेकिन वह प्रत्येक चिट्ठी के एक-एक शब्द पर निगाह डालता है; लगता है, सचमुच पढ़ रहा हो।···आखिरी चिट्ठी खत्म

Funding by IKS-MoE

-कर वह एक लम्बी साँस लेता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बस्ता हाथ में लेकर बावनदास थोड़ी देर तक बेकार ही उसकी डोरी को उँगलियों में लपेटता और खोलता है। फिर एक लम्बी साँस लेकर अचानक ही खड़ा हो जाता है, "लीजिए···सेत्ताराम-सेत्ताराम!"

बालदेवजी बस्ता लेकर लछमी के हाथ में दे देते हैं, "पौंती-पिटारी में रख दीजिए!"

लछमी बस्ता लेकर सर से छुलाती है, फिर छाती से लगाती है। वह एकटक बावनदास को देख रही है।···इस चिरकुट खद्दड़ की दोलाई से जाड़ा कैसे काटते हैं बावनदासजी?

"दासजी!···इस चादर से जाड़ा कैसे काटते हैं?···ठहरिए, एक पुराना कम्बल है। ले लीजिए।" लछमी विनती के सुर में ही कहती है।

"नहीं माई!" बावनदास कन्धे से झोली को लटकाते हुए कहता है, "नहीं माई, कम्बल की जरूरत नहीं।"

लछमी चुप हो जाती है।···बावनदासजी को अब कम्बल की ज़रूरत नहीं। अब उन्हें किसी चीज का ज़रूरत नहीं।···लछमी मानो सबकुछ समझ जाती है।

धरती फाटे मेघ जल
कपड़ा फाटे डोर।
तन फाटे की औखदी
मन फाटे नहीं ठौर!

"अच्छा तो अब···जै हिन्द!"

"जै हिन्द!"

बावनदास लुढ़कता हुआ जा रहा है।···सोबरन का कटहा कुत्ता खिट-खिटाकर भूंकते हुए उस पर टूटता है। लेकिन, बावनदास उधर देखता तक नहीं है।···कुत्ता भी आश्चर्य से चुप हो जाता है। जरा-सा धेत्त-धेत्त भी नहीं किया?···कैसा आदमी है! कुत्ता बावनदास के पीछे-पीछे दुम हिलाते, मिट्टी सूंघते कुछ दूर तक जाता है।

"बावनदासजी का मन एकदम फट गया है।" लछमी कहती है।

बालदेवजी कहते हैं, "अरे मन फटेगा क्या! थोड़ा ढंग भी करता है।···गंगुलीजी चिट्ठी लेकर क्या करेंगे?···दूसरे की चिट्ठी भले लोग नहीं पढ़ते हैं, दोख होता है।"

कोदलिया टीसन पर गाड़ी में बैठकर बावनदास को लगता है, वह कोई तीरथ करने जा रहा है। बहुत दिनों से उसके मन में लालसा है—एक बार जगरनाथजी जाने की!···केदारनाथ, बदरिकानाथ वह गया है। उसकी आँखों के आगे जगरनाथ का पट—छाता और छड़ी— लिये तीर्थ से लौटे हुए बावनदास की मूर्ति आ खड़ी होती है।

जगरनथिया री भाय,
बाबा रौ बिराजे उड़िया देस में।

एक यात्री ने कहा, "अरे, माघ महीना में कौन जगरनाथ से लौटा है भाई!"

Funding by IKS-MoE

दूसरे ने कहा, "जरा जोर से बावन गुसाईंजी !"
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
बावनदास खिड़की से बाहर की ओर देखता है। खेतों में लोग धान काट रहे हैं।...नदी में मछली मार रहे हैं, भैंस चरा रहे हैं। बावन ने बहुत सफर किया है, लैन से—कलकत्ता काँगरेस, लखनौ काँगरेस, बैजवाड़ा, साबरमती आसरम, महात्मा गांधीजी की जन्मभूमि काठियावाड़, फिर बम्बै।...रेलवे लैन के किनारे काम करते हुए लोगों के मुखड़े, विभिन्न प्रदेश के लोगों के मुखड़े, उसकी आँखों के आगे इकट्ठे हो जाते हैं।...खगड़ा टीसन पर उतरकर एक बार नाथबाबू के यहाँ जाने का विचार था, लेकिन नाथबाबू कलकत्ता गये हैं। खोखी दीदी और काकीजी भी गई हैं।...खोखी दीदी ने एक बार बावनदास की तस्वीर बनायी थी।...बोली, बस आप जैसे बैठे हैं, बैठे रहिए। एक कागज पर पेन्सिल से तस्वीर बनाने लगी।...काकीजी ठीक मायेजी की तरह बोलती हैं। नाथबाबू रहते तो बावन को आज बहुत भारी मदद मिलती!...बहुत कड़े आदमी हैं। गोस्सा में जब होते हैं तो किसी को कुछ नहीं बूझते हैं।...कम्फ जेहल के साहेब को जिनगी भर याद रहेगा।...नाथबाबू का चेहरा लाल हो गया था उस दिन, एकदम लाल टेसू।...पिछले साल नाथबाबू और चौधरीजी बम्बै जा रहे थे। बावन भी साथ में था।...मोगलसराय टीसन पर गाड़ी में भीड़ देखकर होस गुम! इस छोर से उस छोर तक घूम आये, मगर कहीं घुसने ही नहीं दिया।...चौधरीजी हँसते हुए बोले, "एहो गाड़ी छूटतऽ लच्छन लगैछेहौं।" नाथबाबू ने एक डिब्बा के हैण्डिल को जैसे ही पकड़ा कि अन्दर से एक आदमी ने गुस्सा होकर कहा, "देखता है नहीं, इस पर लिखा हुआ—बंगाल के मेम्बर के वास्ते रिजप है।"

नाथबाबू ने भी गुसाकर जवाब दिया था—"खूब देखता है।...बंगाल में अब आप लोगों के जैसा आदमी फलने लगा है, यह भी देखता है। हाम भी ए० आई० सी० सी० का मेम्बर है, आप भी उसी का मेम्बर है, मगर आदमियत...।"

भीतर से किसी ने रसिकता की थी, "आदमियत[1] तूले आर कोथा बोलबेन ना मोशाय।...आसून, आपनार तो देखची ऐकेबारे त्रिमूर्ति..."

बात भी कुछ ऐसी ही हो गयी कि सभी हँस पड़े—चौधरीजी भी, नाथबाबू भी और डिब्बे के सभी मेम्बर।...हँसनेवाली बात नहीं है? चौधरीजी एकदम लम्बा, याने चौधरीजी की लम्बाई की बात तो सभी जानते ही हैं। पूरा ऊँचे कद का आदमी भी उनके कन्धे के बराबर होता है। और, इधर नाथबाबू ठेठ-नाटे कद के! गोल चेहरा, चेहरे पर हरदम मुस्कराहट, वह भी छोटी-सी! और तीसरा मूर्ति—सेवक बावनदास!...विचारकर देखिए—हँसने की बात है या नहीं!...चौधरीजी ने ऊपर बेंच पर अपना बिस्तर लम्बा किया था, नाथबाबू और बावनदास नीचे।

"ऐं? खगड़ा आ गया?...सेत्ताराम! सेत्ताराम!"

---

१. कृपया आदमियत का प्रश्न मत उठाइए। आइए, हमें तो एक साथ ही त्रिमूर्ति के दर्शन का सौभाग्य मिल रहा है।

Funding by IKS-MoE

खगड़ा स्टेशन पर उतरकर, बावनदास एक बार ऊपर आसमान की ओर देखता है । [illegible] पहुँच जायेगा ।··· नहीं, नाथबाबू से नहीं भेंट होगी तो अब किससे भेंट करने जाये वह !···

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कलीमुद्दींपुर की ओर जा रहा है बावन !···कलीमुद्दींपुर पाकिस्तान में जाते-जाते बच गया है । एक बार हल्ला हुआ कि हिन्दुस्तान में रहेगा—दूसरी बार हल्ला हुआ कि पाकिस्तान में ।·· सुनते हैं पाकिस्तानवाले कहते थे कि गाँव का नाम इस्लामी है, इसलिए इसको···! क्या बच्चों-जैसी बुद्धि !···

···सेत्ताराम ! सेत्ताराम ! बावनदास जल्दी-जल्दी डेग बढ़ाता है, ···आज जैसे हो, शाम तक उसे पहुँचना ही है एक जगह···। उस जगह का नाम भी अभी वह अपने मन में नहीं लायेगा ।

चलते-चलते वह कभी-कभी रुककर उसाँसें लेता है—बहुत देर तक रोने पर बच्चे जिस तरह उसाँसें लेते हैं, उसी तरह ! बावन की झोली में खँजड़ी है । खँजड़ी में लगी हुई झुनकी उसकी गति को एक लय में बाँध रही है—किन्न, किन्न, किन्न, किन्न ! खेतों की मेड़ों पर, मैदान में, सड़कों पर, ऊँची-नीची जमीन पर उसके चरण पड़ते हैं । मंजिल करीब है । अब किन्न, किन्न, किन्न, किन्न···! और थोड़ी दूर···और आधा कोस ! किन्न, किन्न···!

···जै महतमाजी ! जै बापू !···माँ ! माँ !···धन्न हो प्रभू ! एक परीक्षा से तो पार करा दिया प्रभू ! बस यहीं···इसी साँहुड़ के नीचे ! इसी कच्ची लीक के पास···डाल दो डेरा रे मन !

···नागर नदी के किनारे ! नागर को एक बहुत बड़ा गवाह बनाया है, दोनों देसवालों ने । नागर नदी ही सीमा-रेखा है । ···एक किनारा हिन्दुस्तान, दूसरा किनारा पाकिस्तान ! इस पार हिन्दुस्तान, दूसरी ओर पाकिस्तान । नागर बारहों मास बहती है, सूखती नहीं कभी । शायद, इसीलिए···! रामडण्डी माथा पर आ गया ।

माघ की ठिठुरती हुई सर्दी !···पछिया हवा भी चलती है । लगता है, आज की रात बदरनीनाथ की तरह यहाँ भी बरफ गिरेगी । रामडण्डी सिर पर आ गया···! बावन निराश नहीं होता है । जब तक सूरज नहीं उगेगा, वह टलेगा नहीं ।···बात ही कुछ ऐसी है । यदि इस रास्ते से नहीं आयी गाड़ी, तो···! वह दूर, बहुत दूर किसी गाँव की रोशनी को देखता है । दोनों हाथों को मलकर गर्म हो लेता है ।···हाँ, गाड़ियाँ आयेंगी । पचासों गाड़ियाँ !···कपड़े और चीनी और सीमेंट से लदी हुई गाड़ियाँ···जिसने खबर दी है उसे—उसका नाम वह जान जाने पर भी नहीं खोलेगा । बावन ने गांधीजी की कसम खायी है । बेचारा गरीब···उसकी नोकरी चली जायेगी ।···कटहा के दुलारचन्द कापरा, वही जूआ कम्पनीवाला, जिसकी जूए की दुकान पर नेवीलाल, भोलाबाबू और बावन ने फारबिसगंज मेला में पिकेटिन किया था । जूआ भी नहीं, एकदम पाकिटकाट खेला करता था और मोरंगिया लड़कियों, मोरंगिया दारू-गाँजा का कारबार करता था ।···आज कटहा थाना कांग्रेस का सिकरेटरी है !···उसी की गाड़ियाँ हैं । सपलाई निसपिट्टर और कटहा थाना के दरोगा और यहाँ कलीमुद्दींपुर के नाकावाले

Funding by IKS-MoE

हवलदार मिलाकर रकम आठ आना और इधर दुलारचन्द कापरा रकम आठ
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
आना। गाड़ियाँ सदर-चालू सड़क से नहीं आयेंगी। चोरपेड़ी[1] होकर, चोरघाट होकर पार करेंगी। फिर उधर के व्यापारी को उस पार पहुँचा देगा। उधर के हाकिम-हुक्कामों को भी इसी तरह हिस्सा मिलेगा। लाखों रुपया का कारबार है।···वे आ गयीं हाँ, गाड़ियाँ···कच्ची लीक में पहियों की आवाज !···हाँ, गाड़ी ही है।

जै भगवान ! जै महतमाजी ! सेत्ताराम ! सेत्ताराम !···बल दो प्रभू ! परीक्षा में पार करो गुरु ! बापू ! बापू !···माँ, माँ ! झोलों के अन्दर वह कुछ टटोलता है।

वह झोली को कन्धे से लटकाकर खड़ा हो जाता है।···नदी किनारे कोई पखेरू बोला, टिंटिक्।···किन्न ! खँजड़ी की झुनकी जरा झनकी।

"भगवान ! महतमाजी !···बापू ! माँ ! मुझे बुला लो अपने पास ! क्या करूँगा इस दुनिया में रहकर !···धरम नहीं बचेगा।"

गाड़ियाँ आ गयीं, एकदम करीब।

"अरे बा-आ-आ-प रे—भू-ऊ-त !" अगला गाड़ीवान डरा और दबी आवाज में अपने साथी से कहता है, "भूत !"

"छिउँ···" बैल भड़कते हैं। कचकचाकर गाड़ियाँ रुक जाती हैं।

"सेत्ताराम ! सेत्ताराम !"

कलीमुद्दीपुर नाका के सिपाहीजी आगे बढ़ आते हैं, खखारकर पूछते हैं, "कौन है ?"

बगल की झाड़ी से सामने आकर बावन ने कहा, "हम हैं। सेवक बावनदास !"

"बा व न दास !" सिपाहीजी का मुँह खुला-का-खुला रह जाता है। इस आदमी को वह सन् तीस से ही जानता है। चान टरे, सूरज टरे···!

सिपाहीजी मुरेठा की पूछरी से मुँह छिपाते हैं। बावनदास हँसकर कहता है, "मुँह क्यों छिपाते हैं रामबुझावनसिंहजी ! आज खुलकर खेला होना चाहिए ! मुँह मत छिपाइए !"

"दासजी, हमारा क्या कसूर ! आप तो जानते ही हैं···"

"सिंघजी, बातचीत कुछ नहीं। गाड़ियाँ जायेंगी खगड़ा !···लौटाइए।"

"गाड़ी त ना लौटी।"

"लौटी ना त ठाढ़ रही।"

अढ़ाई हजार रुपये हिस्से में मिल चुके हैं रामबुझावनसिंघ को। क्या किया जाये ?···

"दासजी, ठहरिए !···हम तुरत आते हैं।"

"अच्छी बात ! ले आइए आज जो लोग पर्दे में हैं। जाइए !"

कलीमुद्दीपुर में एक होटिल बँगला[2] है।···हाकिम-हुक्काम लोग बराबर आते रहते हैं। बाँस-फूल का बड़ा-सा चौखड़ा है, गाँव के एकदम बाहर।

होटिल-बँगला में सप्लाई इन्सपेक्टर, दुलारचन्द कापरा और कलीमुद्दीपुर

---

१. चोर रास्ता। १. हाल्टिंग बँगला।

Funding by IKS-MoE

के हवलदारसाहब टेबल के चारों ओर बैठकर मोरंगिया माल पी रहे हैं। कलीमुद्दींन होटिल बँगला के बेरसपतिया बावर्ची के हाथ का मुर्ग-मुसल्लम जिसने खाया, उसी ने जी खोलकर बक्कीस दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्लाई इन्सपेक्टरसाहब गिलास में चुस्की लगाते हुए मुस्कराते हैं, "अरे धत्त्! इस मुर्ग-मुसल्लम से गर्मी थोड़ी आयेगी! हवलदारसाहब! अरे, कोई दो टाँगवाली मुर्गी···।"

"क्या पूछते हैं, आज···महतमाजी के सराध की वजह से सभी भोज खाने चली गयी हैं।"

दुलारचन्द कापरा कहता है, "ऊँह! ऐसा जानता तो कटहा से ही दो रेफ्यूजिनी को उठा लाते।···सब मजा किरकिरा कर दिया।"

कड़कड़—कड़क्! सप्लाई इन्सपेक्टर चतुरानन्दसिंहजी मुर्गी की टाँग चबाते हैं।

कड़कड़ कड़क्! बाहर साइकिल की आवाज होती है।

"कौन?"

"सलाम! हम रामबुझावनसिंह।"

"क्या हाल है?"

"सब चौपट! बावनदास···"

"आँ यें! बावनदास? कहाँ?"

···सभी गुम हो गये। बेरसपतिया बावर्ची इशारे से कहता है हवलदार साहब को, "मिल सकती है मुर्गी···, मगर···" रुककर दोनों हाथों की उँगलियाँ दिखलाता है।

हवलदारसाहब कहते हैं, "अच्छा अभी ठहरो, तुम बाहर जाओ।"

"क्या हो अब?" सभी एक साथ लम्बी साँस लेते हैं।

"अकेला है या···?"

"एकदम अकेला!"

"मगर इसका मतलब जानते हैं?"

"दुलारचन्दजी!···कापराजी!"

सबकी निगाहें मिलती हैं आपस में। दुलारचन्द गिलास में बोतल से शराब ढालकर गटगटाकर पी जाता है। सभी उसकी ओर आशा-भरी दृष्टि से देखते हैं—"मैं पंजाबी हूँ जी!···मगर आगे आप लोग जानो। मैं अपना फरज अदा करने जाता हूँ।"

···सिटसिट कर पछिया हवा चल रही है। हवलदारसाहब साइकिल का पैंडिल चलाते हुए कहते हैं, "कापराजी, आसपास के गाँववालों का डर जरा भी मत कीजिए।···ऐलान किया हुआ है कि सरहद के आस-पास रात-बरात जो निकलेगा, उसे गोली लग जा सकती है।"

बावनदास ठीक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है—बीच लीक पर।

दुलारचन्द कापरा देखता है—हाँ बावन ही है।

"कौन?···कापराजी! गाड़ी के पीछे से क्या झाँकते हैं? सामने आइए!"

Funding by IKS-MoE

बावनदास हँसता है।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
"बावन !...रास्ता छोड़ दो। गाड़ी पास होने दो।"

"आइए सामने। पास कराइए गाड़ी। आप भी काँगरेस के मेम्बर हैं और हम भी। खाता खुला हुआ है; अपना-अपना हिसाब-किताब लिखाइए।...आज के इस पवित्तर दिन को हम कलंक नहीं लगने देंगे।"

कापरा जानता है, इससे माथा-पच्ची करना बेकार है। वह हवलदार के कान में कुछ कहता है। फिर पुकारता है, "इसपिरिंग खाँ ! कहाँ..."

यह इसपिरिंग खाँ कापरा का अपना आदमी है।...नाम फर्जी है।...एक गाड़ी पर से उतरता है, फिर चुपचाप अगली गाड़ी पर जाकर बैठ जाता है।

"बावनदास...मान जाओ !"

"......"

"हाँको जी गाड़ी इसपिरिंग खाँ !"

गाड़ी में जुते हुए दोनों जानवर अचरज से चौंक पड़ते हैं। भड़कते हैं। छिऊँ, छिऊँ ! नाक से आवाज करके आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं। कापरा एक बैल की पूँछ पकड़कर ऐंठता है। हड्डी पट् से बोली, मगर बैलों ने लीक छोड़ दिया और गाड़ी को बगल की ओर लेकर भागे।

दूसरी गाड़ी...! एक बैल को हवलदार और दूसरे को कापरा, पूँछ मरोड़-कर आगे बढ़ाते हैं। गाड़ीवान अवाक् होकर हाथ में रास थामे हुए है।...यह क्या हो रहा है ?

बैलगाड़ी पास हो गयी।...पास हो रही है। बावनदास बीच लीक पर खड़ा है और गाड़ियाँ ऊपर से आर-पार कर रही हैं। बैल भड़के ज़रूर, मगर...।

तीन-चार ! चार गाड़ियाँ ?

अब बावनदास ठीक बैल के सामने आकर खड़ा होता है। बैल उसे हुँत्था मारकर गिरा देता है। वह लीक पर लुढ़क जाता है।...ठीक पहिये के नीचे।

मड़-मड़-मड़ !

...बापू ! माँ...!

गाड़ी पास ! कट-कर्रर-कट !

गाड़ियाँ पास हो रही हैं। पचास गाड़ियाँ !

आखिरी गाड़ी जब गुजर गयी तो हवलदार और रामबुझावनसिंघ मिलकर, बावन की चित्थी-चित्थी लाश, लहू के कीचड़ में लथ-पथ लाश को उठाकर चलते हैं।...नागर नदी के उस पार, पाकिस्तान में फेंकना होगा। इधर नहीं... हरगिस नहीं !

दुलारचन्द कापरा बावन की झोली लेकर उनके पीछे-पीछे जाता है।

नागर पार करते समय बावन के गले की तुलसी-माला नागर की बहती हुई धारा में गिर पड़ती है—सेत्ताराम !

चार बजे भोर को पाकिस्तानी पुलिस ने घाट-गश्त लगाने के समय देखा —लाश !

"अरे यह तो उस पार के बौने की है। यहाँ कैसे आयी ? ओ, समझ गये।

…"उठाओ जी, हनीफ और जुम्मन, ले चलो उस पार !"

बावन की ठण्डी लाश झोली-झण्डा के साथ फिर उठी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बावन ने दो आजाद देशों की, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की, ईमानदारी को, इन्सानियत को, बस दो डेग में ही नाप लिया !

नागर नदी के बीच में पहुँचकर पाकिस्तान के पुलिस अफसरसाहब ने कहा—"नदी में ही डाल दो। इसकी झोली को उस पार दरख्त से लटका दो। जल्दी।"

नागर की धारा हठात् कलकला उठी। सिपाही खँजड़ी को पानी में फेंकते हुए कहता है—"डमरू बजाके रघुपति राघव गाते रहो !"

झनक…!

इक्कीस

मेरीगंज गाँव के एकमात्र मालिक, एकछत्र जमींदार, तहसीलदारबाबू विश्वनाथ मल्लिक का खम्हार देख लो ! …जिस बड़े चौताल पर एक पंक्ति में बैठकर, गाँधीजी के सराध के दिन लोगों ने सरबघटन भोज खाया, उसी को घेरकर खलिहान बनाया है तहसीलदारसाहब ने। दस बीघे का घेराव है।

…रामकिरपालसिंह अपनी बची-खुची जमीन, फसल-सहित, तहसीलदार के यहाँ सूद-रेहन रखकर तीरथ करने जा रहे हैं—कासी, केदारजी, जहाँ तक जा सकें। तहसीलदारसाहब ने कहा है, "बाकी रुपया जहाँ से लिखिएगा, मनीआर्डर से भेजते रहेंगे।"

बाकी खजाना, घर-खर्चा, जाड़े का कपड़ा, सकलदीप के प्राच्छित और सतनारायण-पूजा के लिए खेलावन दो सौ रुपया माँगने गया। तहसीलदारसाहब ने साफ जवाब दे दिया—"हाथ में एक पैसा नहीं है।"…घर के पिछवाड़े की जमीन, जिसमें धान करीब-करीब तैयार हो गया था, लिख दी तो तीन सौ रुपये दिये।

सब मिलाकर पाँच हजार मन से क्या कम होगा धान इस बार !

तन्त्रिमा-छत्रीटोली, कुर्म-छत्रीटोली, कुसवाहा-छत्रीटोली, धनुषधारी-छत्रीटोली और गहलोत-छत्रीटोली के जन-मजदूरों की हाँड़ी माघ महीने में हो टँग गयी है।… खम्हार में जितना धान हिस्सा होगा, उससे चौगुना तो कर्जा है। सब काट लिया जायेगा…और इस बार तो लगता है गाँव में गुजर नहीं चलेगा। खेलावन यादव पाँच हल चलाते थे, इस साल एक ही हल चलावेंगे, एक हल अधहरी[1] पर चलेगा। रामकिरपालसिंह ने तो खेती-बारी उठा ही दी। बुढ़िया को लेकर तीरथ चले गये। शिवशक्करसिंह दो हल चलावेंगे।…तहसीलदारसाहब

1. आधा हल।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस बार टक्टर[1] खरीद रहे हैं। बेतार कहता था, "उसी में सबकुछ होगा—हल, चौंगी, बिधा, कोड़कमान, कादी-गोरा और धनकटनी भी ! आदमी की क्या ज़रूरत ? पानी का पम्पू आवेगा। इन्दर भगवान की खुशामद की ज़रूरत नहीं। कमला नदी में पम्पू लगा दिया, मिसिन इसटाट कर दिया और हथिया सूंड़[2] की तरह सब पानी सोखकर खेत पटा देगा।"…जब इन्दर भगवान को ही नून-नेबू चटा रहे हैं तहसीलदारसाहेब, तो आदमी उनके हुजूर में क्या है ? कटिहार में एक जूट मिल और खुला है। तीन जूट मिल ?…चलो, चलो, दो रुपैया रोज मजदूरी मिलती है। गाँव में अब क्या रखा है !

एक महतमाजी का भरोसा था, उनको भी मार दिया।…'बालदेवजी से पूछो न, महतमाजी की जगह पर अब कौन आवेंगे ! जमाहिरलाल ? मगर महतमाजी तो एक ही कोपिन पहनते थे।…

विरंची कहता है, "जहाँ सभी जात भाई का, बारहो बरन का, ऊँच-नीच का पत्ता जूठा हुआ है, उस खम्हार में बरक्कत तो उधियाकर होगा।… तहसीलदारसाहेब आज कह रहे थे, इस बार सभी को अपने हिस्से में से औकाद मुताबिक धान देना होगा—एक कट्ठा, आध कट्ठा, एक सेर, आध सेर !… महतमाजी का चन्ना हो रहा है।"

"महतमाजी का चन्ना ? क्या होगा चन्ना ? सराध तो हो गया।"

"नहीं !…रहुआ के गुरुबंसीबाबू ने डिल्ली में आकर एक करोड़ या…एक लाख…पता नहीं एक हजार…याद नहीं, मगर एक मोट रुपैया गुरुबंसीबाबू ने जमाहिरलाल को जाकर दिया है।…महतमाजी का चन्ना ! सुनते हैं, और भी देंगे।"

"ऐं ! कौन हल्ला करता है उधर ?"

"अरे कौन, रमपियरिया है।"

रमपियरिया और रमपियरिया की माँ के गले की आवाज सुनी जाती है।…मठ पर झगड़ा हो रहा है। आज लगता है, मारपीट ज्यादा हुई है।

"रामदास गुसाईं आजकल दिन-भर गाँजा पीता है। एक-न-एक दिन वह भी खून करेगा।"

"साला, इन्हीं लोगों के पाप से धरती दलमला रही है।…भरस्ट कर दिया। अब वह मठ है। लालबाग मेला का मीनाबाजार हो गया है। दस-दस कोस का लुच्चा-लफंगा सब आकर जमा होता है।"

तहसीलदारसाहब आजकल रात में ऊपर के कोठे पर सुमरितदास के साथ कागज-पत्तर ठीक करते रहते हैं। किसी-किसी दिन सुमरितदास सीढ़ी पर लड़-खड़ाकर गिर जाता है।…सन्थालों के घर में चुलाया हुआ महुआ का दारू बड़ा तेज होता है। गंगाई माँझी रोज आधा कण्टर दे जाता है। कभी-कभी तहसील-दारसाहब भी नीचे उतरकर खूब हल्ला करते हैं; कमली की माँ को, कमली को, सेविया बूढ़ी, सबको गोली से उड़ा देने की धमकी देते हैं।

---

१. ट्रैक्टर। २. इन्द्रधनुष। Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

…एक रात को तो इतना मात गये तहसीलदारसाहब कि कमली की माँ डर से छाती पीटने लगी थी।…ऐसी खराब-खराब गाली जो जिन्दगी में कभी एक बार भी उनके मुँह से नहीं सुनी गयी, कमली की बन्द किवाड़ के सामने आकर जोर-जोर से बकने लगे। कमली दरवाजा खोलकर बाहर आयी और बोली, "बाबा! मुझे जो सजा देनी हो दो। मगर माँ को गाली मत दो। उनका क्या कुसूर ?"

कमली को देखते ही तहसीलदारसाहब का नशा उतर गया, वे ऊपर भागे।

उस दिन से माँ कमली को एक मिनट भी अकेली नहीं छोड़ती है। बिलार को देखकर बच्चेवाली बिल्ली की सतर्क आँखें कैसी तेज हो जाती हैं! कमली की माँ को डर है, तहसीलदारसाहब किसी दिन कोई काण्ड करेंगे।…एक सप्ताह पहले शराब में एक दवा मिलाकर दिया उन्होंने—"कमली को पिला दो। एकदम खलास हो जायेगी।…बड़ी मुश्किल से जोगाड़ किया है।"

उन पर कैसे विश्वास किया जाय! न जाने कब क्या कर दें।

गाँव के घर-घर में 'हे भगवान' की पुकार मची हुई है। सुबह से शाम तक रात-भर धान-दबनी कर जो मजदूरी मिलती है, खलिहान पर रही बाकी मोजर हो जाता है। नाब-धोबी और मोची का खन भी नहीं जुड़ेगा इस बार।…चलो कटिहार!…मिल का भोंपा बजता है रोज, सुनते नहीं? बुला रहा है—'आओ-ओ-ओ हो-हो-हो-हो!'

रात के सन्नाटे में जोतखी काका की खाँसी बड़ी डरावनी सुनायी पड़ती है—खाँयें-खाँयें।…दिन में ठीक दोपहर को अमड़ा गाछ पर बैठकर कागा जिस तरह बोलता है, ठीक उसी तरह खाँयें-खाँयें!

…खायेगा! सबको खा जायेगा। पिंगलवर्णा देवी क्रमशः बढ़ी आ रही है। उसके हजारों गण दाँत निकाले हैं, जीभ लपलपा रही है।…खायेगा…खायेगा!

भयार्त शिशु की तरह सारा गाँव कुहरे में दुबका हुआ थर-थर काँप रहा है!…

"खबरदार—हो-य-य-य-य—खबरदार!"

तहसीलदारसाहब ने खलिहान जोगाने के लिए तीन सन्थालों को और ड्योढ़ी के पहरा के लिए पहड़िया सिपाहियों को बहाल किया है। एक नाल बन्दूक का लैसन फिर मिला है।…चलित्तर कर्मकार जब तक पकड़ाता नहीं है, पैसेवालों को रात में नींद नहीं आयेगी। पहरेवालों की बोली भी डरावनी मालूम होती है। आजकल कोठी के जंगल में शाम को ही एक रोशनी जलती है—बहुत तेज; फिर रात में और फिर भोर को।

बालदेवजी जगे हुए हैं। शाम को पुरैनियाँ से लौटे हैं…उनको नींद नहीं आ रही है। पुरैनियाँ जाने के समय लछमी ने बावनदास का बस्ता, गाँधीजी की चिट्ठियोंवाला बस्ता देते हुए कहा था, लघुसंका करने के समय पॉकिट से निकालकर…। गांगुलीजी से वह भेंट करने गया था। गांगुलीजी ने पूछा था, "बावनदास ने कुछ दिया है आपको ?"

"जी, ऊँहूँ…नहीं!" बालदेवजी इस जाड़े के मौसम में भी पसीना-पसीना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हो गये थे।

न जाने क्यों गांगुलीजी अचानक उदास हो गये।

…बालदेव अब जान रहते इन चिट्ठियों को नहीं दे सकता। इन चिट्ठियों को देखते ही जमाहिरलाल नेहरूजी बावनदास को मेनिस्टर बना देंगे, नहीं तो डिल्ली जरूर बुला लेंगे।…यों भी आज तक जितने लीडर आये, सबों ने बावनदास से ही हँसकर बातें कीं।

…उस बार मेनिस्टरसाहेब आये। बड़े-बड़े लीडरों ने, मारवाड़ियों ने, वकीलों, मुक्तियारों और जमींदारों ने दसखत करके दरखास दिया, "भगवतीबाबू सरकारी वकील को कांग्रेस का मेम्बर बहाल कर लिया जाये।" मगर मेनिस्टर-साहब ने बावनदास से पूछा, "क्यों बावनदासजी ?" भगवतीबाबू बहाल नहीं हुए। आखिर बावन की ही बात रही।…भगवतीबाबू ने बियालिस में सुराजिया को फाँसी पर झुलाने के लिए खूब बहस किया था।

और ये चिट्ठियाँ! …नहीं, वह हरगिस नहीं देगा।…लछमी को न जाने क्या हो गया है! जिस दिन से बस्ता मिला, दोनों बखत सतसंग के समय सिर छुलाकर सामने रखती थी।…रोज चन्दन और फूल चढ़ाती थी इस पर। कभी-कभी चिट्ठियों को खोलकर पढ़ती और रोती। पुरैनियाँ से लौटने पर कुशल-मंगल पूछना तो दूर, पूछ बैठी, "गंगुलीजी को दे दिया न ?"

"हाँ-हाँ, दे दिया। इतना ना-परतीत था तो मेरे हाथ में दिया ही क्यों था ?"

बालदेवजी को नींद नहीं आ रही है। बैलगाड़ी पर पुआल के नीचे बस्ता छिपाकर रख दिया है। धूनी तो धू-धू कर जल रही है।…

बालदेवजी उठकर बाहर जाते हैं।

"होये! …खबरदार!" पहरू चिल्लाता है।

बालदेवजी धूनी के पास बैठकर लकड़ियों को जरा इधर-उधर करते हैं, फिर कनखी से लछमी के बिछावन की ओर देखते हैं। धीरे से बस्ता निकालकर खोलते हैं। उनका सारा देह सिहर रहा है, जीभ सूखकर काठ हो गयी है, मुँह में थूक नहीं है।…धूनी की आग लहलहा उठी है, लकड़ियाँ चिट्-चिट् बोलती हैं।…बालदेव ने एक चिट्ठी निकाली…।

"दुहाई गाँधीबाबा! बाबा रे…!" लछमी बिछावन पर से ही झपटती है—"गुसाईंसाहेब! छिः छिः! यह क्या कर रहे हैं! …सतगुरु हो, छिमा करो! बालदेव! …पापी,…हत्यारा!"

धूनी की आग लछमी के कपड़े में लग जाती है। "लगने दो आग! मुट्ठी खोलिए! बस्ता दीजिए बालदेवजी! मैं जलकर मर जाऊँगी, मगर…।"

बालदेवजी की कसी हुई मुट्ठी खुल जाती है। लछमी बस्ते को कलेजे से चिपकाकर खड़ी होती है। कमर से लिपटा हुआ कपड़ा खुद-ब-खुद गिर पड़ता है। बालदेवजी कमण्डल से पानी लेकर छींटते हैं।

"हे भगवान! सतगुरु हो! जै गाँधीजी! …बाबा…जै बावनदासजी! हः हः!" लछमी रो रही है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
वस्त्रहीन खड़ी लछमी रो रही है।

लछमी के हाथ-पाँव जल गये हैं, बड़े-बड़े फफोले निकल आये हैं।

बालदेवजी अपनी मसहरी में आकर छिप जाते हैं। लेटकर सोचते हैं—नहीं, अब यहाँ रहना अच्छा नहीं। वह किस मुँह से यहाँ रहेगा ?…लछमी की ओर अब वह निगाह उठाकर कभी देख नहीं सकेगा।…वह पुरैनियाँ जायेगा, वहीं से चन्ननपट्टी चला जायेगा। वह अब अपने गाँव में रहेगा, अपने समाज में, अपनी जाति में रहेगा।…जाति बहुत बड़ी चीज है।…जाति की बात ऐसी है कि सभी बड़े-बड़े लीडर अपनी-अपनी जाति की पाटी में हैं।…यह तो राज-नीति है ! लछमी क्या समझेगी ?…कासीजी का बरमचारी तो लगता है, अब यहीं खुट्टा गाड़ेगा…। ठीक है।…नहीं, वह लछमी पर जाते-जाते अकलंग लगाकर नहीं जायेगा। वह…

"गुसाईंसाहेब, उठिए ! सतसंग का समय हो गया !" लछमी कराहते हुए उठती है। सारा देह जल गया है।

रोज की तरह लछमी उठती है, उठकर बालदेवजी के बिछावन के पास आती है। मसहरी हटाकर बालदेवजी के अँगूठों में आँखें लगाती है, "सा हे ब—बन्दगी !"

बालदेवजी रोते हैं—सिसकियाँ लेकर, "ल-छ-मी !"

"उठिए गुसाईंसाहेब !"

बाईस

तीन महीने बाद !

१९४८ साल के अप्रैल की एक सुबह।

इस इलाके में अखतिया पटुआ-भदै बोनेवाले किसानों को चाहिए कि सूरज उगने से पहले ही खेत को चार चास कर दें ! भुरुकुआ तारा जगमग कर रहा है। कमला नदी के गड्ढे में उसकी छाया झिलमिला रही है। लगता है, नील-कमल खिला है।

कन्धे पर हल लिये मरियल बैलों को हाँकता हुआ जा रहा है विरंची…कोयरीटोला के सोबरन का तीन बीघा खेत मनकुत्ता पर जोतता है। मगर इस साल टोटा पड़ेगा। उसकी सूरत, दियासलाई की डिबिया में जैसे हलवाहे की छापी रहती है—एकदम दुबला-पतला, काला-कलूटा, कमर में बिस्ठी—वैसी ही है।

खेलावन अब खुद भैंस चराता है। तीन बजे रात में भैंस जैसा चरती है वह दिन-भर में नहीं चरेगी। अब तो उसको अपना रमना[1] भी नहीं है, इसीलिए

१. चरागाह।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
धत्ता की ओर ले जाता है। खेलावन यादव, यादवटोली का मड़र, भैंस चराकर लौट रहा है।

आसमान साफ हो रहा है। सबके चेहरों पर सुबह का प्रकाश पड़ता है—झमायी हुई ईंट जैसे चेहरे!

तहसीलदारसाहब का ट्रैक्टर लेकर डलेवरसाहब निकले—भट-भट-भट-भट-भट!

तहसीलदारसाहब दोमंजिले की छत पर खड़े, हाथों को पीछे की ओर बाँधे टहल रहे हैं। भट-भट-भट-भट-भट! छत्त दलकती है। उसी के ताल पर उनका कलेजा धुकधुका रहा है।···कौन आ रहा है? कौन? सेबिया?···चुप!···धीरे से! क्या?

"क्या?" तहसीलदारसाहब पूछते हैं।

'ऊँ! बतहा! नाती भेलहौं!" सेबिया हँसती है।

"चुप! जिन्दा है या···।"

"ऊँह! गुजुर-गुजुर हेरैछै!"

···उफ़! भगवान! तहसीलदारसाहब थरथर कांप रहे हैं।

कमला नदी के उस पार, अधपके रब्बी की फसल के उस पार, सेमलबाड़ी के जंगल के उस पार आसमान लाल हो गया है। दक्खिन···कोठी के बाग में गुलमुहर की लाल-लाल डालियाँ दमक उठती हैं।

ड्योढ़ी के उस पार बच्चे के रोने की आवाज नहीं जाने पावे! इन्तिजाम हो रहा है।···कोई इन्तिजाम ज़रूर हो जायेगा।···यदि बच्चा जोर से रोये! ऐं, गला टी···प दो। मार डालो!

दिल्ली में, राजघाट पर, बापू की समाधि पर रोज श्रद्धांजलियाँ अर्पित होती हैं। संसार के किसी भी कोने का, किसी भी देश का आदमी आता है, वहाँ पहुँचकर अपनी जिन्दगी को सार्थक समझता है।

कलीमुद्दीपुर में, नागर नदी के किनारे, चोरघट्टा के पास साँहुड़ के पेड़ की डाली से लटकती हुई खद्दर की झोली को किसी ने शायद टपा दिया है।···कौन लेगा? दुलारचन्द कापरा ने एक महीने के बाद जाकर देखा, झोली तो लटक रही है···डाली से। जिला कांग्रेस का कोई भी वरकर देखते ही पहचान लेगा—बावनदास की झोली है। झोली कापरा ने टपा दी। मगर झोली का फीता अभी भी डाली में झूल रहा है।

किसी दुखिया ने इसे चेथरिया-पीर[1] समझकर मनौती की है, अपने आँचल का एक खूंट फाड़कर बांध दिया है—"मनोकामना पूरी हो तो नया चेथरा बधाऊँगी!" बहुत बड़ी आशा और विश्वास के साथ वह गिरह बाँध रही है।···दो चीथड़े।

पूर्णिया जेल के सामने बड़ा पुराना वटवृक्ष है। उसके नीचे सूखी हुई पत्तियाँ हवा में इधर-उधर उड़ रही हैं। वट के बँधाये चबूतरे के पास एक युवती खड़ी

१. जिस पेड़ को पीर समझकर चीथड़ा चढाते हैं।

Funding by IKS-MoE

है।···साथ में है ममता !
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खाली देह पर एक पुराना गमछा रखे, सिर्फ जाँघिया पहने एक वार्डरसाहब बार-बार बारिक से निकलकर युवती को देखते हैं, गीत गाते हैं—'तोरी पतरी कमरिया !' और एक बार पूछ ही लेते हैं, "आप डाक्टरसाहेब की वाइफ़ हैं ?"

युवती ने गर्दन हिलाकर कहा—"नहीं !"

वार्डरसाहेब प्यारू की ओर देखते हैं। प्यारू इस वार्डर को जानता है—बड़ा बेकूफ़ है। हमेसा खराब-खराब बात बोलता रहता है। वह मुँह फेर लेता है।

जेल का लौह-कपाट झनझनाकर खुलता है। युवती के चेहरे पर से प्रतीक्षा की बेचैनी हट जाती है। उसके चेहरे पर हाल ही में जो छोटी-छोटी झुर्रियाँ पड़ गयी थीं धीरे-धीरे खिल पड़ती हैं।

डाक्टर इस तरह मुस्कराता, डेग बढ़ाता, हाथ में छोटा बैग लिये आ रहा है, मानो लेबोरेटरी से छुट्टी पाकर लौटा है।

प्यारू का चेहरा देखने काबिल हो रहा है। वह अपने अन्दर में उठनेवाले खुशी के आवेगों को दबाता है, किन्तु उसका मुँह अस्वाभाविक रूप से खुला हुआ है।

"तुम भी किसी जेल में थीं क्या ?"

"नहीं बाबा ! ऐसी किस्मत लेके नहीं आयी।···झुको ! बाबा विश्वनाथ का प्रसाद है !" युवती रूमाल से सूखे बेलपत्तर और फूल निकालकर डाक्टर प्रशान्त के सिर से छुलाती है।

"तब प्यारू···क्या हाल है ? ममता ! प्यारू से बातचीत हुई है या नहीं ?"

"सुबह से और कर क्या रही हूँ !" ममता हँसते हुए कहती है, "घोड़ा-गाड़ी बुलाइए प्यारिचाँद सरकार !"

प्यारू हँसता-लँगड़ाता कचहरी की ओर जाता है।

"तीन बजे रात में पहुँची पूर्णिया स्टेशन।···ज्योति-दी तो आजकल यहीं हैं न ! उनके डेरे पर गयी, सुबह उठकर कलक्टरसाहब के बँगले पर गयी। दस्ती आर्डर साथ में था तुम्हारी रिलीज़ का। ज्योति-दी ने कहा, यदि कलक्टरसाहब टूर पर निकल गये तो फिर देर हो जा सकती है !···तो अभी कहाँ चलना है ?" ममता मुस्कराती है।

"तुम मेरीगंज नहीं चलोगी ?"

"क्यों नहीं ?···मैंने पन्द्रह दिन की छुट्टी ले ली है।"

एस० पी० साहब का चपरासी खत लेकर आया है। एस० पी० साहब ने डाक्टर को अपने बँगले पर निमन्त्रित किया है।

तेईस

तहसीलदारसाहब अब नीचे नहीं उतरते हैं। ऊपर ही रहते हैं। दिन-भर ताड़ी पीकर रहते हैं, रात में सन्थालटोली का महुआ का रस। कभी होश में नहीं रहते

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
हैं। सुमरितदास बेतार से रोज पूछते हैं, "सोचा उपाय ?"

"मेरा तो मगज़ नहीं काम कर रहा है।"

"नहीं काम कर रहा है, तो लो एक गिलास। पियो साले ! यदि कहीं बोले तो देख लो बन्दूक !"

कमली की माँ दरवाजा कभी नहीं खोलती। कुएँ की ओर खुलनेवाला दरवाजा कभी-कभी खोलती है।···कमरे के अन्धकार में, एक कोने में, एक छोटा-सा दीप जल रहा है। कमली की गोदी में उसका शिशु कपड़े में लिपटा सो रहा है।··· कमली कजरौटी में काजल पार रही है।

भट-भट भर्र-र्र

एक स्टेशन वैगन पूर्णिया-मेरीगंज रोड पर भागी जा रही है।

चलते समय ममता की नजर बचाकर प्यारू ने डाक्टर के हाथ में एक लिफाफा दिया है। आगे ड्राइवर की बगल में बैठा हुआ प्यारू कभी-कभी गर्दन उलटकर पीछे की ओर देखता है। डाक्टरसाहब चिट्ठी पढ़ रहे हैं।

"प्राणनाथ !"

कमला की चिट्ठी है—एक सप्ताह पहले की चिट्ठी।

"प्राणनाथ,

पता नहीं, समय पर यह पत्र तुमको मिले या नहीं। देर या सबेर, कभी भी मेरी यह चिट्ठी तुम्हें मिल ही जायेगी, मुझे पूरा विश्वास है। तुम मेरे पास दौड़े आओगे !···तुम जानते हो, अब मुझे डर लगने लगा है। तुम्हारा···तुम्हारा··· कैसे लिखूं ?···माँ कहती है, यदि तुम किसी तरह बाबा को लिख दो या मालूम करा दो कि···मेरी होनेवाली सन्तान के तुम पिता हो, तो मैं जी जाऊँ। विश्वास नहीं करती माँ ! बाबूजी अब एकदम पागल हो गये हैं। न जाने कब क्या हो ! तुम्हारी किताबों ने मुझे बहुत-कुछ सिखाया है। मुझे कितना बड़ा सहारा मिला है तुम्हारी किताबों से ! लेकिन अब एक नयी किताब चाहिए जिसके पृष्ठ-पृष्ठ में लिखा हुआ हो—कमला ! विश्वास करो ! डरो मत ! जो होगा, मंगलमय होगा···।"

डाक्टर एक ही साँस में इतना पढ़ गया। इसके बाद उसने ममता की ओर निगाह डाली। रात-भर की जगी ममता गाड़ी के हिचकोलों पर मीठी झपकी ले रही है।···चोट लग जायेगी !

"और कितनी दूर ?" ममता जागकर पूछती है।

"और एक घण्टा," प्यारू कहता है।

डाक्टर आगे पढ़ता है—"···बाबा तुम्हारे बच्चे को मार डालेंगे।"

"नहीं ! नहीं !"

"ऐं ?" ममता पूछती है, "क्या है ?"

डाक्टर ममता के हाथ में पत्र देकर बाहर की ओर देखता है। प्यारू गर्दन उलट-उलटकर डाक्टरसाहब की ओर देखता है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
ममता आँखें मलते हुए पढ़ती है—"प्राणनाथ ! ···किसकी चिट्ठी है ? कमला की ?"

ममता पढ़ रही है। डाक्टर ने एक बार ममता की ओर देखा—ममता की नींद से माती आँखें एक बार चमकती हैं। पत्र शेष करके वह पूछती है, "और कितनी दूर ?"

"अब और एक घण्टा। कच्चा रास्ता है !"

"और वह गणेश कहाँ है ?"

"उसकी तो एक लम्बी कहानी है। ब्रह्मसमाज मन्दिर में उसे रखवा दिया था। न जाने कहाँ से उसके एक चाचा ऊपर हो गये। बहुत बखेड़ा हुआ, जाति-धर्म का बवण्डर उठाया। मैंने भी कह दिया, ले जाओ !"

"उससे भैंस चरवाता है," प्यारू कहता है, "उसके गाँव का आदमी बराबर कचहरी आता है न !"

"मैंने मेडिकल गजट में तुम्हारी रिपोर्ट दे दी है। एक संक्षिप्त रिपोर्ट है—जंगली जड़ी-बूटी और यहाँ के गाँवों में प्रचलित टोटकों के बारे में—तुम्हारी चिट्ठियों से सॉर्ट करके लिख दिया।"

"लेकिन, मैंने तो फैसला कर लिया है, रिसर्च असफल होने की घोषणा कर दूँगा।"

"कोई रिसर्च कभी असफल नहीं होता है डाक्टर ! तुमने कम-से-कम मिट्टी को तो पहचाना है।···मिट्टी और मनुष्य से मुहब्बत। छोटी बात नहीं।"

डाक्टर ममता की ओर देखता है—एकटक। ममता बाहर की ओर देख रही है—विशाल मैदान ! ···वन्ध्या धरती ! ···यही है वह मशहूर मैदान—नेपाल से शुरू होकर गंगा किनारे तक—वीरान, धूमिल अंचल। मैदान की सूखी हुई दूबों में चरवाहों ने आग लगा दी है—पंक्तिबद्ध दीपों-जैसी लगती है दूर से।···तड़बन्ना के ताड़ों की फुनगी पर डूबते हुए सूरज की लाली क्रमशः मटमैली हो रही है।

भर्र-र-र्र···

"सुमरितदास ! अभी ट्रैक्टर क्यों चला रहा है ? कहाँ ले जा रहा है, ड्राइवर से पूछो तो।" तहसीलदारसाहब दोमंजिले की छत पर से पुकारते हैं।

"ट्रैक्टर नहीं। मोटर है, मोटर !"

"मोटर ? ···कौन है ?"

"डागडर !"

"कौन डाक्टर ?"

सुमरितदास दौड़कर छत पर जाता है, "अपने···डागडरबाबू। साथ में एक जलाना है।···प्यारू भी है।"

तहसीलदारसाहब हाथ में बन्दूक लेते हैं। सुमरितदास थर-थर काँपते हुए कहता है—"दुहाई ! ऐसा काम मत कीजिए।"

"ऐसा काम नहीं करूँ ? ···तब क्या करूँ ?"

प्यारू पुकारता है, "मौसी ! ···ओ मौसी !"

"कौन ? प्यारू ?" माँ दरवाज़े की फाँक से कहती है, "क्या है ?"

Funding by IKS-MoE

"डागडरबाबू !"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"एँहें-एँहें-आँ-आँ," सौर-गृह में कमली का नन्हा रोता है, "एँ-हें-एँ-हाँ !"

ममता जल्दी से किवाड़ के पास जाकर कहती है, "किवाड़ खोलो मौसी ! ··· मैं हूँ ममता। खोलो तो पहले !"

किवाड़ के पल्ले खुल जाते हैं। ममता सौर-गृह के अन्दर चली जाती है।··· डाक्टर अकेला, चुपचाप खड़ा है। सीढ़ी पर खड़ाऊँ की आवाज होती है—भारी-भरकम आवाज ! कोई जोर-जोर से पैर पटककर चल रहा है।

"कौन है ? डाक्टर ?" तहसीलदारसाहब चिल्लाते हैं।

"आइए ! बैठिए डागडरबाबू।" सुमरितदास मसूढ़े निकालकर हँसता है, "आइए !"

"नहीं ! ···सुमरितदास, इससे पूछो, कहाँ आया है ? किसके यहाँ आया है ? क्या करने आया है ? क्या लेने आया है ?···पूछो !"

सुमरितदास बेतार डाक्टर के पास आकर कनखी और इशारों से समझाता है, "आजकल जरा ज्यादा ढलने लगी है न···इसीलिए !"

सौर-गृह के दरवाजे की फाँक से कमली की माँ कहती है, "कमली के बाबू ! कैसे हो तुम ? जमाई को···"

"जमाई को क्या ? अपने जमाई को क्यों नहीं कहती हो ? वह मेरा पैर छूकर प्रणाम कहाँ करता है ?"

डाक्टर तहसीलदार की चरण-धूलि लेता है।

तहसीलदारसाहब अचानक फूटकर रो पड़ते हैं, डाक्टरसाहब को बाँहों में जकड़कर रोते हैं, "मेरा बेटा ! बाबू ! ···मेरा बेटा !"

सुमरितदास बेतार ने रात में ही घर-घर खबर पहुंचा दी—"कमल की सादी तो पहले ही डागडरबाबू से हो गयी थी।···तुम लोग तो जानते हो ! पाँच पंच को जनाकर जब-जब सादी की बात पक्की हुई, एक-न-एक विघिन पड़ गया। इसीलिए कासी के पण्डितों ने गन्धरब-बिबाह कराने को कहा। गन्धरब बिबाह की बात किसी को मालूम नहीं होने दी जाती है। यदि बच्चा हो तो सबसे पहले बाप उसको देखेगा, तब और लोग। ··डागडरबाबू आ गये हैं। अब कल छट्ठी के भोज का निमन्त्रण देने आया हूँ तुम लोगों को। कल सुबह से ही आनन-बधावा मचेगा।"

"इस्स् ! यह तो खिस्सा-कहानी जैसा हो गया ! एकदम किसी को पता नहीं !"

ब्राह्मणटोली के पुरोहित देवानन झा ने लोगों से कहा, "अँगरेजी फैसनवालों का सात खून माफ है।"

जोतखीजी के कानों में बात पड़ी; उन्होंने घृणा से मुँह सिकोड़ लिया।

खेलावन यादव ने कहा, "पैसावाला अधरम भी करेगा तो वह धरम ही होगा।"

लेकिन निमन्त्रण अस्वीकार करने की हिम्मत किसी में नहीं।

सुबह को गाँव के चमारों ने आकर नाच-नाचकर ढोल बजाना शुरू किया।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
औरतें झुण्ड बांध-बांधकर सोहर गाती हुई आने लगीं। लेकिन सबके चेहरे पर एक उदासी, एक मनहूस काली रेखा खिंची हुई है।...मन में रंग नहीं।

तहसीलदारसाहब बहुत देर तक अपने कमरे में चुपचाप बैठकर कुछ सोचते हैं; फिर बाहर आकर कहते हैं, "सुमरितदास ! लोगों से कह दो...हरेक परिवार को पाँच बीघा के दर से जमीन मैं लौटा दूंगा। साँझ पड़ते-पड़ते मैं सब कागज-पत्तर ठीक कर लेता हूँ।...और सन्थालटोली में जाकर कहो...वे लोग भी आकर रसीद ले जायें। एक पैसा सलामी या नजराना, कुछ भी नहीं !...अरे, मैं क्यों दूंगा ? दे रहा है नया मालिक !...मालिकसाहब का हुकुम है, सुनते हो नहीं ! रो रहा है वह ? वह हुकुम दे रहा है। लौटा दो ! दे दो, खेलावन को उसकी जमीन का सब धान दे दो।"

डाक्टर प्रशान्त और ममता की आँखें चार होती हैं।

"मुँह क्या देखते हो ? मुझे पागल समझते हो ? ठीक है, पागल क्यों नहीं समझोगे ?...योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सारी विद्याबुद्धि लगाकर कोशिश की, मगर दुर्योधन ने साफ कह दिया—सूई की नोक पर जितनी मिट्टी चढ़ती है उतनी भी नहीं दूंगा।"...जमीन !...धरती ! एक इंच जमीन के लिए हायकोठ तक मुकदमा लड़ते हैं लोग ! और मैं सौ बीघे जमीन दे रहा हूँ। पागल तो तुम लोग हो ! अरे, यह जमीन तो उन्हीं किसानों की है, नीलाम की हुई, जब्त की हुई; उन्हें वापस दे रहा हूँ। मैं कहता हूँ, ऐलान कर दो, मालिक का हुकुम है !"

जै ! जै !...जै हो !

बोलिए प्रेम से—महतमाजी की जै !

डिग-डिग-डिडिग।

रिंग-रिंग-ता-धिन-ता।

डा-डिग्गा-डा-डिग्गा !

झुमुर-झुमुर...हुर्रर्र-हुर्रर्र-हुर्रर्र !

हाँ...अब...अब ठीक है। अब देखो, सब चेहरों पर, मुर्दा चमड़ों पर लाली लौट रही है। सैकड़ों जोड़ी आँखें खुशी से चमक उठती हैं, मानो दीप जले हों।

कुमार नीलोत्पल की आज बरही है।

हाँ, ममता ने कमला के पुत्र को नाम दिया है—कुमार नीलोत्पल। डाक्टर ने आज पहली बार अपने पुत्र को गोद में लिया और देखा है।...दुबला-पतला, पीले रंग का रक्त-मांस का पिण्ड ! ममता कहती है, "पटना ले चलो। एक महीने में ही तुम्हारा बेटा लाल हो जायेगा !" डाक्टर ने सैकड़ों 'डिलिवरी' केस किये हैं। किन्तु कुमार नीलोत्पल ! कमला का पीला चेहरा लाज से लाल हो गया था। डाक्टर की गोद में शिशु को देते वक्त उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें झुकी हुई थीं। उसके ललाट पर सिंदूर का बड़ा-सा टीप जगमगा रहा था।...अँधेरे में खड़ी 'सिल्हुटिड' तस्वीर-सी खड़ी माँ हाथ बढ़ाकर एक भयावनी छाया के हाथ में अपने शिशु को सौंप रही है।...अँधेरा...! भयावनी छाया !...नहीं, नहीं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डाक्टर ने अपने बायें हाथ की उँगलियों से नीलोत्पल के 'हार्ट' की धड़कन का अनुभव किया था, "अहा ! नन्हा-सा दिल, धुक-धुक कर रहा है।"

सौर-गृह में, बारह दिन के शिशु की लम्बी उम्र, सुन्दर स्वास्थ्य, विद्याबुद्धि और धन-सम्पत्ति के लिए मंगलगीत गाये जा रहे हैं। डाक्टर जगा हुआ है।··· उसका रिसर्च ? ममता कहती है, "असफल नहीं हुआ है। मिट्टी और मनुष्य से इतनी गहरी मुहब्बत किसी 'लेबोरेटरी' में नहीं बनती।"

लेबोरेटरी !···विशाल प्रयोगशाला। ऊँची चहारदीवारी में बन्द प्रयोगशाला।···साम्राज्य-लोभी शासकों की संगीनों के साये में वैज्ञानिकों के दल खोज कर रहे हैं, प्रयोग कर रहे हैं।···गंजी खोपड़ियों पर लाल-हरी रोशनी पड़ रही है।···मारात्मक, विध्वंसक और सर्वनाशा शक्तियों के सम्मिश्रण से एक ऐसे बम की रचना हो रही है जो सारी पृथ्वी को हवा के रूप में परिणत कर देगा···ऐटम ब्रेक कर रहा है मकड़ी के···जाल की तरह ! चारों ओर एक महा-अन्धकार ! सब वाष्प ! प्रकृति-पुरुष···अण्ड-पिण्ड ! मिट्टी और मनुष्य के शुभचिन्तकों की छोटी-सी टोली अँधेरे में टटोल रही है। अँधेरे में वे आपस में टकराते हैं।

···वेदान्त···भौतिकवाद···सापेक्षवाद···मानवतावाद !···हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है। व्याध के तीर से जख्मी हिरण-शावक-सी मानवता को पनाह कहाँ मिले ?···हा-हा-हा ! अट्टहास ! व्याधों के अट्टहास से आकाश हिल रहा है। छोटा-सा, नन्हा-सा हिरण हाँफ रहा है। छोटे फेफड़े की तेज़ धुकधुकी !··· नीलोत्पल ! नहीं, नहीं ! यह अँधेरा नहीं रहेगा। मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूँजती है—पवित्र वाणी ! उन्हें प्रकाश मिल गया है। तेजोमय ! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर शीतल चन्दन लेप रहा है। प्रेम और अहिंसा की साधना सफल हो चुकी है। फिर कैसा भय ! विधाता की सृष्टि में मानव ही सबसे बढ़कर शक्तिशाली है। उसको पराजित करना असम्भव है, प्रचण्ड शक्तिशाली बमों से भी नहीं।···पागलो ! आदमी आदमी है, गिनीपिग नहीं।···सबारि ऊपर मानुस सत्य !

> अनेकवस्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्।
> अनेक दिव्याभरण दिव्यानेकोद्यतायुधम्।
> दिवि सूर्यसहस्र···।

···ममता गा रही है ! सुबह हो रही है। बगल के कमरे में तहसीलदार-साहब खर्राटे ले रहे हैं। डाक्टर उठकर खिड़कियाँ खोल देता है। मटमैली, अँधियारी में कोठी का बाग ठिठका हुआ किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। गुल-मुहर, अमलतास और योजनगन्धा की नयी कलियाँ मुस्कराने को तैयार हैं।··· नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं···।

"प्रशान्त !" ममता मुस्कराती हुई कमरे में प्रवेश करती है—सुबह को हौले-हौले बहनेवाली हवा-जैसी। सद्यःस्नाता ममता के भीगे-बिखरे केशगुच्छ को डाक्टर छू लेता है।

"अरे धेत् ! औरतों का भीगा केश नहीं छूना चाहिए। दोष होता है। पूछती हूँ, चाय पियोगे ? कुमार साहब का दूध गर्म हो रहा है। लगता है, रात-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भर जगे रहे हो। कुल्ली कर लो। मैं चाय ले आती हूँ।" ममता मुस्कराती हुई चली जाती है।

बेचारी ममता की जिन्दगी का एकमात्र विलास—चाय ! शीला कहती थी एक बार, "ममता-दी चाय पीने का बहाना ढूँढ़ती रहती है। दिन-भर में दस-पन्द्रह प्याली···।"

चाय की प्याली प्रशान्त के हाथ में देते हुए ममता पूछती है, "पढ़ गये··· महात्माजी की आखिरी लालसा ! मैं तो कहती हूँ, यह वह महा-प्रकाश है, जिसकी रोशनी में दुनिया निर्भय हजारों बरस का सफर तय कर सकती है।"

"ममता ! मैं फिर काम शुरू करूँगा—यहीं, इसी गाँव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहायेंगे। मैं साधना करूँगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले ! कम-से-कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाये ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ···।"

ममता हँसती है—"मन करता है, किसी को आँचल पसारकर आशीर्वाद दूँ—तुम सफल होओ ! मन करता है, किसी कर्मयोगी के बढ़े हुए चरणों की धूलि लेकर कहूँ···" कहकर ममता प्रशान्त के पैरों की ओर हाथ बढ़ाती है।

"ममता !"

"ममता-दी !···लो इसे। दूध फेंकता है।" कमली अपने शिशु को गोदी में लेकर हँसती हुई आती है।

"दो ! कैसे फेंकता है ? कैसे पिलाती हो ? बोतल दो।" ममता आलथी-पालथी मारकर बैठ जाती है और बच्चे को गोद में ले लेती है। "तुमने टेब्लेट खा लिया कमला ? खा लो !"

प्रशान्त चुपचाप ममता को देख रहा है। शरतबाबू के उपन्यासों की यह नारी अपने विश्वास पर अडिग होकर आज भी आगे बढ़ रही है; रूप बदल दो, नाम बदल दो, समय बदल दो, जगह बदल दो, पर यह कभी बदल नहीं सकती।

कमली पूछती है, "प्यारू भी पटना चलेगा ?"

"हाँ," ममता संक्षिप्त उत्तर देती है।

"आयें-ऐं···ऐं···" नीलू रोता है।

"ना-ना···। पी लो बाबू ! राजा ! सोना !···मानिक !···नीलू ! रोओ मत ! अब रोने की क्या बात है प्यारे ?" ममता हँसती है।

कलीमुद्दीपुर घाट पर चेथरिया-पीर में किसी ने मानत करके एक चीथड़ा और लटका दिया।

●●●

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Vidya Mandir
1294

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

११
गला आँचल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

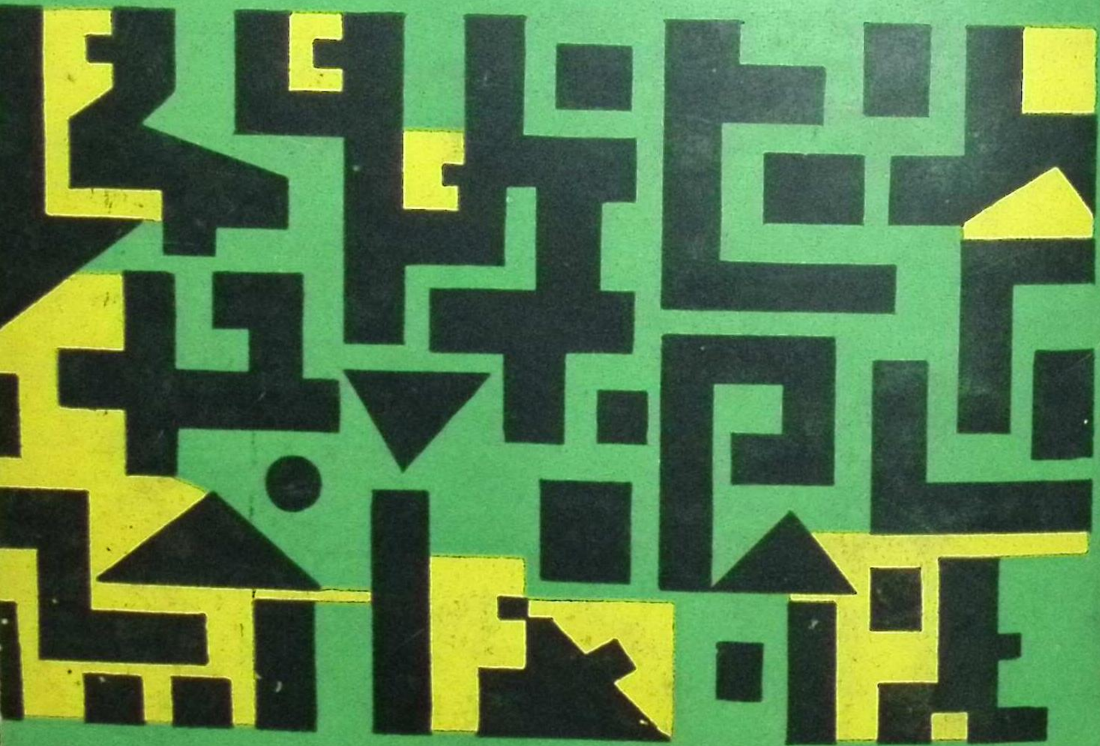

Funding by IKS-MoE